“पुरातन पुरुष”

मेहेरबाबा के साथ एरच बी. जसावाला

(Eruch B. Jessawala)

की यादें

अंग्रेज़ी पुस्तक

"The Ancient One"

का अनुवाद

संपादनकर्त्ता :

uk'kjok vUtkj

अनुवाद :

Mk- ¼Jherh½ egj T;kfr dyJ"B

,e-,l lh-] ih,p-Mh-

प्रकाशक
अवतार मेहेरबाबा कॉस्मिक फाउन्डेशन
१६८–ए, बिशप रॉकी स्ट्रीट,
फ़ैजाबाद रोड, लखनऊ
फ़ोन : ०५२२–२३२७४७७
०५२२–२३५०२१४, ०१२०–४३५५३८५
मोबाइल : ०६८७१६०८६१५, ६४१५०८०२१७

© कापीराइट १६६५, नौशेरवाँ अन्ज़ार
© कापीराइट अवतार मेहेरबाबा परपेचुअल
पब्लिक चेरीटेबुल ट्रस्ट, अहमदनगर,
(महाराष्ट्र) भारत–मेहेरबाबा के सभी संदेशों के लिए
© कापीराइट १६७०, १६७६, १६८१, ग्लो इन्टरनेशनल
सर्वाधिकार सुरक्षित–
किसी भी पत्रिका, समाचार पत्र अथवा प्रसारण में इस्तेमाल करने के लिये लिखी गई समीक्षा या समालोचना के अलावा इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है।

प्रथम संस्करण : अप्रैल–२००८
द्वितीय संस्करण : जनवरी–२००६

मुद्रक
शिवम् आर्ट्स, २११ पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ
फोन : ०५२२–२७८२३४८, २७८२१७२

मेहेरबाबा की मंडली को समर्पित

विषय सूची

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
●	आभार	viii
●	हार्दिक उद्गार	ix
●	भूमिका	xi
●	प्रारम्भ	xvii
	यादें	
१.	ईश्वर का अवतरण	३
२.	एरच के साथ वार्तालाप	६
३.	अपमान–एक छिपा हुआ वरदान	२७
४.	एकमात्र अवसर जब हमने ध्यान किया	२८
५.	एक कठोर जागृति	२६
६.	प्रेम का पुरस्कार	३१
७.	मस्तों की खोज	३१
८.	दैवी पहचान	३६
६.	बाबा और गिरहकट	४०
१०.	अहं पर चोट	४१
११.	माया की गंदगी से	४२
१२.	तुम सम्मान की अपेक्षा नहीं करोगे	४३
१३.	मेहेरबाबा का बहीखाता	४४
१४.	'नई ज़िन्दगी' की रूप रेखा	४६
१५.	नई ज़िन्दगी से शिक्षा	४६
१६.	नई ज़िन्दगी में प्रवेश	५२
१७.	नई ज़िन्दगी का तराना	५५
१८.	नई ज़िन्दगी के दिन	५७
१६.	नई ज़िन्दगी में हास परिहास	६६
२०.	नई ज़िन्दगी में दैवी भोजन	७१
२१.	नई ज़िन्दगी में भीख माँगना	७४
२२.	नई ज़िन्दगी में घटना	८०
२३.	एक अविश्वासी व्यक्ति का रूपान्तर	८५
२४.	मुरली और पादरी की कहानी	८७
२५.	मेहेरबाबा की गूढ़ता	८६

२६. तंत्र मंत्र के लिये कोई स्थान नहीं ६१
२७. सदैव हृदय में ६२
२८. डा. देशमुख की गणित ६३
२६. सन् १६५२ में भारत में सार्वजनिक दर्शन ६६
३०. योग, योगी और सन्त १०३
३१. आज्ञाकारिता का विषय १०६
३२. मेहेरबाबा की याद करने के विषय में १११
३३. मेहेरबाबा की मंडली ११४
३४. मेहेरबाबा का मौन ११६
३५. न तो गाने के लिये और न ही सिखलाने के लिये ११८
३६. स्वयं देदीप्यमान अकथनीय होता है ११६
३७. सब कुछ बाबा की मर्ज़ी से १२०
३८. उन्हें अपने प्रश्नों के उत्तर मिल गये १२१
३६. मेहेरबाबा के प्रभुत्व का अनोखापन १२२
४०. सत्यमेव जयते १२३
४१. मैं ही कर्ता हूँ, मैं ही फलदाता हूँ १२५
४२. रोम का अन्तराल १२६
४३. विचारों के आदान–प्रदान में कोई बाधा नहीं १२८
४४. बाबा और वैज्ञानिक १२६
४५. वास्तविक दृष्टि १३१
४६. हानि में लाभ १३१
४७. एक झलक पर्याप्त है १३२
४८. मक्का और काबा एक ही में समाये हुये हैं १३३
४६. वह व्यक्ति जो मेहेरबाबा की आज्ञा का पालन नहीं कर सका १३४
५०. बाबा और ब्रह्मवाद की अनुयायी १३८
५१. मेहेरबाबा का अस्त्र १३६
५२. एक आँख का अनुमान करने वाला १४०
५३. मेहेरबाबा की सुगंध १४१
५४. सांसारिक और दैवी न्याय १४२
५५. ईश्वर वाणी (God Speaks) की तैयारी १४३
५६. ज्ञान के प्रकार १४६
५७. आज्ञाकारिता, उनकी (बाबा की) इच्छा और उनकी मर्ज़ी की मेहेरबाबा द्वारा की गई व्याख्या १४६
५८. असली तैरना १४७
५६. ''बुराई,'' अच्छाई की सजातीय १४८

६०. ईश–पुरुष की नींद १४६
६१. कष्ट का दूसरा पहलू १५२
६२. 'नियति' का निष्ठुर नियम १५३
६३. बाबा के स्वास्थ्य की निगरानी १५४
६४. मेहेरबाबा के अंतिम दिन १५६
६५. ईश्वर–परिभाषा के परे १६८
६६. मृत्यु का सही अर्थ १६६

पत्र और दैनिक पंजी (डायरी)

६७. नई दुनियाँ अगस्त १७३
६८. सन्त कृपाल सिंह के साथ एक भेंट (१६५६) १७४
६६. कुछ डायरी लेख– १८८
७०. दर्शन की घड़ियाँ १६८
७१. हाफ़िज़ के कुछ कथन २००
७२. समय से परे २०२
७३. सावधान रहो २०३
७४. एकनिष्ठ विश्वास २०४
७५. एरच पत्र व्यवहार करने वालों को उत्तर देते हैं– २०५

प्रेम का प्रकटीकरण

७६. मनुष्य रूप और उसके पश्चात् २३५
७७. महान घटना और उसके पश्चात् २३७
७८. पूर्ण पुरुष २३६
७६. दया २४४
८०. क्या एकमात्र ईसामसीह ? २४८
८१. पाखंडी सन्त २५१
८२. 'सन्त' क्या है ? २५४
८३. लक्ष्य हमारे बीच में २५५
८४. ''केवल बाबा के लिए ही एकत्र होओ'' २५६
८५. अन्य व्यक्तियों को मेहेरबाबा के बारे में बताना २६३
८६. मेहेरबाबा और उनके प्रेमी २६३
८७. मेहेरबाबा अपने एक वचन का पालन करते हैं २६६
८८. मेहेरबाबा द्वारा उद्धार २६७
८६. बाबा का अनोखा प्रसाद २६८
६०. टॉफी का प्रसाद २७०
६१. मेहेरबाबा के साथ भविष्य २७३

vkHkkj

मैं श्री नौशेरवाँ अन्ज़ार की अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने मुझे अपनी पुस्तक "The Ancient one" का हिन्दी में अनुवाद करने की अनुमति दी। मैं स्वर्गीय श्री एरच जसावाला की भी अत्यंत आभारी हूँ क्योंकि मेरे प्रति उनका प्रेम और उनकी प्रेरणा तथा उत्साह से ही यह अनुवाद कार्य पूरा हो सका।

मैं श्रीमती मेहेर ज्योति यादव (झाँसी), श्रीमती मेहेर मनी निगम (हमीरपुर), श्री शिवनारायण सोनी (हमीरपुर), श्री राजेन्द्र यादव (झाँसी), श्री संजय दुबे (लखनऊ) एवं श्री के.डी. निगम (लखनऊ) की अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने मुझे मेहेर पुकार के पुराने अंक दिये, जिनमें ''पुरातन पुरुष'' का अनुवाद छपा था, जिससे मैं इस कार्य में सफल हो सकी। उनके सहयोग के बिना यह कार्य असंभव था। मैं श्री सी.एल. श्रीवास्तव (लखनऊ) को भी हार्दिक धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने संशोधन में मेरी सहायता की।

मैं श्रीमती ऊषा निगम व मेहेर प्रताप निगम (झाँसी) तथा श्री दिनेश चन्द्र निगम (हमीरपुर) की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुखपृष्ठ के लिये एरच जसावाला के बाबा के साथ फोटो भेजकर इस कार्य में सहयोग दिया।

मैं श्री समीर दिलजन की भी आभारी हूँ जिन्होंने पुस्तक की छपाई का उत्तरदायित्व लिया और उसमें सफलता प्राप्त की और उनके प्रयास के फलस्वरूप ''पुरातन पुरुष'' बाबा प्रेमियों के सम्मुख है।

मैं अपने प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस कार्य को पूरा करने की शक्ति दी क्योंकि उनकी आन्तरिक सहायता के बिना यह कार्य संभव नहीं था। आशा है ''पुरातन पुरुष'' ईश्वर की खोज करने वाले साधकों का मार्गदर्शन करेगी और भावी मानवता इससे आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करेगी।

मेहेर ज्योति

लखनऊ
१७ फरवरी, २००८

gkfnZd mnxkj

पुरातन पुरुष एक ऐसा प्रेमपूर्ण कार्य है जो साधकों को अवतार मेहेरबाबा के जीवन और कार्य की झलकियाँ देने के लिये किया गया है। मैं अपने प्रियतम के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होंने अपने जीवन और कार्य से संबंधित कहानियों को एकत्र करने, उनका संशोधन करने और उनकी सत्यता प्रमाणित करने के लिये मुझे शक्ति और उत्साह दिया ताकि पाठकों को नवीन आध्यात्मिक दृष्टिकोण प्राप्त हो सके।

यह कार्य, मेहेरबाबा के निकट रहने वाले शिष्य, श्री एरच जसावाला की मदद से संभव हो सका जिन्होंने अपनी डायरियों के साथ और दूसरे पत्र तथा लेख मुझे पढ़वाये। उन्होंने इस पुस्तक को पूरा करने के लिए आवश्यक हर सामग्री मुझे उपलब्ध कराई। अपनी व्यस्तता के बावजूद एरच ने कहानियाँ सुनाईं जो कभी मैंने और कभी उन साधकों ने रिकार्ड कीं जो मेहेराज़ाद में, जहाँ एरच अब रहते हैं, मण्डली हाल में उनके साथ बैठे। इसलिये मैं सबसे पहले एरच के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूँ।

एरच ने बताया कि उनके द्वारा बताये गये बहुत से तथ्यों की विषय सामग्री उन्हें मेहेरबाबा से प्राप्त हुई लेकिन उन्हें मेहेरबाबा के कथनों के रूप में नहीं लेना चाहिए। फिर भी, हालांकि वाक्य रचना एरच की है परन्तु मूल विषय मेहेरबाबा का है अतः इसे इसी रूप में स्वीकार करना चाहिये।

मैं विवियन और लुइस एगोस्तिनी के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के संपादन में मेरी मदद की। इस कार्य के प्रति उनके निःस्वार्थ समर्पण, शारीरिक मदद तथा निरंतर सहयोग के कारण ही मैं इस कार्य को पूरा कर सका।

मैंने कई घंटों के टेप की प्रतिलिपि की जिनमें से कई संयुक्त राज्य अमेरिका के बाबा प्रेमियों से उधार लिये गये थे; और मैं उन सबको

धन्यवाद देता हूँ। मुझे एरच के साथ गैरी क्लाइनर के इन्टरव्यू से बहुत मदद मिली और मैं उनकी प्रतिलिपि के लिये आभारी हूँ।

डेविड इतकोविट्ज ने मुझे मुखपृष्ठ के चित्र में सहायता दी और मैं उनका आभारी हूँ। क्रिस्टोफर ओटाओ ने डिज़ाइन का महत्त्वपूर्ण कार्य किया और मैं उनकी रचनात्मक भावाभिव्यक्ति के लिए अत्यत आभारी हूँ। मैं स्यू चमूरा के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने उन कैसेटों की, जो मुझे मिलीं, कई घंटे डबिंग की।

अर्नवाज़ दादाचाँजी ने मुझे हर कदम पर निरंतर मदद की व उत्साहित किया। उनके मार्गदर्शन के बिना इस पुस्तक का प्रकाशित होना संभव नहीं था। गाय माई जसावाला ने, अस्वस्थ होने के बावजूद, मुझे इन्टरव्यू के लिये समय दिया और मेरवान जसावाला ने मुझे फोटो और शीर्षकों को चुनने में मदद की।

अपनी पत्नी मेहरुख और पुत्र मेहराब को, आभार की सीमा से परे, मेरा स्नेह। वे लोग धीरे धीरे चलते थे ताकि मेरे काम में कोई बाधा न हो और उन्होंने मेरी व्यस्तता को खुशी के साथ स्वीकार किया। वे लोग मेरे माता–पिता की तरह, पृथ्वी पर अवतार मेहेरबाबा के रूप में, ईश्वर के गौरव का गुणगान करने की मेरी वचनबद्धता का आदर करते हैं।

● नौशेरवाँ अन्ज़ार

Hkfedk

अवतार मेहेरबाबा मेरे बचपन से ही मेरे जीवन में आ गये थे। उनकी भाव विभोर करने वाली उपस्थिति का अनुभव करने के साथ साथ, मैंने उनके प्रेम, दया, उदारता और करुणा के दैवी गुणों को पहचाना। उनमें बच्चों जैसी सादगी थी जो बिल्कुल स्पष्ट एवं संक्रामक थी।

ये गुण उन व्यक्तियों में भी प्रत्यक्ष थे जो मेहेरबाबा की सेवा के लिये जीवित रहे और जिन्हें मेहेरबाबा के पास रहने वाले शिष्य अथवा मंडली कहते हैं। उन मंडली जनों में से एक से मैं अपनी तरुण अवस्था के प्रारंभ में ही मिला था और मेहेरबाबा की सतत उपस्थिति के अभाव में, मेरे आध्यात्मिक जीवन पर, उनका महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। यह मंडली जन एरच बेहरामशा जसावाला थे जो उस समय एक स्वस्थ नवयुवक थे लेकिन अब अपनी आयु के सातवें दशक में हैं। उनके विषय में मेहेरबाबा ने २५ मई १९६५ को कहा था, ''अगर मैं व्यक्तिगत रूप से कभी किसी व्यक्ति का साथ पसंद करता हूँ, तो वह एरच हैं।''

मैंने एरच को सबसे पहले छठे दशक के शुरू में एक पूरी तरह समर्पित सेवक के रूप में देखा जो मेहेरबाबा की व्यक्तिगत जरूरतों और आराम का ध्यान रखते थे। यह सेवा उन्होंने ३० वर्ष तक की और जिसके विषय में वे अत्यंत स्वाभाविक दीनता के साथ कहते हैं, ''मैंने उनका दास होने की अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग किया।''

कई सालों के बाद अपने इष्ट और स्वामी के प्रति उनका यह विशेष समर्पण सभी जनों को भलीभाँति ज्ञात हो गया। हजारों लोगों के लिये, जो मेहेरबाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये आते थे, मेहेरबाबा के हाथों के संकेतों व उनके भावों की व्याख्या करने की उनकी अहम् भूमिका सबको मालूम थी। संकेतों व भावों की व्याख्या करने की उनकी भूमिका ऐसी थी जिसका वर्णन आस्ट्रेलिया के कवि फ्रांसिस ब्रैबेजोन ने उचित ढंग से इस प्रकार किया है ''ईश्वर की जिह्वा'' (जीभ), क्योंकि यह भूमिका मेहेरबाबा के विचारों, शिक्षाओं और संदेशों का, गश्तीपत्रों, पत्रों और तारों के माध्यम से आदान प्रदान का कार्य भी करती थी।

सन् १९५२ में प्रियतम बाबा ने एरच को भारत में एक शहर से दूसरे शहर जाकर उनके सत्य और प्रेम का संदेश देने को कहा था। इस प्रकार वह निःसंदेह उन्हें भावी मानवता के लिये इस रूप में तैयार कर रहे थे जो पुरातन पुरुष के अवतरण का साक्षी हो और बाद में जो लोग सत्य की खोज करें उन्हें अवतरण से संबंधित घटनायें बता सकें।

आज, जब साधक असीम महासागर से एक बूंद प्राप्त करने के लिये प्यास और उत्कंठा के साथ हर माह, हर वर्ष मेहेराबाद और मेहेराज़ाद की यात्रा करते हैं तो एरच उनको पृथ्वी पर ईश्वर की सत्ता के बारे में बतलाते हैं।

ये साधक, बम्बई के दक्षिण पूर्व में लगभग १८० मील दूर अहमदनगर जिले के मेहेराबाद में एक छोटी पहाड़ी पर स्थित, गुम्बद के आकार की पुरातन पुरुष की समाधि पर माथा टेकने के लिये दुनियाँ के कोने कोने से आते हैं। अपनी तीर्थ यात्रा के दौरान, वे मेहेरबाबा के भूतपूर्व निवास स्थान, मेहेराज़ाद की यात्रा भी करते हैं और वहाँ पर रहने वाले मंडली जनों से अपने प्रभु की सेवा में व्यतीत किये गये आश्चर्यजनक और कठिन दिनों की कहानियाँ सुनते हैं।

एरच उनकी तीर्थ यात्रा के उद्देश्य की इन शब्दों में व्याख्या करते हैं, ''यह कहा जाता है कि अनन्त सनातन सत्ता (ईश्वर) का तेज ऐसा है कि हमारे लिये उसे उसके असली रूप में देख पाना उसी प्रकार असंभव है जिस प्रकार नंगी आंखों से सूर्य को देख पाना हमारे लिए असंभव है। इसलिये यह हमारे लिये सबसे अच्छा है कि हम उस शब्द की ओर ध्यान दें जो उसके तेज को ढके हुए है, और वह शब्द दूसरे कई शब्दों को जन्म देता है जो उसके प्रेमियों के जीवन की कहानियों की रचना करते हैं। इसलिये उस महान सत्ता (ईश्वर) के वचनों की शरण लो ताकि एक दिन तुम उसे उसके असली रूप में देख सको।''

एरच का जन्म बम्बई में १३ अक्टूबर, सन् १९१६ को हुआ था। उनके पारसी माता पिता ने बड़े प्रेम से उनका पालन पोषण किया। उनके स्कूल के शुरू के दिनों में, प्रार्थना में उनकी असाधारण रुचि से उनके शिक्षक

आश्चर्यचकित हो गये। वे दूसरे बच्चों को प्रार्थना करना सिखाते थे, और प्रायः उन्हें रात में प्रार्थना में लीन पाया जाता था। बचपन में उन्हें भजन एवं आध्यात्मिक गाने सुनने का शौक था और उनका हृदय इतना दयालु एवं प्रेमपूर्ण था कि कभी कभी बिना एक कौर खाये अपना खाना गरीबों को दे देते थे।

कालेज में वे प्रचलित वेशभूषा के प्रति उदासीन थे और साधारण भारतीय कपड़े पहनते तथा अपना सिर मुड़ाये रहते थे। एरच के पिता ने उनके दोस्तों से एरच को समझाने के लिए कहा कि वे अच्छे कपड़े पहनें किन्तु दोस्तों ने कहा कि एरच इतने अधिक दयालु एवं प्यार करने वाले थे कि अपने इस स्वभाव के कारण वह हमेशा सजे धजे लगते थे।

जब एरच केवल ६ साल के थे, मेहेरबाबा नागपुर में जसावाला परिवार के घर आये और एरच को अपने साथ रखने की अनुमति माँगी। एरच की माँ गायमाई ने अपनी सहमति दे दी किन्तु उनके पिता बेहरामशा की इच्छा नहीं थी। एक वर्ष बाद वे मेहेरबाबा से अहमदनगर में उस समय मिले जब वे भजन कीर्तन करते हुये तीर्थयात्रियों के एक दल के साथ थे। उस समय बाबा गायमाई और एरच की ओर मुड़े और कहा, ''मैं असली विठोबा (ईश्वर) हूँ और ये मनुष्य इसे नहीं जानते हैं।'' वे तीर्थयात्री विठोबा के दर्शन के लिये पंढरपुर जा रहे थे और बाबा के कथन का संकेत इसी ओर था।

जैसे जैसे मेहेरबाबा अपने ईश्वरत्व की झलकियाँ देते रहे, जसावाला परिवार में उनके प्रति प्रेम व भक्ति बढ़ती गई। एरच उस समय की घटना बताते हैंः—

''जब मेरे माता पिता मेहेरबाबा से पहली बार मिले, वे जवान थे और अपने माथे पर अक्सर रूमाल बाँधे रहते थे। एक बार जब वे अपने एक शिष्य के घर गये, मेज़बान ने उनकी फोटो खिंचवाई और मेरी माँ ने इस फोटो की एक बड़ी कापी लेकर हमारे घर में लगा दी।

''एक दिन कालेज के एक प्रोफेसर हमारे घर आये। वह १९३२ में लंदन में बाबा से मिल चुके थे और उनके साथ हमारे संबंध को जानते थे।

उस फोटो को देखकर, उन्होंने मेरी माँ से वह फोटो उधार माँगी ताकि वह अपने लिये वैसी ही फोटो बनवा सकें।

''दो दिन बाद, हमें बाबा का तार मिला जिसमें लिखा था, ''तुमने मुझे अपने घर से क्यों निकाल दिया है ?'' बाबा की इस पूंछतांछ से मेरी माँ बहुत परेशान हो गई क्योंकि वह इस तार का अर्थ नहीं समझ पा रही थी। अन्त में उनकी नज़र दीवार पर खाली स्थान की ओर गई, जहाँ बाबा की फोटो लगी थी और उनकी समझ में सब आ गया। उन्होंने वह फोटो लाने के लिये मुझे प्रोफेसर के पास भेजा।

''कई वर्षों के बाद, बाबा पूना में हमारे घर आये और सभी कमरों में घूमते रहे। वह इसी फोटो के सामने रुककर उसे ध्यानपूर्वक एकटक देखते रहे। फिर उन्होंने मेरी माँ और बहिन से उस फोटो की आरती करने को कहा। बाबा ने उस फोटो को प्रणाम किया और कहा, 'इस फोटो में मैं अपने आपको अपने असली रूप में पाता हूँ'।''

मई १९३८ में, मेहेरबाबा की ओर से पहला बुलावा आने से थोड़ा पहले, जिसके कारण एरच बाबा के साथ रहने लगे, उन्होंने एक स्वप्न देखा जो इस बात का संकेत था कि वह सब कुछ छोड़कर अपने स्वामी का अंतिम समय तक अनुसरण करेंगे।

स्वप्न में, उन्होंने मेहेरबाबा को अपने (एरच के) माता पिता के साथ अपने घर से दूर जाते देखा। उनके माता पिता बाबा के दोनों ओर थे और दोनों बाबा के हाथ पकड़े हुए थे। एरच बाबा के बगल में थे और वे भी बाबा का हाथ पकड़े थे। तब बाबा ने उनकी माँ की ओर मुड़कर पूछा, ''क्या घर में ऐसी कोई खाने पीने की चीज़ है जो खराब हो सकती है ?'' मेरी माँ ने बताया कि केवल थोड़ा सा दूध था। तब बाबा ने एरच को दूध का बर्तन ज़मीन में गाड़ने और फिर अपने साथ आने की आज्ञा दी।

बाबा के साथ रहने के शुरू के महीनों में, एरच को आश्रम में मस्तों की देखभाल करना सिखाया गया, लेकिन एक वर्ष बाद उन्हें बाबा के व्यक्तिगत सेवक और उनके साथी के रूप में चुन लिया गया।

मेहेरबाबा के अंग्रेज शिष्य डा. विलियम डंकिन ने लिखा है, ''शुरू के वर्षों में एरच का मुख्य काम मस्त आश्रमों में था, लेकिन अपने स्वस्थ शरीर और अपने कभी भी विचलित न होने वाले शान्त स्वभाव के कारण, मेहेरबाबा द्वारा की गई बहुत सी यात्राओं में वे एक अनमोल पूंजी बन गये थे। वे कभी न थकने वाले और आत्म–त्याग का साकार रूप हैं। वह जो कुछ करते हैं, चुपचाप करते हैं, इसीलिये बाबा की निकट मंडली जनों के अतिरिक्त बाहर के बहुत कम लोग इस सच्चाई को जान पाते हैं कि उन्होंने मस्त कार्य तथा दूसरे क्षेत्रों में बाबा के लिये कितना अधिक कार्य किया है।''

प्रियतम बाबा के शरीर छोड़ने के शुरू के कुछ दिनों के बारे में, बाबा की बहिन मनी एस. ईरानी ने बताया :

''एरच ने हमें याद दिलाया कि हम मंडली जनों को वही करते रहना है जो बाबा हमसे चाहते थे—उनके प्रेम और सत्य के संदेश की मशाल को ऊँचा उठाये रखना। यह समय अपने बारे में सोचने का नहीं बल्कि यह सोचने का है कि बाबा हमसे क्या चाहते हैं और इस तरह हम उन्हें प्रसन्न करें। उनके इस कथन ने हमें उचित दृष्टिकोण प्रदान किया। इस तरह हमारे दिलों में हमारे नुकसान की भावनाओं के लिये बहुत कम जगह रह गई।

''पूना में हुये दर्शन के तुरंत बाद, एक दिन सुबह एरच ने मुझसे कुछ कागज लाने के लिये कहा जो बाबा ने मेरे पास रखे थे। लेकिन मैं इसके बारे में बिल्कुल भूल गई और शाम हो गई। जब मैं कागज लेकर पुरुषों के कमरों में गई, उस समय सूरज डूब रहा था और लालटेनें जलाई जा रही थीं।

''मैंने एरच को उनके केबिन के बाहर देखकर कहा कि मैं कागज ले आई थी। लेकिन मेरी ओर आने की बजाय, वह विपरीत दिशा में आश्रम के पास स्थित खेतों की ओर चलने लगे। उन्होंने मुझे अपने पास आकर, कुछ सुनने का संकेत किया।

"उन्होंने पूछा, 'क्या तुम्हें कुछ सुनाई दे रहा है?' ध्यान से सुनने पर मुझे खेतों के दूसरी ओर से भेड़ों की आवाज बा–बा, बा–बा, बा–बा सुनाई दी। ऐसा लगता था जैसे बार–बार बाबा का नाम दोहराया जा रहा हो।

"एरच ने पूछा, 'क्या तुम्हें भेंड़ें दिख रही हैं ?' कुछ भेड़ें सफेद थीं और व्याकुलतापूर्वक इधर उधर चल रही थीं, इसीलिये वे मुझे दिखाई दे रही थीं।

"एरच ने फिर पूछा, 'क्या तुम्हें बाईं ओर कुछ दिख रहा है ?' मुझे वहाँ पर कुछ नहीं दिखा क्योंकि अंधेरा बहुत था। फिर भी, ध्यान से देखने पर मुझे एक काली आकृति नज़र आई जिसे मैं पहले एक पत्थर समझी थी। मुझे अचानक समझ में आया कि वह चरवाहा था जो घर का बुना हुआ कम्बल ओढ़े एक चट्टान की तरह शान्त बैठा हुआ था।'

"एरच कहते गये : 'अंधेरे के कारण भेड़ें सोचती हैं कि उनका चरवाहा उन्हें छोड़कर चला गया है, इसीलिये वे व्याकुल होकर उसे बुला रही हैं और उसे ढूँढ रही हैं। लेकिन चरवाहा भेड़ों को छोड़कर नहीं गया है। वह अभी भी वहाँ पर उनकी निगरानी और रक्षा कर रहा है और वह वहाँ पर रात भर रहेगा। सुबह होने पर भेड़ें देखेंगी कि उनका चरवाहा पूरे समय उनके साथ था।'

"एरच अपनी अन्तर्दृष्टि द्वारा मुझे जो कुछ बता रहे थे, मैं समझ गई।" एरच कहते हैं : इतनी लम्बी अवधि में, 'मेहेरबाबा के दास' के रूप में, उनके विस्तृत एवं विभिन्न अनुभवों ने उन्हें प्रियतम अवतार के अनन्त ज्ञान का उत्तराधिकारी बना दिया है। अब उन्होंने अपने मौन को त्याग दिया है ताकि हम एक बहुमूल्य खज़ाने के हिस्सेदार हो सकें। हम लोग वास्तव में बहुत भाग्यशाली हैं क्योंकि इस पुस्तक में उन्होंने इतने अधिक प्रेम के साथ जो कुछ प्रस्तुत किया है, हम उसे प्राप्त करने के अधिकारी बन सके।

● नौशेरवाँ अन्ज़ार

ikjEHk

पारसी परिवार में पैदा होने के कारण मेरे माता–पिता ने मेरा पालन–पोषण पारसी धर्म के पुरातन नीति वचनों–अच्छे विचार, अच्छे वचन और अच्छे कार्यों के आधार पर किया। मेरे जीवन के शुरू के वर्षों में मुझे सारी सुविधायें उपलब्ध थीं–प्यार करने वाले माता–पिता, सुन्दर वातावरण और एक आरामदायक घर–घर मेरे चारों ओर प्रेम और ममता का निरंतर आदान प्रदान होता था और कुछ भी मेरी मर्ज़ी के प्रतिकूल नहीं था।

मेरे जन्म के समय मेरी माँ सोलह वर्ष की थीं। मेरे पिताजी कलकत्ता में देश की सबसे बड़ी मद्यशालाओं में से एक के प्रबंधक थे। इसलिये मेरी माँ के पास साथ देने के लिए केवल मैं था। परिणामस्वरूप उन्होंने मुझे अपना अथाह प्रेम व ममता दी। मुझे अच्छी तरह खिलाया पिलाया और इसीलिये मैं बड़ा होकर हृष्ट पुष्ट बालक बना। जब मैं लगभग ६ वर्ष का था, मेरे पिताजी ने यह नौकरी छोड़ दी और ब्वायलर्स तथा कारखानों के निरीक्षक के रूप में कार्य करने लगे। इस नौकरी में उनका मुख्य कार्यालय नागपुर में था, परन्तु वे निरंतर यात्रा करते रहते थे।

मेरी माँ को पिताजी के साथ प्रायः इन यात्राओं पर जाना पड़ता था। एक बच्चे के साथ यात्रा अत्यंत कठिन होने के कारण, मुझे नासिक में एक स्कूल के छात्रावास में रखने का निश्चय किया गया। वहाँ पर सबसे कम आयु का होने के कारण, प्रधानाध्यापक एवं उनकी पत्नी ने मुझे अपने बच्चे के रूप में अपनाया और छात्रावास के शयनागार की बजाय, मुझे अपने घर में एक छोटा कमरा दे दिया। इस भली महिला ने मुझे अत्यंत स्वादिष्ट खाना खिलाया और उस समय मैंने सबसे अधिक स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया।

उसी समय मेरे पिताजी ने नागपुर में एक बड़ी रियासत ली जिसमें "मैरी लॉज" नामक बड़ा बंगला भी था। मेरी माँ, यह सोचकर कि यह उनके व्यवस्थित होने तथा व्यक्तिगत रूप से मेरे पालन पोषण पर ध्यान देने का समय था, मुझे नागपुर ले आईं।

मेरी क्रिसमस की एक महीने की छुट्टी के दौरान एक दिन, अहमदनगर में रहने वाले मेरे मामाजी ने, मेरी माँ को पत्र लिखा कि वह किसी ऐसे व्यक्ति से मिले थे जो वह 'एक' हो सकता था जिसकी सब आशा कर रहे थे, वह 'एक' जिसकी प्रतीक्षा पारसी लोग हजारों वर्षों से कर रहे थे। इसलिये उन्होंने हमें मेहेरबाबा नाम से इस व्यक्ति से मिलने का निमंत्रण दिया।

मेरी माँ ने, जो आध्यात्मिक विषयों में सदैव रुचि रखती थीं, परखने का निश्चय किया और मेरी दो बहिनों के साथ हम लोग अहमदनगर गये। मैं केवल ६ वर्ष का था अतः मेहेरबाबा अथवा अपनी यात्रा के उद्देश्य के बारे में मैं कुछ नहीं जानता था। मैं मात्र एक खिलाड़ी बालक था जो बच्चों की तरह पेड़ों पर झूलना और चारों ओर दौड़ना पसंद करता था। लेकिन नागपुर से दूर जाकर घूमने के विचार ने मुझे उत्साहित कर दिया।

हमने एक गाड़ी में यात्रा की और अन्दर जगह न होने से मेरी माँ ने मुझे गाड़ी के पीछे बाहर बैठने का निर्देश दिया। जिस समय घोड़े सरपट चाल से मेहेराबाद की ओर दौड़ रहे थे, मैं बाहर बैठा इस यात्रा का आनंद ले रहा था। हम मेहेराबाद के पास ही थे जब एक जगह मैंने अचानक अपनी माँ को चिल्लाते हुए सुना, "एरच, कूदो" और मैं कूद गया लेकिन कूदते समय मेरे टखने में थोड़ी चोट लग गई। हमारा परिवार उस ओर बढ़ा जहाँ लोगों का एक समूह बैठा हुआ था।

मैंने देखा कि उस समूह के बीच में एक आदमी बैठा हुआ था जिसके बगल में स्लेटों का ढेर था जो लिखने में इस्तेमाल की गईं थीं। यह मेहेरबाबा थे। मुझे देखकर उन्होंने अपनी ओर आने का इशारा किया। मैंने उन्हें रोते हुये बताया कि मुझे चोट लग गई थी। उन्होंने मुझे अपनी गोद में बैठाकर, प्यार से गले लगाकर चुप कराया। इस अजनबी आदमी ने मेरी देखभाल करके मुझे खुश कर दिया और इससे मेरे अंदर प्रेम की जो भावनायें उत्पन्न हुईं, मुझे अभी भी याद हैं। उन्होंने अपने रूमाल से मेरी चोट पर पट्टी बाँधी। थोड़ी देर बाद उन्होंने मिठाइयाँ बाँटीं और उनके बारे में मेरी यह तत्काल प्रतिक्रिया थी कि वे केवल दयालु और प्रेम करने वाले ही नहीं हैं, बल्कि अत्यंत उदार भी हैं।

मेरी छुट्टियों के बाद मुझे धर्मार्थ नियुक्त व्यक्तियों (मिशनरीज़) द्वारा चलाये जा रहे एक अच्छे रोमन कैथोलिक स्कूल में भर्ती कराया गया। यहाँ पर केवल एक बात से मैं परेशान था कि जो विद्यार्थी कैथोलिक नहीं थे, उन्हें कैथोलिक विद्यार्थी "मूर्तिपूजक" कहकर चिढ़ाते थे। वे मुझे "मोटा" भी कहते थे लेकिन मुझे इसकी परवाह नहीं थी क्योंकि मैं वास्तव में मोटा था। मुझे दूसरे नाम पर आपत्ति थी क्योंकि मैं अपने आपको ईश्वर में सच्चा विश्वास रखने वाला मानता था।

कुछ वर्षों बाद मुझे मालूम हुआ कि हमारे पाठ्यक्रम में प्रश्न–उत्तर के रूप में शिक्षा शामिल थी, लेकिन जो विद्यार्थी कैथोलिक नहीं थे, उन्हें इससे अलग रखा गया था और उन्हें कक्षा में पीछे बैठाया जाता था। मुझे यह भेदभाव बहुत बुरा लगा।

मैं भी शैतानियाँ करता था जिसके लिये मुझे अक्सर छड़ी से मार पड़ती थी। फिर भी, मैं एक अच्छा विद्यार्थी था। मेरी योग्यता के बावजूद, वार्षिक सत्र के अंत में मुझे बहुत कम नम्बर मिले। परीक्षा में अंकों का एक बड़ा हिस्सा नये व पुराने टेस्टामेन्ट की पढ़ाई के लिये रखा गया था और उसमें, जो विद्यार्थी कैथोलिक नहीं थे, उन्होंने भाग नहीं लिया था।

हर दिन हालात खराब होते जा रहे थे। जो विद्यार्थी कैथोलिक नहीं थे उन्हें बाइबिल की कक्षाओं में जाने की अनुमति नहीं थी और इन कक्षाओं के लिये निश्चित समय में उन्हें खेलने की भी आज्ञा नहीं थी। एक दिन दूसरे विद्यार्थी की गल्ती के लिये मेरे कक्षाध्यापक ने मुझे छड़ी से बुरी तरह मारा। इसलिये प्रधानाध्यापक से असंतोष जताने के लिये "मूर्ति पूजक" संगठित हो गये।

मैंने प्रधानाध्यापक को अपने शरीर पर छड़ी मारने के निशान दिखाये और जो विद्यार्थी कैथोलिक नहीं थे, उनके साथ होने वाले भेदभाव के बारे में उन्हें विस्तार से बताया। उन्होंने मुझे वचन दिया कि मेरे द्वारा बताई गई बातों पर वे विचार करेंगे।

अगले दिन हमें स्कूल के सभागृह में एकत्र होने के लिए कहा गया। वहाँ प्रधानाध्यापक ने हमें स्कूल की स्थापना के इतिहास की रूपरेखा

बताई तथा धार्मिक शिक्षा संबंधी इसकी नीतियों की व्याख्या की। अचानक उन्होंने घोषणा की कि धार्मिक कक्षाओं में वे विद्यार्थी भी जा सकते थे जो कैथोलिक नहीं थे, लेकिन कक्षाओं में जाना चाहते थे। दूसरे विद्यार्थी उस समय के दौरान बाहर जाकर खेल सकते थे। फिर प्रधानाचार्य ने मुझसे पूछा, ''जसावाला, तुम्हारा क्या निर्णय है ?''

मैं इससे आश्चर्यचकित हो गया। हालांकि मैं बाहर जाने और खेलने के लिये व्याकुल था, मेरे पास यह कहने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं था, ''फ़ादर, मैं कक्षाओं में जाऊँगा।'' प्रधानाचार्य ने मुस्कराकर कहा, ''मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। अब किताबें खरीदो और अपनी पढ़ाई शुरू करो।''

अर्धवार्षिक परीक्षा में मैं बाइबिल के अध्ययन में ही सर्वोत्तम नहीं रहा बल्कि कक्षा में भी प्रथम रहा। मैं शीघ्र ही कैथोलिक भाइयों और फ़ादर्स का प्रिय बन गया क्योंकि उन्हें मुझमें अपना धर्म छोड़ने की संभावना दिखाई देती थी। मेरे माता पिता मेरी सर्वोत्तम शिक्षा का प्रबंध करते रहे। उन्होंने मुझे घर पर कला और दस्तकारी सिखाने का भी प्रबंध किया, जहाँ मेरे लिये एक व्यायाम शाला भी बनाई गई थी। मुझे माँगने पर हर सुविधा उपलब्ध थी।

सन् १९३१ में एक दिन एक अजनबी हमारे दरवाजे पर आया और मेरी माँ को बताया कि वह मेहेरबाबा का भाई जाल था और बाबा उसके साथ आये थे। मेरी माँ ने उत्तेजनापूर्वक पूछा, ''अच्छा वे कहाँ हैं ? वह आपके साथ क्यों नहीं हैं ?'' उत्तर न देकर जाल ने थोड़ी दूर पर खड़े हुये एक ताँगे की ओर इशारा किया जिसमें बाबा बैठे थे। मेरी माँ अत्यंत प्रसन्न होकर ताँगे की ओर दौड़ीं और हमारे घर में बाबा के इस प्रथम आगमन पर उनका स्वागत किया।

इस समय मुझे स्कूल में धार्मिक निर्देशों के कारण कुछ कठिनाई होने लगी थी। मैं खोजपूर्ण प्रश्न पूछने लगा था और हर बार मुझे वही निराशा पूर्ण और असंतोषजनक उत्तर मिलते थे, ''बैठ जाओ। यह एक रहस्य है।'' प्रधान रूप से ईसाई वातावरण में बड़े होने के कारण, मेरे अन्दर अब ईसामसीह के दर्शन की प्रबल इच्छा पैदा हो गई थी। मैं ईसामसीह के

अवतरण के लिये लालायित था। एक बार मैंने प्रभु के द्वितीय आगमन के बारे में पूछा और मुझे याद है कि यह वही दिन था जब बाबा पहली बार हमारे घर आये थे। लेकिन मेरे प्रश्न के उत्तर में प्रश्नोत्तर रूप में शिक्षा देने वाले शिक्षक ने मुझे रूखाई के साथ झिड़क दिया।

मैं स्कूल की छुट्टी के बाद साइकिल से घर आ रहा था और जैसे ही मैं घर के पास आया, मैंने फाटक पर मेहेरबाबा को खड़े देखा। मैंने अपनी साइकिल फेंक दी और उनको प्रणाम करके कहा, ''बाबा मुझे क्षमा कीजिये।'' मैं वास्तव में यह नहीं जानता कि मैंने ऐसा क्यों कहा। बाबा ने मेरी ओर देखकर मेरा प्रगाढ़ आलिंगन लिया और जब हम अहाते में गये, उन्होंने मेरे कंधे पर अपना हाथ रख लिया। उन्होंने कहा, ''तुम्हारे आ जाने से मैं खुश हूँ। चलो, कुछ खेलें।'' और इसके साथ ही हमने अंटागोलियाँ खेलना शुरू कर दिया।

मैंने अपने सहपाठियों से वादा किया था कि मैं विभिन्न कक्षाओं के बीच होने वाले फुटबाल मैच में खेलूंगा। लेकिन अब मैं उलझन में था। हालांकि, मैं फुटबाल मैच के बारे में सोच रहा था जिससे मैं वंचित हो रहा था, फिर भी, मैं बाबा के साथ अंटागोलियाँ खेलता रहा। मैंने निश्चय किया कि भविष्य में मैं ऐसा नहीं होने दूँगा।

अगले दिन स्कूल से वापस आने पर, मैंने बाबा को फाटक पर प्रतीक्षा करते हुये दूर से देखा। पिछले दिन किये हुये निश्चय के साथ, मैं शीघ्र ही रास्ता बदलकर, पिछले दरवाजे से घर के अंदर गया। मैं जल्दी ही नहाकर पिछले दरवाजे से निकलकर, खेल के मैदान की ओर भागा। जब मैं शाम को देर से घर लौटा तो माँ ने पूछा कि स्कूल की छुट्टी के बाद मैं घर क्यों नहीं आया था। मैंने उन्हें बताया कि बाबा से बचने के लिये मैंने क्या किया था।

वह भौंचक्की रह गईं।

उन्होंने मुझसे पूछा, ''क्या तुम जानते हो, वे कौन हैं ?''

मैंने उत्तर दिया, ''नहीं, वे कौन हैं ?''

उन्होंने अपने विश्वास की गहराई के साथ कहा, ''वे जुरथस्त्र हैं जो फिर से आये हैं।'' क्योंकि मेरे हृदय में पहले से ही ईसामसीह थे इसलिये मैंने कहा, ''अगर वे जुरथस्त्र हैं तो क्या हुआ।''

मेरी बात से माँ परेशान हो गईं और नाराज़ होकर मुझसे बोलना बंद कर दिया। बाबा ने, जो उस समय तक घर में थे, मेरी माँ से सब कुछ जानने के बाद, मुझे प्रतिदिन खेल के मैदान में जाने के लिये उत्साहित किया और मेरे लौटने पर वह फुटबाल मैच के बारे में मुझसे विस्तार से प्रश्न पूछते थे। उनकी इस निकटता के कारण, मैं वर्णमाला तख्ती पर उनकी बात को उत्तरोत्तर शीघ्रता से पढ़ने लगा। रात में मैं उन कहानियों का आनंद लेता था, जो वे सुनाते थे।

मेहेरबाबा के नागपुर से चले जाने के बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं उनकी अनुपस्थिति को कितना अधिक अनुभव करता था। उनके साथ होने की जब भी मेरे अंदर तीव्र इच्छा उत्पन्न होती थी, मैं उन्हें फाटक पर प्रतीक्षा करते हुये पाता था। उनके लिए मेरी इस तीव्र चाह के कारण, एक या दो बार कक्षा में मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। प्रभु के दर्शन की मेरी तीव्र चाह के कारण, वह मेरे पास आये थे और मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया कि अपने अज्ञानवश एक बार मैंने किस प्रकार उनसे बचना चाहा था।

समय बीतता गया। मेरे माता पिता को बाबा के समाचार नियमित रूप से मिलते रहते थे। सन् १९३७ में मेरे माता पिता को नासिक में मेहेरबाबा के जन्मोत्सव में भाग लेने का निमंत्रण मिला। मेरी माँ बीमार थीं अतः केवल मेरे पिताजी ही जन्मोत्सव में शामिल हो सके। मेरी माँ को किसी भी दवा से फ़ायदा नहीं हो रहा था। किसी ने सलाह दी कि मैं रामकृष्ण मिशन के होम्योपैथिक डाक्टर स्वामी को उन्हें दिखाऊँ। मैंने रामकृष्ण मिशन में जाकर डा. स्वामी को अपनी माँ का हाल बताया और उनसे दवा देने के लिए कहा। उन्होंने मरीज़ को देखे बिना दवा देने से इन्कार कर दिया इसलिये मैं उन्हें कार से घर ले आया।

जैसे ही वह हमारे रहने के कमरे में आये, उन्होंने दीवार पर मेहेरबाबा के बड़े बड़े चित्र देखे और वे उनकी ओर एकटक देखते हुए, वहाँ

पर जड़वत् खड़े रह गये। उन्होंने मुझसे पूछा, ''क्या तुम मेहेरबाबा को जानते हो ?'' मैंने उन्हें बताया कि मेहेरबाबा अक्सर हमारे घर आते थे। जब मैंने डा. स्वामी को एक चित्र से दूसरे चित्र तक धीरे धीरे चलते हुये यह कहते सुना, ''तुम कितने भाग्यशाली हो !'', मुझे उनका मेहेरबाबा में रुचि प्रकट करना बहुत ही असाधारण लगा। तभी उन्हें मेरी माँ की बीमारी की बात याद आई और उन्होंने परीक्षण के बाद मेरी माँ के लिए कुछ होम्योपैथिक दवाइयाँ लिख दीं।

मैं उन्हें कार से वापस ले गया, लेकिन गरीबों के लिये खोले गये अपने अस्पताल में जाने के बजाय, डा. स्वामी मुझे स्वामी भास्करन के पास ले गये जो रामकृष्ण मिशन के अध्यक्ष थे। डा. स्वामी ने उन्हें बताया कि मेहेरबाबा मेरे घर अक्सर आते हैं। स्वामी भास्करन ने तब मुझसे प्रार्थना करते हुए कहा, ''कृपया मुझ पर एक उपकार करो। जब मेहेरबाबा तुम्हारे घर आयें तो क्या तुम मुझे सूचित करोगे ? मैं उनसे व्यक्तिगत रूप से बात करना चाहता हूँ क्योंकि मैं बहुत से प्रश्नों से परेशान हूँ।'' मैंने उनसे कोशिश करने का वादा किया। मुझे इस बात पर बहुत गर्व हुआ कि इतने ऊँचे इंसान मुझसे उपकार करने को कह रहे हैं।

मेहेरबाबा ने मेरे पिताजी को उसी वर्ष संदेश भेजा कि वे नागपुर में दर्शन देना चाहते थे। यह समाचार जंगल की आग की तरह फैल गया। बाबा के आने पर मैंने उनसे स्वामी भास्करन और डाक्टर को दर्शन देने के लिए कहा जिसे उन्होंने मान लिया। दर्शन के लिये निश्चित दिन, मैं उन लोगों को लेने के लिये कार से मिशन गया। उनके गाड़ी में बैठने से पहले मैंने स्वामी भास्करन को अपने प्रश्नों की सूची लेने की याद दिलाई। उन्होंने कहा, ''मैंने ले ली है और इसी के कारण मैं तुम्हारे साथ चल रहा हूँ।''

स्वयं को बहुत ही महत्त्वपूर्ण अनुभव करते हुये, मैं भीड़ को कठिनाई से पार करता हुआ दर्शन स्थल पर पहुँचा और बाबा से उनका परिचय कराया। बाबा ने उनका मुस्कुराहट के साथ स्वागत किया और उनसे आगे की लाइन में बैठने की प्रार्थना की। उस समय मुझे बाबा के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था। इसलिये मैं सरलता पूर्वक बाबा को बार बार याद

दिलाता रहा कि ये दोनों व्यक्ति उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने आये थे और बाबा हर बार सिर हिला देते थे। मैं स्वामी भास्करन से भी आग्रह करता रहा कि वे अपने प्रश्नों की सूची तैयार रखें लेकिन शीघ्र ही मैं उन दोनों की आँखों से आँसू बहते देखकर आश्चर्य चकित रह गया। मैं इन दोनों आदरणीय वृद्ध पुरुषों को मेहेरबाबा के सामने, जो उनसे उम्र में बहुत कम थे, रोते देखकर व्याकुल हो गया।

लगभग डेढ़ घंटे के बाद, बाबा ने संकेत किया कि मैं उन लोगों को वापस मिशन ले जाऊँ। उनको यह बताने पर, वे बाबा का आलिंगन प्राप्त करने के लिये खड़े हो गये और फिर हम लोग वापस चल दिये। रास्ते में मैंने स्वामी भास्करन से उनके प्रश्नों की सूची के बारे में पूछा। उन्होंने कहा, ''बेटा, तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। केवल उनकी ओर देखने से ही मेरे सारे प्रश्नों का उत्तर मिल गया।'' मैं सचमुच चकित था क्योंकि मुझे थोड़ी सी भी कल्पना नहीं थी कि मेहेरबाबा कौन हो सकते थे और जिनके विषय में ये आदरणीय व्यक्ति ऐसी आश्चर्यजनक बातें कर रहे थे। अतः मैं केवल मौन रहा।

मेरे घर का वातावरण बहुत अधिक आध्यात्मिक था। यह स्वाभाविक था कि स्वामी भास्करन से मिलने के बाद मैंने सद्‌गुरु रामकृष्ण के बारे में पढ़ना शुरू किया। मेरी माँ ने मुझे ईश्वर, उसके प्रेमियों और विभिन्न अवतारों के बारे में कहानियाँ सुनाईं।

एक दिन हाकी खेलने के बाद, जब मैं साइकिल से घर जाने की तैयारी कर रहा था, एक दुबले, बूढ़े पुरुष ने, जो सड़क के किनारे बैठा था, खड़े होकर मुझसे पूछा, ''क्या मैं तुम्हारे घर खाना खाने के लिए आ सकता हूँ?''

''आप मेरे साथ अभी आ सकते हैं,'' मैंने भारतीय रीति के अनुसार उत्तर दिया जहाँ अन्तःप्रेरणा के द्वारा आत्मा तक पहुँचने की प्रकृति है।

''नहीं, मैं किसी दूसरे दिन आऊँगा,'' उसने कहा और चला गया।

मैंने अपने मित्रों से उस व्यक्ति के बारे में पूछा। उन्होंने मुझे बताया

कि उसका नाम मुक्का बाबा था। वह मौन रहता था अतः उनको उसे मुझसे बातें करते सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि वह हाल के दर्शन प्रोग्राम में उपस्थित था और बाबा ने स्वयं एक जीवनमुक्त के उदाहरण के रूप में उसका दृष्टांत दिया था, जिसका अर्थ है, वह व्यक्ति जिसने ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त कर लिया है लेकिन जिसका कोई कर्त्तव्य या काम नहीं है।

लगभग पन्द्रह दिन बाद, छुट्टी के कारण जब मेरे पिताजी घर पर थे, हमारे कुत्तों के भौंकने के साथ मुक्का बाबा हमारे घर के अहाते में टहलते हुये आये। चिथड़ों में एक व्यक्ति को देखकर मेरे पिताजी को आश्चर्य हुआ। मैंने उन्हें बताया कि वह मेरे निमंत्रण पर यहाँ खाना खाने आया था।

मेरे पिताजी ने पूछा, ''तुम्हारा मतलब है, तुमने उसे निमंत्रण दिया है ?''

कुत्तों की ओर कोई ध्यान न देते हुये, मुक्का बाबा सीधे मेरे पिताजी के पास आकर उनसे बोले, ''तुम अपने आपको क्या समझते हो ? मैंने तुम्हें इस स्थान की रक्षा करने के लिये रखा और तुमने मेरे पीछे कुत्ते लगा दिये। क्या तुम समझते हो कि यह स्थान तुम्हारा है ?''

मेरे पिताजी इतने अधिक चकित हो गये कि वह धीरे से इतना ही कह सके, ''हाँ, यह स्थान मेरा है।''

इस शोर को सुनकर, मेरी माँ घर से बाहर आ गईं और मैंने उन्हें मुक्का बाबा से अपनी भेंट की बात याद दिलाई जिसके बारे में मैंने उन्हें पहले ही बता दिया था। तब मुक्का बाबा ने उनसे पूछा, ''क्या तुम मुझे खाने के लिए भोजन दोगी ?''

जब मेरी माँ ने स्वीकृति में सिर हिलाया तो उन्होंने कहा, ''खाना खाने से पहले मुझे अपने शरीर की मालिश और स्नान करना है। मेरे शरीर की खाल देखो बिल्कुल सूख गई है। क्या तुम्हारे घर में शुद्ध मक्खन है?''

मेरी माँ ने उनकी सारी बातें मान लीं और उनके नहाने तथा मालिश के लिये ज़रूरी इन्तज़ाम कर दिये।

मुक्का बाबा ने भोजन के लिये विशेष रूप से बताया कि उन्हें तले हुये बैंगन, चावल, मसूर की दाल, एक सलाद, दही और मुलायम रोटियाँ (छिल्का निकाले हुये गेहूँ के आटे की) परोसी जायें।

मेरी माँ ने कहा कि रसोइया उनकी इच्छा के अनुसार खाना बना देगा लेकिन उन्होंने कहा, ''मैं किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा पकाया गया खाना नहीं खाऊँगा। क्या तुम खाना पकाना नहीं जानती हो ? मैं चाहता हूँ कि तुम खाना पकाओ।''

मेरे पिताजी गुस्सा हो गये लेकिन अपने सूक्ष्मग्राही स्वभाव के कारण, मेरी माँ ने इसे एक पवित्र व्यक्ति की सेवा करने का अवसर समझकर सहर्ष स्वीकार किया। मुक्का बाबा ने मालिश करके स्नान किया और इसके बाद स्वादिष्ट खाना खाया। उन्होंने मेरी माँ से कहा कि वह उनकी अतिथि सेवा से बहुत खुश थे और किसी दिन वह फिर आयेंगे।

हम उन्हें घर से जाते हुये देखने लगे लेकिन उन्होंने अचानक मुड़कर हमसे कहा, ''क्या एक अतिथि को विदा करने का यही तरीका है ?''

''हमें क्या करना चाहिये ?'' मेरी माँ ने पूछा।

''मेरे साथ फाटक तक आओ।'' मुक्का बाबा ने आज्ञा दी।

बाद में, इस भेंट पर विचार करने पर, मुक्का बाबा का हमारे घर आना एक शिक्षाप्रद घटना सिद्ध हुई। यह एक तरह का प्रारम्भिक प्रशिक्षण था जिसने हमें कुछ सीमा तक उस जीवन के लिये तैयार किया जो हमें अन्त में मेहेरबाबा के साथ बिताना था।

मई १९३८ में एक दिन मैं बाग में काम कर रहा था। उस समय मुझे मेहेरबाबा का मेरे लिये पहला तार मिला। इसमें लिखा था : ''तुरंत आओ और मुझसे पंचगनी में मिलो।'' इसको पढ़ने के बाद मैंने इसे जेब में रख लिया और अपना काम करने लगा। मेरी माँ ने डाकिये को मुझे तार देते हुये देख लिया था, इसलिये वे मुझसे इसके बारे में पूछने के लिये घर से बाहर आईं।

मैंने उनको तार दे दिया और उसे पढ़ने के बाद वह आश्चर्य से बोलीं, ''वह चाहते हैं कि तुम तुरंत आओ और तुम अभी तक पौधों की देखभाल में लगे हो।''

मैंने सहज ढंग से कहा, ''अपनी बागवानी खत्म करने के बाद मैं कल जाऊँगा।''

माँ ने उत्तेजित होकर कहा, ''तुम बिल्कुल नहीं समझते। क्या तुम नहीं समझते कि ''तुरंत आओ'' शब्द का क्या अर्थ है ?'' वह उस समय और अधिक परेशान हो गईं जब मैंने पौधों के विषय में हर संभव बहाने बनाना प्रारंभ कर दिया। जिस समय मैं उनसे इस प्रकार बहस कर रहा था, दूसरा डाकिया दूसरा तार लेकर आया और इसमें भी लिखा थाः ''तुरंत आओ और मुझसे पंचगनी में मिलो—मेहेरबाबा'' यह कोई नया तार नहीं था। मेरी माँ ने अपना मानसिक संतुलन खोते हुए मुझसे तुरंत पंचगनी जाने को कहा।

एक घंटे बाद गाड़ी जाती थी, इसलिये मैं बिना कोई कपड़ा लिये, कार से स्टेशन गया और वहाँ पर कार छोड़ दी। पंचगनी पहुँचने पर, मैं पूछते हुये वहाँ पहुँचा जहाँ बाबा ठहरे हुये थे। सीढ़ियों से ऊपर जाने पर, दरवाजा खुला देखकर मैं सीधे अंदर चला गया और सामने बाबा बैठे हुये थे।

''तो तुम आ गये,'' उन्होंने कहा।

''हाँ, बाबा,'' मैंने उत्तर देते हुये उन्हें प्रणाम किया।

''क्या तुम्हारे लिये प्रत्येक वस्तु का त्याग करके मेरे पास आना संभव है ?'' उन्होंने पूछा।

''आपकी कृपा से सब कुछ संभव है,'' मैंने बिना सोचे हुये उत्तर दिया।

''बहुत अच्छा। तब १ अगस्त को आओ,'' उन्होंने कहा।

मैं उन्हें प्रणाम करके जाने ही वाला था जब उन्होंने फिर पूछा, ''क्या १ अगस्त को तुम सबके लिये मेरे पास आना संभव है ?''

''आपकी कृपा से सब कुछ संभव है,'' मैंने पुनः कहा।

उन्होंने पूछा कि मैं कहाँ ठहरूँगा। मैंने कहा कि मैं कोई होटल ढूँढ लूँगा। तब उन्होंने कहा कि मैं अपनी इच्छा के अनुसार कहीं भी खाना खाने के बाद उनकी गुफ़ा में सो सकता था।

''क्या तुम गुफ़ा को जानते हो ?'' उन्होंने उस गुफ़ा की ओर संकेत करते हुये पूछा जो चीतों की घाटी (टाइगर वैली) के सामने है और जहाँ सन् १९२६ में उन्होंने बारह दिन तक उपवास व एकान्तवास किया था।

''हाँ बाबा,'' मैंने उत्तर दिया।

''वहाँ चीते हैं। क्या तुम चीतों से डरते हो ?''

''नहीं बाबा,'' मैंने गर्व के साथ कहा।

''ओह ! तुम चीतों से नहीं डरते। अगर तुम्हें चीता मिले तो क्या तुम उसे कान पकड़कर मेरे पास ला सकते हो ?'' उन्होंने मुस्कुराते हुये पूछा।

''मैं ले आऊँगा, बाबा,'' मैंने उत्तर दिया।

मैं खाना खाकर सो गया और अगले दिन घर के लिये चल दिया। गाड़ी में बैठते ही बाबा को दिये गये वचन की गंभीरता मुझे परेशान करने लगी। हम दो महीने में सब कुछ छोड़कर, १ अगस्त को बाबा के पास कैसे जायेंगे ?

मेरी बहिन की सगाई हो गई थी, मेरा भाई पढ़ रहा था और मुझे बनारस विश्वविद्यालय में भेजने की योजना थी। इसके अतिरिक्त, मेरे पिताजी अभी भी नौकरी कर रहे थे। जैसे ही ये विचार मुझे परेशान करने लगे, मुझे आश्वासन देती हुई एक आवाज़ मैंने सुनी, ''तुमने जो कहा था, वह था 'आपकी कृपा से सब कुछ संभव है' और मेरा मन शान्त हो गया। मैंने सोचा कि अगर ऐसा करना संभव नहीं होगा, तो यह भी मेहेरबाबा की मर्ज़ी होगी और इसके बाद नागपुर तक मेरी यात्रा सुखद रही।

नागपुर वापस आने पर मुझे कार वहाँ नहीं मिली जहाँ मैंने उसे छोड़ा था। घर पहुँचकर मुझे ज्ञात हुआ कि मेरे पिताजी स्टेशन से कार को घर

ले गये थे। उन्होंने मुझे कार को स्टेशन पर छोड़कर, पंचगनी जाने के लिये बहुत डाँटा। मैंने उनसे क्षमा माँगी जब कि मेरी माँ यह जानने के लिये बहुत उत्सुक थीं कि बाबा के साथ मेरी क्या बातें हुईं।

मैंने सब कुछ विस्तार से बताया। मेरी माँ यह कहते हुये प्रसन्नता से उछल पड़ीं कि मेहेरबाबा हमको सहारा दिये हुये हैं। हम लोग बहुत भाग्यशाली हैं क्योंकि हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त है। किन्तु ऐसा ही उत्तर मुझे अपने पिताजी से नहीं मिला।

मैंने पूछा, ''पापा, आपका क्या उत्तर है ?''

उन्होंने कहा, ''इतने वर्षों तक मैंने तुम सबकी खुशी के लिये काम किया और सब कुछ बनाया, लेकिन अगर तुम सब बाबा के चरणों में इससे अधिक प्रसन्नता का अनुभव करते हो, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।''

जब मैंने उन्हें इस उत्तर के लिये धन्यवाद दिया तो उन्होंने मुझसे कहा, ''मैंने इतने वर्षों में जो कुछ निर्माण कराया है और एकत्र किया है, वह सब तुम्हें बेचना होगा। मैं सभी जरूरी कागज़ों पर दस्तखत कर दूँगा लेकिन तुम्हें हर बात का ध्यान रखना होगा।''

मैंने उनकी बात मान ली और अपनी माँ की तरह मैं भी बहुत खुश था।

अगले दिन मैंने मेहेरबाबा को अपनी योजनाओं के बारे में सूचित करते हुये पत्र लिखा। मैंने इस बात का उल्लेख किया कि यद्यपि मेरे पिताजी को सेवा निवृत्त होने में छः महीने बाकी हैं, तो भी, अगर बाबा की मर्ज़ी हो तो वे अपनी नौकरी इसी समय छोड़ने के लिये तैयार हैं। बाबा ने उत्तर दिया कि मेरे पिताजी सहित पूरा परिवार १ अगस्त को आये और हमारे पहुँचने पर वह मेरे पिताजी को उनकी नौकरी के बारे में सलाह देंगे।

हमारी छोटी सम्पत्ति आसानी से बिक गई लेकिन मुख्य समस्या हमारी बड़ी रियासत को बेचने की थी। समय इतना कम था कि उचित खरीददार को ढूँढना और उससे संबंधित विभिन्न मामलों को देखना कठिन था। एक रात मुझे याद आया कि हमारे पड़ोस की एक पारसी महिला ने,

जो अक्सर हमारे घर आती थी, हमारे घर की प्रशंसा की थी और उसके पास ऐसा घर हो, ऐसी इच्छा भी जाहिर की थी।

अगले दिन सुबह मैं शीघ्र ही श्री व श्रीमती पोचा से मिलने गया। मैंने उन्हें बताया कि मेहेर बाबा के साथ रहने के लिये हमें अपनी सभी चीज़ें बेचनी थीं। इस पर वे आश्चर्यचकित हो गये। उन्होंने भी मेहेरबाबा के दर्शन प्रोग्राम में भाग लिया था लेकिन हमारे जीवन में घटनायें इस प्रकार मोड़ लेंगी, ऐसी उन्हें बिल्कुल आशा नहीं थी। पहले तो श्रीमती पोचा ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया लेकिन जब उन्होंने देखा कि मैं अपनी बात पर दृढ़ था, वे दोनों विचार करने के लिये दूसरे कमरे में चले गये। उन्होंने ३०,००० रु. देने का प्रस्ताव रखा जो अत्यंत हास्यास्पद था।

मैंने श्रीमती पोचा से कहा कि वे इस धनराशि से केवल बंगला ले सकती थीं लेकिन वे उस धनराशि में पूरी जायदाद चाहती थीं। उन्होंने कहा कि उनको बच्चों की शादियाँ करनी थीं और वह उससे अधिक मूल्य नहीं दे सकती थीं। मैंने इस पर आश्चर्य व्यक्त किया। क्योंकि हमारे दृष्टिकोण से, धन हमारा प्रमुख उद्देश्य नहीं था, इसलिये अन्त में मैंने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फिर मैंनें आवश्यक कानूनी दस्तावेज तैयार करवाये और मेरे पिताजी के उन पर दस्तखत करने के बाद, पोचा परिवार को जायदाद बेच दी गई।

इस प्रकार नागपुर से हमारे प्रस्थान की तिथि निश्चित हो गई और हम १ अगस्त को अहमदनगर आ गये। बाबा की इच्छानुसार, हममें से हर एक के पास केवल एक छोटा बक्स और होल्डाल था। बाबा के कहने से हम बाद में कार भी ले आये। हमारा परिवार आश्रम में स्थायी रूप से रहने लगा। केवल मैं बाबा के साथ यात्राओं में जाता था। मेरे पिताजी को, जो अभी तक सेवानिवृत्त नहीं हुये थे, बाबा से निर्देश मिलते रहे।

सन् १९३९ के प्रारंभ में मेरे पिताजी बाबा से मिलने आये। उस समय बाबा भोपाल में थे। वे लोग लगभग डेढ़ घंटे बातचीत करते रहे। बाबा ने निर्णय लिया कि मेरे पिताजी के सेवानिवृत्त होने तक, मेरी माँ, दो बहिनें और मेरा भाई बाबा के साथ मंडला में रहेंगे। सेवानिवृत्त होने के बाद मेरे

पिताजी भी बाबा के साथ रहकर, उनके निर्देशों का पालन करेंगे। उसके बाद, परिवार के दूसरे सदस्यों को जबलपुर जाकर रहना और मेरे भाई को स्कूल जाना था।

जिस समय बाबा बैरामंगला अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक केन्द्र के निर्माण की योजना बना रहे थे, मेरे पिताजी उनके साथ रहने के लिये आये। पिताजी के कार्य के अनुभव से केन्द्र की कार्यकारिणी समिति को कई व्यवहारिक एवं महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में सहायता मिली।

उस समय बाबा ने मेरी माँ को पत्र में लिखा, ''य़द्यपि शारीरिक रूप से तुम मेरे पास नहीं हो, मैं जानता हूँ कि तुम सबके मन, हृदय और आत्मायें मेरे पास हैं। मेरे प्रति तुम्हारा प्रेम और विश्वास मेरे लिये बहुत बहुमूल्य है।''

इस प्रकार बाबा हमारे परिवार का हर तरह से ध्यान रखते थे। मार्च के मध्य में मुझे परिवार के साथ मंडला भेजा गया। उस समय से अब तक बाबा के साथ हमारे जीवन व्यतीत होते जा रहे हैं, और उस जीवन से हमने सीखा है कि उनकी कृपा से सब कुछ संभव है और कुछ भी असंभव नहीं है।

मेहेरबाबा के संपर्क में मेरे आने की इस कहानी के अनुलेख (Postscript) का संबंध श्रीमती पोचा को नागपुर में बेची गई हमारी रियासत से है। बाबा की पश्चिम यात्रा से पूर्व, सन् १९५२ के प्रारंभ में, एक दिन उन्होंने मुझे अपने परिवार से मिलने के लिये भेजा जो उस समय पूना में रह रहा था। यह प्रबंध उस समय किया गया था जब बाबा ने अक्टूबर, १९४९ में नई ज़िन्दगी के शुरू में मेहेराबाद आश्रम को बंद कर दिया था। बाबा ने मुझे एक रुपया देकर प्रार्थना की कि मेरी माँ द्वारा मुझे दिये गये भोजन के बदले में मैं उन्हें यह दे दूँ।

नई ज़िन्दगी में मैं बाबा के साथ यात्रा करता रहा था। एक लम्बे समय के बाद मुझे देखकर और नई ज़िन्दगी के मेरे अनुभव सुनकर मेरी माँ बहुत खुश हुई। इसी समय मेरी माँ ने मुझे यह कहानी सुनाई कि किस प्रकार मन में एक खास उद्देश्य के साथ श्रीमती पोचा मुझे ढूँढती हुई आई थीं।

श्रीमती पोचा ने बताया कि उनके बच्चों का विवाह हो गया और वे खरीदे हुये अपने नये मकान में चले गये, लेकिन उन्हें एकान्त का आनंद नहीं मिल सका। श्रीमती पोचा ने बताया, ''हमने हर कमरे में मेहेरबाबा को देखा'' अतः खरीदने के छः महीने के अंदर हमने मकान बेच दिया।

श्रीमती पोचा ने मेरी माँ को बताया कि मकान खरीदते समय वास्तव में बाज़ार भाव के अनुसार मूल्य देने के लिए उनके पास रुपये थे, लेकिन अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में मुझे धोखा देने के लिये, उन्होंने भविष्य में होने वाले अपने बच्चों के विवाह के बोझ का बहाना किया था। उस समय से उनकी अन्तरात्मा उन्हें इतना अधिक धिक्कारती रही कि वह किसी भी तरह मानसिक शान्ति नहीं पा सकीं।

परिणाम स्वरूप, चौदह वर्ष बाद श्रीमती पोचा नोटों से भरा हुआ सूटकेस लेकर, मुझे ढूँढती हुई आईं और मेरी माँ से उस धन को ले लेने की प्रार्थना की। मेरी माँ ने धन नहीं लिया और उन्हें सलाह दी कि वे इसे मेहेरबाबा के नाम पर गरीबों में बाँट दें।

इस प्रकार मैं प्रभु, युग अवतार, अवतार मेहेरबाबा की सेवा में रहा हूँ जिनके प्रेम और कृपा ने मुझे आज तक सहारा दिया हुआ है।

● एरच बी. जसावाला

● ● ●

यादें

b'oj dk vorj.k

फ्रांसिस ब्रेबेजोन द्वारा लिखी गयी आरती में उन्होंने यह भाव व्यक्त किये हैं 'सत्य और सत्य का शरीर, दैवी अवतार' जो मेरे विचार से ईश्वर के अवतरण की व्याख्या सुंदरतापूर्वक करते हैं। यद्यपि संस्कृत के शब्द 'अवतार' के अनुसार ईश्वर के अवतरण का अर्थ है यथार्थता (Reality) का माया रूपी भ्रम (illusion) में नीचे उतरना, लेकिन इस युग के लोगों के लिये 'सत्य और सत्य का शरीर' मायारूपी भ्रम के बीच यथार्थता की सम्पूर्ण धारणा को अधिक स्पष्ट करता है। सत्य यथार्थ है और यथार्थ सत्य है, और वह शरीर, जो सत्य धारण करता है, उसे ही हम ईश्वर के अवतरण में मेहेरबाबा, ईसामसीह अथवा गौतम बुद्ध की आकृति के रूप में देखते हैं।

मेहेरबाबा के अनुसार, हर अवतरण में अगले अवतरण की योजना बना दी जाती है। इसलिये हम मेहेरबाबा के रूप में जो कुछ देखते हैं, वह मोहम्मद के समय में निर्धारित योजना का विस्तार और प्रकाशन है। हमने जो कुछ समझा है उसके आधार पर हम इतना ही कह सकते हैं कि यह समय और परिस्थितियाँ बाबा के अवतरण के लिये उसी प्रकार अनुकूल थीं जिस प्रकार वे पिछले अवतरणों में थीं। अवतार उस समय आता है जब माया के बीच यथार्थता की उपस्थिति सबसे अधिक ज़रूरी होती है।

हम अवतरणों और अवतारों के बारे में जो कुछ कहते हैं, वह सरल और स्पष्ट है लेकिन हम बात का बतंगड़ बना देते हैं। यह यथार्थता का माया में नीचे उतरना और माया के बीच कार्य करना है। फिर भी, माया के राज्य में यथार्थता इस प्रकार फैली हुई है कि स्वयं यथार्थता के लिये माया में कार्य करना एक अनोखी बात है; और यही कारण है कि ईश्वर के अवतरण को सृष्टि का ज्वार कहते हैं। यह घटना बहुत विलक्षण और असाधारण है। इसलिये अवतरण यथार्थता का सबसे बड़ा वरदान और दयापूर्ण कार्य है कि वह नीचे आने और माया में कार्य करने की कृपा करे।

माया के बीच कार्य करने के लिये, यथार्थता पुरुष रूप धारण करती है अथवा अपने ऊपर पुरुष रूप की नकाब डाल लेती है और तब यही रूप ईश्वर का अवतरण अथवा अवतार कहा जाता है। बाबा ने कहा है कि

माया पूर्णरूप से अंधकार है और यथार्थता पूर्णतया देदीप्यमान और तेजस्वी है। अगर यथार्थता को माया में नीचे उतरना पड़े अर्थात् पूर्ण प्रकाश को पूर्ण अंधकार में उतरना पड़े तो अंधकार नष्ट हो जायेगा। अतः सम्पूर्ण अंधकार, सम्पूर्ण प्रकाश को ग्रहण कर सके, इसका केवल एक ही रास्ता है कि प्रकाश को ढँक दिया जाय और यह आवरण और कुछ नहीं बल्कि ईश्वर के अवतरण का रूप है जो सदैव पुरुष रूप में होता है। यही दैवी विधान है। कोई भी यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि ऐसा क्यों होता है अथवा क्या ऐसा भी संभव है कि ईश्वर का अवतरण समय पर हो चुका है। हम इस योग्य नहीं हैं कि इसका निर्णय कर सकें। ईश्वर का अवतरण अनुकूल समय में होता है।

मेहेरबाबा ने हमें समझाया है कि वे वही पुरातन पुरुष हैं जो मनुष्यों के बीच में मनुष्य की तरह बारम्बार हमारे बीच आता है; और अवतार के बाहरी रूपों के बीच चाहे कुछ भी अंतर हो, यह अंतर मूल तत्त्व में नहीं बल्कि उस आवरण में है जो उसे हर बार उस समय पहनना पड़ता है जब यथार्थता माया में नीचे उतरती है। केवल आवरण का पदार्थ भिन्न होता है। कभी वह एक महान योद्धा प्रतीत होता है, कभी एक शान्ति प्रवर्तक, कभी वह ऐसा व्यक्ति है जो भाईचारा, शुद्धता और ईमानदारी को प्रोत्साहन देता है और परिस्थितियों के अनुसार, वह उन नियमों को स्थापित करता है जो उस समय आवश्यक होते हैं।

ऐसा हजारों बार घटित हो चुका है, लेकिन हम भूतकाल में प्रमाणित थोड़े से ईश्वर के अवतरणों से चिपके रहते हैं और उनकी तुलना करने का प्रयत्न करते हैं। लेकिन केवल बाहरी रूप की ही तुलना हो सकती है जो हमेशा बदलता रहता है; वरना वह वही पुरातन पुरुष है जो उद्धारक, रक्षक, दूत एवं मसीहा की तरह कार्य करता है। उसे भिन्न भिन्न नामों से पुकारा जा सकता है लेकिन वह स्वयं को चेतना की सभी भूमिकाओं में स्थापित करता है। वह एक ही समय में ऊँचे से ऊँचा और नीचे से नीचा है। वह सभी स्तरों और सभी भूमिकाओं में है और उसके कार्य मानवता की आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं।

ईश्वर के प्रत्येक अवतरण में, यह वही एक सत्य है जो संदेश का रूप लेता है। अगर सत्य के दो रूप होते, तो सत्य निराधार होता क्योंकि

सत्य स्वयं एक और केवल एक है। ईश्वर के भिन्न भिन्न अवतरणों में, यह सत्य भिन्न भिन्न भाषाओं में बताया जाता है। अवतरण के समय में, मानवता की चेतना के स्तर के अनुसार ही सत्य की व्याख्या की जाती है। इसके लिये पुरातन पुरुष उन रूपकों एवं दृष्टांतों का इस्तेमाल करता है जो उस समय के अनुकूल होते हैं, और वह हमें समय के अनुसार उस एक सत्य को अपने जीवन में आचरण में लाने के भिन्न–भिन्न तरीके बताता है।

अवतार हमेशा 'यह' या 'यथार्थता' के बजाय 'वह' कहा जाता है क्योंकि यथार्थता हमेशा पुरुष रूप धारण करती है। इसलिये अवतार के बारे में बात करते समय हम हमेशा पुर्लिंग का प्रयोग करते हैं जैसे 'उसका हमारे बीच बार बार आना'।

अब प्रश्न यह उठता है कि अवतार के बार बार आने की क्या आवश्यकता है ? यह सब उसका दैवी खेल है ? यह सब लुका छिपी का दैवी खेल है जो चलता रहता है जिसमें वह छिपा रहता है। ढूँढने और ढूँढे जाने की क्रिया निरंतर चलती रहती है, और अवतार के अनन्त होने के कारण, सम्पूर्ण अस्तित्व इस यथार्थता के, जो अनन्त है, चारों ओर घूमता रहता है। यह खेल उस समय तक बराबर चलता है जब तक कि पूर्ण विलय (महाप्रलय) नहीं हो जाता, और उस समय भी इसका अन्त नहीं होता क्योंकि इस आदि–रहित आरम्भ का कोई अन्त नहीं है।

अवतार हमारी आवश्यकता के अनुसार हमें नीति वचन देता है और अगर मनुष्य उन नीति वचनों के अनुसार आचरण करता तो उसे बार बार आने की जरूरत नहीं होती। मानवता के मायावी मोह निद्रा में डूबे रहने के कारण, अवतार हमें मायावी चेतना से बाहर निकालने और यथार्थ चेतना की ओर आगे बढ़ने में मदद करने के लिये आता है। हमारे ऊपर माया की पकड़ इतनी कसी हुई है कि सच्चाई के मार्ग पर चलने का हमारा कितना ही मज़बूत इरादा, हमें उस मार्ग पर अडिग नहीं रहने देता। अतः सच्चाई के जिस मार्ग से हम फिसल गये हैं, उस पर हमें वापस लाने के लिये, वह समय–समय पर बार बार हमारे बीच आता है।

उसका हमारे बीच आना और हमारे मार्गदर्शन के लिये नीति वचन देना, उस समय निश्चित रूप से हमारी मदद करते हैं लेकिन धीरे–धीरे

उनका असर कम होता जाता है और उसे (अवतार) फिर आना पड़ता है। यह असर इसलिये कम होता है क्योंकि वह अपने दैवी खेल को पसन्द करता है। वह हमारे बीच आना और हमारे साथ रहना चाहता है। मेहेरबाबा ने मुझे यही समझाया है।

मेहेरबाबा यह नहीं चाहते कि हम उनका अनुसरण करने के लिये अपने धर्म को छोड़ दें। इसके विपरीत, वह चाहते हैं कि हम उन नीति वचनों के प्रति सचेत हों जो उस अवतरण के समय बताये गये थे जिसने प्रत्येक विशेष धर्म को जन्म दिया।

जब वह हमारे बीच जुरथस्त्र के रूप में थे, उस समय पारसी धर्म जैसी कोई चीज़ नहीं थी। जब बुद्ध हमारे बीच में थे, बौद्ध धर्म जैसी कोई चीज़ नहीं थी और जब ईसा मसीह हमारे बीच में थे, ईसाई धर्म जैसी कोई चीज़ नहीं थी।

ये सभी धर्म ईश्वर के अवतरणों के बाद ही अस्तित्व में आये। प्रत्येक अवतरण में, पहले थोड़े से ही अनुयायी थे। समय के साथ साथ अनुयायियों की संख्या बढ़ती गई और उन्होंने स्वयं को समान आदर्शों वाले समुदायों में संगठित करने की कोशिश की जो उस अवतरण में दिये गये नीति वचनों का पालन करते थे। इस प्रकार, उन अनुयायियों ने एक धर्म की स्थापना की।

धर्म का, जो मनुष्य ने बनाया है, ईश्वर के अवतरण से कोई संबंध नहीं है। यदि ऐसा होता, तो यह ईसाई, बौद्ध, पारसी अथवा हिंदू धर्म के नाम से क्यों जाना जाता। ईश्वर के एक अवतरण को याद रखने के लिये मानव जाति इस प्रकार के धर्मों की स्थापना करती है और इस तरह प्रत्येक धर्म की गतिविधियाँ एक विशेष अवतरण से संबंध रखती हैं।

मेहेरबाबा ने हमें अपने धर्म को छोड़ने के लिये कभी नहीं कहा। मैं जन्म से पारसी हूँ और वह चाहते हैं कि मैं एक सच्चा पारसी बनूँ। इसलिये अगर तुम ईसाई हो, तो वे चाहते हैं कि तुम एक सच्चे ईसाई बनो। हम अपने आपको ईसाई, बौद्ध, मुस्लिम, पारसी कहते हैं। लेकिन क्या हम सचमुच सच्चे ईसाई, बौद्ध, मुस्लिम पारसी और हिन्दू हैं ? शायद नहीं !

हर बार अवतार जब आता है, वह हमें उस एक सत्य का ज्ञान कराता है। वह हिंदू और मुसलमान में, अथवा एक ईसाई और पारसी में कोई भेदभाव नहीं करता। वह उन सबको एक सूत्र में बाँधता है और उनके हृदयों में उस सत्य को पुनर्जीवित करता है। वह चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति भूतकाल में निर्धारित नीति वचनों पर न चल पाने की अपनी कमजोरियों के प्रति सचेत हो। इसलिये वह उनमें से कुछ नीति वचनों को पुनर्जीवित करता है और एक बार पुनः हमें सच्चाई के मार्ग पर वापस लाता है। हम उसके कथनों के अनुसार चलना प्रारंभ करते हैं और उसके नीति वचनों का अनुकरण करने से, भावी मानवता हमारे क्रियाकलापों को एक धर्म का नाम देती है।

मैं नहीं जानता कि मेहेरबाबा के अवतरण को याद रखने के लिये भावी मानवता नया धर्म स्थापित करेगी या नहीं, और न ही मैं यह कहने के लायक हूँ कि उसे (भावी मानवता) इस प्रकार का धर्म शुरू करना चाहिये। स्वयं मेहेरबाबा इस प्रकार के कार्यों के विरुद्ध थे।

सभी धर्मों का आधार ईश्वर के प्रति प्रेम है, इसलिये इस बात की आवश्यकता है कि हम बिना किसी दिखावटी आचार विचार के अपने हृदयों में उस प्रेम को स्थापित करें। अगर धार्मिक आचार, शास्त्रों में बताई गई क्रियापद्धति एवं विभिन्न अनुष्ठान ईश्वर के प्रति नियमानुसार प्रेम प्रकट करने का साधन हैं, तो यह निःसंदेह मेहेरबाबा के प्रति अपकार होगा जो इस प्रकार के आचारों को, जो सभी धर्मों में दूर–दूर तक बहुत अधिक प्रचलित हैं, नष्ट करने आये थे।

मुझे विश्वास है कि मेहेरबाबा के प्रेमी अपना एक धर्म नहीं चाहेंगे बल्कि इसके बजाय वे, ईश्वर के लिये सत्य और प्रेम का जीवन व्यतीत करने के मेहेरबाबा के नीति वचनों का अनुकरण करते हुये, विश्व के सभी धर्मों की एक धर्म की भाँति प्रशंसा करेंगे। मुझे यह भी विश्वास है कि कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो प्रचलित रीति से धर्म का पालन करते रहेंगे।

भविष्य में मेहेरबाबा के प्रेमियों को लोग, शायद एक अलग ढँग का जीवन व्यतीत करते हुये सम्प्रदाय के रूप में ग्रहण करेंगे और दूसरे धार्मिक दल उन्हें एक दूसरे धर्म से संबंध रखने वाले की दृष्टि से देखेंगे।

लेकिन ये बाबा प्रेमी जब तक सत्य और प्रेम के संदेश को निष्ठापूर्वक अपने जीवन में चरितार्थ करते रहेंगे, वे कभी भी नियमों से बंधे धर्म की लकीर पर नहीं चलेंगे। इसके विपरीत, वे मेहेरबाबा की उसी ढंग से सेवा करेंगे, जिस प्रकार वे चाहते थे।

निःसंदेह, मेहेरबाबा के प्रेमी साथ–साथ एकत्र होना चाहेंगे और ऐसा करते हुये उन्हें बाबा की ओर से दिया गया निम्नलिखित मार्गदर्शन ध्यान में रखना चाहिये : सबसे पहले और सबसे ऊपर, बाबा के संदेश को सच्चाई के साथ जीवन में आचरण में लाकर बाबा को प्रसन्न करना सबसे अच्छा है और इस प्रकार उनको प्रसन्न करने से, हृदय उनका केन्द्र बन जाता है और कोई भी दूसरा केन्द्र अथवा संस्था उसकी बराबरी नहीं कर सकती। फिर भी, अगर एक केन्द्र की आवश्यकता महसूस की जाती है तो बहुत से सार्वजनिक बाग और बड़े पेड़ हैं जिनके नीचे इकट्ठा होकर प्रेमी उनके (बाबा के) बारे में बात कर सकते हैं, उनकी याद कर सकते हैं और भक्तिपूर्ण गीत गा सकते हैं। इस प्रकार की सभा तब समान हृदयों का समूह बन जाती है और ईश्वर के प्रति प्रेम का मार्ग दिखलाती है।

एक बार एक समुदाय बन जाता है, तो प्रेमियों की संख्या बढ़ना संभव है और समुदाय बड़ा होता जाता है। अब विभिन्न दिमाग हो जाते हैं जो उस हृदय के समीप रहने से, जहाँ बाबा का प्रेम निवास करता है, एक सूत्र में बँध जाते हैं। इस समुदाय को अनुशासन, संगठन इत्यादि की जरूरत होती है।

ऐसी स्थिति के लिये बाबा कहते हैं, ''अपने केन्द्र ऐसी जगह रखो, जहाँ तुम अपनी इच्छा के अनुसार अक्सर इकट्ठा हो सको, और एक ऐसी जगह अथवा पता हो जहाँ दूसरे लोग, जो मेरे बारे में जानना चाहते हैं, आ सकें अथवा पत्र लिख सकें। लेकिन ऐसी सभा में एक–दूसरे के बीच भेदभाव न होने दो, और ऐसी सभाओं में हमेशा यह याद रखो कि यह स्वयं बाबा ही हैं जो सभा की अध्यक्षता करते हैं। इस तरह कोई भी आज्ञा नहीं देगा, विरोध और मनमुटाव से बचाव होगा और मेरे संदेश का प्रसार भी होगा।''

इस प्रकार, बाबा के इस खजाने में हिस्सा लेने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम बाबा के प्रेम एवं सत्य के सन्देश पर आधारित इतना

स्वाभाविक जीवन व्यतीत करें कि वे लोग, जो सबसे अधिक अस्वाभाविक जीवन व्यतीत करते हैं, इसे अनुभव करें तथा इसकी प्रेरणा के स्रोत के बारे में खोजबीन करें। तब उन्हें मेहेरबाबा के बारे में बताया जा सकता है। अगर केवल थोड़े से प्रेमी भीड़ में घुसकर अपना कार्य सामान्य रूप से करें तो इतना ही काफ़ी है।

अगर हम बाबा से इस प्रकार प्रेम करते हैं जैसा कि करना चाहिये, तो केन्द्रों, संस्थाओं, छोटे हाल, बड़े हाल अथवा संदेश के प्रसार के बारे में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इन सबके बावजूद, केन्द्र में जाने अथवा न जाने की प्रेरणा कौन देता है ? बाबा देते हैं। केन्द्र होने अथवा न होने की प्रेरणा भी वही देते हैं; इसलिये यदि हम सब कुछ उनकी मर्ज़ी पर छोड़कर अपना कार्य करें, तो चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं होगी। बाबा ने इसका सार बताया है, ''मुझसे प्रेम करना तुम्हारा काम है, शेष काम मेरा है।''

फिर भी, अगर एक संगठन है तो इसे नियमों के अनुसार होना चाहिये ताकि यह देश के कानूनों के अनुसार कार्य कर सके। यह ऐसा होना चाहिये जहाँ हर व्यक्ति अपना मत प्रकट कर सके और इन सबसे ऊपर अवतार, जो सत्य का साकार रूप है, सबके लिये उदाहरण के रूप में हो ताकि हम उसके समान एक चलता फिरता गिरजाघर, मंदिर, शिवालय अथवा पारसियों का पवित्र अग्नि मंदिर (अगियारी) बन सकें।

इन बातों पर ध्यान देने में सफल न होने के कारण, ईश्वर के अवतरण को याद रखने के लिये बनाई गई संस्थायें, संदेशों को गलत आचरण में लाने की लोक विरुद्ध रीतियों का कारण बनती हैं। इससे गड़बड़ी और अव्यवस्था फैलती है जो ईश्वर के दूसरे अवतरण के लिये अनुकूल वातावरण बनाती है।

• • •

,jp d lkFk okrkyki

नौशेरवाँ अन्ज़ार : पिछले विश्व युद्ध में ६ करोड़ यहूदियों का जो सर्वनाश हुआ, वह मुझे समझ में नहीं आता। अगर ईश्वर ''दयालु'' है तो

उन सब बेकसूर लोगों को भयानक मौत का सामना क्यों करना पड़ा ? मेहेरबाबा ने इस सर्वनाश को क्यों होने दिया ?

एरच : यह वास्तव में अजीब लगता है कि यह सब एक बुरे सपने की तरह उस समय घटित हुआ, जब अवतार पृथ्वी पर था, और जबकि ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने आध्यात्मिक रूप से युद्ध का संचालन किया और वह अत्यंत दयालु है।

फिर भी, जो कुछ हुआ, हम उस पर दूसरी तरह से विचार करें। अगर यह सर्वनाश वर्तमान इतिहास का हिस्सा नहीं बना होता, तो वे लोग, जिनका जीवन इस सर्वनाश से प्रभावित हुआ था, उसी पुराने ढँग से ज़िन्दगी बिता रहे होते और संसार के कार्य पहले की तरह हो रहे होते और प्रसन्नता के लिए वही भौतिक सुख पर्याप्त मात्रा में होते जिसमें हर व्यक्ति संतुष्ट रहता। हालांकि जीवन व्यतीत करने के लिये यह अच्छा है, परन्तु पुराने ढँग से चलने वाले अस्तित्व के कारण, ह्रदय उन बड़ी संभावनाओं की ओर आकर्षित नहीं हुये होते, जो जीवन प्रस्तुत करता है। इसका मतलब है, मानवता में यह परिवर्तन लाने के लिये ही अवतार ने यह सर्वनाश होने दिया।

बाबा हमें हमेशा यह बतलाते थे कि जब कभी उनकी नज़र अथवा कृपा, किसी व्यक्ति पर अथवा किसी क्षेत्र में होती है, वहाँ क्लेश बढ़ जाता है। क्लेश ईश्वर की दया का प्रतीक है, और क्लेश तथा पीड़ा के द्वारा हम प्रकाश की ओर उन्मुख होने में समर्थ होते हैं, यानी कि यथार्थता की ओर, ईश्वर की ओर। इस दृष्टिकोण से, बुद्धि द्वारा न मानने के बावजूद, इस सर्वनाश को अनन्त दया के कार्यों के रूप में देखा जा सकता है।

जब मनुष्य का ह्रदय प्रकाशित होता है और वह अत्यंत कष्ट तथा पीड़ा के दौरान ईश्वर से मदद करने की प्रार्थना करता है, उस समय इस बात का कोई महत्त्व नहीं होता कि सहायता की याचना किस रूप में की जाती है। वह दयालु पुकार की ओर ध्यान देता है और अपने दयालु ढंग से उत्तर देता है। यह उत्तर अक्सर इतना अधिक सूक्ष्म होता है कि मनुष्य की सीमित बुद्धि उसको समझ नहीं सकती।

कभी–कभी, कुछ यहूदी मित्र यहाँ मेहेराज़ाद में हमसे मिलने आते है। और इस विषय में पूछते हैं। अपने उत्तर में मैं प्रायः यह और जोड़ देता

हूँ कि शायद वे उन लोगों में से थे जिन्होंने कष्ट भोगा और यहाँ पर उनकी उपस्थिति ईश्वर से की गई पुकार का परिणाम थी जो अब उन्हें उसके (ईश्वर, बाबा) पास ले आई थी।

अन्ज़ार : क्या आप यह कहेंगे कि वे लोग, जिन्होंने कष्ट भोगा, भाग्यशाली थे?

एरच : हाँ, निश्चित रूप से।

उदाहरण के लिये, आप जानते हैं कि अगर मनुष्य के शरीर को स्वस्थ रहना है तो उसे (शरीर को) दर्द की चेतना के प्रति सचेत होना चाहिये और अगर यह चेतना गायब हो जाती है तो हम मुसीबत में होंगे और हमें किसी विशेषज्ञ की सेवाओं की जरूरत होगी। इस तरह, जो भी दर्द हम अनुभव करते हैं, वह उस मूल्य को प्रकट करता है जो हम शरीर को आनंद से प्रफुल्लित, स्वस्थ और शक्तिशाली रखने के लिये चुकाते हैं।

इसी तरह, आत्मा की उज्ज्वलता को सुरक्षित रखने के लिये, आत्मा को स्वस्थ एवं दीप्तिमान रखने के लिये, हम कष्ट रूपी सिक्के द्वारा मूल्य चुकाते हैं। लेकिन इससे संबंधित एक आश्वासन बाबा ने दिया है कि जब कभी किसी व्यक्ति, किसी क्षेत्र अथवा विश्व के किसी भाग के लिये कष्ट होता है, यह हमेशा अवतार की नज़र से परिपूर्ण होता है। कष्ट के द्वारा ही हम ईश्वर की ओर ध्यान देते तथा उसकी ओर मुड़ते हैं।

फ़ारसी सद्‌गुरु और कवि जलालुद्दीन रूमी ने कहा है कि केवल आवश्यकता और असहायता के द्वारा ही हम यथार्थता तक पहुँच सकते हैं, क्योंकि हम इस दिखाई देने वाले मायावी संसार के जाल में इतनी बुरी तरह फँसे हुये हैं कि हमारे लिये रूकना और जीवन के अर्थ तथा उद्देश्य पर चिंतन करना असंभव है। जब अत्यधिक ज़रूरत हमें असहाय बना देती है, केवल तभी हम ईश्वर को पुकारते हैं और ईश्वर तक पहुँचते हैं।

अन्ज़ार : जनवरी १९६९ के अन्त में, मेहेरबाबा के शरीर छोड़ देने के बाद, बहुत से ढोंगी सन्त, जो सद्‌गुरु होने का दावा करते थे, दिखाई देने लगे। इस स्थिति के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

एरच : मेहेरबाबा ने इस बारे में हमें गहरा ज्ञान तथा सतर्कता प्रदान की। सर्वप्रथम, उन्होंने हमें यह बतलाया कि इस गोचर (दिखाई देने वाले)

संसार में जो भी अस्तित्व है, कुछ नहीं है, लेकिन इसके साथ ही यह सत्य का एक अंश भी है। सम्पूर्ण सत्य नहीं, बल्कि उसका केवल एक अंश है। इसलिये बाबा के साथ इतने अधिक समय तक रहने के पश्चात्, मैं किसी भी व्यक्ति पर उँगली नहीं उठा सकता हूँ, भले ही वह ढोंगी गुरु, ढोंगी संत अथवा ढोंगी सद्‌गुरु हो। यह निर्णय करने के लिए मेरे पास कोई आधार नहीं है और इसलिये मुझे उसको सत्य का एक अंश समझना चाहिये, क्योंकि निःसंदेह वह अपनी भूमिका निभा रहा है।

मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ग़लत काम करने वाले व्यक्ति को उत्साहित करूँगा। मैं अनुभव करता हूँ कि हर व्यक्ति बाबा की मर्ज़ी के अनुसार कार्य करता है क्योंकि बाबा वहाँ पर हैं। अन्ततः दूसरे व्यक्ति सच और झूठ का अनुभव करेंगे और सत्य असत्य का निर्णय स्वयं करेंगे। इस प्रकार, उस सावधानी के कारण जो मुझे बाबा से प्राप्त हुई है, मैं कभी किसी को अपराधी नहीं मानूँगा। मैं जानता हूँ कि हर एक व्यक्ति की सत्य के उस अंश में, जो दिखने वाले संसार के रूप में चित्रित है, अपनी एक भूमिका है।

अन्ज़ार : उन बाबा प्रेमियों को आप क्या सलाह देते हैं जिन्हें इस प्रकार का दावा करने वाले किसी व्यक्ति पर विश्वास करने की स्थिति का सामना करना पड़ता है ?

एरच : ईश्वर में विश्वास रखें। अगर वह बहुत अधिक निराकार प्रतीत होता है तो केवल मेहेरबाबा में अपना विश्वास रखें जो इस युग के अवतार हैं। लोग जो भी दावा करते हैं, उसके लिये उन्हें दोष न दें अथवा उनका मज़ाक न उड़ायें बल्कि ऐसे लोगों से दूर रहें।

अन्ज़ार : क्या इस प्रकार के झूठे गुरु अपने होने वाले शिष्यों को नुकसान पहुँचायेंगे और यह किस सीमा तक होगा ?

एरच : इस हालत में जो कुछ होता है उसके लिये स्वयं मेहेरबाबा ने 'भेड़िये और मेमने' शब्द का प्रयोग किया है। झूठे गुरु बाबा के संदेशों और उपदेशों का अनुकरण करते हैं और जो कुछ भी वे कहते हैं, उसके स्त्रोत को प्रकट नहीं करते हैं। उनकी बातें सुनने वाले लोग सत्य के शब्दों से प्रभावित होकर धोखा खा जाते हैं। वे झूठे गुरु को असली गुरु समझकर उसकी पूजा करते हैं जिसका वह दिखावा करता है।

जब इस प्रकार की परिस्थितियाँ बाबा के सामने पैदा हुईं, उन्होंने हमें याद दिलाई कि जब भी वे हमारे बीच आये, उन्होंने तिगुना कष्ट पाया। उन्होंने कहा, ''मैं शारीरिक कष्ट भोगता हूँ जिसे सब देखते हैं। मेरी मानसिक यातना वह है जब मैं तुम्हारे बीच आकर तुम्हें बताता हूँ कि मैं वही ईश्वर हूँ जिसकी तुम चाह कर रहे हो और मैं तुम्हें अपना बहुत सा प्रेम देता हूँ। तुम मुझे इस रूप में स्वीकार कर लेते हो लेकिन फिर भी तुम दूसरे गुरु, दूसरे सद्‌गुरु की खोज करते हो। मेरी चेतावनी के बावजूद, तुम्हारे इस प्रकार के लोगों के साथ न रहने की मेरी इच्छा के बावजूद, तुम इन लोगों से यथासंभव आशीर्वाद प्राप्त करने की कोशिश करते हो। मेरी आध्यात्मिक यातना यह है कि मैं हर एक में अपने आपको, पूरी तरह बंधन में पाता हूँ। यद्यपि मैं शाश्वत रूप से स्वतंत्र हूँ, मैं तुममें से हर एक में बंधन में हूँ। इसलिये मैं तिगुनी यातना भोगता हूँ।''

यह बात उन महत्त्वपूर्ण बातों में से एक है जिसके बारे में बाबा ने हमें चेतावनी दी है। एक बार मेहेरबाबा को ईश–पुरुष, अपना सद्‌गुरु, पथ प्रदर्शक, गुरु, साथी अथवा मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करने के बाद, किसी भी व्यक्ति को कष्ट से छुटकारा पाने अथवा आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन के लिये, किसी दूसरे के पास जाने के लिये सोचना भी बेकार है। इसलिये अगर कोई व्यक्ति बाबा प्रेमी है तो वह बाबा के दामन को पकड़े रहे और किसी दूसरी जगह न जाये अर्थात् किसी दूसरे गुरु या सद्‌गुरु के पास न जाये।

अन्ज़ार : बहुत से लोगों ने मेहेरबाबा को उनके शरीर छोड़ने के बाद अपना सद्‌गुरु माना है और उनमें से कुछ मानव–व्यवहार के विशेषज्ञ हैं जिन्होंने अपने शिष्यों के बीच अपने गुरु के पद को ऊँचा किया है और इस संबंध में बाबा की भूमिका को उन्होंने महत्त्वहीन बनाया है। इस वर्ग के लोगों की शिक्षाओं के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

एरच : अगर वे अपने आपको मेहेरबाबा का प्रेमी और अनुयायी कहते हैं तो उन्हें यह अधिक अच्छी तरह मालूम होना चाहिये, क्योंकि बाबा ने बार–बार मंडली के संदेशों तथा गश्ती पत्रों के द्वारा ऐसी स्थितियों के बारे में चेतावनी दी है।

अगर कोई व्यक्ति यह कहता है कि वह किसी बाबा प्रेमी का गुरु और पथ प्रदर्शक है तो बिना किसी बाधा के उसे ऐसा कहने दें, लेकिन एक बाबा प्रेमी का यह कर्तव्य है कि वह ऐसे कथनों की उपेक्षा करे और उस व्यक्ति से दूर रहे।

सही अर्थों में हमारे एकमात्र गुरु हमारे प्रभु, अवतार मेहेरबाबा हैं हालांकि दूसरे रूपों में भी कई गुरु हैं। एक नौकर भी, जो हमें नाराज़ करता है, गुरु हो सकता है, अगर चित्त की क्रोध की उस अवस्था में, अपने क्रोध को रोकने की कोशिश में, वह तुम्हारे द्वारा प्रियतम बाबा को याद किये जाने का कारण बनता है। इसलिये एक प्रकार से सभी गुरु हैं; लेकिन एक बार हमने मेहेरबाबा को मार्ग और लक्ष्य के रूप में स्वीकार कर लिया, तो हम आध्यात्मिक यात्रा पर मार्ग में आगे बढ़ने के लिये एक रास्ता दिखाने वाले से संबंधित सभी मतों को बेकार मान सकते है, क्योंकि हमारे साथ पहले से ही लक्ष्य (ईश्वर, बाबा) मौजूद है। तब हमारी चिन्ता का प्रमुख विषय यह होना चाहिये कि हम बाबा से अधिक से अधिक प्रेम कैसे करें और उसके प्रेम में अपने आपको भूल जायें, क्योंकि जो लोग इस युग के अवतार के प्रेम के दायरे में आ गये हैं; उनके लिये केवल यही सच्ची आध्यात्मिकता है।

अन्ज़ार : मेहेरबाबा के उन प्रेमियों की, जो उनसे कभी नहीं मिले, जीवित सद्गुरु की खोज करने की ज़रूरत पर, मेहेरबाबा के उपदेशों के अनुसार क्या भावना होनी चाहिये ?

एरच : आध्यात्मिक प्रवृत्ति के उन लोगों के लिये, जो मेहेरबाबा से नहीं मिले अथवा उनके बारे में कभी नहीं सुना, जीवित सद्गुरु की खोज करना स्वाभाविक है। परन्तु बाबा प्रेमियों के लिये यह खोज बेकार है क्योंकि मेहेरबाबा चाहे शरीर में हों या शरीर में न हों, वे उनके शाश्वत् (हमेशा रहने वाले) सद्गुरु हैं।

हम उन्हें 'मेहेरबाबा' कहते थे लेकिन वास्तव में वही एक सत्य हैं, हर काल के लिये शाश्वत् सद्गुरु हैं जो ईसामसीह, बुद्ध और दूसरे सभी महान पैग़म्बरों के रूप में प्रकट हुये, और हमारे लिये किसी भी समय उसका दामन पकड़ने के अलावा दूसरा कोई उपाय नहीं है।

अगर हम भूतकाल के आध्यात्मिक इतिहास का निरीक्षण करें तो यह मालूम होगा कि लोग बिना किसी हेरफेर के, अपने गुरुओं के साथ रहने के बजाय, सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर मुड़े। उदाहरण के लिये, ऐसा ही मीरा का दृष्टांत है जिसके आध्यात्मिक गुरु थे लेकिन वह उन्हें छोड़कर पूर्णरूप से भगवान कृष्ण की भक्ति में लगी रही जो कई युगों के पहले अवतरित हुये थे, और कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति के कारण ही उसने सत्य का अनुभव प्राप्त किया।

कुछ ऐसा ही संत फ्रांसिस और कई सूफ़ी सद्गुरुओं के साथ हुआ जिन्होंने एक बार अवतार के दायरे में आने के बाद गुरु से अपना संबंध खत्म कर दिया। एक बार भगवान किसी का गुरु बन जाता है, तो बीच का गुरु एक बाधा के अलावा और कुछ नहीं है।

अन्ज़ार : साईं बाबा और नारायण महाराज की, जो स्वयं मेहेरबाबा के गुरु थे, समाधियों पर जाने और वहाँ माथा टेकने में तथा मेहेरबाबा की समाधि पर माथा टेकने में क्या अंतर है ?

एरच : अगर हम संयोगवश इनमें से किसी एक की समाधि के पास से गुजरें तो हमारे लिये यह स्वाभाविक है कि हम वहाँ पर अपनी श्रद्धा अर्पित करना चाहें, लेकिन विशेष रूप से वहाँ जाने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि इससे कोई फायदा नहीं है। यह बिल्कुल उसी तरह है जैसे कि कोई व्यक्ति एक बड़े, सुंदर बाग में हो और पास में स्थित एक छोटे बाग में जाने की इच्छा प्रकट करे। पेड़ पौधों और गुलाब की झाड़ियों से भरे हुये एक बड़े बाग में पूरा दिन बिताने और पूरी तरह संतुष्ट होने के बाद, एक छोटे बाग का, जिसके पास से आप बाद में संयोगवश गुज़र रहे हैं, निरीक्षण करने की अपनी इच्छा को क्या आप क्षणिक भावना की तरह मन से हटा नहीं देंगे ?

अन्ज़ार : भौतिक और आध्यात्मिक लाभ की दृष्टि से एक बाबा प्रेमी के लिये मेहेरबाबा की समाधि पर बार बार जाना और वहाँ नतमस्तक होना किस प्रकार लाभदायक होगा ?

एरच : सद्गुरुओं की समाधि पर जाकर नतमस्तक होने के बारे में तुम्हारे प्रश्न का मैंने अभी तक पूरी तरह उत्तर नहीं दिया है।

कई अवसरों पर बाबा हमें उन समाधियों पर ले गये और हमसे वहाँ पर माथा टेकने तथा पूजा करने के लिये कहा। आखिकार पाँचों सद्‌गुरुओं ने ही ईश्वर के अवतरण का मार्ग प्रशस्त किया जिसके कारण हमें अपने बीच अवतार को पाने का परम सौभाग्य मिला, और इसीलिये हम उनकी (सद्‌गुरुओं) पूजा करते हैं। लेकिन एक बार बाबा के सम्पर्क में आ जाने के बाद, सामान्य रूप से इनमें से किसी की भी समाधि पर जाने के लिये विशेष रूप से यात्रा करना हमारे लिये बेकार है। हालांकि, जैसा कि मैंने कहा है, अगर हम संयोगवश वहाँ से गुजरें तो वहाँ पूजा करने के लिये रुकने में कोई हर्ज नहीं है।

लेकिन मान लीजिये आप बाबा के पास बैठे हैं, तब क्या यह अनुचित नहीं होगा कि आप उठकर चल दें और किसी अन्य व्यक्ति की पूजा करने के लिए किसी दूसरे स्थान पर जाने के लिये उनकी (बाबा) ओर से मुँह मोड़ लें ? मेहेरबाबा वहाँ है, वे हर काल में पूरे विश्व के लिये पूजा का केन्द्र हैं और उनकी ओर से मुँह मोड़ना किसी भी व्यक्ति के लिए मूर्खतापूर्ण और हास्यास्पद बात है।

इसीलिए, बाबा के गुरुओं में से किसी एक की समाधि के पास से गुज़रते समय बाबा की याद करते हुये, दूर से उनके सामने नतमस्तक होना बिल्कुल उचित है, क्योंकि ऐसा करके उनके द्वारा निभाई गयी भूमिका की सच्चाई को हम स्वीकार करते हैं। लेकिन बाबा ने स्वयं कहा है कि जब वे सृष्टि के रंगमंच पर प्रकट होते हैं अर्थात् अवतार लेते हैं, उस समय सद्‌गुरु लोकप्रियता के शिखर पर और अधिक समय तक नहीं रहते हैं। इसलिये, जब वे (सद्‌गुरु) पृष्ठभूमि में चले जाते हैं, तब बाबा प्रेमियों के लिये क्या यह उचित है कि वे उनके पीछे दौड़ना शुरू कर दें? हम उन्हें वहीं रहने दें जहाँ वे अपनी आध्यात्मिक ड्यूटी से अवकाश मिलने के बाद हैं। एक बाबा प्रेमी को अपना ध्यान बाबा पर केन्द्रित करना चाहिये और किसी दूसरे गुरु या सद्‌गुरु की पूजा करने के बजाय, बाबा की पूजा करना चाहिये।

अन्ज़ार : बाबा की समाधि पर बार–बार जाने से संबंधित मेरे प्रश्न के बारे में आपके क्या विचार हैं ?

एरच : मेहेरबाबा की समाधि साधारण समाधि नहीं है। यह वह समाधि है, जहाँ वह शरीर, जो यथार्थता का मंदिर था, समाधिस्थ है, वह शरीर जो पूर्णरूप से यथार्थता में एकाकार हो गया है और इसीलिये समाधि अनोखी है।

बाबा ने कहा है कि आध्यात्मिक लाभ की इच्छा रखने वाले लोगों के लिये बार–बार समाधि पर जाना महत्त्वपूर्ण है ताकि वे संस्कार रहित महान आत्मा के संस्कारों को अपने में समाविष्ट कर लें।

सच्ची आध्यात्मिक उन्नति अपने अभिमान (ego-self) को, जो सत्य के प्रत्यक्ष अनुभव के रास्ते में रुकावट का कार्य करता है, नष्ट करने की सामर्थ्य से अधिक कुछ नहीं है। वह व्यक्ति यह देखता है कि अपनी उन्नति में वह स्वयं मुख्य बाधा है। इस प्रकार, बाबा के कथनों के अनुसार, कितना ही अधिक आत्मसंयम, तपस्या अथवा विभिन्न प्रकार के योग किसी भी व्यक्ति को लक्ष्य तक ले जाने में अकेले समर्थ नहीं हैं।

उदाहरण के लिये, अपने ऊपर संयम रखने की कोशिश करना, अपने साथ यह भावना ले आता है, "मैं कितना अच्छा हूँ।" जबकि असफल होने पर अपने प्रति घृणा उत्पन्न होती है। दोनों ही अवस्थायें अहं की परिचायक हैं और उपर्युक्त अनुशासनों में से कोई भी उन संस्कारों को नष्ट नहीं कर सकता है जो मन पर अपनी छाप छोड़ते रहेंगे। इसके विपरीत, वे दूसरे संस्कारों को जन्म देंगे।

बाबा ने कहा है कि उन सब बातों की अपेक्षा यह अधिक ज़रूरी है कि हम बार–बार उनके पास जायें, उनसे जुड़े रहें और उनके दामन को पकड़े रहें, क्योंकि तब हम ईश्वर की संस्कार रहित अवस्था से उत्पन्न होने वाले विशेष संस्कारों को ग्रहण करेंगे जो हमारे अब तक इकट्ठा हुये संस्कारों के भंडार को समूल नष्ट करने में एकमात्र सहायक हो सकते हैं।

अन्ज़ार : उन्नति की हमारी इच्छा बाबा के साथ हमारे संबंधों में किस प्रकार बाधा पहुँचा सकती है ?

एरच : समय–समय पर, बारम्बार ईश्वर हमारे बीच आता है और आध्यात्मिक उन्नति के लालच रूपी फंदे में पड़ने से होने वाले ख़तरे के प्रति हमें सचेत करता है। जब कभी आध्यात्मिक उन्नति का विचार हमें

आता है तो हमारा अहं हमेशा इस प्रकार के विचारों का पोषण करता है, ''मैं उन्नति कर रहा हूँ, मैं आगे बढ़ रहा हूँ, मैंने इन सब चीजों को पीछे छोड़ दिया है; मैंने इन चीजों का त्याग कर दिया है।'' इस प्रकार, अब ''मैं'' सबसे आगे होता है और नष्ट होने के बजाय इसका निरंतर पोषण होता रहता है।

फिर भी देर सबेर, आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने की कोशिश करना बेकार है, ऐसा अनुभव होने लगता है। यह वह अवस्था है जब हम स्वीकार करने के लिये तैयार होते हैं कि असली ज़रूरत कुछ पाने की नहीं बल्कि सभी इच्छाओं से हृदय को खाली करके, सब कुछ खोने की है। वह (ईश्वर) हमें अपने जन के रूप में पूरी तरह तभी स्वीकार करता है, जब सब कुछ खो जाता है।

इसका मतलब यह नहीं है कि बाबा नहीं चाहते कि हम आध्यात्मिक उन्नति की इच्छा करें। जब तक कोई व्यक्ति उसके (ईश्वर) अधिक समीप नहीं खिंचता, उसे ईश्वर किस प्रकार मिल सकता है ? इसीलिये बाबा कहते हैं कि हम आध्यात्मिक उन्नति की इच्छा रखें, लेकिन यह याद रखें कि शरीर, मन और आत्मा कमज़ोर हैं, इसलिये हमें उन्नति के ख़तरों के प्रति सतर्क रहना चाहिये। बाबा, हमें सलाह देते हैं, ''आध्यात्मिक उन्नति की इच्छा करने के बजाय, सिर्फ़ अपने आप को मुझे क्यों नहीं दे देते हो ?''

जब हम बाबा की सलाह के अनुसार, ईश्वर का सीधे अनुसरण करने लगते हैं, हम नाश के रास्ते में प्रवेश करते हैं और तब हम पहले अपने बारे में नहीं सोचते जैसा कि हम आध्यात्मिक उन्नति के बारे में सोचने पर करते हैं। बाबा के कथनानुसार, ईश्वर को पाने के लिये, आध्यात्मिक उन्नति के मार्गो की खोज करना पागलपन है, क्योंकि हम उसकी खोज कर रहे हैं जिसे हमने कभी नहीं खोया, अनन्त ईश्वर की, जो कण–कण में व्याप्त है। इसलिये ईश्वर को पाने के लिए हमें सिर्फ ''मैं'' को खोना है, और ''मैं'' को खोने का अर्थ है, हम अपने आपको मिटा दें।

अन्ज़ार : ईश्वर को पाने की इच्छा करने वाला व्यक्ति चमत्कारों अथवा ध्यान के अभ्यास से किस प्रकार लाभ पा सकता है ?

एरच : यह ईश्वर को पाने की इच्छा रखने वाले उन व्यक्तियों के लिये अच्छे प्रश्न हैं जिन्हें अवतरण के दौरान ईश–पुरुष के सम्पर्क का सौभाग्य नहीं मिला; लेकिन उन लोगों के लिये इन प्रश्नों का कोई महत्त्व नहीं है जो उससे (ईश पुरुष) मिलने के बाद उससे प्रेम करते हैं, अथवा किसी भी रूप में उससे सम्बद्ध रह चुके हैं, भले ही उसके बारे में केवल सुना हो।

सम्पूर्ण सृष्टि का एकमात्र उद्देश्य हमें यह याद दिलाना है कि हम उसकी (ईश्वर की) याद करें।

यही ध्यान है और सबसे अच्छा ध्यान यह है कि हम कुछ भी कर रहे हों, उसकी निरंतर याद करें। नियमानुसार ध्यान का अभ्यास करने में, जो मन को स्थिर करता और स्फूर्ति देने वाली शान्ति के अहसास को जन्म देता है, बाबा को कोई आपत्ति नहीं है; क्योंकि यह कुछ समय तक लाभ देने वाला है। लेकिन शीघ्र ही मन अपनी स्वाभाविक चंचलता में आ जाता है और शान्ति पाने के लिये फिर से ध्यान का सहारा लेना पड़ता है। बाबा के कथनानुसार, इसका सबसे अच्छा उपाय यह है कि हम अपनी इच्छा के अनुसार उनका ध्यान करें जिसमें व्यक्ति जो भी कार्य करता है, उसमें बाबा को केन्द्र बनाने का प्रयत्न करता है। उदाहरण के लिये, अगर हम खाना खा रहे हैं तो हम उसके बारे में सोचें, अगर हम किसी व्यक्ति से बात कर रहे हैं तो हम बातचीत में बाबा की किसी भी छवि को लाने की कोशिश करें, आदि आदि। यह असली ध्यान है जिससे असली लाभ होता है।

अन्ज़ार : अपने दैनिक जीवन में हम बाबा से किस प्रकार संबंध स्थापित करें ?

एरच : अपने दैनिक कार्यों को ईमानदारी और परिश्रम के साथ करके हमें बाबा के साथ संबंध स्थापित करना चाहिये। इसके साथ ही हमें यह भी सोचना चाहिये कि उसने (बाबा) हमारे लिये जो भूमिका निर्धारित की है, हम केवल उसका अभिनय कर रहे हैं। इसलिये हमें वह कार्य करते हुये उसके प्रति तटस्थ रहना चाहिये ताकि दिन के अन्त में, हम उस कार्य के फलस्वरूप होने वाले मान अथवा निंदा के प्रति भी अनासक्त रहें।

जब हम उपरोक्त ढँग से कार्य करते हैं, हम बाबा से प्रशंसा प्राप्त करते हैं। लेकिन अक्सर यह होता है कि हम स्वयं अपनी प्रशंसा करते हैं और मान मिलने के द्वारा हमें कर्मयोग से होने वाले कष्ट, परीक्षायें और अन्य सब कुछ उत्तराधिकार में प्राप्त होता है। इससे बचने के लिये, हमें प्रतिदिन लगभग दो बार उन्हें वह सब कुछ, जो हम करते हैं, समर्पित करना चाहिये और अन्त में वह समय आयेगा जब वह निरंतर केन्द्र बिन्दु होगा, भले ही हम कुछ भी कर रहे हों।

अन्ज़ार : हम अपनी निर्णय लेने की क्रिया में बाबा को किस प्रकार मध्यस्थ बना सकते हैं और इसमें अन्तःप्रेरणा की क्या भूमिका होगी ?

एरच : अगर आपने स्वयं को पूर्णरूप से बाबा को समर्पित कर दिया है, तो वे सभी निर्णय जो आप लेते हैं, उनके निर्णय होंगे। एक बार हम उनके हो गये, तो आप यह अच्छी तरह जान लीजिये कि आप जो भी निर्णय करते हैं, वह वही हैं जो बाबा चाहते हैं, क्योंकि एक बार आपने उनका होने और उनकी आज्ञानुसार चलने का निश्चय कर लिया तो आप विश्वास कीजिये कि आपके निर्णय उसकी मर्ज़ी को प्रतिबिम्बित करेंगे। फिर भी, स्वयं को उन्हें समर्पित करने का आपका निश्चय केवल मौखिक नहीं होना चाहिये। आपको यह अनुभव करना चाहिए कि आप उनके हैं और उसी के अनुसार आचरण करना चाहिये। इसके अलावा, उपरोक्त ढंग से लिये गये किसी भी निर्णय के परिणामों के प्रति आपको पूरी तरह उदासीन रहना चाहिये वरना यह आपके द्वारा अकेले निर्णय लिये जाने के समान होगा।

अन्ज़ार : स्वतंत्र इच्छा और निश्चय का क्या परिणाम होता है, और ''सब कुछ उसकी मर्ज़ी से होता है'' यह भावना क्या कुछ सीमा तक निष्क्रियता उत्पन्न नहीं करती ?

एरच : इसके विपरीत तीव्र चंचलता होगी। हालांकि कोई दूसरा व्यक्ति भिन्न दृष्टिकोण रख सकता है, आपके मन में यह विचार रहेगा कि आप बाबा के हैं। और वे वही निर्णय कर रहे हैं जिसमें आपकी भलाई है। जब आपने इतनी अधिक दृढ़ता के साथ स्वयं को उन्हें समर्पित कर दिया

है और आपको यह पूरा विश्वास है कि आप उनके हैं, आप प्रत्येक घटना को उनकी मर्ज़ी और प्रसन्नता के अनुसार होता हुआ देखेंगे।

अन्ज़ार : इस तथ्य के बावजूद कि किसी भी कार्य के परिणाम पहले से निर्धारित होते हैं, बाबा यह चाहते हैं कि किसी भी कार्य को पूरा करने के लिये हम काम करें; लेकिन हम उन अच्छे या बुरे परिणामों के लिए क्यों कार्य करें जो पहले से ही निर्धारित हैं ?

एरच : यह पूर्व निर्धारित है कि आपको काम करना चाहिए। यह भी पूर्व निर्धारित है कि जिसे आप ''मैं काम कर रहा हूँ'' के रूप में देखते हैं, वह ''ईश्वर काम कर रहा है'' के रूप में परिवर्तित हो जायेगा। इसमें समय लगता है और यह धीरे धीरे होता है।

अन्ज़ार : बाबा किस सीमा तक स्वतंत्र इच्छा की अनुमति देते हैं ?

एरच : जब तक तुम स्वयं को ''मैं हूँ'' के रूप में स्वीकार करते हो।

अन्ज़ार : लेकिन क्या यह भी पूर्व निर्धारित नहीं है ?

एरच : वास्तव में है, लेकिन एक अवस्था आती है जब तुम ''मैं नहीं हूँ'' की स्थिति का अनुभव करते हो और तब तुम पूर्ण रूप से उसके (बाबा के) होते हो।

अन्ज़ार : अगर उसकी मर्ज़ी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता तो क्या हम इससे यह समझें कि स्वतंत्र इच्छा (free will) नहीं होती ?

एरच : वास्तविकता यही है कि स्वतंत्र इच्छा नहीं होती। जिसे तुम स्वतंत्र इच्छा कहते हो, वह किसी व्यक्ति की इस स्वीकारोक्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है कि वह सम्पूर्णता का एक अंश है; जिसका प्रमाण यह है कि उसने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि उसका यह—यह नाम है। उसकी इस तथाकथित स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग उस समय निश्चित रूप से लुप्त हो जायेगा, जब उसकी यह स्वीकारोक्ति समाप्त हो जायेगी और उसकी गलतफ़हमी से पैदा हुई स्वतंत्र इच्छा, ईश्वरीय इच्छा में विलीन हो जायेगी।

अन्ज़ार : आज हम सब जगह उन उपदेशकों को, जो लोगों के कष्ट दूर करते हैं, और उन आध्यात्मिक गुरुओं को, जो भौतिक पदार्थ प्रदान

करते हैं, देखते व उनके बारे में सुनते हैं। क्या एक असली सद्गुरु स्वयं को आध्यात्मिक कानून की सीमाओं के अंदर कैद रखेगा और चमत्कार करने से स्वयं को रोकेगा नहीं ?

एरच : हमें यह कहने का कोई अधिकार नहीं है कि एक असली सद्गुरु को क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये क्योंकि असली सद्गुरु के लिये जो समय की सीमा से परे, अपार और असीम है, कोई सीमायें नहीं हैं।

मैंने मेहेरबाबा से जो चैतन्यता पाई है, उसके अनुसार मैं यही कह सकता हूँ कि अपने आप में चमत्कारों का कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि वे हमें वास्तविकता से दूर ले जाते हैं। बाबा चाहते हैं कि हम इस प्रकार की बातों से दूर रहें और उनके (चमत्कारों के) साथ वैसा ही भाव रखें जिस प्रकार हम जादू के खेल को देखकर करते हैं। इससे हमारा मनोरंजन होता है, हम प्रसन्न होते हैं, हँसते हैं और खूब आनन्दित होते हैं; लेकिन क्योंकि इसका कोई यथार्थ मूल्य नहीं है इसलिये हमें शक्तियों के प्रदर्शन अथवा चमत्कार दिखाने को कोई महत्त्व नहीं देना चाहिये।

बाबा ने कहा है कि ईसामसीह उन चमत्कारों के कारण याद नहीं किये जाते, जो उन्होंने किये। वह स्वयं अपने कारण याद किये जाते हैं क्योंकि सर्वशक्तिमान होते हुये भी उन्होंने लोगों द्वारा कष्ट व अपमान सहा और बाद में शूली पर चढ़ा दिये गये।

जो लोग समझते हैं, उनके लिये चमत्कार उन हड्डियों के समान हैं जो भौंकते हुये कुत्तों के सामने फेंक दी जाती हैं। लेकिन चमत्कारों के व्यापारी, मायावी करतब दिखाने वाले लोगों तथा जादूगरों के समान, फूलते फलते रहेंगें। जब तक लोगों के समूह उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं, इस मनोरंजन को कौन रोक सकता है ? फिर भी, मनोरंजन के बाद हमें उनके प्रति आसक्त अथवा उस नाटक से कोई संबंध नहीं रखना चाहिये।

अन्ज़ार : ऐसे व्यक्ति के आध्यात्मिक पतन में अहं की क्या भूमिका होती है, जिस व्यक्ति में आत्मा विषयक अथवा गुप्त शक्तियाँ है। और जो ऐसी शक्तियों का प्रदर्शन करना चाहता है ?

एरच : जब तक कोई व्यक्ति अपने आपको दृढ़तापूर्वक स्वीकार

करता है, उसकी स्वीकारोक्तियाँ उसका पतन कर देंगी और प्रसिद्धि प्राप्ति के लिये प्रयत्न करने का अर्थ है कि वह और अधिक मोटी दीवारें बना रहा है जो उसे अपने ही अस्तित्व से अलग कर रही हैं। यह हमारी गर्वोक्तियों का ही परिणाम है कि आत्मा भटक जाती है और हम स्वयं को वास्तविकता से अलग कुछ और ही समझने लगते हैं। इसलिये अधिक गर्वोक्तियाँ अधिक अहंकार को जन्म देती हैं और वे दीवारें, जो हमें यथार्थता से अलग रखती हैं, और अधिक मोटी हो जाती हैं।

गुप्त शक्तियाँ, जो दूर की घटना को देखने, दूर की आवाज़ को सुनने, हवा में उड़ने आदि में प्रदर्शित होती हैं, ऐसी शक्तियाँ हैं जिनका कोई यथार्थ मूल्य नहीं है। वे हमारे चारों ओर हैं। लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि वे लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करती हैं। उनका मूल्य एक सीमा तक ही है और इस स्थिति में उनका मुख्य दायित्व हमें इस बात से सावधान करना है कि उनके प्रलोभन के बावजूद, हमें उनसे (इन शक्तियों से) दूर रहना चाहिये। उनके प्रति आसक्ति अथवा संबंध होने से हमें अपने वास्तविक लक्ष्य (ईश्वर साक्षात्कार) को भूल जाने की भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

अन्ज़ार : जो बाबा प्रेमी गुप्त शक्तियाँ रखने का दावा करते हैं, उनसे सम्पर्क रखने में बाबा प्रेमियों को क्या नुकसान हो सकता है ?

एरच : जो बाबा प्रेमी इस प्रकार के क्रियाकलापों से किसी भी रूप में संबंध न रखने की बात याद रखते हैं, उन्हें कोई नुकसान नहीं हो सकता। जब तक कोई प्रेमी इस प्रकार की शक्तियों के प्रदर्शन से अपने आपको दूर रखता है, इस प्रकार की शक्तियों से आसानी से प्रभावित नहीं होता, उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर विवेकपूर्वक चलता है, उसे गुप्त शक्तियाँ रखने वाले व्यक्ति से दोस्ती रखने में कोई नुकसान नहीं है।

अन्ज़ार : जो लोग मेहेरबाबा के प्रेमी नहीं हैं, उनको ऐसे व्यक्तियों से क्या नुकसान हो सकता है ?

एरच : उन्हें निःसंदेह नुकसान होगा। यह बिल्कुल ऐसा ही होगा कि आप मेहेराज़ाद से अहमदनगर जाने के लिये सड़क पर चलना शुरू करें, लेकिन सीधे रास्ते पर चलते रहने के बजाय, आप कुछ विशेष स्थानों पर

खोदी गई खाइयों को पार करने का निश्चय करें। आपको हर खाई में नीचे उतरना होगा और फिर स्वयं को चोट लगने का, विशेष रूप से रात के अंधेरे में, खतरा मोल लेकर, कठिनाई से ऊपर चढ़ना होगा। इस प्रकार इस जन्म में सुरक्षित मार्ग पर चलने के बजाय, आपने विनाशकारी परिणामों, देरी और खतरे से भरपूर रास्ते को चुना। प्रेम का मार्ग सीधा मार्ग है जिसमें आप ईश्वर के प्रति प्रेम में सब कुछ भूल जाते हैं, जबकि प्रलोभनों से भरपूर मार्ग में आप इस संसार में खो जायेंगे। माया की बजाय यथार्थता में सब कुछ खोने की ज़रूरत है।

अन्ज़ार : प्रार्थना की ज़रूरत को बाबा ने किस सीमा तक महत्त्व दिया है ?

एरच : प्रार्थना करने का महत्त्व इस बात से प्रकट होता है कि बाबा ने हमें ''परवरदिगार 'प्रार्थना''' दी।

अन्ज़ार : प्रार्थना की तुलना बाबा के नाम–जप से किस प्रकार कर सकते हैं ?

एरच : बाबा ने हमें बताया है कि उनके नाम का जप करना स्वयं एक प्रार्थना है और पूरी तरह एकाग्र चित्त होकर हृदय से उनके नाम का जप करना सबसे बड़ी प्रार्थना है जो कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार कर सकता है। इसके अलावा, इसके लिये किसी विशेष समय अथवा जगह की ज़रूरत नहीं है।

जब बाबा हमारे साथ थे, वे चाहते थे कि हम ''परवरदिगार प्रार्थना'' कहें। बाबा ने मानवता को केवल ''परवरदिगार प्रार्थना'' ही नहीं दी बल्कि इस प्रार्थना को करने में स्वयं भी भाग लिया। मुझे एक बार की घटना याद है जब उन्होंने मुझसे इस प्रार्थना को उस समय कहने के लिये कहा जब सारे शिष्य मंडली हाल में इकट्ठा थे। उस समय मुझसे एक ऐसी भूल हो गई जिसका मुझे अभी तक पछतावा है। इस प्रार्थना को कहने के समय खड़े होने का नियम है। इसलिये हम सब बाबा सहित खड़े हो गये। क्योंकि बाबा कूल्हे के जोड़ की चोट के कारण अधिक देर तक खड़े नहीं हो सकते थे, इसलिये वे मुझसे प्रार्थना को जल्दी जल्दी कहने के लिये इच्छा प्रकट करते रहे। जैसे ही मैंने जल्दी जल्दी कहने की कोशिश की,

मुझे ऐसा लगा कि मेरे द्वारा प्रार्थना का जल्दी जल्दी उच्चारण ऐसा प्रतिध्वनित हो रहा था जैसे कि स्टेशन से तेज गति से रेलगाड़ी जा रही हो। इस कल्पना से मैं जोर से हँसने लगा, लेकिन बाबा ने कुछ नहीं कहा और मेरी मूर्खता को सहते रहे।

जब सब कुछ खत्म हो गया, उन्होंने मेरी हँसी का कारण पूछा और मैंने बताया कि उन्होंने मुझसे जल्दी जल्दी प्रार्थना कहने के लिये कहा था, और ऐसा करने पर मैंने अनुभव किया कि इसे जल्दी जल्दी कहना बेकार था।

बाबा ने मुझसे पूछा, ''इस समय प्रार्थना में मेरे भाग लेने के महत्त्व को तुम नहीं समझते हो। यह भावी मानवता की सहायता करेगा। इस समय मेरे इस प्रार्थना में भाग लेने से, जब कोई व्यक्ति यह प्रार्थना कहेगा, उसे लाभ होगा। इस समय मैं जिस तरह से पंगु और खड़े होने में असमर्थ हूँ, ऐसी अपनी असहायता के बावजूद, मैं प्रार्थना में तुम्हारे लिये नहीं बल्कि भावी मानवता के लिए भाग लेता हूँ। जब मैं शरीर छोड़ दूँगा और तुम्हारे बीच नहीं रहूँगा, जो कोई भी इस प्रार्थना को कहेगा, उसे फ़ायदा होगा।''

इससे परवरदिगार प्रार्थना के महत्त्व का पता चलता है। अतः हम यह याद रखते हुये इस प्रार्थना को कहें कि बाबा ने इसमें भाग लिया और वह चाहते थे कि हम इसे दिन में एक बार और अगर संभव हो तो दो बार कहें। अपने पिछले अवतरण में मोहम्मद की तरह बाबा ने दिन में पाँच बार अभ्यास करने के लिये नहीं कहा, क्योंकि पूरे जीवन में केवल एक बार कहना भी सहायक होगा।

अन्ज़ार : आपने जो कुछ बताया है, वह अधिक से अधिक लोगों को मालूम होना चाहिए। कई वर्षों तक मेरे साथ यह समस्या थी कि मैं पश्चाताप प्रार्थना को निष्कपट होकर कहने में असमर्थ था। इस प्रार्थना को प्रतिदिन कहना तो दूर की बात है, प्रार्थना को कहने की कोशिश करना भी मुझे पाखंड लगता था। उन कार्यों को करने के कारण, जिनसे मैं जानता था कि बाबा अप्रसन्न होंगे, मैं पश्चाताप करने के लिये इच्छा उत्पन्न करने में भी असमर्थ था और इसलिये मैं प्रार्थना नहीं कर सका।

उस समय मैं यह नहीं जानता था कि बाबा उस प्रार्थना में भाग लेते थे लेकिन एक बार यह मालूम होने पर, मैं प्रार्थना शुरू करने में समर्थ हो गया और उससे पश्चाताप करने के लिये इच्छा होने लगी।

एरच : जब बाबा ने स्वयं प्रार्थना में भाग लेने का संकेत किया, उनका यही मतलब था। अन्ततः यह सब लोगों में पश्चाताप करने, ईश्वर को पुकारने, उसका नाम लेने और उसकी स्तुति तथा प्रशंसा करने की इच्छा उत्पन्न करेगी।

अन्ज़ार : मैंने कम से कम पन्द्रह प्रार्थनायें पढ़ी हैं जो बाबा ने विभिन्न प्रकार के अवसरों पर लिखवाईं थीं, और इन प्रार्थनाओं में से प्रत्येक में अपने पूर्व अवतारों जुरथस्त्र, कृष्ण, बुद्ध, ईसामसीह और मोहम्मद से प्रार्थना करने में बाबा का क्या उद्देश्य था ?

एरच : इस विषय में शिष्यों को कुछ पता नहीं था और बाबा ने कुछ व्याख्या नहीं दी। यह उनकी खुशी थी और हमने इसे स्वीकार किया।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी की अवधि के मनोनाश काल में, बाबा ने सभी अवतारों से सहायता के लिये प्रार्थना की ताकि ''उनकी इच्छा पूरी हो और अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति हो।'' क्या आप इसे समझा सकते है ?

एरच : उस समय हमें यह भ्रम हुआ था कि इस युग का अवतार, पूर्व अवतारों से दया के लिये प्रार्थना कर रहा है लेकिन तब इस बात ने मेरा ध्यान आकर्षित किया कि बाबा ने नई जिन्दगी में 'साथी' की भूमिका अपनाई थी और इसलिये अपनी भूमिका को पूर्णता की सीमा तक निभा रहे थे। नई ज़िन्दगी बाबा और उनके साथियों के लिये असहायता और निराशा की ज़िन्दगी थी, इसलिये भूतकाल के अवतारों से सहायता के लिये प्रार्थना करना, बाबा की साथी और ईश्वर को पाने की इच्छा रखने वाले साधारण व्यक्ति की भूमिका के पूर्णतया अनुकूल था।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी के वृत्तान्तों में ऐसे निरंतर संकेत मिलते हैं कि बाबा चलते चलते सड़क के बीच में रुक जाते थे और साथियों से प्रार्थना करने के लिये कहते थे। वे किस प्रकार की प्रार्थनायें थीं और क्या बाबा

कोई संकेत करते थे अथवा प्रार्थना के दौरान साथियों को कोई संकेत करने की ज़रूरत होती थी ?

एरच : प्रार्थनायें उस समय की जाती थीं जब हम आराम करने के लिये पेड़ के नीचे अथवा रात में सोने के लिये किसी कैम्प में रुकते थे। प्रार्थनायें उस समय नहीं की जाती थीं जब हम सड़क पर चल रहे होते थे और इसके लिये कोई संकेत नहीं किये जाते थे।

प्रायः, बाबा किसी साथी को संकेत करते थे जो बाबा द्वारा चुनी गई अपने धर्म की कोई प्रार्थना कहता था। सभी प्रार्थनायें ईश्वर की यादें और रक्षा के लिये की गई ईश्वर की गंभीर स्तुतियाँ थीं। बाबा ने पहले ही यह नियम बना दिया था जब उन्होंने हमसे कहा था, ''दिन का आरम्भ प्रार्थना से करने की याद रखो और जब दिन समाप्त हो और तुम्हारे सारे काम खत्म हो जायें, ईश्वर की याद करो। उसकी याद करो और अपनी शक्तियाँ तथा अपनी कमज़ोरियाँ उसको अर्पित करो।''

• • •

vieku&,d fNik g|vk ojnku

मेहेरबाबा ने कहा था, ''वह व्यक्ति दोगुना भाग्यशाली है जो मेरे नाम पर अपमानित किया जाता है।''

सन् १९३८ में मैंने मेहेरबाबा की सेवा अभी शुरू ही की थी और उस समय मेहेराबाद में ऊपर पहाड़ी पर केवल उनकी महिला शिष्यायें रहती थीं। बाबा के अलावा किसी भी पुरुष को वहाँ जाने की अनुमति नहीं थी। केवल एकमात्र अपवाद कारीगर होते थे जो ज़रूरत पड़ने पर वहाँ जाते थे।

एक दिन बाबा जब ऊपर पहाड़ी पर जा रहे थे, मैं उनके साथ आधे रास्ते तक गया। पेन्डू और पादरी भी बाबा के साथ थे और उनके बीच थोड़ा वादविवाद हुआ।

अचानक बाबा ने एक व्यक्ति को ऊपर पहाड़ी पर जाते देखा और संकेतों के द्वारा उन्होंने कहा, ''क्या उसे मालूम नहीं है कि किसी भी व्यक्ति को पहाड़ी पर ऊपर जाने की अनुमति नहीं है ? उसे तुरंत रोको।''

इसलिये मैं जल्दी से उस व्यक्ति की ओर दौड़ा और गुस्से से उसके ऊपर चिल्लाया। उसने हकलाते हुये कहा, ''मैं बाबा के दर्शन के लिये ऊपर जा रहा था'' और वह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। मैंने उसे आगे जाने से रोका और उसे बाबा के पास लाकर उसके आने का उद्देश्य बताया। जैसा कि मैंने कहा है कि बाबा की सेवा करने का यह मेरा पहला साल था और बाबा की इच्छा पूरी करके मुझे अपने ऊपर अत्यंत गर्व था।

बाबा ने उस व्यक्ति को अत्यंत प्रेमपूर्वक गले लगाया और कहा, ''तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुम मेरे दर्शन के लिये जा रहे थे और तुम अपमानित किये गये।''

यह सुनकर मेरा गर्व खत्म हो गया और मैं अत्यंत व्याकुल हो गया क्योंकि मैं उस व्यक्ति के प्रति अत्यंत कठोर और रूखा रहा था और बाबा उसके प्रति इतने अधिक प्रेममय थे। तब बाबा ने आगे कहा, ''मेरे पास आना और मेरा दर्शन करना एक बड़ा वरदान है। वे लोग दुगने भाग्यशाली हैं जो उस समय अपमानित किये जाते हैं जबकि वे मेरे पास आने और मेरा दर्शन करने की कोशिश करते हैं।''

• • •

,dek= volj tc geus /;ku fd;k

सन् १९३८ से लेकर मेहेरबाबा के साथ मेरे रहने के पूरे समय में, उन्होंने केवल एक अवसर पर मंडली को ध्यान करने के लिये निर्देश दिया।

अपने गहन आध्यात्मिक कार्य से विश्राम पाने के लिये बाबा प्रायः हमारे साथ ताश खेलते थे। एक दिन जब हम ताश के खेल की दो बाजियाँ खेल चुके, बाबा ने अचानक पत्ते नीचे फेंक दिये और हमसे ध्यान करने के लिये कहा। हमें बहुत आश्चर्य हुआ क्योंकि उनके साथ इतने समय रहने के बाद भी, उन्होंने हमसे कभी ध्यान करने के लिये नहीं कहा था।

उन्होंने हमें निर्देश दिया, ''बाहर बरामदे में जाकर, आरामदायक हालत में बैठो और आराम करो। जब मैं पहली बार ताली बजाऊँ, अपनी

आँखें बन्द करो, दूसरी ताली बजने पर ईश्वर के बारे में सोचो; और तीसरी बार ताली बजाने पर अपनी आँखें खोलकर मेरे पास वापस आ जाओ।

''ईश्वर के बारे में सोचने के लिये तुम यह सोचो कि वह देदीप्यमान, अनन्त सत्ता और सर्वव्यापी है। उसका अस्तित्व है उसका प्रकाश, तेज और कान्ति। तुम ऐसा सोचो कि तुम उस प्रकाश का एक भाग हो और तुम इस विचार में लीन हो जाओ कि तुम उस प्रकाश के अंदर हो जो सर्वव्यापी है।''

हमने वैसा ही किया जैसा बाबा ने निर्देश दिया था। जब उन्होंने दूसरी बार ताली बजाई, हमने ध्यान के बारे में बाबा द्वारा दिये गये निर्देशों का पालन किया। हमें इतने अधिक आनन्द का अनुभव हुआ कि हम उसी हालत में रहना चाहते थे। जैसे ही यह विचार हमारे मन में आया, हमें अपने पास बुलाने के लिये बाबा द्वारा तीसरी बार बजाई गई ताली हमने सुनी।

• • •

,d dBkj tkxfr

अपने शुरू के जीवन में मेरा स्वभाव सन्देह करने वाला था और मैं किसी भी बात को आसानी से नहीं मानता था। उस समय मेहेरबाबा जब भी मंडली हाल में आते थे, वह हमसे पूछते थे कि क्या हम उन्हें कोई बात बताना चाहते हैं।

संयोगवश, गुस्ताद जी नाम के एक शिष्य अच्छा मनोरंजन करते थे। क्योंकि वह बाबा की आज्ञा से मौन थे, इसलिये मेरा काम उनके मौन संकेतों की व्याख्या करना था। समय समय पर गुस्ताद जी अपने स्वप्न अथवा प्रेतात्माओं से अपनी मुठभेड़ का वर्णन करते थे, लेकिन उनकी कुछ कहानियाँ स्पष्ट रूप से बाबा का मनोरंजन करने के लिये बनाई जाती थीं।

एक दिन मैं उनकी कहानी की व्याख्या कर रहा था। जब गुस्ताद जी ने बताया कि प्रेतात्मा के सिर ने आकाश को छू लिया, उस समय मैं अपनी व्यंग्य पूर्ण मुस्कराहट को दबा नहीं सका।

मुझे बेवकूफ़ों की तरह हँसते देखकर, बाबा ने कहा, ''माया में सब

कुछ संभव है। यह सृष्टि कल्पना से ही अस्तित्व में आई। यह सब एक स्वप्न है। प्रेतात्मायें होती हैं।'' लेकिन मेरे मन ने इसे स्वीकार नहीं किया।

कुछ समय बाद, एक दिन सुबह बाबा ने मुझे पूना भेजा और दोपहर बाद मुझे उनका संदेश मिला कि मैं तुरंत लौट आऊँ। मैं तुरंत वापस चल दिया और शाम को सात बजे मेहेराज़ाद पहुँच गया। बाबा ने मुझे जो काम दिया था उसके बारे में उन्हें बताने के बाद, मैंने खाना खाया और लगभग ६ बजे बाबा आराम करने के लिये अपनी चारपाई पर लेट गये। मैं जमीन पर सो गया।

जिस समय मैं गहरी नींद में सो रहा था, मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि कोई व्यक्ति मेरी छाती पर बैठा हुआ, मेरा गला दबाने की कोशिश कर रहा था। मेरी पहली प्रतिक्रिया इस व्यक्ति से जीतने और उसे अपनी छाती पर से उठाकर फेंक देने की थी। अतः मैं उससे लड़ने लगा जबकि उसकी उँगलियाँ मेरी गर्दन के चारों ओर कसती हुई मालूम होतीं थीं। हालांकि यह सब मेरी नींद में हो रहा था, मैं अपने कराहने के प्रति सचेत था। अन्त में, जो व्यक्ति मुझे मार रहा था, उसे मैंने अपनी छाती से दूर फेंक दिया और इसके साथ ही मैं जाग गया और चौंककर उठ बैठा।

बाबा चारपाई पर बैठे हुए मेरी ओर देख रहे थे और रात में पहरा देने वाला व्यक्ति भी कमरे में आकर, मुझे घूरकर देख रहा था। उस समय मैंने सोचा कि जिस समय मैं अपने इस जीवन के लिये संघर्ष कर रहा था, बाबा और रात के पहरेदार इस तमाशे का आनंद ले रहे थे।

तब बाबा ने पूछा, ''क्या हुआ ?'' और मैंने उन्हें बताया कि किस तरह कोई व्यक्ति मेरी छाती पर बैठकर मेरा गला दबाने की कोशिश कर रहा था और किस तरह मैं उसकी मज़बूत पकड़ से बचने में सफल हो गया था।

बाबा ने पूछा, ''क्या अब तुम विश्वास करते हो कि प्रेतात्मायें होती हैं ?''

• • •

ie dk ijLdkj

एक दिन हम लोग एलोरा की गुफायें देखने गये जो मेहेराज़ाद से कुछ ही मील दूर हैं। मेहेरबाबा हमें पास के एक छोटे से गाँव, खुल्दाबाद ले गये जहाँ एक पहाड़ी पर श्री ज़र–ज़री ज़रबख़्श की दरगाह है। बाबा ने हमसे उस दरगाह पर माथा टेकने और आदर प्रकट करने के लिए कहा। मैंने वहाँ के रखवाले से पता लगाया कि यह सन्त ७०० वर्ष पहले रहते थे।

बाद में, बाबा ने हमें बताया कि ज़र–ज़री–ज़रबख़्श एक सद्‌गुरु और शिरडी के साईंबाबा के गुरु थे। इससे मुझे भ्रम हुआ क्योंकि साईंबाबा ज़र–ज़री–ज़रबख्श के कई सौ वर्ष बाद हुये और सन् १९१८ में उन्होंने अपना शरीर छोड़ा। जब मैंने बाबा से इस बारे में पूछा तो उन्होंने स्पष्ट किया कि साईंबाबा अपने किसी पूर्व जन्म में ज़र–ज़री–ज़रबख़्श के शिष्य रह चुके थे। उस समय साईं बाबा ने अपने गुरु की सेवा प्रेम और भक्ति के साथ की और उनके ऊपर गुरु की कृपा हुई। यह कृपा उनके साथ आगे के जन्मों में भी रही जब तक वे स्वयं सद्‌गुरु नहीं हो गये और जिन्हें इस समय साईं बाबा के नाम से जानते हैं। इस तरह ज़र–ज़री–ज़रबख़्श के कारण साईं बाबा अपने समय के सद्‌गुरु हो गये।

दरगाह पर दर्शन करने के बाद, हम गुफाओं की ओर चल दिये। बुद्ध के शिष्यो ंने उनकी अत्यंत सुंदर मूर्तियों को दीवारों पर तराशा था। बाबा ने उनके कार्य की प्रशंसा की और कहा, ''मेरा यहाँ आना उनकी पूजा, उनके हृदय की तीव्र आकांक्षा, उनकी भक्ति का प्रत्युत्तर है। मेरा यहाँ आना उनके परिश्रम की सफलता है।''

• • •

eLrk dh [kkt

नवम्बर, सन् १९३९ में बंगलौर में एक दिन बाबा ने मुझे और काका को बुलाया। उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि हम उन्नत मस्तों के केन्द्र के रूप में कुछ मस्तों को इकट्ठा करने में उनकी मदद करें। वह चाहते थे कि हम यह कार्य तुरंत और पूरी तत्परता के साथ करें।

बाबा ने हमें याद दिलाया कि उस समय तक उनके कार्य के संबंध में हमें ज्यादातर पागल लोगों के साथ ही व्यवहार करना पड़ता था। लेकिन मस्तों की खोज में पथ प्रदर्शन के लिये, नमूने के रूप में हमें मोहम्मद मस्त को ध्यान में रखना चाहिये जिससे हम अच्छी तरह परिचित थे। बाबा ने मोहम्मद और एक साधारण पागल व्यक्ति में अंतर करने वाली कुछ बातें बताईं। उन्होंने हमसे स्पष्ट कहा कि अन्तिम निर्णय करने में हम अपनी अन्तरात्मा को ही चुनाव करने दें जिसका वह पथ प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने कहा, ''वह तुम मुझ पर छोड़ दो।''

बाबा ने हमें मस्त के पास जाने का तरीका बताया और यह भी बताया कि उसे अपने साथ आने के लिये हम किस प्रकार फुसलायें।

उन्होंने सलाह दी, ''इस बात पर ध्यान दो कि उस जगह के लोग उसका किस तरह सम्मान करते हैं और फिर उसी के अनुसार व्यवहार करो। उसके पास रहने वाले उसके शिष्यों तथा अनुयायियों से उसकी रुचियों और पसन्द के बारे में पता करो और कोई भी ऐसा काम न करो जिससे वह नाराज़ हो। विशेष रूप से किसी ऐसी चीज़ के बारे में पता लगाओ जिससे वह प्रसन्न होता हो। फिर उस वस्तु को खरीदकर मस्त को भेंट करो। तुम दोनों को मस्त को अपने साथ आने के लिये तैयार करने के लिये अपने साधन काम में लाने होंगे।''

हमें एक कठिन नियम का पालन करना था। हमें किसी भी व्यक्ति को, स्वयं मस्त को भी, यह नहीं बताना था कि उसे मेहेरबाबा ने बुलाया था अथवा उसे मेहेरबाबा के पास ले जाना था।

बाबा ने हमारी खोज के लिये दक्षिण भारत के कुछ खास स्थानों को चुना और हमें कुछ अच्छे मस्तों के साथ ठीक ग्यारहवें दिन बंगलौर लौट आने के लिए कहा। उन्होंने हमें यह भी निर्देश दिया कि हम सूरज छिपने के बाद केवल एक बार खाना खायें, लेकिन हम दिन में दो बार चाय पी सकते थे।

हमारा पहला पड़ाव पूर्व मध्य मद्रास राज्य में त्रिचनापल्ली था जहाँ हमारी परीक्षा शुरू हुई। जब हम वहाँ पहुँचे, मूसलाधार बरसात हो रही थी। हालाँकि मैं पाँच भाषाओं में बात कर सकता था, फिर भी वहाँ के लोग

हमारी बात समझ नहीं पा रहे थे। अन्त में, सरदार साहिब नाम के एक व्यक्ति ने, जो उर्दू बोलता था, हमारी खोज में हमारा पथ प्रदर्शक बनने का प्रस्ताव रखा। उसने हमें मोतीबाबा के बारे में बताया जो एक प्रसिद्ध मस्त था और नागापट्टम में रहता था। हमने पहले त्रिचनापल्ली में यूसुफ नाम के एक मस्त को खोजने का निश्चय किया लेकिन कीचड़ से भरी गलियों में कठिनाई से चलते हुये उसे ढूँढने के बावजूद, वह नहीं मिला।

हमने वापस आकर सरदार साहिब से मिलने का निश्चय किया। हम उसके साथ एक उधार ली हुई कार में गये, जिसकी हाल ही में मरम्मत हुई थी। हम अभी लगभग २० मील दूर ही गये थे जब हमारी भेंट दो किसानों से हुई जो हमें देखकर जोर जोर से हाथ हिला रहे थे। उन्होंने बताया कि आगे जाना खतरनाक है क्योंकि सब जगह पानी भरा हुआ था। वापस लौटने के अलावा, हमारे पास दूसरा कोई रास्ता नहीं था। हमने रेलवे स्टेशन पर कार छोड़ी और बड़ी मुश्किल से ट्रेन पकड़ सके। यह आखिरी ट्रेन थी क्योंकि शीघ्र ही बढ़ते पानी के स्तर के साथ रेल की पटरियाँ बह गईं।

हम नागापट्टम पहुँचे और अगले दिन छठी भूमिका के मस्त मोतीबाबा की खोज में निकल पड़े। हमने उससे सुबह थोड़ी देर के लिये भेंट की। हम उसी दिन शाम को फिर गये और जिस घर में वह रहता था, वहाँ पर शिष्यों तथा आने वालों की भीड़ के साथ उसके दिखाई देने का इन्तजार करने लगे। थोड़ी देर बाद हमने उसके पैरों की आवाज़ को पास आते सुना और मोतीबाबा ने, जो चमकीली आँखों वाला एक बूढ़ा आदमी था, बरामदे में कदम रखा। उसने तुरंत अपने बाहर के भीगे कपड़े जिनमें सात कोट और सात पायजामा थे, उतारना शुरू कर दिया और उसके शरीर पर केवल अन्दर के वस्त्र रह गये। इसके बाद वह आरामदायक स्थिति ग्रहण करके बीड़ी पीने लगा।

इसके बाद, मोती बाबा ने अपने एक सहायक को खाना बनाकर लाने की आज्ञा दी। यह काम एक ऐसा आदमी करता था जो पहले कोढ़ी था। लेकिन मोतीबाबा की आज्ञा से वह उनके साथ रहने और उनके पैरों की धूल अपने कोढ़ के धब्बों पर मलने से ठीक हो चुका था।

जब हमने मोतीबाबा से कुछ दिनों के लिये हमारे साथ चलने के लिये कहा, उसने अजीब ढंग से उत्तर दिया। उसने कीचड़ से सने अपने पैरों की ओर इशारा किया और एक लम्बी साँस लेकर कहा, ''मैं अभी अभी उस व्यक्ति से भेंट करके वापस आया हूँ जिसने तुम्हें भेजा है। मैं थक गया हूँ और इस समय तुम्हारे साथ जाने की कोई ज़रूरत नहीं है।''

अगले दिन चट्टी बाबा नामक मस्त से सम्पर्क करने की कोशिश करने के लिये, जब हम नागापट्टम से चले, सरदार साहिब, जो अभी तक हमारे साथ थे और मस्तों से भेंट करने में बहुत रुचि लेने लगे थे, वह भी हमारे साथ चले। इस मस्त को चट्टी बाबा इसलिये कहा जाता था क्योंकि वह हमेशा एक छोटी चट्टी या घड़ा लिये रहता था।

जब हमने चट्टी बाबा को पहली बार देखा, वह बहुत ज्यादा भीड़ वाली चौड़ी सड़क के किनारे जा रहा था। उसके पास से निकलने वाले लगभग सभी लोग, उसके प्रति आदर प्रकट करने के लिये जमीन पर पूरे लेट जाते थे। तब चट्टी बाबा जमीन से एक चुटकी धूल लेता था और उस व्यक्ति को दे देता था जो उसे अपने माथे पर मल लेता था।

हमने मस्तों के समीप जाने के बारे में बाबा की सलाह को याद करके, यही किया और अपने हिस्से की चुटकी भर धूल प्राप्त की लेकिन जब हमने उससे अपने साथ बंगलौर चलने के लिये कहा, उसने कहा कि उसे अपने बच्चों के साथ बहुत काम करना था और वह कुछ दिनों बाद आयेगा।

हम बहुत निराश हुये और इसलिये हमने अपनी यात्रा आगे ज़ारी रखने का विचार किया। हमें मालूम हुआ कि रेलगाड़ियाँ नहीं चल रही थीं क्योंकि रेल की पटरियाँ टूट गईं थीं। यातायात के किसी भी साधन के अभाव में, हमने आधे पानी में डूबे हुये गाँव के लगभग ६ मील भाग को पानी में हैलकर पार करके, कुछ सूखे भाग में जाने का निश्चय किया। यहाँ भाग्य ने हमारा साथ दिया और हमें तंजौर के लिये बस मिल गई।

बाबा द्वारा दिया गया समय खत्म हो रहा था, इसलिये तंजौर में हमने अब्दुल कादिर जिलानी नामक मस्त से सुबह सूरज निकलने से पहले मिलने का निश्चय किया। वह हमें एक कसाई के घर के बरामदे में आराम करता हुआ मिला। जैसे ही मैं और काका उसके सामने पहुँचे,

उसने आदर की मुद्रा में अपने दोनों हाथों की हथेलियाँ ऊपर करके, हाथ अपनी दाढ़ी की ओर ऊपर उठाये और धीमी आवाज़ में पुकारने लगा, ''मेहेरबाबा, मेहेरबाबा''। वह हमारे साथ जाना नहीं चाहता था लेकिन उसने वचन दिया कि वह बाद में आयेगा। हम तीसरी बार असफल रहे।

हमें एक बार फिर यह मालूम हुआ कि आने जाने के लिये ट्रेन तथा बसें नहीं मिल रही थीं। क्योंकि हमें त्रिचनापल्ली वापस लौटना था, इसलिये हमने रेल की पटरियों का निरीक्षण करने वाली एक गाड़ी में उस स्थान तक जाने का निश्चय किया जहाँ पर पटरी में पहली दरार थी। लेकिन ३६ घंटे तक इस जगह निःसहाय पड़े रहने के बाद, हमने पानी से भरे हुए गाँव से होकर सोलह मील तक पैदल जाने की कोशिश करना तय किया। अगले दिन अपरान्ह के बाद, काफी समय हो जाने पर, हम बुरी तरह थके हुए एक छोटे से रेलवे स्टेशन पर पहुँचे।

वहाँ पर स्टेशन मास्टर मेरा पुराना दोस्त निकला और उसने हमें चाय पिलाई। उसी दिन शाम को हम बैलगाड़ी से त्रिचनापल्ली के लिये चल दिये। वहाँ सरदार साहिब, हमारा विश्वासपात्र पथ प्रदर्शक, को विदा करने के बाद, बाबा को अपनी असफलता की कहानी सुनाने के लिये हमने बँगलौर की अपनी वापसी यात्रा शुरू की।

इसलिये बाबा ने स्वयं मस्तों से सम्पर्क करने का निश्चय किया और मुझे, काका, जाल केरावाला तथा गुस्ताद जी को अपने साथ ले लिया। त्रिचनापल्ली आकर उन्होंने यूसुफ से सम्पर्क किया और नागापट्टम में मोती बाबा से बिना किसी कठिनाई के सम्पर्क किया। बाबा ने मोतीबाबा के पैर धोये, खाना खिलाया और थोड़ी देर के लिये उसके साथ चुपचाप बैठे।

नागापट्टम में चट्टी बाबा को ढूँढ़ना आसान नहीं था; लेकिन काफी समय तक ढूँढने के बाद हमें वह शहर के बाहर लगभग ५ मील की दूरी पर मिल गया। पहले तो उसने उस टैक्सी में बैठने से मना कर दिया जो उसकी खोज में इस्तेमाल की गई थी, लेकिन अन्त में वह दयालु हो गया और उसे उस होटल में लाया गया जहाँ उसके स्वागत की तैयारियाँ की गई थीं।

बाबा से मिलने पर चट्टी बाबा ने उनके प्रति पूर्ण रूप से समर्पण कर दिया। बाबा ने उसे पचास बाल्टी पानी से नहलाया और फिर खाना

खिलाया। चट्टी बाबा का यह स्नान आगे चलकर बाबा के साथ उसके संबंध का एक चित्ताकर्षक अंग बन गया; क्योंकि बाबा ने हमारी बंगलौर की वापसी यात्रा में उसे ट्रेन के डिब्बे में फिर से नहलाया। बाद में, जब उसे बंगलौर में विशेष मस्त आश्रम में रखा गया, बाबा की यह रीति थी कि वह स्वयं उसके साबुन मलते व नहलाते थे और मंडली उसका बदन पोंछती तथा उसे कपड़े पहनाती थी।

जब कभी बाबा किसी मस्त के साथ बैठते थे, वे हमेशा कठोर एकान्त पर जोर देते थे। बाबा के साथ अकेले बैठने के लिये तैयार होने से पहले, चट्टी बाबा ने कई बार बाबा को मना कर दिया। मुझे याद है जब एक बार चट्टी बाबा के साथ लगभग दो घंटे एकान्त में बैठने के बाद, बाबा ने मुझे संकेत किया कि मैं बाहर से दरवाजे की साँकल खोल दूँ। जैसे ही मैंने सांकल खोली, चट्टी बाबा दरवाजे से बाहर की ओर दौड़ा और जैसे ही वह मेरे पास से निकला, मैंने अपने पूरे शरीर में एक अत्यंत तीव्र झटका महसूस किया जैसा बिजली के करेंट से लगता है।

मेहेरबाबा ने अप्रैल सन् १६४० में बंगलौर के आश्रम को बंद कर दिया और चट्टी बाबा तथा दूसरे मस्तों को ट्रेन से मेहेराबाद भेज दिया। वहाँ वह नहाकर खूब खुश होता था लेकिन उसे बाल सुखाना अच्छा नहीं लगता था। इसीलिये वह बाल बिखेरे हुये चारों ओर घूमता रहता था। नहाने के बाद वह रोज़ एक जगह बैठ जाता था और जमीन की मिट्टी उठाकर अपने सिर पर डालता रहता था।

वह अक्सर ऐसी बातें बोलता रहता था जिनका आपस में कोई संबंध नहीं होता था। वह अपनी देखभाल करने वाले को बताता था कि मेहेरबाबा उसके बड़े भाई थे। वे एक महान पुरुष थे और पूरे संसार में उनके समान कोई दूसरा नहीं था।

बाबा ने हमें बताया था कि मस्त उनसे प्रेम करते थे और वे मस्तों से प्रेम करते थे लेकिन बाबा ने कभी भी यह नहीं बताया कि वे मस्तों के साथ कौन सा विशेष कार्य करते थे। उन्होंने यह भी बताया कि मस्तों के साथ सम्पर्क से उन्हें (बाबा) मदद मिलती थी और वे उनकी (मस्तों की) सहायता करते थे। मेरा अपना अनुभव यह है कि मेहेराबाद में उनके (बाबा) मस्तों के साथ कार्य का असर विश्व की घटनाओं पर होता था।

फ्रांस के पतन के साथ ही वर्ष १६४० यूरोप के लिये विनाशकारी सिद्ध हुआ। चट्टी बाबा कभी अखबार नहीं पढ़ता था और प्रकट रूप से वह लड़ाई से पीड़ित यूरोप में होने वाली घटनाओं के सम्पर्क में बिल्कुल नहीं था। फिर भी, उसने अपनी देखभाल करने वाले व्यक्ति को बताया कि यूरोप के लोगों को बहुत अधिक दुख और कष्ट का सामना करना पड़ रहा था लेकिन वह फिर से सुखी जीवन बिताने के लिये ज़िन्दा रहेंगे। एक दिन जब वह अपने सिर पर मिट्टी डालने में व्यस्त था, उसने कहा कि संसार में बहुत ज्यादा कष्ट बढ़ेगा और सुख का अकाल पड़ेगा लेकिन अन्त में मेहेरबाबा संसार के कष्टों को दूर करेंगे।

६ जून १६४० को रात में चट्टी बाबा अचानक उग्र हो गया और शोर करने लगा। वह सीधे बाबा के कमरे में जाकर कहने लगा कि उसका घर पूरी तरह नष्ट हो गया था और वह बाबा के पास शरण लेने के लिए आया था। यह जाहिर था कि वह अपनी छोटी सी झोपड़ी की बात नहीं कर रहा था जहाँ वह रहता था क्योंकि वह अभी तक सुरक्षित थी। बाबा ने आज्ञा दी कि उन्हें अकेला छोड़ दिया जाये। हमें चट्टी बाबा की बकबक सुनाई देती रही। अन्त में वह शान्त हो गया और बाकी रात उसने बाबा के साथ अकेले बिताई।

अगले दिन बाबा ने हमें बताया कि फ्रांस के साथ चट्टी बाबा का आध्यात्मिक संबंध था। फ्रांस में घटनाओं के मोड़ से वह निराशा के कारण बेचैन हो गया था। फ्रांस की सेना ५ जून को हार गई थी और जर्मनी की सेना ने आठ दिन बाद पेरिस में प्रवेश किया था।

नवम्बर सन् १६४० के शुरू में बाबा पूरे भारतवर्ष और लंका में दूर दूर के स्थानों की यात्राओं के लिये चट्टी बाबा के साथ रवाना हुये। जल्दी ही चट्टी बाबा बेचैन हो गया और कहने लगा, ''मैं यहाँ नहीं रूकूँगा। मुझे जाना है।'' एक दिन जयपुर में वह बोला, ''मेरे बड़े भाई (बाबा) को अभी भी संसार में बहुत अधिक काम करना है, लेकिन मुझमें इस प्रकार का काम करने की ताकत नहीं है।''

क्वेटा में एक बार ओले गिरने के बाद, चट्टी बाबा ने कहा, ''संसार

में इतना अधिक कष्ट आयेगा जिसकी कल्पना कोई नहीं कर सकता। भाई–भाई की हत्या करेगा। तब पूरा संसार मेरे बड़े भाई (बाबा) के बारे में सोचेगा। उस समय वह पर्दे को हटा देंगे और सब लोग उनकी पूजा करेंगे।''

धीरे–धीरे चट्टी बाबा नागापट्टम वापस जाने की अधिक जिद करने लगा और सितम्बर १६४१ में बाबा उसे वापस भेजने के लिये तैयार हो गये। जाने के दिन वह जोर जोर से रोते हुये बाबा से कहने लगा कि वह बहुत अधिक थक गया था और यह उसके जाने का समय था। तब बाबा ने उसे अपने हाथों से खाना खिलाया और दो मंडली जनों के साथ उसे वापस भेज दिया। उसके जाने के बाद मंडली जन उदास हो गये क्योंकि वे उसे बहुत प्यार करने लगे थे। निःसंदेह बाबा भी उदास थे क्योंकि उन्होंने इसको मंडली जनों की अपेक्षा, अनन्त रूप से अधिक गहराई से अनुभव किया होगा।

जुलाई सन् १६४८ में मेहेरबाबा ने चट्टी बाबा के साथ अंतिम सम्पर्क किया। चट्टी बाबा के साथ मेहेरबाबा का काम सन् १६३६ से सन् १६४१ तक दो वर्ष रहा। नागापट्टम में चट्टी बाबा हमें बूढ़ा, कमजोर और उदास मिला। इस अन्तिम सम्पर्क में बाबा ने उसे कुछ केले दिये।

एक बार मेहेरबाबा ने डा. अब्दुल गनी को बताया था, ''अगर मैं वास्तव में कुछ पसंद करता हूँ तो वो हैं मस्त और बच्चे। मैं मस्तों को उनकी शक्ति और बच्चों को उनकी असहायता के कारण पसंद करता हूँ। प्रेम की अग्नि वास्तव में बहुत भयंकर होती है और मस्त ईश्वर, प्रियतम को प्रेम की इस भयंकर अग्नि की चुनौती देते हैं।''

इस समय, डा. गनी ने बाबा से पूछा, ''अधिकांश मस्त गंदे और स्वास्थ्य के लिये नुकसानदेह वातावरण को रहने के लिये क्यों चुनते हैं, और इस वातावरण से उनके स्वास्थ्य पर कोई बुरा असर क्यों नहीं होता?''

बाबा ने कहा, ''गंदे वातावरण में रहना, अपने भौतिक अस्तित्व को पूरी तरह भूलने का एक उपाय है। जब शरीर की पूरी तरह उपेक्षा की जाती है अथवा भुला दिया जाता है–क्योंकि उस समय चेतना केवल दैवी प्रियतम के लिये प्रेम के प्रति सचेत रहती है, यह नष्ट नहीं होता बल्कि

यह अपनी देखभाल अपने आप करता है। साधारण मनुष्यों के दिमाग अपने शरीरों की देखभाल में ही बराबर लगे रहते हैं, लेकिन हर तरह की सावधानी और देखभाल के बावजूद शरीर के क्षय को कभी भी रोका नहीं जा सकता।

''हर व्यक्ति के लिये ईश्वर का प्रेमी होना संभव नहीं है। इस प्रकार के प्रेमी प्रेम की अग्नि में इतने अधिक लीन हो जाते हैं कि वे प्रेम की यन्त्रणा का आनंद लेते हैं और इसकी अधिकाधिक आकांक्षा करते हैं। वे आध्यात्मिक उन्नति की अपनी अवस्था के प्रति सचेत नहीं होते हैं और न ही उन्हें प्रियतम से अपने वियोग अथवा उसके साथ मिलन का कोई विचार ही होता है। वे जिस समर्पित अवस्था में होते हैं उस अवस्था के प्रति समर्पित होते हैं, और जब उनका समर्पण अपनी चरम सीमा पर पहुँच जाता है तब प्रियतम उनके साथ मिलन की इच्छा करता है।''

• • •

nSoh igpku

जनवरी सन् १६४७ में एक दिन मैं एक गुणी यात्री को महाबलेश्वर लाया जहाँ उस समय मेहेरबाबा ठहरे हुये थे। वह एक दुबला, वयस्क मुसलमान था जिसका चेहरा दयापूर्ण था। उसे भोरवाला बाबा कहा जाता था क्योंकि वह भोर नामक गाँव में रहता था जो महाबलेश्वर से लगभग २५ मील दूर है।

बाबा के नाम को प्रकट न करने की बाबा की आज्ञा का पालन करते हुये, मैंने भोरवाला बाबा को बताया था कि मैं उसे अपने बड़े भाई के पास ले जा रहा था। लेकिन मुझे उस समय बहुत आश्चर्य हुआ, जब उसने तुरंत कहा कि उसे मेरे बड़े भाई से नहीं बल्कि मेहेरबाबा से मिलने के लिये ले जाया जा रहा था।

उसने आगे कहा, ''मेहेरबाबा में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड स्थित है। वह प्रत्येक के स्वामी हैं और वे प्रत्येक शिष्य के अंदर हैं। वे यह लोक हैं, वे वह लोक हैं जो इसके ऊपर है और इसके नीचे है। वह मुझमें हैं और प्रत्येक व्यक्ति में हैं। वह सन्तों के सन्त हैं और वह एक दृष्टि में पूरे भारत को देखते हैं।''

महाबलेश्वर पहुँचते ही मैंने बाबा को मस्त की कही हुई बातें बताईं और तब बाबा ने उससे न मिलने का निश्चय किया। बाबा ने भोरवाला बाबा के लिए रात का खाना भिजवाया। उन्होंने आज्ञा दी कि रात्रि विश्राम के बाद उसे वापस भोर भेज दिया जाये।

यद्यपि मेहेरबाबा उन मस्तों से सम्पर्क करना, जो उन्हें पहचान लेते थे, हमेशा नहीं टालते थे लेकिन साधारणतया वह उनसे मिलना पसंद नहीं करते थे। क्योंकि उस हालत में किसी प्रकार से, जिसे केवल बाबा ही जानते हैं, वे उनके काम के उद्देश्य के साथ संतुलन नहीं रख पाते थे।

• • •

ckck vkj fxjgdV

एक बार हम लोग मेहेरबाबा के साथ मस्त यात्रा पर थे। जिस समय बाबा एक छोटे से घर में अपने कार्य में व्यस्त थे और हम लोग बाहर उनका इन्तज़ार कर रहे थे, एक लकवा से पीड़ित युवक, अपने चेहरे पर अत्यधिक मित्रता के भाव लिये हुये मेरे पास आया। उसने मुझे अपनी बाँहों में भर लिया जैसे कि वह मुझे बहुत समय से जानता हो।

साधारणतः मैं उन अजनबी व्यक्तियों से बहुत सावधान रहता हूँ जो मुझसे दोस्ती करना चाहते हैं। लेकिन इस घटना में मैंने एक विकलांग व्यक्ति द्वारा दोस्ती दिखाने का बुरा नहीं माना। उसने मुझसे हमारी यात्रा के उद्देश्य के बारे में बहुत प्रेमपूर्वक बातचीत की, लेकिन कुछ क्षणों बाद मुझे मालूम हुआ कि वह बड़ी चतुराई से मेरी जेब से रुपये निकाल रहा था। मेरे पास प्रायः मस्तों को दिये जाने वाले रुपयों के नोट रहते थे।

मैंने तुरंत उसका हाथ पकड़ लिया। मैं उसे खींचकर उस घर से दूर ले गया ताकि बाबा के कार्य में विघ्न न हो और बहुत गुस्से के साथ उसे चाँटा मारने के लिये हाथ उठाया। मेरे पीछे से किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। ये बाबा थे। मुझसे पूरी स्थिति जानने के बाद, बाबा ने कहा, ''उसे धन की जरूरत होगी वरना वह तुम्हारी जेब से रुपये क्यों निकालता ?'' और बाबा ने मुझसे गिरहकट को दस रुपये के दो नोट देने के लिये कहा।

तब बाबा उस व्यक्ति की ओर मुड़े जिसे अब बहुत पछतावा हो रहा

था। उन्होंने उसे उसके इस कार्य के लिये डाँटा। फिर बाबा ने उससे वचन लिया कि वह फिर से धन की चोरी नहीं करेगा और न ही किसी दूसरे व्यक्ति की जेब काटेगा।

गुरु की ऐसी ही रीतियाँ होती हैं।

• • •

vg ij pkV

एक बार मस्त यात्रा में हम लोग आधी रात के अंधेरे में बैलगाड़ी से एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे थे। इस यात्रा में हमें जंगल के रास्तों से और पहाड़ियों के ऊपर अनजान और ऊबड़ खाबड़ जमीन वाले भाग से होकर जाना था। बाबा बैलगाड़ी में यथासंभव विश्राम कर रहे थे और तीन मण्डली के जन गाड़ी के किनारे बैठे हुये थे। उन्हें ऊबड़ खाबड़ रास्ते में बैलगाड़ी से यात्रा करने से तेज धक्के और कष्टपूर्ण झटके लग रहे थे।

इस यात्रा में होने वाले खर्च के लिये ५०० रु. की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी मेरी थी। लेकिन मेरी देखरेख के बावजूद, मेरी बटन लगी हुई जेब से रुपये गायब हो गये। अत्यंत दुखी होकर मैंने गाड़ी रोकी। मुझे लग रहा था कि मैंने बाबा के साथ विश्वासघात किया था।

बाबा ने बैलगाड़ी रोकने का कारण पूछा हमने उन्हें इस नुकसान की सूचना दी और हम तीनों ने धीमी आवाज में प्रस्ताव रखा कि हम जिस रास्ते से आये थे, उसी रास्ते पर पैदल वापस जाकर खोजें। हम लोग धीरे धीरे बात कर रहे थे क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि बैलगाड़ी चलाने वाला व्यक्ति हमारे पास रुपयों के बारे में जाने। बाबा ने हमसे चिन्ता न करने और अपनी यात्रा जारी रखने के लिये कहा।

निश्चित जगह पर पहुँचकर, बाबा ने मस्त से सम्पर्क किया। जब हम वापस चले उस समय भी अंधेरा था। छगन ने उस जगह से, जहाँ हमें रुपयों के गिरने का पता चला था, टार्च की रोशनी में खोज शुरू करने का निश्चय किया। दो मील चलने के बाद उसने नोटों की गड्डी सड़क पर पड़ी देखी और मैंने राहत की साँस ली।

बाबा की सेवा करते हुये हमें व्यावहारिक होना पड़ता था और इसके साथ ही हमें उनकी इच्छाओं का भी ध्यान रखना पड़ता था। मुझे अपने आप पर घमंड था कि मैं बहुत ही व्यावहारिक और नियमपूर्वक कार्य करने वाला था और मुझे इस तरह की हालत का कभी भी सामना नहीं करना पड़ेगा जिसका वर्णन मैंने किया। लेकिन यह घटना मेरे अहं पर चोट थी और इसने मुझे इस बात का अहसास कराया कि मैं कितने अधिक भ्रम में था। इस घटना के बाद मैंने यह दृढ़ निश्चय किया कि मैं भविष्य में और अधिक सावधान रहूँगा।

• • •

ek;k dh xnxh l

एक बार मस्त यात्रा के दौरान, मेहेरबाबा ने सलाह दी कि लम्बे और चक्करदार रास्त से जाने के बजाय, हम कीचड़ और पानी से भरे हुये एक छोटे से भाग को डोंगी द्वारा पार करें जो मछुआरे काम में लाते थे। फिर भी मैंने इशारा किया कि पेड़ के खोखले तने से बनी हुई ये छोटी नावें सुरक्षित नहीं थीं और उनसे जाने का खतरा मोल नहीं लेना चाहिये। बाबा ने फिर भी ज़िद की इसलिये मैंने उनमें से एक आदमी से हमें डोंगी से उस पार ले जाने के लिये कहा।

आधे रास्ते में ही कुछ बच्चों ने नाव वाले को चिढ़ाना और उसका ध्यान बँटाना शुरू कर दिया। नाव वाले का संतुलन बिगड़ गया और नाव उलट जाने से हम कीचड़ से भरे पानी में पूरे डूब गये। मैं किसी तरह बाबा की बाँह पकड़कर पानी से बाहर किनारे तक खींचकर लाया। हमारे कपड़ों से कीचड़ और पानी टपक रहा था।

मैं बाबा को एक पेड़ के नीचे छोड़कर, उनके लिए दूसरे कपड़े लेने के लिए शीघ्र ही विश्राम–गृह (Rest House) वापस आया। वापस लौटते समय रास्ते में, बाबा ने मुझसे कहा, ''यह अच्छा हुआ कि तुमने मुझे अपनी बाँह का सहारा दे दिया और मुझे डूबने से बचा लिया।''

मैंने उत्तर दिया, ''हाँ बाबा ! यह बहुत ही भयंकर दुर्घटना होती।''

तब बाबा ने मेरी ओर मुड़कर कहा, ''जिस प्रकार तुमने मुझे उस गंदे पानी से बाहर खींच लिया, ठीक उसी प्रकार एक दिन मैं तुम्हें माया की गंदगी से बाहर खींच लाऊँगा।''

• • •

rqe lEeku dh vi{kk ugh djk

जब कोई व्यक्ति मेहेरबाबा के समीप आता है, उसे सांसारिक चीजें नहीं मिलती हैं बल्कि हानि ही होती है– गर्व की हानि, स्वार्थ का त्याग और सम्मान की झूठी भावना का लुप्त हो जाना।

सन् १९३६ में, मुझे मेहेरबाबा के साथ रहते हुये एक वर्ष से भी कम समय हुआ था। उस समय हम बंगलौर में थे जहाँ बाबा ने एक मस्त आश्रम की स्थापना की थी। मेरा काम नं. ७ पैलेस रोड पर स्थित अपने कैम्प से लिंक नामक स्थान पर स्थित, जो दो मील से भी कम दूरी पर था, मस्त आश्रम में बाबा को कार से ले जाना था। रास्ते में एक विशाल भवन था जो क्रोमियम के एक अत्यंत धनी व्यापारी का था और जब कभी मैं कार चलाते हुये फाटक के सामने से निकलता था, बाहर बैठे हुये दो रक्षक (गार्ड) खड़े होकर स्वागत करते और नमस्ते करते थे। बाबा मुस्कराते थे और उनके नमस्ते करने से मैं गर्व का अनुभव करता था, क्योंकि मैं स्वयं को महत्त्वपूर्ण अनुभव करता था।

जब आश्रम पूरी तरह स्थापित हो गया, मुझे मस्तों का संरक्षक बना दिया गया और उनकी देखरेख करने का उत्तरदायित्व मेरा था। बाबा मस्तों को ''मेरे प्यारे बच्चे'' कहते थे और वह उनके साथ काम करने के लिये रोज़ आते थे। मेरा काम उनकी मदद करना था। वह उनके (मस्तों के) बाल काटने, नहलाने, शौचालय साफ करने में व्यस्त रहते थे और हर तरह से उनकी ज़रूरतों का बहुत अधिक ध्यान रखते थे।

जैसे जैसे मस्तों की संख्या बढ़ती गई, यह लगने लगा कि एक शौचालय पर्याप्त नहीं था, इसलिये बाबा ने मुझसे दूसरे शौचालय की व्यवस्था करने के लिये कहा। इस बीच टट्टी से भरी हुई बाल्टी को बाबा स्वयं ले जाते थे और जब कभी यह फर्श पर गिर जाती थी, वह इसे धोते व साफ करते थे। एक दूसरी बाल्टी की अपनी ज़रूरत के बारे में उन्होंने

मुझे कई बार याद दिलाया, लेकिन मुझे समय नहीं मिलता था। एक दिन बाबा ने अपना धीरज खोते हुये मुझसे कहा कि मैं तुरंत जाकर दूसरी बाल्टी का इन्तज़ाम करूँ, इसलिये मैंने पैलेस रोड पर स्थित अपने कैम्प से बाल्टी लाने का निश्चय किया।

क्योंकि मुझे यह दूरी पैदल तय करनी थी इसलिये मैंने छोटा रास्ता चुना जिसमें मुझे क्रोमियम के व्यापारी के भवन की जगह से होकर जाना था। जैसे ही रक्षकों ने मुझे देखा, वे खड़े हो गये और जल्दी से मुझे नमस्ते किया। मैंने गर्व का अनुभव करते हुये उनके स्वागत का उत्तर दिया।

मैं मंडली के निवास स्थान पर पहुँचा और शौचालय में जाकर एक फूटी हुई बाल्टी उठाई और उस भवन के अंदर से होकर वापस चल दिया। मैं उन रक्षकों के बारे में सोचने लगा जो मुझे नमस्ते करेंगे और वे मुझे देखकर वास्तव में आधे उठे, लेकिन जब उन्होंने देखा कि मैं क्या ले जा रहा था, वे तुरंत बैठ गये और मुझे फिर कभी भी नमस्ते नहीं किया।

समय समय पर बार बार हमें इस प्रकार के अनुभव होते थे जब बाबा हमें इसका प्रत्यक्ष ज्ञान कराते थे कि हमारे गर्व, अहंकार और सम्मान की झूठी भावना का कोई भी यथार्थ मूल्य नहीं था। वह इस बात पर जोर देते थे कि वास्तव में महत्त्वपूर्ण यह था कि हम उनकी सेवा करें, उनकी आज्ञा का पालन करें और उनसे प्रेम करें। ऐसा करते हुये हम सब कुछ खो देंगे और अन्त में प्रभु को प्राप्त करेंगे।

• • •

egjckck dk cgh[kkrk

अप्रैल सन् १९४० के शुरू में, जब मेहेरबाबा ने बंगलौर में मस्त आश्रम बंद कर दिया, उन्होंने वहाँ काम करने वाले तीन लोगों से कहा, "अब हम इस जगह से जा रहे हैं। तुमने मेरी सेवा अच्छी तरह से की है और तुम लोगों ने मेरे लिये जो कार्य किया है, उससे मैं प्रसन्न हूँ। तुम जो कुछ भी चाहते हो, मुझसे माँग लो और मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा।"

उनमें से एक ने घोड़ा गाड़ी माँगी और बाबा ने उसे दी। दूसरे व्यक्ति ने कहा कि वह एक भण्डार (स्टोर) खोलकर व्यापार शुरू करना चाहता

था और बाबा ने उसे यह भी दिया। तीसरे व्यक्ति ने कहा कि उसे बाबा के साथ जाने की अनुमति दी जाये और उसकी यह इच्छा भी पूरी की गई।

कई वर्ष बीत गये। घोड़ागाड़ी का मालिक और अधिक घोड़ा गाड़ियाँ खरीदता गया और अपने व्यापार में सफलता प्राप्त की। दूसरे व्यक्ति का भाग्य भी अच्छा रहा और उसने और अधिक भण्डार खोलकर अपने व्यापार को बढ़ाया और तीसरा व्यक्ति मंडली के साथ अपना जीवन व्यतीत करता रहा।

एक दिन भण्डार के मालिक ने, बंगलौर से लगभग २२ मील की दूरी पर बैरामंगला में डेढ़ एकड़ जमीन पर स्थित, अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक केन्द्र के लिये बनाई गई इमारतों में से एक में रहने के लिये बाबा से अनुमति माँगी। बाबा ने निश्चय किया था कि जब वे मेहेराबाद जायेंगे, इन इमारतों को छोड़ देंगे। बाबा इससे सहमत हो गये और कुछ वर्षों के बाद, अपनी दक्षिण भारत की यात्रा के समय, बाबा उन कमरों में से एक कमरे में ठहरे।

एक दूसरे अवसर पर जब यही व्यक्ति मेहेराबाद आया, बाबा ने उससे कहा कि उस भूमि तथा इमारतों को बेंच दे क्योंकि केन्द्र के साथ उनका कार्य पूरा हो चुका था। एक खरीददार को वह जगह ३००० रु. में बेच दी गई। उस व्यक्ति ने यह धनराशि बाबा के चरणों में रख दी। इस धन में से २००० रु बाबा ने अपने मस्त कार्य के लिए स्वीकार किये और बचा हुआ धन उस व्यक्ति को प्रसाद के रूप में दे दिया।

केन्द्र की इमारतें और जमीन बाबा के लिये अब महत्त्वपूर्ण नहीं थीं क्योंकि उनका महत्त्व केवल मचान के रूप में था और एक बार बाबा का कार्य पूरा हो जाने पर वह मचान को गिराने की अनुमति दे देते थे। ऐसा ही उस समय हुआ जब नई ज़िन्दगी शुरू हुई और हमने आशारहितता और असहायता की ज़िन्दगी बिताने के लिये प्रस्थान किया। किसानों द्वारा बाबा को दान में दी गई सारी ज़मीन उन्हें वापस कर दी गई और वास्तव में सारी चीजें दे दी गईं। बाबा और उनके साथियों ने कम से कम सामान के साथ मेहेराबाद से प्रस्थान किया। मेहेरबाबा के साथ हमारी ज़िन्दगी ऐसी ही परिवर्तनशील थी।

• • •

^ubl ftUnxh* dh :i j[kk

१६ अक्टूबर, सन् १९४९ को जब हमने मेहेरबाबा का नई जिन्दगी में अनुसरण करने के लिये, उनके साथ अपनी पुरानी ज़िन्दगी से मुँह मोड़ लिया, हमें इसकी कोई कल्पना नहीं थी कि नई ज़िन्दगी क्या है ? हम केवल यह जानते थे कि हमें अपने पुराने ढंग के जीवन का त्याग करके, असहायता और आशारहितता की स्थिति को स्वीकार करके बाबा का अनुसरण करना था और उनकी आज्ञाओं का पालन करना था। हम यह भी जानते थे कि यह जीवन हमें आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ओर ले जायेगा जो पूर्ण और असीम है।

हम खाने के लिये भीख माँगते हुए, एक जगह से दूसरी जगह घूमते रहे। लेकिन भीख माँगने के इस सांकेतिक कार्य का सच्चा अर्थ हमें बाद में समझ में आया। इसका सच्चा अर्थ था कि हमें हृदय के अंदर ईश्वर के प्रेम और दया की निरंतर आकांक्षा करना और उनकी भीख माँगना चाहिये ताकि वह हमारा निरंतर साथी बना रहे।

एक शिष्य के अनुसार, सन् १९३१ में अपनी पश्चिम की पहली यात्रा के दौरान बाबा ने सबसे पहले 'नई ज़िन्दगी' शब्द का प्रयोग किया था और उस समय वह वहाँ मौजूद था। यह कहानी इस प्रकार है।

सार्वजनिक दर्शन के लिये खुले हुये एक दिन के दौरान, जब लोगों को बाबा के दर्शन व भेंट करने की अनुमति थी, एक युवती कमरे में आई और घुटनों के बल बैठकर, बाबा की ओर देखते हुए रोना शुरू कर दिया। बाबा ने उसके सर को अपनी गोद में रखकर, थोड़ी देर तक उसे तसल्ली दी। कमरे में सभी लोग सब काम छोड़कर देखने लगे।

फिर बाबा ने उसके सर को अपने हाथों में लेकर, उसकी आँखों में देखते हुये कहा, ''तुम बहुत सुंदर, स्वस्थ और ताकतवर हो, फिर भी इतनी अधिक दुखी हो।'' वह फिर रोने लगी और उसने सिसकते हुये कहा, ''हाँ, मैं सुंदर, स्वस्थ और बहुत धनी हूँ, फिर भी मैं इतनी अधिक दुखी हूँ कि आत्महत्या करने के अलावा मेरे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं है।''

बाबा ने उसकी ओर बहुत गंभीरतापूर्वक देखते हुये कहा, ''तब तुम

आत्महत्या क्यों नहीं करतीं ?'' और ऐसा कहकर उन्होंने उसका सिर अपने पैरों पर झुका दिया और कहा, ''आत्महत्या करो !'' कुछ समय बाद, उसका सर उठाकर बाबा ने कहा, ''अब तुम, तुम नहीं हो; नई ज़िन्दगी जीना शुरू करो। मेरे बारे में सोचो, मेरी याद करो और मुझसे प्रेम करो।'' तब उन्होंने उसे एक कोने में बैठने का निर्देश दिया और थोड़ी देर बाद, उसे अपने पास बुलाकर गले लगाया और जाने की आज्ञा दी।

फिर कमरे में उपस्थित लोगों से बाबा ने कहा, ''तुम लोगों ने उस महिला को देखा जो आत्महत्या करना चाहती थी। मैं चाहता हूँ कि तुम सब उसी ढँग से आत्महत्या करो जिस तरह उसने की। साधारणतः, जो लोग आत्महत्या का सहारा लेते हैं, वे कायर होते हैं, लेकिन जिस ढंग से उसने आत्महत्या की, वह बहादुरों का काम है। मैं चाहता हूँ कि तुम सब उसकी रीति का अनुसरण करो और नई ज़िन्दगी जीना शुरू करो।''

मेहेरबाबा ने कहा था नई ज़िन्दगी शाश्वत् है और जब इसे जीने के लिए कोई नहीं रहेगा; तो भी यह निरंतर रहेगी। इसलिए यहाँ पर निम्नलिखित कहानी का वर्णन करना उचित होगा–

कुछ वर्ष पहले एक अमरीकी युवती अहमदनगर आई और हमारे साथ कुछ समय बिताया। इस दौरान हमने उसे प्रियतम बाबा के साथ अपने जीवन से संबंधित घटनायें बताईं और तीन हफ़्ते बाद, एक इतवार को हमने उसे विदा किया।

अगले दिन मुझे उसका फ़ोन मिला और उसकी आवाज से मुझे महसूस हुआ कि उसे मुझसे बहुत ज़रूरी काम था। उसने मुझसे कहा कि जाने से पहले वह मुझसे केवल पाँच मिनट के लिये और मिलना चाहती थी क्योंकि उसे मुझसे कुछ बहुत ज़रूरी बात करनी थी। मैंने उसे बताया कि ट्रस्ट आफिस में मैं सोमवार को बहुत व्यस्त होता हूँ। उस दिन बातचीत के लिये मेरे पास समय नहीं होता है। मैंने उससे कहा कि पिछले तीन हफ़्तों में मैंने अपना सारा समय उसे दे दिया था। लेकिन उसने इतनी अधिक ज़िद की कि मुझे उसकी बात माननी पड़ी।

वह दोपहर के बाद आफ़िस में आई और मैं उससे बरामदे में मिला। जब मैंने उससे मेरे पास आने का कारण पूछा तो वह चुप रही। मेरे यह

कहने पर कि मैं बहुत व्यस्त हूँ, वह मेरा समय बरबाद न करे, वह बोली, ''मुझे कुछ नहीं कहना है। बिदाई की भेंट के रूप में, मैं बाबा की एक कहानी और सुनना चाहती हूँ।''

मुझे उसकी इस प्रार्थना पर बहुत आश्चर्य हुआ लेकिन मैं इन्कार नहीं कर सका और उस समय मेरे दिमाग़ में जो कहानी आई, मैंने सुना दी। यह कहानी यूरोप की उस युवती के बारे में थी जो आत्महत्या करना चाहती थी। वह युवती इस कहानी को सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुई और बिदा लेकर चली गई।

एक हफ़्ते बाद, मेहेराज़ाद में एक मीटिंग के दौरान, एक बाबा प्रेमी ने पास आकर धीरे से मेरे कान में पूछा, ''क्या आपने किसी महिला से आत्महत्या करने के लिये कहा था ?''

इस प्रश्न से स्तब्ध होकर सबसे पहले मुझे हाल ही में आई अमरीकी यात्री का ध्यान आया और किसी बुरी घटना की संभावना से डरते हुये मैंने पूछा कि क्या हुआ था। तब उसने बताया, ''उस महिला के बारे में, जो आत्महत्या करना चाहती थी, आपकी कहानी का उस अमरीकी महिला के दिल पर गहरा असर हुआ। कई वर्षों तक दुखी जीवन बिताने के बाद, सोलह वर्ष की उम्र में उसने कसम खाई थी कि अगर उसके इक्कीसवें जन्मदिन पर उसे अपने जीवन में आशा की कोई किरण दिखाई नहीं दी तो वह जहाँ कहीं भी होगी, आत्महत्या कर लेगी। जिस दिन उसने आपको फ़ोन किया, उसका इक्कीसवाँ जन्म दिन था और आपकी कहानी ने सीधे उसके हृदय को छुआ। उसने तुरंत मेहेरबाबा को अपने जीवन की यथार्थ आशा के रूप में देखा और वह नई ज़िन्दगी शुरू करने का दृढ़ निश्चय लेकर घर वापस गई। उसने मुझसे आपको उसका प्रेम व धन्यवाद देने के लिए कहा।''

मैंने संतोष की सांस ली और प्रियतम बाबा को उनकी दया के लिये धन्यवाद दिया। तब मुझको यह स्पष्ट समझ में आया कि किस प्रकार नई ज़िन्दगी का निरंतर अस्तित्व है और उस समय भी रहेगा जबकि इसे जीने के लिये कोई नहीं रहेगा। मेहेरबाबा की नई ज़िन्दगी हमारे जीवन के लिये रूपरेखा है क्योंकि हमें इसमें ऐसे उदाहरण मिलते हैं जो जीवन की प्रत्येक

घटना में हमारी सहायता करते हैं। इसमें हमें हर परिस्थिति में प्रसन्न रहने, अपने क्रोध को रोकने का प्रयत्न करने और कभी भी भविष्य की चिंता न करने बल्कि ईश्वर की मर्ज़ी पर पूर्णरूप से निर्भर होने के उदाहरण मिलते हैं।

यह सच है कि नई ज़िन्दगी के दौरान बाबा यह चाहते थे कि हम अपने गुस्से को रोकें, लेकिन समय समय पर हम अपनी भावनाओं को स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करते थे। एक दिन एक व्यक्ति बाबा के पास उनके आशीर्वाद की प्रार्थना लेकर आया ताकि वह अपने मन के उद्वेगों पर अधिकार पा सके। बाबा ने कहा, ''क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें यह आशीर्वाद दूँ ताकि तुम किसी भी भावना से रहित होकर पत्थर के समान हो जाओ ? मनुष्य क्रोध, दया, उदारता और इससे भी अधिक और बहुत कुछ से बना हुआ है। मैं चाहता हूँ कि तुम अपने क्रोध को दबाओ नहीं, बल्कि स्वतंत्रतापूर्वक अपनी भावनाओं को व्यक्त करो। इसलिये तुम्हें मुझसे वह शक्ति माँगनी चाहिये जो तुम्हें अपने क्रोध के प्रति सचेत कर दे। उसके बाद ईश्वर से क्षमा माँगो और उस घटना को भूल जाओ। तुम्हें इस बात के प्रति सचेत होना चाहिये कि तुम्हें क्रोध आया है और उसी समय उसका सुधार करना चाहिये।''

केवल नई ज़िन्दगी अथवा मेहेरबाबा का सम्पूर्ण जीवन मानवता के लिये उन्हीं के समान होने की कोशिश करने के लिये, एक नमूना है।

• • •

ubl ftUnxh ls f'k{kk

३१ अगस्त, सन् १९४६ को मेहेराबाद में निर्णय लेने वाली मीटिंग में उपस्थित एक व्यक्ति ने मेहेरबाबा को बताया कि वह एक उलझन में फँस गया था। इस उलझन के कारण वह यह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि वह नई ज़िन्दगी में मेहेरबाबा के साथ जाये या नहीं। यह व्यक्ति मेहेरबाबा का गहरा प्रेमी था और उसकी आवाज़ बहुत सुरीली थी। वह खुद के बनाये हुये भजन गाया करता था और गानों के पश्चात् वह बाबा के बारे में बताया करता था। उसने इस स्वयं निर्धारित किये गये कार्य के प्रति

अपने आपको इतने अधिक आनंद के साथ समर्पित कर दिया था कि अन्ततः ऐसे बहुत से लोग, जिन्हें उसने बाबा से परिचित कराया था, उसे एक गुरु के रूप में मानने लगे, हालांकि उसने स्वयं ऐसा कभी नहीं कहा।

जब बाबा ने उस व्यक्ति से अपनी समस्या बताने के लिए कहा, उसने कहा, "बाबा, हमारी सभाओं में आपके बारे में सुनने के लिये आने वाले इतने अधिक लोग हैं कि हमने एक बड़ा हाल किराये पर लिया है और उसमें हर तरह की साज सज्जा का प्रबंध किया जा चुका है। आपके साथ रहने के लिये, इसे एक महीने के समय में छोड़ना कठिन होगा। इसलिये क्या मैं इस कार्य को समाप्त करते ही आपके पास नई ज़िन्दगी में आ सकता हूँ ?"

बाबा ने पूछा, "इसमें कितना समय लगेगा ?"

उसने कहा, "इस वर्ष के अन्त में मैं आपके साथ जाने के लिये तैयार हो जाऊँगा।"

बाबा ने कहा, "इस वर्ष के अन्त में प्रशिक्षण का समय खत्म हो जायेगा लेकिन तुम मेरे पास आ सकते हो।"

इसके बावजूद, वह व्यक्ति दुर्भाग्यवश, नई ज़िन्दगी में कभी शामिल नहीं हुआ, क्योंकि वह कुछ विशेष आसक्तियों को, जो पनप चुकीं थीं, छोड़ने में सफल नहीं हो सका। इन आसक्तियों की उसे बुरी आदत पड़ चुकी थी और इसमें सबके लिये एक शिक्षा छिपी हुई है।

लोगों के साथ बैठकर मेहेरबाबा के बारे में बात करने में निःसंदेह अत्यंत संतोष एवं आनंद है; लेकिन जब वह समाप्त हो जाता है तो हमें उससे पनपी हुई किसी भी गलत आसक्ति को स्वयं को झकझोर कर दूर कर देना चाहिये ताकि हम किसी भी गलत आसक्ति से, जो उत्पन्न हो सकती है, अपने आपको स्वतंत्र कर सकें। यह आसक्ति, जिसकी ओर मैं संकेत कर रहा हूँ, श्रोता से वक्ता अथवा वक्ता से श्रोता के प्रति उत्पन्न हो सकती है और इस व्यक्ति के साथ यही हुआ। वह प्रशंसा से इतना अधिक अभिभूत हो गया कि वह इससे छुटकारा पाने के लिये स्वयं को झकझोरना भूल गया और इसके आकर्षण का शिकार हो गया।

आसक्ति की यह क्रिया, उस व्यक्ति के अनजाने में प्रारंभ होती है

और वह इस पर ध्यान नहीं देता क्योंकि, सर्वप्रथम, दूसरे व्यक्ति के प्रति यह भक्ति एकाएक प्रारंभ नहीं होती। यह श्रोताओं के अनजाने में प्रारंभ होती है और उस व्यक्ति को भी इसका ज्ञान नहीं होता; जो ईश्वर के बारे में बात करता है, क्योंकि ऐसी वार्ता हृदय को आनंदित करती है। इस प्रकार की सभाओं में व्याप्त निकटता और मेल जोल का वातावरण इन्द्रियों को संभावित खतरे के प्रति निष्क्रिय कर देता है।

इसलिये अच्छी और प्रेमपूर्ण भावनाओं का यह आदान प्रदान बढ़ता जाता है और अन्त में उस व्यक्ति को, जो ईश्वर के बारे में बात करता है, यथार्थ से कहीं अधिक मान्यता दी जाती है और उसकी पूजा होने लगती है। जहाँ तक उस व्यक्ति का संबंध है, वह व्यक्ति पूजे जाने की शान्ति प्रदान करने वाली भावना से बच नहीं पाता है और इस नशे की बुरी आदत उसके ऊपर अपना हानिकारक कार्य शुरू कर देती है।

वह व्यक्ति, जो ईश्वर के बारे में बात करता है, अब यह अनुभव करने लगता है कि वह कोई विशेष व्यक्ति है और वह उस पूजा को स्वीकार करता है जो उसे अर्पित की जाती है। वह यह भूल जाता है कि यह बाबा ही हैं जो सब कुछ कर रहे हैं। वह इस आसक्ति के वश में इतना अधिक हो जाता है कि वह स्वयं को इससे दूर करने में असमर्थ होता है। इसमें उन लोगों का भी अपराध होता है जो उसे उस ऊँचाई पर स्थापित कर देते हैं जहाँ से अन्ततः उसका पतन होगा। यही कारण है कि मैं अत्यंत सावधान रहने और सुरक्षित जीवन व्यतीत करने के मेहेरबाबा के उपदेश को बार बार दोहराता हूँ। हमारे जीवन का केन्द्र सदैव मेहेरबाबा का एकनिष्ठ ध्यान होना चाहिये, क्योंकि केवल तभी हम सब सुरक्षित हैं।

अगर इस कहानी में वर्णित व्यक्ति बाबा के साथ रहा होता, जैसे कि हम रहे थे, वह इस प्रकार की आसक्ति से होने वाले ख़तरे के बारे में जान गया होता जिसका मैंने वर्णन किया है। इसके बारे में बाबा द्वारा दी गई चेतावनी हमें बाबा से प्राप्त होने वाला सबसे बड़ा वरदान था। उन्होंने हमें असावधान व्यक्तियों के ऐसे कई उदाहरण दिये। बाबा ने संकेत किया कि ऐसे व्यक्ति, फिर भी, आध्यात्मिक मार्ग पर साधकों के लिये निषेधात्मक उद्देश्य की पूर्ति करते थे। उनका चमत्कारों का व्यापार, अपने चारों ओर बढ़ते हुये अनुयायियों के प्रति उनकी आसक्ति, दूसरों से श्रद्धा और आदर

स्वीकार करना—ये सब इस बात के उदाहरण बन गये कि हमें किस चीज़ का त्याग करना चाहिये।

बाबा प्रायः कहा करते थे, ''इस स्थिति में कभी मत पड़ो क्योंकि यह एक असाध्य स्थिति है। तुम इस स्थिति की अपेक्षा, बुरी से बुरी नशीली औषधि की आदत और बुरी लत से अधिक आसानी से छुटकारा पा सकते हो। यह उन नशीली दवाइयों में से किसी भी एक की अपेक्षा कहीं अधिक बुरी है।'' और यही कारण है कि वे समय समय पर चेतावनी भेजा करते थे ताकि उनके प्रेमी इस प्रकार के व्यक्तियों से सावधान रहें, लेकिन हर बार जब भी चेतावनी भेजी जाती थी, इसका संबंध किसी न किसी वर्तमान परिस्थिति से होता था। वे इस चेतावनी में इस बात की ज़रूरत के महत्त्व पर ज़ोर देते थे कि हम इस प्रकार की बुरी आदत से होने वाले ख़तरे से बचें।

हमें उदाहरण देते समय, मेहेरबाबा कहा करते थे, ''देखो, एक बार शुरू होने के बाद इससे मुक्त हो पाना कितना कठिन होता है। वे ऐसा क्यों करते हैं? इस सबसे उन्हें क्या मिलता है ? लोगों के द्वारा उनकी पूजा किये जाने से उन्हें क्या मिलता है ?''

एक व्यक्ति ने इसका उत्तर दिया। वह भी मेहेरबाबा का प्रेमी था, लेकिन उसने अपने आपको भगवान (पूजा करने लायक) कहे जाने की अनुमति दे दी थी। जब बाबा ने उससे पूछा कि दूसरे लोग उसके सामने माथा टेकते हैं तो इससे उसे क्या सुख मिलता है, तब उसने जवाब दिया, ''अगर मुझे उन लोगों से दिन में कम से कम एक हार नहीं मिलता, तो मेरा दिन बेकार हो जाता है।''

इस पर बाबा ने उसके कानों में चुटकी काटी और हम लोगों की ओर देखते हुये टिप्पणी की, ''देखो यह कितना कठिन है।''

• • •

ubl ftUnxh es io'k

१६ अक्टूबर, सन् १९४६ को सुबह नई ज़िन्दगी के साथियों को अहमदनगर रेलवे क्रासिंग पर इकट्ठा होना था। उस दिन सुबह जैसे ही

मैंने मेहेरबाबा, मेहेरा, मनी, मेहरू और गौहर को कार से मेहेराज़ाद से अहमदनगर ले जाने के लिये कार तैयार की, धीरे धीरे पानी बरसने लगा।

जब बाबा ने सबसे पहले पुरुषों को यह बताया कि नई ज़िन्दगी के परिश्रमपूर्ण दिनों में साथ देने के लिये, हमारे साथ चार महिला शिष्यायें भी होंगी तो हम यह नहीं समझ सके कि बाबा द्वारा लगाई गई पाबन्दियों के दृष्टिकोण से यह कैसे संभव था। हमें उनकी ओर देखना अथवा उनसे बात नहीं करना था, और उन्हें (महिलाओं को) हमारी आवाज़ भी नहीं सुननी थी जिसका मतलब था कि हम जोर से नहीं बोल सकते थे। हमें ऐसा प्रतीत होता था कि यह सड़क पर खेला जाने वाला लुका–छिपी का एक असंभव खेल था, लेकिन बाबा ने जब हमसे कहा कि हम चिन्ता न करें, सब कुछ ठीक हो जायेगा तो हमारा सारा डर दूर हो गया। उन्होंने कहा, ''१६ अक्टूबर से हम एक नई ज़िन्दगी शुरू करेंगे। वे (महिलायें) सब तुम सबकी तरह साथी होंगीं, मैं वहाँ होऊँगा और सब लोग साथी होंगे। महिलायें पुरुषों की सहायता करेंगी और पुरुष महिलाओं की सहायता करेंगे।''

मैं बाबा के कमरे के सामने कार ले गया। वह जल्दी ही आकर मेरी बगल में अपनी सीट पर बैठ गये। मैं इन्तज़ार करने लगा। मैंने देखा कि गौहर, मनी और मेहरू किसी अज्ञात कारणवश, मुख्य भवन के बरामदे में इधर उधर चहलकदमी कर रहीं थीं। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि हम इस स्थान को हमेशा के लिये कब छोड़ेंगे, जैसा कि बाबा ने पहले ही कहा था।

आधा घंटा बीतने पर भी उनमें से कोई भी कार में बैठने नहीं आईं लेकिन शीघ्र ही उनमें से एक महिला ने आकर बाबा के कान में फुसफुसाकर कुछ कहा। बाबा ने मुझे बताया कि इतने सालों तक एकान्त में रहने के बाद, मेहेरा बिना पर्दे की कार में बैठने में शरमा रही थी।

मेरे कार में पर्दे लगाने के बाद, मेहेरा, मेहरू और मनी आकर कार की पिछली सीट पर बैठ गईं लेकिन अब गौहर का कोई पता नहीं था। बाबा ने उसके न आने का कारण जानने के लिये कार का हार्न बजाया और गौहर ने वहीं से चिल्लाकर कहा, ''मुझसे आपके कमरे का दरवाज़ा बंद नहीं हो रहा है।''

क्योंकि हमने सब कुछ छोड़कर जाने का निश्चय किया था, इसलिये गौहर बाबा के कमरे का दरवाजा खुला छोड़कर दूसरों के साथ आ सकती थी, लेकिन उसने सोचा कि कमरे को बंद करके छोड़ना अधिक सुरक्षित रहेगा। अभी अभी बरसात खत्म हुई थी इसलिये यह स्वाभाविक था कि नमी के कारण दरवाजा फूल गया था और कसकर बंद नहीं हो रहा था। बाबा ने मुझसे गौहर की मदद करने के लिये कहा। मैंने बलपूर्वक दरवाजे को उठाकर पैर से एक तेज ठोकर मारी और उसे अपनी चौखट में ठीक से दबाकर छोड़ दिया।

इस प्रकार हमने दूसरे साथियों से मिलने के लिये, कार द्वारा मेहेराज़ाद से अहमदनगर रेलवे क्रासिंग के लिये प्रस्थान किया। सभी साथी नई ज़िन्दगी को शुरू करने के लिये लाइन में तैयार खड़े थे, वह ज़िन्दगी, जिससे हम कभी भी वापस नहीं आयेंगे, ऐसा हमें बताया जा चुका था।

नई ज़िन्दगी यथार्थ रूप में उस समय शुरू हुई जब बाबा ने हमारे साथ रेल की पटरी पार की और हम सूपा तक पैदल गये जो अहमदनगर से लगभग सत्रह मील दूर है। वहाँ पर हम एक विश्राम घर में ठहरे जो इन्तज़ाम करने वालों ने हमारे लिये रिज़र्व करा रखा था। बाबा का कमरा अलग था। शेष विश्राम घर पर महिलाओं ने अधिकार कर लिया और पुरुषों ने बाहर रहने की जगह पर डेरा डाला।

जल्दी ही रात हो गई और बाबा नई ज़िन्दगी की शर्तों की व्याख्या करने के लिये साथियों के साथ रहे। उन्होंने सभी परिस्थितियों में प्रसन्न रहने और हमारी पुरानी ज़िन्दगी के बारे में भूलने की इच्छा की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। बाबा ने कहा कि एक महीने का मध्यकाल होगा और उस अवधि के दौरान वे उस जीवन के नये ढँग में, जो हमने शुरू किया था, स्वयं को ढालने में हमारी मदद करेंगे।

उस पहली रात को बाबा खाने के कमरे की मेज पर सोये जिसे पलंग में बदल दिया गया था। मैं बाहर पहरा देता रहा। आधी रात के कुछ समय बाद बाबा के कमरे से आने वाली तेज आवाज़ ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। हालांकि मुझे बिना बुलाये दरवाज़ा खोलने की आज्ञा नहीं थी, फिर

भी मैंने हिम्मत करके दरवाज़ा खोला और बाबा को पलंग के पास खड़े पाया। मेरे पूछने पर कि क्या हुआ था, बाबा ने कहा कि पहली रात इतनी अधिक आरामदायक थी कि वह गहरी नींद में सो गये होंगे (यह नई ज़िन्दगी के साथी के रूप में बाबा का कथन था) और मेज़ पर करवट बदलने से मेज़ एक ओर को इस तरह झुक गई कि अगर वह समय पर नींद से जाग कर पलंग से कूदे नहीं होते तो फ़र्श पर गिर गये होते।

यह नई ज़िन्दगी के पहले दिन का अन्त था जो इस सुखद घटना के साथ हुआ।

• • •

ubl ftUnxh dk rjkuk

नई ज़िन्दगी शुरू होने के लगभग दो हफ़्ते बाद, डा. अब्दुल गनी ने, जो मेहेरबाबा के बीस साथियों में से एक थे, निम्नलिखित तराना लिखा, जो मेरे विचार से उस जीवन के रूप का उपयुक्त ढँग से वर्णन करता है जिसमें हमने बाबा के साथ प्रवेश किया था।

सुनो मेहेरबाबा की ख़ामोश बानी,
इसी में है सब आशिक़ों की कहानी।
है जीना तुम्हें गर नई ज़िन्दगानी,
करो तर्क दिल से ये दुनियाँए फ़ानी।।

ख़ुदा के भरोसे पे हम जा रहे हैं,
क़सम से इरादों को गरमा रहे हैं।
ग़ज़ल नामुरादी की हम गा रहे हैं,
बला और मुसीबत को बुलवा रहे हैं।।

उम्मीदों का रोना न वादों का शिकवा,
न इज्ज़त से मतलब न ज़िल्लत की परवा।
न ग़ीबत किसी की न ख़तरा किसी का,
यही रंग है अपनी अब ज़िन्दगी का।।

ख़्यालों में उलझन है बाक़ी न बंधन,
है नख़वत न गुस्सा न कुछ काम कंचन।
है मज़हब से रिश्ता न कुछ फ़िकरे तन मन,
सवार एक किश्ती में शेख़ो बिरहमन।।

न अपने लिये कोई छोटा बड़ा है,
मुरीद और मुरशिद न मौला रहा है।
अख़वत का बाहम जो रिश्ता जुड़ा है,
हमें दर्द ग़म में मज़ा आ रहा है।।

न दुनियाँ न उक़बा न दोज़ख़ न जन्नत,
न सिद्धी न शक्ती न कश्फ़ो करामत।
ये सब नक़्शे बातिल हुये दिल से रुख़सत,
जो कुछ है वो है हाल की क़दरो क़ीमत।।

ये अल्फ़ाज़ बाबा के सुन दिल से प्यारे,
शुमार अब मेरा है बराबर तुम्हारे।
मगर हुक्म अच्छे बुरे दूँ कि न्यारे,
बजा लाओ फ़ौरन ख़ुदा के सहारे।।

अगर आस्माने मुसीबत भी टूटे,
सदाक़त का हाथों से दामन न छूटे।
चमन यासो हिरमाने हरचंद लूटे,
तवक्कुल से इनमें लगें बेल बूटे।।

चलें दिल पे छुरियाँ मगर लब हो ख़न्दाँ,
ये एक रम्ज़ है जिसको करता हूँ उरियाँ।
तेरी तंगदस्ती में दौलत है पिनहाँ,
गदाई पे तेरी करें रश्क शाहाँ।।

है बेशक ख़ुदा और बरहक़ नबी है।
बहरदौर अवतार हरदम वली है।
हमें तो फ़क़त बेबसी बेकसी है,
कहूँ क्या तुम्हें क्या नई ज़िन्दगी है।।

• • •

ubl ftUnxh d fnu

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी शुरू करने के पहले, जब मेहेरबाबा ने सम्पत्ति बेचना शुरू किया, उस समय साथियों के मन में क्या अनिश्चितता की भावना पैदा हुई थी ?

एरच : साथियों ने बाबा और नई ज़िन्दगी को गंभीरतापूर्वक लिया। वे न तो परेशान थे और न ही उन्हें कोई संदेह था। हमारा मुख्य उद्देश्य उनका अनुसरण करना और उनकी हर इच्छा का पालन करना था, लेकिन जायदाद की देखभाल करने वाले आश्चर्य चकित थे। उन्हें इस बात का आश्चर्य था कि स्थायी रूप से मेहेराबाद की स्थापना करने के पश्चात्, बाबा ने हर वस्तु से छुटकारा पाने का निश्चय क्यों किया था ? लेकिन वे यह भी जानते थे कि बाबा को अपना काम करना था और वे जो कुछ करते थे, वह सब भलाई के लिये था। फिर भी उन्हें आशा थी कि भले ही बाबा लम्बे समय के लिये दूर जा रहे थे, वे वापस लौटेंगे।

अन्ज़ार : ३१ अगस्त, १९४९ की मीटिंग में, साथियों के सामने रखी गई नई ज़िन्दगी की अत्यंत कड़ी शर्तों के प्रति साथियों की भावनायें कैसी थीं ?

एरच : मेरे लिये यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं थी, क्योंकि मैं उनके बारे में पहले से ही जानता था। बाबा ने अपनी उपस्थिति में प्रारूप (Draft) तैयार करने के लिये मुझे संकेत दिये थे। मेरे लिये इस बात का कोई महत्व नहीं था कि यह नई ज़िन्दगी थी अथवा पुरानी ज़िन्दगी, क्योंकि मैं बाबा के पास किसी आशा से नहीं आया था। उन्होंने मुझे बुलाया और मैं आ गया।

इसमें कोई संदेह नहीं कि नई ज़िन्दगी की शर्ते बहुत कड़ी थीं; बल्कि लगभग असंभव थीं; लेकिन जब बाबा ने मुझे बुलाया, उस समय उनके पास आने की अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग करने और उनका दास बनकर रहने के बाद इस प्रकार की किसी भी बात ने मुझे कभी भी परेशान नहीं किया। इसके अलावा, मैं यह विश्वास नहीं करता था कि शर्तों का पालन करना कठिन था क्योंकि वास्तव में हम इस प्रकार का जीवन पहले ही बिता रहे थे। नई ज़िन्दगी में केवल यह अंतर था कि हम बाहरी रूप में

यह प्रकट नहीं कर सकते थे कि मेहेरबाबा हमारे प्रियतम प्रभु थे—हमें यह भावना अपने आप तक सीमित रखनी थी और हमें हर समय प्रसन्न भी रहना था। बाद वाली शर्त के अनुसार, हम थकान या उत्तेजना के कारण चिल्ला नहीं सकते थे।

शर्तें कठिन थीं लेकिन इस प्रकार की परिस्थितियों का सामना करने के लिये हम लोग भी काफ़ी जवान थे। जब मैं शर्तों के वितरण के बाद, मेहेराबाद से मेहेराज़ाद जाते समय बाबा की कार चला रहा था, उन्होंने मुझसे पूछा कि आने वाली नई ज़िन्दगी के बारे में मैं क्या सोचता था और मेरा उत्तर अभी भी मेरे कानों में गूँज रहा है। मैंने कहा, "मैं इसी प्रकार के जीवन के लिये आया हूँ।" मेरे लिये इस बात का कोई महत्त्व नहीं था क्योंकि एक प्रकार का साहसिक कार्य होने के अलावा, यह ज़िन्दगी सबसे अधिक यथार्थ थी। अगर कोई व्यक्ति ईश्वर की ओर मुड़ने के लिये, कभी भी संसार से मुँह मोड़ने का निश्चय करता है, तो उसे इसी प्रकार का जीवन व्यतीत करना होगा; इसलिये मुझे इसमें कोई भी नई बात नज़र नहीं आई।

इसमें कोई शक नहीं कि इसमें बहुत सी रुकावटें भी थीं जैसे कि हर व्यक्ति का अपना परिवार था और उसे परिवार से संबंधित समस्यायें भी सुलझानी थीं। मुझे अपने माता–पिता, एक छोटा भाई और दो छोटी बहनों को छोड़ना था। लेकिन इस बात पर हर व्यक्ति को आश्चर्य होगा कि ऐसा कौन व्यक्ति हो सकता है जिसके लिये लोग सब कुछ छोड़ने के इच्छुक थे। इससे उस व्यक्ति की महानता प्रकट होती है जो हमें इस प्रकार की ज़िन्दगी जीने के लिये प्रेरित करने में समर्थ था क्योंकि कोई भी साधारण मनुष्य इस प्रकार के जीवन का अनुसरण करने की प्रेरणा नहीं दे सकता था।

ऐसे बहुत से लोग थे जो बाबा के साथ जाना चाहते थे लेकिन बाबा ने उन्हें मना कर दिया जब कि कुछ लोग ऐसे भी थे, जिनके साथ आने की बाबा को आशा थी, लेकिन वे पीछे हट गये। बाबा ने उन सारे फार्मों को जमाकर लिया जिनमें मीटिंग में आये लोगों ने यह प्रकट किया था कि

नई ज़िन्दगी में बाबा के साथ जाने के लिये कौन इच्छुक था और कौन नहीं। बाबा द्वारा अन्तिम चुनाव करने के पहले एक घटना हुई जिससे शर्तों के पालन में कड़ाई का अन्दाज़ लगाया जा सकता है।

मीटिंग के बाद बाबा जब हाल से जा रहे थे, उन्होंने बरामदे में डा. गनी और डा. दौलतसिंह को देखा। इन दोनों ने अपने फार्म में बाबा के साथ नई ज़िन्दगी में जाना स्वीकार किया था। डा. गनी सिगरेट पी रहे थे। बाबा ने उनके पास जाकर उनके मुँह से सिगरेट निकाली और डा. सिंह के होठों के बीच रख दी। डा. सिंह एक सिख थे जो सिगरेट नहीं पीते थे और उनके लिये सिगरेट पीना उनके धर्म के विरुद्ध था। लेकिन उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक सिगरेट स्वीकार की और इसे बाबा की भेंट समझकर सिगरेट पीना शुरू कर दिया।

बाबा ने उनसे कहा, "तुम पास हो गये हो," और सिगरेट लेकर पुनः डा. गनी को वापस कर दी।

अन्ज़ार : क्या आप नई ज़िन्दगी को बाबा के जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भाग मानते हैं ?

एरच : मैं नई ज़िन्दगी को बाबा के जीवन का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भाग मानता हूँ क्योंकि उन्होंने स्वयं कहा था कि यह शाश्वत् थी और यद्यपि इसे जीने के लिये कोई भी न हो, तब भी यह हमेशा रहेगी।

यह बाबा की बहु–मुखी सत्ता का नया रूप था। नई ज़िन्दगी में बाबा मनुष्य रूप में ईश्वर की अपेक्षा, साथी और पूर्ण साधक अधिक थे। यह उनकी पुरानी ज़िन्दगी के बिल्कुल विपरीत थी।

अन्ज़ार : आपके विचार से नई ज़िन्दगी का क्या महत्त्व था ?

एरच : जब हमने नई ज़िन्दगी के लिये प्रस्थान किया मेरा एकमात्र उद्देश्य, जहाँ कहीं भी बाबा जायें, उनका अनुसरण करना था। मैंने कभी भी किसी अन्तिम परिणाम के बारे में नहीं सोचा और वास्तव में हममें से किसी ने भी इस नये जीवन में बाबा का अनुसरण करने से प्राप्त होने वाले भौतिक अथवा आध्यात्मिक लाभों के बारे में ही कभी सोचा। हमने, उनकी

मंडली के रूप में उनकी हर इच्छा और मन की लहर को पूरा किया और बिना किसी रुकावट के पूरे मन से उनकी आज्ञाओं का पालन किया।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी अभाव की ज़िन्दगी थी जिसकी चरम सीमा आत्म–नाश और स्वतंत्रता में पदार्पण था। क्या आप यह कहेंगे कि आशारहितता और असहायतापूर्ण जीवन जीने के द्वारा बाबा ने भौतिक वस्तुओं और उनके मूल्यों के महत्त्व को हेय समझा ?

एरच : बाबा और उनके साथियों ने नई ज़िन्दगी में स्वाभाविक जीवन व्यतीत किया। आज नवयुवक भौतिक वस्तुओं का त्याग करके अथवा एक अस्वाभाविक जीवन को अपनाकर, इस नई ज़िन्दगी के समान जीवन बिताने की कोशिश कर रहे हैं। वे अस्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रहे हैं जबकि साथियों ने आशारहितता और असहायता के जीवन के लिये कृत्रिम अथवा प्राकृतिक रूप से परिस्थितियाँ उत्पन्न नहीं कीं– यह स्वाभाविक और प्रत्यक्ष था।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी में बाबा ने अधिकतर प्रेम और आज्ञा का उदाहरण दिया। आज उनके प्रेमियों को इन दो सिद्धान्तों को प्राप्त करने के लिये क्या करना चाहिये ?

एरच : क्योंकि मनुष्य साकार रूप में है इसलिये उसे मेहेरबाबा के रूप में ईश्वर के साकार रूप से प्रेम करना चाहिये। हालांकि ईश्वर के निराकार रूप को प्राप्त करना हमारा लक्ष्य है, लेकिन निराकार रूप के माध्यम से बाबा तक पहुँचने की कोशिश करने से हम स्वयं को खो सकते हैं अथवा गलत रास्ते पर चल सकते हैं।

बाबा ने अपने जीवनकाल में कुछ लोगों को आज्ञायें दी थीं और लोग पूछते हैं कि क्या उन्हें भी इन विशेष आज्ञाओं में से कुछ का पालन करना चाहिये। बाबा ने बार बार इस बात पर जोर दिया है कि जब कोई व्यक्ति ईश्वर से प्रेम करता है, उस समय आज्ञाओं की ज़रूरत नहीं होती और सभी गल्तियाँ माफ़ कर दी जाती हैं।

आज्ञाओं और आज्ञाकारिता जैसी चीज़ों के द्वारा हम एक धर्म स्थापित करने की ओर प्रवृत्त होते हैं। लोगों को किसी भी निर्देश की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि वे जानते हैं कि उन्हें क्या करना है। जब वे

आज्ञापालन करना चाहते हैं, करते हैं और इसके लिये उन्हें किसी के निर्देश की ज़रूरत नहीं होती। नई ज़िन्दगी के दौरान हमारी दोस्ती ऐसी थी कि प्रेम में कोई रुकावट नहीं थी और बाबा के प्रति आज्ञाकारिता एक वास्तविक सच था। उनकी आज्ञा न मानने का कोई सवाल ही नहीं था।

अन्ज़ार : जब बाबा ने कहा कि वे पूरी तरह असहाय थे, इससे उनका क्या मतलब था ?

एरच : बाबा की असहायता सन् १९५२ में अमरीका में हुई कार दुर्घटना में प्रत्यक्ष थी। उस समय अपनी गंभीर चोटों के कारण वे पूरी तरह से असहाय थे। तब नई ज़िन्दगी के साथियों के लिये असहायता का जीवन स्वाभाविक था क्योंकि उनका जीवन बहुत अधिक परिवर्तनशील था। हमें भीख माँगकर जीवन निर्वाह करना था और हम केवल वर्तमान में जीते थे। हम भविष्य के बारे में कभी नहीं सोचते थे और सभी प्रकार की कठिनाइयों के बीच हमें सहारा देने के लिये हमारे पास बाबा का दामन था।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी में किस प्रकार के कष्ट पर बाबा ने अधिक जोर दिया ?

एरच : सर्वप्रथम, हमारे सरों के ऊपर कोई छत नहीं थी, हमारा भोजन भी पर्याप्त नहीं था और हमें जलती हुई धूप और बरसात में चलना पड़ता था। हमें सर्दी की कड़कड़ाती ठंड का भी सामना करना पड़ता था। इसके अतिरिक्त जिन साथियों ने कभी भी नौकरों का काम नहीं किया था, उन्हें वह काम प्रसन्नतापूर्वक करना था और उन्होंने किये। इसके अलावा महिलाओं की देखभाल करने की हमारी नैतिक ज़िम्मेदारी भी थी और यह डर भी था कि अगर हमने ज़रा भी भावुकता दिखाई अथवा बाबा की आज्ञाओं का उल्लंघन किया, तो वे हमें वापस भेज देंगे।

वास्तव में जो लोग नई ज़िन्दगी में नहीं थे, उनके लिये उन कष्टों को समझना असंभव है जिनका सामना हर व्यक्ति को करना पड़ा, लेकिन यह कष्ट अधिकांश मात्रा में बाबा की शान्ति प्रदान करने वाली उपस्थिति के कारण निरर्थक हो गया।

अन्ज़ार : बाबा ने भावनाओं और संवेदनाओं के नियंत्रण पर क्यों जोर दिया ?

एरच : सद्‌गुरु के पथ प्रदर्शन के बिना, असहायता और आशारहितता का जीवन किसी भी व्यक्ति की चित्तवृत्तियों को उद्विग्न और भावनाओं को विस्फोटक बना देगा। बाबा चाहते थे कि उनके साथी इस जीवन के बोझ को धैर्य व प्रसन्नता के साथ सहन करें, इसलिये वे क्रोध का कोई प्रदर्शन, उदास मुख मुद्रा अथवा दुख के कारण जरा सी भी उदास दृष्टि की अनुमति नहीं देते थे। अगर असावधानी के कारण कोई साथी इनमें से किसी एक भावना के वश में हो जाता था तो बाबा अपने कान खिंचवाकर अथवा अपने थप्पड़ लगवाकर, उस सजा को अपने ऊपर ले लेते थे।

अन्ज़ार : क्या बाबा अनुशासन और पूर्णता पर हमेशा जोर देते थे अथवा केवल नई ज़िन्दगी के दौरान ही जोर देते थे ?

एरच : बाबा हमेशा अनुशासन की बहुत ही तीव्र भावना रखते थे और अपने कार्य के हर पहलू में वे अत्यंत पूर्ण व व्यवस्थित थे। वे हमेशा यह चाहते थे कि उनके निकट रहने वाले शिष्य अनुशासित हों और नई ज़िन्दगी में यह अनुशासन अत्यंत कठोर हो गया। हमें कुछ शर्तों को सौ फीसदी पूरा करना था और केवल अनुशासन एवं पूर्णता के द्वारा ही हम उन्हें पूरा कर सकते थे।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी के दौरान बाबा की मुखमुद्रा गंभीर रहती थी अथवा वे अपनी सामान्य हास परिहास की मुद्रा में रहते थे ?

एरच : बाबा ने अपनी स्वाभाविक हँसी मज़ाक की मुद्रा बनाये रखी और अपने साथियों के साथ उनका व्यवहार हमेशा मित्रता एवं प्रसन्न साथी का रहा। उन्होंने, उनके (बाबा के) प्रति असभ्य और अशिष्ट हुये बिना, हमें परस्पर मज़ाक करने और जीवन से भरपूर होने की अनुमति दी।

अन्ज़ार : दूसरे प्रेमियों की तुलना में नई ज़िन्दगी के साथियों के प्रति बाबा का कैसा मनोभाव था ?

एरच : बाबा ने हमारी असहायता और आशारहितता की ज़िन्दगी में समान रूप से भाग लिया। हम सब आपस में एक दूसरे के घनिष्ठ साथी थे और बाबा हम सबके साथी थे। लेकिन दूसरे बहुत से प्रेमियों के लिये वह उनके प्रभु अथवा गुरु थे। नई ज़िन्दगी के दौरान हम बाबा को अपने 'बड़े भाई' की तरह संबोधित करते थे। यह एक ऐसी भूमिका थी जो

उन्होंने पूर्ण रूप से निभाई और किसी भी व्यक्ति को कभी भी उनका परिचय नहीं दिया गया। वह हमारे पथ प्रदर्शक, हमारे मित्र और उससे भी अधिक हमारे साथी थे। यद्यपि हमारे स्वभाव अलग अलग थे फिर भी बाबा हमें एक दूसरे के बिल्कुल समीप ले आये जहाँ कोई स्वार्थ नहीं था। साथ साथ रहने की इस अवधि में हम एक–दूसरे से प्रेम करते थे और एक दूसरे की सहायता करते थे।

अन्ज़ार : यद्यपि बाबा ने मंडली के सामने यह स्पष्ट कर दिया था कि नई ज़िन्दगी के दौरान हर व्यक्ति को अपनी ज़िम्मेदारी पूरी तरह से स्वयं उठानी पड़ेगी, फिर भी किसी गंभीर घटना के समय क्या वे उनका ध्यान रखते थे ?

एरच : बाबा ने कठिनाइयों के समय मित्रता के धर्म को निभाया और हमारी सहायता की। उदाहरण के लिये, जब काका को नजीबाबाद में दिल का दौरा पड़ा, उस समय बाबा ने बहुत प्रेम से उनकी सेवा की और जिस समय डा. गनी चलते हुये थक गये, उन्हें उत्साहित करने और सहारा देने के लिये बाबा उनके कंधों पर अपने हाथ रखते थे। नई ज़िन्दगी का समय साथियों द्वारा एक दूसरे की सहायता करने की ऐसी घटनाओं से भरा हुआ है।

अन्ज़ार : बाबा ने मंडली को यह भी बताया था कि जब तक वे पूरी तरह से 'सत्यानाशी' जीवन बिताने को तैयार नहीं थे, उनके लिए नई ज़िन्दगी में बाबा के साथ न आना अधिक अच्छा होगा। आप इस शब्द की व्याख्या किस प्रकार करते हैं ?

एरच : मेरे विचार से 'सत्यानाशी' शब्द प्रत्येक क्षणभंगुर वस्तु के पूर्ण नाश को व्यक्त करता है और यह शब्द ऐसा है जो यथार्थ रूप से नई ज़िन्दगी के लक्षण प्रकट करता है – प्रत्येक वस्तु का नाश और जो कुछ भी घटित हो, उसे स्वीकार करना।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी के तराने की दो पंक्तियों में कहा गया है, '' है जीना तुम्हें गर नई ज़िन्दगानी, करो तर्क दिल से ये दुनियाँए फ़ानी''। क्या बाबा ने साथियों को त्याग के बारे में कुछ संकेत दिये ?

एरच : बाबा के साथ रहना और उनका अनुसरण करना, स्वयं अपने

आपमें त्याग था जो त्याग का भी त्याग करता था क्योंकि हमें त्याग के विचार से भी ऊपर उठना था। हमारे पास बहुत थोड़ा सामान था और हम इससे अधिक की आशा नहीं करते थे। मैं फिर दोहराता हूँ कि हमारा उद्देश्य बाबा का अनुसरण करना था– चाहे वे हमें कहीं भी ले जाते और उनकी हर आज्ञा का पालन करना था। यह याद रखना चाहिये कि जब हमने बाबा के साथ रहने का निर्णय लिया था, हम किसी भी होने वाली घटना के लिये तैयार थे। हम किसी भी वस्तु की आशा नहीं करते थे और हम कोई भी इच्छा नहीं रखते थे।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी के दौरान बाबा ईश्वर से सहायता माँगते थे। क्या आप कृपा करके इसकी व्याख्या कर सकते हैं ?

एरच : नई ज़िन्दगी में बाबा नहीं चाहते थे कि उनके साथी उन्हें ईश पुरुष के रूप में देखें बल्कि वे यह चाहते थे कि वे उन्हें अपने में से एक साथी समझें। इसलिये उच्चतम स्तर से पूर्ण साधक के स्तर पर नीचे उतरने के कारण, वह एक साधारण मनुष्य की भाँति ईश्वर से आशीर्वाद की प्रार्थना कर रहे थे।

अन्ज़ार : क्या आपको नई ज़िन्दगी से पहले ईश्वर से की गई इस प्रकार की कोई प्रार्थना याद है ?

एरच : हाँ, बहुत सी।

अन्ज़ार : नई ज़िन्दगी और पुरानी ज़िन्दगी में की गई प्रार्थनाओं में किस प्रकार का अन्तर है ?

एरच : जब ईश्वर मनुष्य के रूप में मनुष्य के स्तर तक नीचे उतरता है, उसका यह कार्य मानवता और उसकी सृष्टि के लिये अनन्त दया का कार्य होता है लेकिन वह एक मनुष्य की तरह कार्य नहीं करता है। अवतार के रूप में, वह मानवता के लिये एक पैमाने का कार्य करता है और समय–समय पर बार बार वह इसके बारे में सूचना देता है। लेकिन इसके अलावा, जब वह ईश्वर से प्रार्थना करता है, इसका बहुत अधिक महत्त्व होता है। मनुष्य बन जाने के बाद, ईश्वर पूर्ण पुरुष होता है और मानवता के लिये, ईश्वर से दया की भीख अथवा प्रार्थना, एक पूर्ण याचना अथवा प्रार्थना है जिसका विशेष महत्त्व है। यह प्रार्थना मानवता की सबसे अधिक सहायता करती है।

अन्ज़ार : क्या आप नई ज़िन्दगी के शुरू के दिनों में बेलगाँव में प्राप्त हुये प्रशिक्षण (ट्रेनिंग) और परिश्रम के बारे में बता सकते हैं ?

एरच : जब हम २० अक्टूबर, १९४९ को बेलगाँव पहुँचे, हम एक खुले मैदान में ठहरे जहाँ बाबा ने दो झोपड़ियों के निर्माण का इन्तज़ाम किया था। एक झोपड़ी महिलाओं के लिये थी और दूसरी पुरुषों के लिये एक प्रकार का सोने का कमरा थी। पूरी जगह बहुत अधिक नम थी लेकिन हमने नमी से बचने के लिये जमीन पर अपने मोटे कम्बल बिछा दिये।

हमारा परिश्रम का कार्य कुयें से पानी खींचना, झोपड़ियों और इसके साथ की जमीन पर झाड़ू लगाना और उस स्थान को साफ रखना तथा बर्तन माँजना था। इनमें बाबा ने भी भाग लिया। हमारे लिये इस समय का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य बाबा की आज्ञाओं का पालन करने के प्रति बहुत सावधान रहना था। जिस पर उन्होंने विशेष रूप से ज़ोर दिया था। बाबा के प्रति आज्ञाकारिता, उनके साथ हमारे संबंध का हमेशा एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा थी, भले ही वह ईशपुरुष अथवा साथी के रूप में हों।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। मान लो कि सुबह के समय ८ बजे थे और अचानक बाबा की आज्ञा हुई कि सब लोग उनके पास इकट्ठा हों। हो सकता है उस समय कोई व्यक्ति दूध उबाल रहा हो और इस डर से कि दूध उबलकर गिर न जाये, वह बाबा के पास जाने से पहले थोड़ी देर इन्तज़ार करेगा। देरी से पहुँचने के कारण बाबा उससे पूछेंगे, ''तुम क्या कर रहे थे ?''

वह उत्तर देगा, ''बाबा मैं दूध उबाल रहा था।''

बाबा कहेंगे, ''दूध ? मेरे पुकारने से उसका क्या संबंध है ? उसे उबलकर गिर जाने दो। उसका कोई महत्त्व नहीं है। मैंने तुम्हें बुलाया था और तुम्हें तुरंत आना चाहिये।''

इसलिये हमें धीरे धीरे इस सीमा तक प्रशिक्षण दिया गया कि जब भी वह हमें बुलाते थे, हम अपने सारे काम छोड़कर उनके पास तुरंत जाते थे। दूसरों के सामने जाने योग्य होने या न होने का कोई सवाल ही नहीं था। अगर कोई साथी हजामत बना रहा होता था तो बाबा के बुलाने पर वहाँ तुरंत न पहुँचने के बजाय, उस समय उसके लिये यह अधिक अच्छा

था कि वह साबुन लगाये हुये अथवा अधूरी हजामत बनाये हुये ही बाबा के सामने जाये। और इस प्रकार हमने बिना किसी संदेह के, स्पष्ट रूप से बाबा की आज्ञाओं का पालन करना सीखा।

बाबा जिस तम्बू में रहते थे, वह इतना छोटा था कि उसमें उन्हें वर्गाकार (Diagonal) सोना पड़ता था। और जैसे ही एक बार वे अन्दर जाते, मैं उसे बाहर से तुरंत बन्द कर देता था। अन्ना जेक्काल, जिसे अन्ना १०४ भी कहते थे, अक्सर तम्बू के बाहर पहरा देता था, किन्तु जब उसका पहरा समाप्त हो जाता था, मैं उसकी जगह ले लेता था।

अन्ज़ार : मुरादाबाद में बाबा ने जिसे 'शून्य अवधि' कहा था, उसके बारे में आपके क्या विचार हैं ?

एरच : नई ज़िन्दगी में 'शून्य अवधि' का अर्थ था– एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का दैनिक कार्यक्रम और पिंडारी जीवन व्यतीत करना।

अन्ज़ार : क्योंकि बाबा ने कहा था कि नई ज़िन्दगी, जनवरी सन् १९५० से गंभीरतापूर्वक शुरू होगी, क्या हम यह सोच सकते हैं कि उसके पहले यह शिथिल थी ?

एरच : नहीं, ऐसा नहीं था। १६ अक्टूबर से शुरू हुआ समय प्रशिक्षण का समय माना जाता था, लेकिन यह उस समय भी नई ज़िन्दगी थी। एक बार वह समय समाप्त होने पर बाबा ने साथियों की गल्तियों को क्षमा नहीं किया। नई ज़िन्दगी किसी भी समय शिथिल नहीं थी।

अन्ज़ार : सन् १९५० के शुरू में हरिद्वार में बड़े कुम्भ मेले के दौरान बाबा द्वारा साधुओं से सम्पर्क किये जाने के बारे में आप कुछ कह सकते हैं ?

एरच : उस समय बाबा ने क्या आन्तरिक कार्य किया, मैं नहीं जानता। इसलिये मैं वही बता सकता हूँ जो मैंने देखा। कुछ साथियों के साथ बाबा, देहरादून के बाहर कुछ मील की दूरी पर मोतीचूर में रहते थे। बाकी बचे साथी देहरादून में रहते थे। इन साथियों के साथ बाबा रोज सुबह पैदल हरिद्वार जाते थे, वहाँ पूरा दिन बिताकर, शाम के समय वापस मोतीचूर लौटते थे। जो साथी उनके साथ जाते थे, वे दिन में कुछ नहीं खाते थे।

सुबह के समय शिविर से निकलने के बाद से, बाबा जिन साधुओं और सन्यासियों को चुनते थे, उनके पैर छूना और उन्हें प्रणाम करना शुरू कर देते थे। वे बूढ़े लोगों को खासतौर से प्रणाम करते थे, भले ही वह सन्यासी न हों। इस बात पर ध्यान न देकर, कि वे कौन और क्या थे, बाबा उन्हें प्रणाम करते थे और कोई भी इसे अस्वाभाविक नहीं समझता था क्योकि ऐसी ही रीति है। हम यह अनुभव करते थे कि बाबा उन लोगों के प्रति सम्मान प्रकट कर रहे थे जो ईश्वर की अपनी खोज में, संसार का त्याग करने की कोशिश कर रहे थे। जबकि अपने इस कार्य से बाबा हमारे सामने यह प्रकट कर रहे थे कि हमें भी उन लोगों का हमेशा आदर करना चाहिये जो इस प्रकार का जीवन बिताने की कोशिश करते थे। हमें इस बात पर ध्यान नहीं देना चाहिये कि वे किस हद तक गंभीर थे।

बाबा जहाँ कहीं पर अपना नतमस्तक होने का कार्य करते थे, जिसमें कुछ शिविर भी शामिल थे, हम उनके साथ रहते थे। यह पुरानी ज़िन्दगी की तरह नहीं था जब मस्तों के साथ बाबा के सम्पर्क के दौरान, हमसे कुछ दूरी पर रुकने के लिये कहा जाता था। ऐसा बहुत कम होता था जब बाबा किसी विशेष व्यक्ति से अकेले में मिलते थे। उस दशा में उन्हें कुछ एकान्त देने के लिये हम एक प्रकार से पर्दे का कार्य करते थे।

अन्ज़ार : बाबा ने कहा था कि उनके द्वारा साधुओं से सम्पर्क किये जाने का एक कारण यह था कि वह उनके सम्मुख नतमस्तक होकर उनका दर्शन करते थे और दूसरा कारण, जो प्रकट नहीं किया गया, 'विशेष' था, ऐसा उन्होंने कहा था। क्या आपको थोड़ा सा भी आभास है कि वह 'विशेष' कारण क्या था ?

एरच : नहीं, मुझे मालूम नहीं है क्योंकि बाबा ने इसे प्रकट नहीं किया। परन्तु मैंने पहले जैसा कहा है, मेरी समझ से वह हमें यह समझाने की कोशिश कर रहे थे कि सत्य की अपनी खोज में साधुओं और सन्यासियों के लिये संसार का त्याग करने की प्रेरणा का कुछ भी कारण हो, हमें उनके प्रयत्नों के प्रति हमेशा आदर प्रकट करना चाहिये।

अन्ज़ार : क्या कभी किसी व्यक्ति ने बाबा को किसी असाधारण व्यक्ति के रूप में पहचाना ?

एरच : जब कि बाहरी रूप से कोई पहचान नहीं थी, हर जगह लोगों का ध्यान बाबा की ओर आकर्षित होता था क्योंकि उनका व्यक्तित्व और अस्तित्व विशिष्ट रूप से आलोकित थे। इसके अलावा, मुझे कोई विशेष घटना याद नहीं है क्योंकि बाबा अपने आपको पूरी तरह से छिपाये रहते थे। नई ज़िन्दगी में वह अपने आपको इतनी पूर्णता के साथ ढँके रहते थे कि किसी भी व्यक्ति को, यहाँ तक कि सन्तों के लिये भी, उन्हें पहचानना बहुत कठिन था।

अन्ज़ार : देहरादून में आपका क्या कार्य था ?

एरच : क्योंकि नई ज़िन्दगी के दौरान मुझे पूरे समय बाबा के साथ रहना था इसलिये जहाँ कहीं भी वे गये, मुझे उनके साथ रहना था। उन कुछ महीनों के अलावा, जब उन्होंने हमसे भीख न माँगने के लिए कहा और हमें अपने गुजारे के लिये धन कमाने के लिये भेजा, मैं हमेशा उनके साथ था। धन कमाने के लिये हमने कपड़े धोने की दुकान खोली और घी का व्यापार किया।

इस प्रकार इन महीनों के अलावा, मुझे हमेशा बाबा के साथ रहकर उनके आराम और उनकी व्यक्तिगत ज़रूरतों का ध्यान रखना था। बाबा रात में अपने तम्बू में आराम किया करते थे और मेरी यह ड्यूटी थी कि मैं इस तम्बू को साफ रखूँ, हर शाम को इसे खड़ा करूँ, सुबह उतारूँ और लपेटकर अपने साथ ले जाऊँ।

अन्ज़ार : देहरादून से मेहेराबाद की वापसी यात्रा कैसी थी?

एरच : हमने सन् १९५० में, जून के मध्य में, देहरादून से प्रस्थान किया और रेलगाड़ी से बम्बई होते हुये पूना पहुँचे। वहाँ से हम सतारा और फिर महाबलेश्वर गये। उसके बाद हम पूना वापस गये जहाँ हम गुरुप्रसाद बँगला में कुछ दिन ठहरे। इस समय बाबा ने महिलाओं और अधिकांश साथियों को मेहेराज़ाद वापस भेज दिया जबकि वह और हम चार साथी हैदराबाद गये। हैदराबाद में उन्होंने हमसे मनोनाश का कार्य शुरू करने के लिए उनके लिए एक उपयुक्त जगह ढूँढने के लिए कहा। हमने खुपा–गुड़ा नाम की एक बहुत ऊँची पहाड़ी को चुना जहाँ पेड़ पौधों का नामोनिशान भी नहीं था और उसमें एक गुफ़ा भी थी। यह हैदराबाद के समीप स्थित थी और क्योंकि बाबा ने इसे पसंद किया था, हम उनके कार्य के लिये इसे तैयार करने लगे।

अन्ज़ार : क्या आप इस मनोनाश कार्य की व्याख्या कर सकते हैं ?

एरच : 'मनोनाश' का अर्थ है मन का नाश, लेकिन हमें यह पूछना है कि किसके मन का नाश करना है ? अगर हम बाबा को ईश–पुरुष मानते हैं तो यह प्रतीत होता है कि मनोनाश का मतलब है ईश्वर के विश्वव्यापी मन का नाश। लेकिन यह गलत होगा क्योंकि इसका अर्थ यह होगा कि दूसरे सभी मनों का नाश। इसलिये जब हम नई ज़िन्दगी के बारे में बात करते हैं तो हम बाबा के मन के बारे में बात नहीं करते हैं।

जहाँ तक मैं समझता हूँ, यह उन सबका, जो मनोनाश के लिए तैयार थे, आध्यात्मिक उत्थान करने की बाबा की रीति थी, लेकिन यह केवल मेरा दृष्टिकोण है।

• • •

ubl ftUnxh e gkl ifjgkl

नई ज़िन्दगी में हमें भिक्षा में जो खाना मिलता था, हम वही खाते थे। इसका मतलब था कि कोई साथी अपनी इच्छा के अनुसार भोजन का चुनाव नहीं कर सकता था। इससे डा. गनी अधिक प्रभावित हुये क्योंकि वह एक मुसलमान थे और उनका भोजन दूसरों से अलग था। अपने भोजन के बारे में सोचकर कभी कभी वह बाबा से मज़ाक में कहते थे कि उनका शरीर, उस खाने के लिये रो रहा है, जिसकी आदत उसे लम्बे समय से है।

इसलिये एक दिन, जब हम मुरादाबाद में थे, डा. गनी ने खाने के बारे में अपने प्रिय विचार बाबा के सामने रखे, बाबा ने उतने ही विनोद के साथ उनसे कहा कि क्योंकि यह हमारे प्रशिक्षण के दौरान शून्य अवधि थी इसलिये उन्हें किसी भी शानदार होटल में जाकर अपना मनपसंद खाना खाने की उनकी (बाबा की) आज्ञा थी। बाबा ने काका को, जो आपत्ति काल के लिये रखे गये धन के संरक्षक थे, डा. गनी को होटल में खाने के लिये धन देने की आज्ञा दी।

बाबा की उदारता से प्रसन्न होकर, डा. गनी ने शहर के एक शानदार होटल में जाकर; स्वादिष्ट भोजन का आनंद लिया। लौटने के बाद उन्होंने उन भोजन सामग्रियों का, जो उन्होंने खाई थीं, पूरा पूरा और लगभग काव्यमय वर्णन करके हम सबका मनोरंजन किया। इस वर्णन में, बाबा ने उन्हें जो स्वतंत्रता दी थी, उसके प्रति उनका संतोष स्पष्ट था। डा. गनी के इस आनंद दायक मनोरंजन के बारे में सुनकर बाबा भी बहुत प्रसन्न थे।

अगले दिन बाबा ने उन्हें थोड़ा चकित कर दिया। उन्होंने कहा, ''डाक्टर, आज तुम्हें एक महत्त्वपूर्ण कार्य करना है। कल तुमने जिस होटल में खाने का आनंद लिया था, नई ज़िन्दगी के साथी के रूप में, आज उसी होटल में जाओ, भीख माँगो और कल तुमने जो कुछ खाया था, उसमें से कुछ लेकर आओ।''

नई ज़िन्दगी की शर्तों के अनुसार, डा. गनी के सामने आज्ञापालन के अलावा और कोई रास्ता नहीं था। इसलिये वे होटल में गये और वहाँ लोग उनको भिखारी के रूप में देखकर अत्यंत चकित थे क्योंकि एक दिन पहले उन्होंने खाने के लिये उदारतापूर्वक धन खर्च किया था। इसलिये एक बार फिर उन्होंने अपने बाहर खाना खाने के साहसिक कार्य की अन्तिम घटना से हमारा मनोरंजन किया।

एक दूसरी घटना का संबंध मुरली काले से था जो हमारे साथियों में से एक था। उसका काम उसी साँड़ के लिये चारा लाने के लिये, जो गाड़ी खींचता था, बैलगाड़ी से हरिद्वार जाना था।

एक दिन हरिद्वार से लौटते समय, दुबले पतले मुरली के लिये हृष्ट पुष्ट अंग्रेज़ी साँड़ को सँभालना उस समय बहुत कठिन हो गया जबकि उसके पीछे एक कार थी जिसे एक अंग्रेज़ चला रहा था और वह आगे जाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन मुरली की सारी कोशिशों के बावजूद, उस अड़ियल साँड़ ने सड़क के बीच से हटने से इनकार कर दिया।

अन्त में उस अँग्रेज़ को गुस्सा आ गया और सड़क के किनारे कार चलाते हुये, उसने मुरली की गाड़ी के ठीक सामने कार रोक दी और मुरली पर चिल्लाया, ''क्या तुम्हारी समझ में नहीं आता कि तुम्हारे पीछे कार है?

क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे अलावा भी सड़क पर कोई चल रहा है? तुम अपनी गाड़ी को सड़क के किनारे ले जाकर, कार को रास्ता क्यों नहीं देते ?''

इस समय तक मुरली साँड़ को कुछ नियंत्रण में करने में सफल हो चुका था, इसलिये साँड़ को छोड़कर वह अंग्रेज़ के पास गया और जो भी थोड़ी सी अंग्रेज़ी उसे आती थी, उसमें उसने कहा, ''श्रीमन्, मैं एक भारतीय हूँ और यह साँड़ एक अंग्रेज़ी साँड़ है। यह किसी भी तरह मेरी बात नहीं समझता। क्या आप कृपा करके अपनी बात इसे समझायेंगे ताकि भविष्य में यह इसे याद रखे।''

इस अप्रत्याशित बात पर कार में बैठा हुआ पूरा परिवार हँसने लगा और बहुत ही मित्रता पूर्ण वातावरण में घटना समाप्त हो गई।

• • •

ubl ftUnxh e: nloh Hkk tu

वर्ष १९४९ के अन्त में, नई ज़िन्दगी के साथियों की टोली देहरादून की ओर बढ़ रही थी और टोली में तीन या चार लोगों के अलावा किसी को यह नहीं पता था कि उन्हें कहाँ जाना है। केवल नौशेरवाँ अन्ज़ार के पिता केकी नालावाला को, जो देहरादून में रहते थे, बाबा का प्रोग्राम पता था क्योंकि उन्हें बाबा ने अपने मार्ग विवरण की सूचना भेजी थी।

बाबा के आने के पहले देर रात में केकी को एक आदमी ने जगाकर पूछा कि क्या उनके घर कोई टोली आने वाली थी ?

केकी ने पूछा, ''कैसी टोली ?''

उस आदमी ने उत्तर दिया, ''उन लोगों की, जो तीर्थयात्री प्रतीत होते हैं। मुझे उनके लिये यह सामान लाने की आज्ञा दी गयी है।''

केकी ने पूछा, ''क्या सामान ?''

उस आदमी ने कहा, ''खाने की चीजें और एक बैलगाड़ी जो बाहर सड़क में लाइन में खड़ी है।''

लेकिन केकी ने कहा, ''मैं उन्हें नहीं ले सकता और अगर मैं लेना भी चाहूँ तो मेरे पास उन्हें रखने के लिए जगह नहीं है।''

फिर भी, वह व्यक्ति यह आग्रह करता रहा कि उसे इस कार्य के लिये आज्ञा दी गई थी और उसने उस घर को पहचानने में कोई गलती नहीं की थी जो उसे दिखाया गया था। केकी एक अजनबी के सामने बाबा के विश्वास को तोड़ना नहीं चाहता था फिर भी वह यह जानना चाहता था कि उस व्यक्ति को इस प्रकार की सूचना कैसे मिली और उसे वह घर किस प्रकार दिखाया गया।

आने वाले व्यक्ति ने कहा, ''मैं यह जानता हूँ कि यहाँ एक टोली आ रही है और उस टोली के मुखिया ने मुझे यह सामान लाने की आज्ञा दी है।''

केकी ने पूछा, ''लेकिन उसने तुम्हें किस तरह आज्ञा दी? क्या उसने तुम्हें पत्र लिखा या किसी और माध्यम से आज्ञा दी ?''

उस व्यक्ति ने कहा, ''नहीं, लेकिन क्या वह नहीं आ रहे हैं ?''

केकी उस व्यक्ति की असामान्य बातों से व्याकुल हो गया और इस बात की खोजबीन करता रहा कि वह इस प्रकार की अजीब बातें क्यों कर रहा था।

अन्त में उस व्यक्ति ने स्पष्ट रूप से बताया, ''मैंने इतना अधिक सजीव और वास्तविक दिवा स्वप्न (vision) देखा कि मैं उसके अनुसार कार्य करने के लिये मज़बूर हो गया।

मैं बहुत दूर, अलीगढ़ से आया हूँ। मुझे ऐसा करने की आज्ञा मिली है।"

फिर भी, केकी ने उस भेंट को लेने से मना कर दिया। उसने उस व्यक्ति से कहा कि अगले दिन सुबह वे इस विषय पर बात करेंगे। बाद में पता चला कि वह व्यक्ति टोडी सिंह था जो मक्खन और चीज़ का उत्पादन करने वाली एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ी फ़र्म को क्रीम की ज़रूरी मात्रा प्रदान करने वाला एक सज्जन व्यक्ति था। हालांकि वह बाबा के बारे में कुछ नहीं जानता था, फिर भी अपनी अन्तर्दृष्टि के कारण, वह बाबा और उनकी टोली के लिये कई बैलगाड़ियों में भरकर, भिन्न–भिन्न प्रकार का स्वादिष्ट भोजन लाया था।

अगले दिन बाबा ने आने के बाद केकी से पूछा, "कोई ख़बर है ?"

केकी ने कहा, "एक सिरदर्द है।"

बाबा ने पूछा, "कैसा सिरदर्द है ?"

"एक व्यक्ति हमसे बहुत सारा भिन्न–भिन्न प्रकार का खाने का सामान–मक्खन, अनाज, मेवे, सब्जियाँ आदि लेने के लिये ज़िद कर रहा है।"

बाबा ने उसे अंदर बुलाने के लिये कहा।

जब उस व्यक्ति को यह बताया गया कि जिस दल के मुखिया को वह खोज रहा था वह आ गये हैं, वह बहुत खुश हो गया और बोला, "मैंने तुमसे कहा था कि वह आने वाले हैं।" कमरे में आते ही बाबा को देखकर, उसने उनकी ओर इशारा करते हुये कहा, "इन्होंने ही मुझे आज्ञा दी थी।"

बाबा ने उससे पूछा, "तुम क्या लाये हो ?"

उसने कहा, "मैं ये सारी वस्तुयें लाया हूँ।"

बाबा ने कहा, "क्या तुम यह सोचते हो कि इन सब चीजों को खाने के अलावा हमारे पास और कुछ काम नहीं है ? यह सब कौन पकायेगा ?"

उसने कहा, "आपके लिये खाना पकाने में मेरे परिवार को बहुत खुशी होगी। मेरी पत्नी और बेटी यह काम करेंगी।"

तब बाबा ने टोडी सिंह से कहा कि वह अपने परिवार को उनके पास लाये। थोड़े ही समय में साथी, जो भीख में मिले किराये से गुज़ारा कर रहे थे, टोडी सिंह के परिवार द्वारा पकाये गये स्वादिष्ट भोजन का आनंद ले रहे थे। टोडी सिंह के परिवार को यह मालूम हो गया था कि बाबा कौन थे और स्वयं टोडी सिंह मेहेरबाबा का एक गहरा प्रेमी हो गया। उसने अपना शेष जीवन और धन दौलत बाबा की सेवा अपनी विशिष्ट रीति से करते हुये बिताया। उन्होंने एक मुफ़्त भोजनालय खोला जिसमें हर किसी का स्वागत था।

उसी समय के दौरान जिसका मैंने टोडी सिंह की कहानी में उल्लेख किया है, हम मुरादाबाद पहुँचे जहाँ बाबा ने कुछ समय रहने का निश्चय किया। मुरादाबाद अपनी कड़ाके की सर्दी के लिये प्रसिद्ध था। साथियों

के पास गर्म कपड़े नहीं थे। इसके अलावा रहने के लिये कोई मकान न होने से सर्दी की भीषणता और बढ़ गई थी।

एक दिन सुबह हमने कुछ गाड़ियों को कुछ दूरी पर अपने पड़ाव की ओर आते देखा। उनके पास आने पर हमने देखा कि उन्हें एक युवक लेकर आ रहा था जो प्रसिद्ध बाबा प्रेमी हरजीवन लाल का पुत्र इन्दर था।

हमने इन्दर से वहाँ आने का कारण पूछा क्योंकि पुरानी ज़िन्दगी के सभी अनुयायियों को यह स्पष्ट रूप से बता दिया गया था कि नई ज़िन्दगी के दौरान उन्हें बाबा से कोई सम्पर्क नहीं रखना था। वह युवक घबराकर हकलाने लगा। उसने कहा कि बाबा की आज्ञा को जानते हुये वह इस बात से खुश नहीं था लेकिन उसके पिताजी ने उसे यह काम सौंपा था कि मुरादाबाद में बाबा जहाँ कहीं भी हों, वह गाड़ियों के सामान को बाबा के कैम्प में उतार दे, इसलिये उसे आना पड़ा।

सौभाग्य से बाबा ने कहा कि शून्य अवधि (Vaccum period) होने से हम उन भेंटों को भिक्षा के रूप में स्वीकार कर सकते थे और इस तरह हमें गरम कपड़ों, दस्तानों, ऊनी मोजों, स्वेटरों, जर्सियों व कम्बलों की एक उदार भेंट समय से मिली। इसके अलावा काफ़ी मात्रा में सूखे मेवे व अन्य स्वादिष्ट खाने की चीजों का दान हमारी अन्तरात्मा की ज़रूरतों को पूरा कर गया। एक तीसरी गाड़ी भी थी जिसमें बाद में इस्तेमाल करने के लिये सूती कपड़े भी थे।

मुझे अभी भी समझ में नहीं आता कि हरजीवन लाल ने अपनी भेंटों को भेजने के लिये उस स्थान को किस प्रकार ढूँढ़ा, किन्तु हम सबके लिये यह देवताओं द्वारा स्वर्ग से भेजा गया दैवी भोजन था जिनका सम्राट उस दिन हमारे साथ एक साथी के रूप में था और अपने रहस्यमय तरीकों से एक भिखारी और स्वामी के रूप में कार्य कर रहा था।

• • •

ubl ftUnxh e: Hkh[k ekxuk

जब हमने नई ज़िन्दगी के समय में मेहेरबाबा के साथ असहायता और आशारहितता के अपने जीवन में प्रवेश किया, उन्होंने हमें पहले ही

यह चेतावनी दे दी थी कि हम उनसे किसी भी भौतिक अथवा आध्यात्मिक लाभ की आशा न रखें। बाबा ने कहा था कि हम भूखे रहने और कीड़ों से भरे तालाब का पानी पीने के लिये तैयार रहें। उन्होंने यह भी कहा था कि हम उस जीवन से कभी भी वापस नहीं आयेंगे। कुल मिलाकर उन्होंने नई ज़िन्दगी का एक भयानक रूप प्रस्तुत किया था।

इसके बावजूद, क्योंकि हम सब उनकी सेवा में रहना चाहते थे इसलिये इस तरह की परिस्थिति में उनका अनुसरण करने के सौभाग्य ने सभी डरावने विचारों को मिटा दिया।

जब बाबा ने हमसे भोजन के लिये भीख माँगने के लिये कहा, हमने घर जाकर भीख माँगी और हम जो कुछ भीख माँगकर लाते थे, बाबा उसे प्रेमपूर्वक साथियों में बाँट देते थे। हम जो कुछ खाते थे, वह भिन्न–भिन्न प्रकार के भोजन का मिश्रण था। इस मिश्रण में केवल इसलिये स्वाद होता था क्योंकि बाबा ने स्वयं इसे अपने हाथों से मिलाकर हमें परोसा था।

भोजन के लिये भीख माँगने पर हमारा अलग–अलग ढँग से स्वागत हुआ। एक ओर तो हमें लोगों की शिकायती नज़रों का सामना करना पड़ता था जो आश्चर्य से कहते थे कि हमारे जैसे स्वस्थ व्यक्ति मेहनत करके धन क्यों नहीं कमाते। जबकि हमें ऐसे गृहस्थ भी मिले जिन्होंने सहानुभूतिपूर्वक सभी साथियों के लिये ताजा भोजन पकाया। एक बार हमारी भेंट एक बूढ़ी औरत से हुई जिसने कहा कि वह कितनी अधिक भाग्यशाली थी कि उसे अपने घर में ऐसे आगन्तुकों के दर्शन हुये। संयोगवश, हमें भिक्षा में देने के लिये उसके पास कुछ भी नहीं था लेकिन वह निराश हुये बिना स्वयं भीख माँगने निकल गई और भीख में मिला हुआ खाना उसने हमें दे दिया।

बाबा के निर्देशों के अनुसार भिक्षा माँगने का ढँग भी बदलता रहता था। कभी वह कहते थे "घर–घर से भीख में मिले हुये खाने पर गुज़ारा करते हुये बहुत समय हो गया है। अब आगे आने वाले बड़े शहर में हम एक हफ़्ता रुकेंगे और किसी ऐसे परिवार को ढूँढ़ने की कोशिश करेंगे जो हमें बिना पैसे के खाना दे सके।"

मैंने पूछा, "लेकिन हम किससे याचना करेंगे ?"

बाबा ने उत्तर दिया, “चिन्ता न करो। किसी व्यक्ति से याचना करने की तुम्हारी इच्छा होगी।”

इसलिये, इस थोड़े से मार्ग–दर्शन को ध्यान में रखते हुये, हम अक्सर दो लोगों की टोली में बाहर जाते थे और सड़कों पर चलते हुये लोगों को ध्यान से देखते व उनकी सूक्ष्म परीक्षा करते थे। अगर एक साथी किसी समृद्ध दाता को चुनता था, वह सबसे पहले अपने साथी से बात करता था और जब उस व्यक्ति के पास जाने के बारे में दोनों सहमत होते थे, तभी उससे प्रार्थना की जाती थी। भीख माँगने के एक ख़ास अवसर पर मैंने पहल की।

मैंने उस व्यक्ति को अभिवादन करते हुये कहा, “नमस्ते।”

उसने कहा, “नमस्ते, आप क्या चाहते हैं क्या आप यहाँ अजनबी हैं ?”

मैंने कहा, “हाँ, श्रीमान् हम यहाँ अजनबी हैं। हम तीर्थयात्री हैं और हमारा शेष दल पीछे आ रहा है। वे लोग बीस हैं। इसलिये...”

उसने कहा, “हाँ, तो ?”

मैंने कहा, “हम चाहते हैं कि आप हमारी सहायता करें।”

उसने कहा, “मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ ?”

मैंने पूछा, “क्या आप यहाँ रहते हैं ?”

उसने उत्तर दिया, “हाँ, मैं एक स्थानीय व्यक्ति हूँ।”

मैंने पूछा, “क्या आप बाइस लोगों के एक दल के लिये सात दिन तक खाना देकर हमारी मदद कर सकते हैं? अगर आप कर सकते हैं तो बताइये। अगर नहीं कर सकते हैं तो हम आप पर किसी भी तरह का दबाव नहीं डालना चाहते हैं।”

उस व्यक्ति ने पहले हमारी ओर खाली नज़रों से देखा और फिर धीरे–धीरे उसके दिमाग़ में कोई विचार आता हुआ लगा और उसने कहा, “ठीक है। मैं यह सब कर सकता हूँ। आप सब कहाँ ठहरे हैं ?”

मैंने उत्तर दिया, “हमने अभी तक निर्णय नहीं किया है। हमारे दल

को अभी आना है और इस समय हम दोनों ही यहाँ पर हैं। वे लोग बाद में आयेंगे और हम शहर के बाहर ठहरेंगे।”

“ओह !” उस व्यक्ति ने केवल इतना कहा।

मैंने आगे कहा, “हमारी शर्त यह है कि आप दल से संबंधित व्यक्तियों से सम्पर्क करने की कोशिश नहीं करेंगे और न ही आप यह जानना चाहेंगे कि यह कैसा दल है। आपको सुबह का नाश्ता, दोपहर और रात का खाना पहुँचाना होगा; लेकिन चाय के लिये परेशान होने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि चाय हम स्वयं बनायेंगे। हम आपसे केवल भोजन चाहते हैं।”

बाबा जब भी हमें भीख माँगने के लिये भेजते थे, अक्सर हम बिना किसी अपवाद के सफल होते थे, जैसा कि इस समय हुआ। हमारी प्रार्थना स्वीकार करने वाले व्यक्ति ने जानना चाहा कि उसे अपने घर में हमारे लिये किस समय तक खाना तैयार कर लेना चाहिये, लेकिन हमें यह निर्देश दिये गये थे कि हम भिक्षा देने वाले से उस जगह खाना भेजने के लिये कहें, जहाँ हम ठहरे हुये थे। उसे इस बात से कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि उसने कहा, “ठीक है, लेकिन आप किस समय भोजन चाहते हैं ?”

मैंने उत्तर दिया, “दल के यहाँ आने पर हम उसका प्रबंध कर लेंगे। हम आपसे कहाँ पर सम्पर्क करें ?”

तब वह व्यक्ति हमें अपने घर ले गया और इससे हमें यह जानने का अवसर मिला कि उसके पास अपने वचन को पूरा करने के लिये साधन थे। उसने हमें अंदर आने के लिये निमंत्रित करते हुये कहा, “जब भी दल के लोग आयें, मुझे समय से पहले बता दीजियेगा ताकि मैं तैयारी कर लूँ।”

जब भोजन आया, बाबा ने मुझसे पूछा, “तुमने उससे किस समय भोजन भेजने के लिये कहा था ?”

मैंने उत्तर दिया, “बाबा, आपने कहा था कि भोजन १२ बजे यहाँ आ जाना चाहिये।”

उन्होंने पूछा, “इस समय क्या बजा है ?”

मैंने कहा, “इस समय एक बजा है।”

बाबा ने कहा, “वह इतनी देर से क्यों आया ? उससे यह कहो। जाओ और उसे यह बताओ।”

इसलिये मैंने नौकर से शिकायत की जिसकी वास्तव में कोई ग़लती नहीं थी। मैंने उससे कहा, “अपने मालिक से कहो, हम दोपहर का खाना जल्दी और समय पर चाहते हैं।”

अगले दिन जब नौकर को दोपहर के खाने के खाली बर्तन वापस दिये जा रहे थे, मैंने उसे बाबा का दूसरा संदेश दिया, “अपने मालिक से कहना कि रात का खाना समय से भेजें और उसके साथ कोई मिठाई भेज दें।” मालिक के लिये संदेश बढ़ने लगे, “अपने मालिक से कहो, हम दूसरी तरह के तीर्थयात्री हैं। हम प्याज और लहसुन खाते हैं इसलिये खाने में प्याज और लहसुन डलवा दें। अपने मालिक से कहो कढ़ी का स्वाद अच्छा नहीं था, उसमें और अधिक मसाले होने चाहिये थे।” फिर भी, मालिक बार–बार दी गई आज्ञाओं से नाराज़ नहीं हुआ और आज्ञानुसार ही काम किया।

इस दृष्टान्त में हमें जो सफलता मिली, उसकी चार अन्य अवसरों पर पुनरावृत्ति हुई और यह बाबा की हमें यह दिखाने की रीति थी कि जहाँ कहीं असहायता है, वहाँ प्रभुता भी है। उन्होंने, सृष्टि के स्वामी ने केवल इच्छा की और वहाँ हर चीज़ मौजूद थी।

एक समय बाबा ने हमसे सभी साथियों के लिये कुछ रेलगाड़ी के टिकट भिक्षा में माँग कर लाने को कहा। उन्होंने कहा, “जाओ और कुछ लोगों से मिलकर उन्हें बताओ कि हम चार प्रथम श्रेणी और शेष तृतीय श्रेणी के टिकट चाहते हैं।”

अतः हम अपनी खोज में लग गये और एक साधु स्वभाव के व्यक्ति का चुनाव किया जिसने टिकटों का खर्च उठाना स्वीकार किया। वह हमें किराया देने लगा लेकिन हमने उसे बताया कि हम पैसा नहीं छूते थे।

उसने पूछा, “तब आप किस प्रकार टिकट लेंगे ?”

मैंने उत्तर दिया, “कृपया अपने किसी आदमी से कहिये कि टिकट लेकर हमें स्टेशन पर दे दे।”

उसने पूछा, “गाड़ी किस समय जाती है ?”

मैंने कहा, “सुबह चार बजे।”

उसने कहा, “इतनी जल्दी ?”

मैंने कहा, “हाँ। कृपया भूलियेगा नहीं–चार प्रथम श्रेणी और अठारह तृतीय श्रेणी के टिकट होना चाहिये।”

“ठीक है,” उस व्यक्ति ने कहा। वह अपने वचन का सच्चा निकला क्योंकि हमें टिकट समय पर मिल गये।

एक अन्य अवसर पर बाबा भिक्षा के इसी तरीके से एक बँगला और खाना प्राप्त करना चाहते थे। बँगला बड़ा चाहिये था जहाँ सभी साथी रह सकें और उन्हें वह मिला। उन्होंने जो चाहा, उन्हें मिला।

एक बार उनके मन में लहर आई और उन्होंने मुझसे उस व्यक्ति से, जिसने बँगला दिया था, जाकर मिलने और उससे एक ऊँट और ऊँट–गाड़ी, दो गधियाँ, दल के लिये दूध देने के लिये एक गाय और इन सबके ऊपर, एक बिल्कुल सफेद घोड़ा, जिसकी पलकें और पूँछ भी सफेद हों, देने के लिये प्रार्थना करने को कहा।

संयोगवश इन वस्तुओं को देने वाले व्यक्ति डा. नाथ थे जो बनारस के प्रसिद्ध आँखों के डाक्टर थे। उन्होंने इन जानवरों को देना स्वीकार किया। उन्होंने बाबा द्वारा निश्चित किये गये समय के अंदर सफेद घोड़े को प्राप्त करने के लिये भरसक कोशिश करने का वादा किया। उन्हें बाबा का परिचय नहीं दिया गया था। उन्होंने पूछा, “आपको गधों की ज़रूरत क्यों है ? तीर्थयात्रा पर गधों को ले जाना हिन्दू शास्त्र मत के विरुद्ध मानते हैं।”

मैं केवल इतना ही कह सका, “हम नहीं जानते कि हमारे दल का मुखिया उन्हें क्यों चाहता है ?” और इससे डा. नाथ संतुष्ट प्रतीत हुये।

इस पर भी, मुझे एक शर्त का पालन और करना था। हमें जानवरों को तभी स्वीकार करना था अगर डाक्टर उनके बदले में साथियों द्वारा अब तक पहने गये मिट्टी से भरे, गंदे कपड़े लेना स्वीकार करे।

डा. ने कहा, “लेकिन यह सब क्यों है ? मैं उन्हें स्वीकार करके, धोकर आपको वापस कर दूँगा।”

मैंने कहा, "हमें कपड़े नहीं चाहिये। वे आपको लेने होंगे।"

उनके मन में कोई विचार आया और उन्होंने पूछा, "क्या उस बण्डल में आपके दल के मुखिया के कपड़े होंगे ?"

मैंने कहा, "मैं नहीं जानता।"

उन्होंने कहा, "कृपया जाकर निश्चित रूप से मालूम कीजिये।"

इसलिये मैं डाक्टर के प्रश्न को लेकर बाबा के पास आया।

बाबा ने पूछा, "क्या वह मुझे नाम से पुकारता है।"

मैंने कहा, "नहीं, उसने केवल 'दल का मुखिया' कहा।"

बाबा ने कहा, "ठीक है। मैं अपना स्कार्फ दूँगा। उससे कहो कि दल के मुखिया के कपड़े भी उसमें होंगे।"

बाबा ऐसे थे, स्वामी और सेवक। एक ही समय में सड़क के भिखारी और सृष्टि के स्वामी।

• • •

ubl ftUnxh e ?kVuk

जिन लोगों ने नई ज़िन्दगी में मेहेरबाबा के साथ जाना स्वीकार किया था, उनमें से एक सिख डाक्टर दौलतसिंह थे जिनका परिवार बहुत धनवान था और जो कश्मीर के सिख समाज में अत्यंत प्रभावशाली व्यक्ति रह चुके थे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि नई ज़िन्दगी के लिये निर्धारित अत्यंत कड़ी शर्तों के प्रति वह पूर्णतया सचेत थे लेकिन बाबा ने उन परिस्थितियों का जो डरावना चित्रण किया था जिनका सामना साथियों को करना पड़ सकता था, उससे वे तनिक भी विचलित नहीं हुये। अपने प्रियतम बाबा के साथ जाने के परम सौभाग्य की ही उन्हें परवाह थी। फिर भी, उनके इस निश्चय की दृढ़ता की बहुत जल्दी ही परीक्षा ले ली गई जिसकी आशा किसी को नहीं थी। यह परीक्षा निश्चित रूप से उन परिस्थितियों में ली गई जिसकी आशा स्वयं डाक्टर को नहीं थी और उसका जो परिणाम हुआ, उसकी आशा उन्हें सपने में भी नहीं थी।

नई ज़िन्दगी शुरू होने के कुछ ही समय बाद हम लोग बेलग्राम में ठहरे थे। वहाँ हम उस अवधि तक रहे जिसे बाबा ने हमारा प्रशिक्षण काल बताया। वहाँ उन्होंने हमें इस बात का ज्ञान कराया कि आज्ञाकारिता का, विशेष रूप से नई ज़िन्दगी के नियमों का पालन करने में, क्या अर्थ था।

एक रात, जब मैं बाबा के छोटे तम्बू के बाहर सो रहा था, बाबा ने आधी रात के बाद किसी समय मुझे जगाकर कहा कि मैं उनके साथ शिविर के निरीक्षण के लिये चलूँ। सभी साथी गहरी नींद में थे लेकिन रात के अंधेरे में कहीं से नाक सुड़कने की हल्की सी आवाज़ आई जिसने हमें निरीक्षण करने के लिये आकर्षित किया।

हमने देखा कि कोई अकेला बैठा सिसक रहा था और पास जाने पर हमने पहचाना कि वह दौलतसिंह थे। बाबा उनके पीछे से चुपचाप गये और वह बाबा के अचानक और अप्रत्याशित रूप से प्रकट होने से एकदम आश्चर्यचकित रह गये।

बाबा ने उनसे पूछा, "तुम क्यों रो रहे हो ?"

डाक्टर ने उत्तर दिया, "बाबा, कोई बात नहीं है। केवल अपने परिवार की याद आ गई थी।"

बाबा ने कहा, "लेकिन तुम रो क्यों रहे हो ? तुम जानते हो कि नई ज़िन्दगी में साथियों को मेरे सामने कभी नहीं रोना चाहिये। तुम्हें वापस जाना होगा।"

डाक्टर ने दृढ़तापूर्वक विरोध किया, "लेकिन मैं आपके सामने नहीं आया। आप मेरे पास आये हैं।"

बाबा ने कहा, "बात चाहे कुछ भी हो। अब सो जाओ और कल हम इस पर विचार करेंगे।"

अगले दिन बाबा ने सभी साथियों के साथ एक मीटिंग की जिसमें उन्होंने जो कुछ घटित हुआ था, उसका वर्णन किया और डा. सिंह से पुनः पूछा, "तुम इतने उदास क्यों थे ? क्या तुम मेरे साथ प्रसन्न नहीं हो ?"

डा. ने उत्तर दिया, "मैं आपके साथ बहुत खुश हूँ। मैं नहीं जानता कि मेरा हृदय इस तरह कैसे उमड़ पड़ा।"

बाबा ने अभी भी जानना चाहा, "लेकिन किस बात ने तुम्हें रोने के लिये मज़बूर कर दिया ?"

डा. ने कहा, "ये मन के विचार हैं, बाबा। आज मेरी लड़की की शादी है। जब मैंने नई ज़िन्दगी में आपके साथ जाने की अपनी इच्छा को महत्व देते हुये गश्तीपत्र पर दस्तख़त किये थे, मैं जानता था कि मैं विवाह के समय उपस्थित नहीं हो सकता था। मेरी बेटी ने आग्रह किया कि मैं उसके विवाह के बाद ही आपके पास जाऊँ लेकिन मैंने आपको दिये गये अपने वचन का पालन किया। विदाई के समय कहे गये उसके शब्दों ने पिछली रात मुझे नींद से जगा दिया।"

बाबा ने पूछा, "वे शब्द क्या थे ?"

"उसने कहा था, 'कोई भी पिता अपनी बेटी को उसकी शादी के दिन छोड़कर नहीं जाना चाहेगा, विशेष रूप से उस समय जबकि विवाह की तिथि निश्चित हो चुकी हो और कुछ ही दिन बाद विवाह हो। क्या आप कुछ दिन तक इन्तज़ार नहीं कर सकते थे ? आप जो कुछ भी करने का विचार कर रहे हैं, वह कोई भी पिता नहीं करेगा। अब मैं जानती हूँ कि आप मेरे पिता नहीं हैं।'"

उस समय दौलतसिंह को बाबा के प्रति किये गये अपने समर्पण की ही परवाह थी और उन्होंने अपनी पुत्री के शब्दों को मात्र बचकानी बात के रूप में लिया था। लेकिन विवाह की पूर्वसंध्या पर उसके शब्दों की याद ने उनके पैतृक संबंध पर प्रहार किया और उन्हें रोने के लिये मज़बूर कर दिया।

दौलतसिंह की बातें सुनने के बाद, बाबा ने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें बताया था कि सभी प्रकार की परिस्थितियों में प्रसन्नचित्त और उत्साहयुक्त रहना नई ज़िन्दगी की सबसे अधिक महत्वपूर्ण शर्त है, लेकिन मैंने तुम्हें रोते हुये पाया। अब तुम्हें वापस जाना होगा।"

यह अधिकारपूर्ण घोषणा सुनकर, दौलतसिंह फिर रोने लगे और बाबा ने प्रतिक्रिया व्यक्त की, "अब तुम फिर रो रहे हो। वापस जाओ। मैं नाराज़ होकर तुम्हें दूर नहीं भेज रहा हूँ। तुम तब भी मेरे पास होओगे। तुम मुझसे दूर रहकर; नई ज़िन्दगी का अनुकरण कर सकते हो। मैं तुम्हें अपनी पत्नी

और बच्चों के पास वापस घर जाने और उनके साथ रहने की आज्ञा देता हूँ, लेकिन तुमने प्रतिदिन सड़क पर अपने भोजन के लिये भीख माँगनी होगी। तुम्हें कफ़नी तथा पगड़ी पहननी होगी जो तुम इस समय पहने हो। ईमानदार रहना और नई ज़िन्दगी की शर्तों का पालन करना।"

इन शब्दों में बाबा द्वारा दी गई सान्त्वना के साथ, दौलतसिंह दल को छोड़कर चले गये और हम सब उनको जाते हुये देखकर बहुत उदास थे। दौलतसिंह कश्मीर छोड़ने के बाद हैदराबाद में रहने लगे थे। बाबा ने उन्हें घर वापस जाने के लिये आवश्यक धनराशि देने का प्रबंध किया।

दो वर्ष बीत गये। बाबा कुछ साथियों के साथ सतारा में थे। एक दिन सुबह उन्होंने थोड़ी दूरी पर सड़क के किनारे पुलिया पर बैठी हुई एक आकृति की ओर संकेत किया और एक साथी को उसके बारे में पूँछतांछ करने के लिये भेजा। ये दौलतसिंह थे और साथी को पहचानने के बाद उन्होंने तुरंत पूछा, "क्या बाबा यहीं कहीं हैं ?"

यह एक सुंदर पुनर्मिलन था जिसमें डाक्टर ने बेलग्राम का शिविर छोड़ने के बाद जो कुछ हुआ था, उसकी पूरी कहानी सुनाई। घर वापस जाने के बाद, पहले परिवार वालों ने उनका हार्दिक स्वागत किया लेकिन जैसे ही उन्होंने भीख में भोजन माँगकर और जमीन पर सोकर नई ज़िन्दगी बिताना शुरू किया, उनकी पत्नी ने, फिर बच्चों ने और अन्त में उनके सारे परिवार और दोस्तों ने भी उनके साथ लड़ना शुरू कर दिया। वे उन्हें गालियाँ देते थे, उनकी उपेक्षा करते थे और उन्हें शहर से बाहर भगाने की कोशिश करते थे। उन लोगों ने उन्हें इतना अधिक परेशान कर दिया कि क्लेश से बचने के लिये उन्होंने शहर छोड़ दिया। वह अभी भी इधर–उधर घूमते हुये भीख माँग रहे थे जब बाबा अचानक उनसे सतारा में मिले।

प्रकट रूप में बाबा खुश थे क्योंकि उन्होंने दौलतसिंह से कहा, "तुमने अक्षरशः नई ज़िन्दगी व्यतीत की और अब मैं तुम्हें इससे मुक्त करता हूँ और तुम्हें अपने परिवार के पास वापस जाने की आज्ञा देता हूँ। अपना डाक्टरी का काम शुरू करो और एक दिन मैं तुम्हारे घर आऊँगा।"

जब दौलतसिंह ने इस आज्ञा को सुना, वह अपने साथ परिवार वालों

के संभावित व्यवहार की कल्पना से डर गये। उन्होंने कहा, "बाबा, वे मुझे वहाँ नहीं रहने देंगे। उन्होंने मुझे वहाँ से निकाल दिया है।" लेकिन बाबा ने उनसे चिन्ता न करने और उनसे जैसा करने को कहा गया है, वैसा करने के लिये कहा। इसका परिणाम यह हुआ कि उनकी वापसी का परिवार में हार्दिक स्वागत हुआ और उन्होंने अपना डाक्टरी का काम फिर से शुरू कर दिया जिसमें उन्नति होने लगी और एक बार फिर उन्होंने अपने परिवार के मुखिया का स्थान ग्रहण कर लिया जो परिवार पहले की तरह उनको प्यार करता व सम्मान देता था।

कुछ वर्षों के बाद बाबा और उनके शिष्य हैदराबाद में थे और यह याद आने पर कि डा. दौलतसिंह उस शहर में रहते थे, बाबा ने मुझे उनके पास इस संदेश के साथ भेजा कि वह यहाँ उनके घर आने के अपने वचन को पूरा करने के लिये आये थे।

दौलतसिंह इतने अधिक प्रसन्न थे कि बाबा के पहुँचने पर वे दौड़ते हुये घर से बाहर गये और अत्यधिक प्रसन्नता के कारण आये हुये आँसुओं के साथ वे बाबा को घर के अंदर ले गये जहाँ वे बहुत देर तक, भक्ति में डूबे हुये, बाबा के चरणों में बैठे रहे। उन्होंने कुछ देर बातचीत की और बाबा उनके बच्चों से भी मिले।

अन्त में जब बाबा ने कहा कि उनके जाने का समय हो गया था, दौलतसिंह उनके साथ कार तक आये। अचानक दौलतसिंह को याद आया कि इस लम्बी भेंट के दौरान उन्होंने बाबा को एक कप चाय भी नहीं दी। अपनी इस ग़ल्ती से दुखी होकर उन्होंने बाबा से वापस घर चलने की प्रार्थना की लेकिन बाबा ने उत्तर दिया, "अब लेने को और क्या बचा है ? मेरे प्रति तुम्हारे प्रेम के द्वारा मुझे सबकुछ मिल गया है। मैं इससे संतुष्ट हूँ। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।" और इस प्रकार विदाई हुई।

बाबा से इस भेंट के बाद जल्दी ही, दौलतसिंह का देहान्त हो गया।

• • •

,d vfo'okl h 0;fDr dk :ikUrj

अपनी नई ज़िन्दगी की अवधि के दौरान, मेहेरबाबा केवल एक दिन के लिये (१६ अक्टूबर, १९५०) अपनी पुरानी ज़िन्दगी में वापस आये। इस दिन उन्होंने १५० पुरुषों को महाबलेश्वर आने के लिये निमंत्रित किया और एक बड़ी इमारत में, जो इसके पहले घुड़साल थी; "पहाड़ी पर उपदेश" (The Sermon on the Mount) नामक प्रवचन दिया। बाबा की आज्ञा थी कि इस मीटिंग में कोई भी व्यक्ति उनके सामने माथा न टेके और न ही उनके प्रति भक्ति दिखाये।

बाबा निश्चित समय पर आये। क्योंकि किसी भी व्यक्ति को बाहरी रूप से भक्ति का कोई भाव प्रकट नहीं करना था, इसलिये वहाँ पर मौजूद सभी लोग चुपचाप खड़े हो गये। तब बाबा ने पूछा कि जिन लोगों को बुलाया गया था, क्या वे सब वहाँ पर उपस्थित थे ? यह जानने के बाद कि सब लोग आ गये थे, उन्होंने अपने शिष्य विष्णु से कहा कि वह जाकर दरवाज़ा बंद कर दे और किसी को भी अंदर न आने दे।

जैसे ही विष्णु दरवाजे तक गया, उसने किसी को धीरे–धीरे इमारत की ओर आते देखा। यह बाबा की नई ज़िन्दगी के साथी गुस्ताद जी थे। लेकिन जिस समय विष्णु गुस्ताद जी के आने की प्रतीक्षा कर रहा था, दो बिन बुलाये आदमी जल्दी से दरवाजे से इमारत में आये और बाबा को प्रणाम किया।

बाबा ने तुरंत उन दोनों व्यक्तियों के सामने जमीन पर लेटकर उन्हें दण्डवत् प्रणाम किया और उन्होंने फिर से बाबा को प्रणाम किया। इस समय मैं बीच में आ गया और उन्हें इस सभा के लिये बाबा के विशेष निर्देशों को बताया। इस पर उन व्यक्तियों ने क्षमा माँगी और इस बात का एहसास किया कि वे जबर्दस्ती घुस आये थे। जब उनसे जाने के लिये कहा गया, वे चले गये।

तब बाबा ने विष्णु को बुलाया और कठोरतापूर्वक पूछा, "मैंने तुमसे दरवाज़ा बंद करने को कहा था। तुमने मेरी आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया ?"

विष्णु ने उत्तर दिया, "बाबा, मैं गुस्ताद जी के अंदर आने की प्रतीक्षा कर रहा था।"

बाबा ने कहा, "मेरी आज्ञा के सामने गुस्ताद जी क्या हैं ! अगर तुम ईश्वर को भी अंदर आने के लिये आते देखते, तब भी तुम्हें दरवाज़ा बंद कर लेना चाहिये था। मैंने कितनी बार आज्ञाकारिता पर ज़ोर दिया है, लेकिन फिर भी तुम इसे समझ नहीं पाते हो।"

बाबा ने आगे कहा, "जब मैं तुमसे कुछ करने के लिये कहता हूँ, तुम्हें उसे तुरंत करना चाहिये।"

ऐसा कहकर बाबा ने एक शिष्य से उन्हें (बाबा को) चाँटा मारने के लिये कहा लेकिन उसने धीरे से चाँटा मारा जिससे बाबा प्रसन्न नहीं हुये और इसलिये उन्होंने एक दूसरे व्यक्ति से उन्हें चाँटा मारने के लिये कहा जिसने उन्हें बहुत ज़ोर से चाँटा मारा। बाबा ने इस दूसरे व्यक्ति की तारीफ़ की और बताया कि बिना किसी संशय के आज्ञा पालन करने का क्या अर्थ था।

ऐसा लगता था कि यह सब नाटक किसी अन्य व्यक्ति की भलाई के लिये किया जा रहा था। श्रोताओं में एक व्यक्ति ऐसा था जो मेहेरबाबा को पास से परखने और उन्हें ढोंगी तथा ठग सिद्ध करने के लिये आया था। वह अंग्रेज़ शासन के विरुद्ध षडयंत्र करने वाला एक विद्रोही था और भारत की स्वतंत्रता के लिये छिपकर कार्य करता था। अपने पलायन के दौरान, उसने नेताओं को देश के लिये अपनी जान न्योछावर करने के लिये कहते सुना था, लेकिन वे स्वयं खतरे से दूर रहते थे।

अब अचानक उसने अपने आपको एक ऐसे नेता की उपस्थिति में पाया जिसने आज्ञाकारिता के सही अर्थ की व्याख्या करने के लिये, अपने शिष्यों की उपस्थिति में अपने गाल पर चाँटा लगवाकर अपना अपमान करवाया था। वह व्यक्ति बहुत प्रभावित हुआ।

उसने जो कुछ देखा, उससे उसे पूरा विश्वास हो गया कि वे वास्तव में सच्चे स्वामी युगावतार थे और अपने विश्वास के परिणामस्वरूप, उसने सब लोगों के बीच अण्डरवियर के अलावा अपने सारे कपड़े उतार दिये और एक सांकेतिक चिन्ह के रूप में वहाँ पर बिल्कुल नंगा खड़ा हो गया जिसका अर्थ था कि वह अपना सबकुछ, तन, मन और आत्मा–प्रियतम को पूर्ण रूप से समर्पित करना चाहता था।

• • •

ejyh vkj iknjh dh dgkuh

मुरली नाम का मेहेरबाबा का एक शिष्य था जो अंग्रेज़ी सीखना चाहता था ताकि वह बाबा की बातें अच्छी तरह समझ सके क्योंकि बाबा अक्सर अंग्रेज़ी में बात करते थे। समय–समय पर वह मुझसे कहता, "एरच, तुम मुझे अंग्रेज़ी कब सिखाओगे ?" इसलिये मैं कभी–कभी उसे अंग्रेज़ी के कुछ शब्द सिखा देता था।

नई ज़िन्दगी में मुरली भी हमारे साथ था और वह अब भी मुझसे पूछता था, "तुम मुझे अंग्रेज़ी कब सिखा रहे हो ?" एक दिन समाचार पत्र में एक विज्ञापन निकला कि कोई भी व्यक्ति पत्र–व्यवहार द्वारा ईसामसीह के जीवन के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकता था और जब मैंने मुरली को इस बारे में बताया, वह बहुत उत्साहित हो गया।

मुरली की अंग्रेज़ी सीखने की यह इच्छा हमारे मेहेराबाद लौटने के बाद और अधिक बढ़ गई। इसलिये इसी इच्छा ने उसे इस कोर्स में प्रवेश लेने के लिये उत्साहित किया और वह दो या तीन वर्ष तक इस कोर्स में लगा रहा।

इस अवधि के दौरान इंजील–संबंधी (बाइबिल–संबंधी) प्रश्नों के उत्तर के लिये वह मेरे पास आता था और मैं उसे बता देता था। इस प्रकार उसका अंग्रेज़ी का ज्ञान बढ़ता गया और उसने डाक द्वारा परीक्षा दी। इसके बाद हम इस कोर्स के बारे में भूल गये और महाबलेश्वर चले गये जहाँ बाबा एकान्तवास में थे।

एक दिन मुरली मेरे पास हाँफता हुआ आया और मुझसे बोला कि मैं एक कैथोलिक पादरी से बातचीत करने में उसकी मदद करूँ जो उससे मिलने आया था। संयोगवश, उस समय मैं नंगे बदन, अण्डरवियर पहने हुये, नहाने के लिये पानी गरम करने के लिये अंगीठी सुलगा रहा था। इसलिये मेरे हाथ काले थे। मैं जैसा था, वैसा ही मुरली के साथ पादरी के पास गया और उससे आने का कारण पूछा।

उसने कहा कि मुरली ने इंजील के पत्र–व्यवहार द्वारा जो कोर्स किया था, उसमें पहला पुरस्कार पाया है। इसलिये वह उसे इंजील की एक प्रति भेंट करने के लिये व्यक्तिगत रूप से उससे मिलने आया था।

हम सबने मुस्कराकर पुरस्कार लिया और मुरली को बधाई दी। लेकिन जाने से पहले पादरी ने मुझसे पूछा, "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो ?"

मैंने कहा, "मैं एक दास हूँ।"

पादरी ने आश्चर्य से पूछा, "क्या ! दास ?"

मैंने कहा, "हाँ, मैं अपने स्वामी का दास हूँ।"

"तुम्हारा स्वामी कौन है ?"

"मेरे स्वामी मेहेरबाबा हैं।"

उसने पूरी तरह भ्रमित होते हुये पूछा, "क्या वह दास रखते हैं ? क्या यहाँ दासता है ?"

मैंने उत्तर दिया, "फ़ादर, मैं नहीं जानता कि मैं इसे किस तरह व्यक्त करूँ; लेकिन हमने दास होने के लिये अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग किया है।"

उसने पूछा, "मेहेरबाबा कौन हैं ?"

मैंने कहा, "जिस प्रकार आप ईसामसीह को अपना स्वामी मानते हैं, उसी प्रकार हम मेहेरबाबा को मानते हैं।"

पादरी गरजा, "यह तो पाखण्ड है।"

मैंने पूछा, "यह पाखण्ड क्यों है। क्या ईसामसीह ने यह नहीं कहा है कि वह फिर से आयेंगे। क्या उन्होंने हमें वचन नहीं दिया कि वह वापस आयेंगे। इसमें पाखण्ड क्या है ?"

"क्या तुम्हारे कहने का मतलब है कि मेहेरबाबा के रूप में ईसामसीह फिर से आये हैं ?" उसने कहा।

"जी हाँ, मैं आपको यही बता रहा हूँ," मैंने कहा।

"मैं यह नहीं सुन सकता," उसने प्रतिवाद किया

मैंने कहा, "ठीक है, आपने पूछा तो मैंने बता दिया।"

उसने कहा, "ईसामसीह ने संकेत किया था कि वह बादलों के बीच से दुन्दुभी के उद्घोष के साथ आयेंगे।"

"फ़ादर, क्या आप सचमुच विश्वास करते हैं कि वह बादलों से आयेंगे। वह उनके आगमन का सांकेतिक वर्णन था।"

"हमारे विश्वास का आधार–समान है", मैं कहता रहा, "हम दोनों ईसामसीह से प्रेम करते हैं और मैं कहता हूँ कि ईसामसीह मेहेरबाबा के रूप में फिर से आये हैं क्योंकि मैं उनके साथ कई वर्षों से रह रहा हूँ और मुझे ऐसा विश्वास हैं। बिना उनसे भेंट किये आप यह कैसे कह सकते हैं कि वह मेहेरबाबा के रूप में ईसामसीह नहीं हैं ?"

पादरी के पास इसका कोई उत्तर नहीं था और उसने मेहेरबाबा के बारे में और अधिक जानने की इच्छा प्रकट की। अन्त में बाबा की एक किताब लेकर वह नम्रता के साथ चला गया।

• • •

egjckck dh x<rk

एक बार जब हम महाबलेश्वर में थे, मेहेरबाबा ने अपने शिष्य छगन मास्टर से अपने कार्य के लिये एक "आदर्श लड़का" ढूँढ़कर लाने के लिये कहा और उन्होंने उस लड़के के कुछ गुणों का वर्णन भी किया।

छगन उस लड़के को ढूँढ़ने के लिये बस से रवाना हुआ और पहले पड़ाव, वाई में, वह एक छोटे होटल में गया। उसने चाय का आर्डर दिया जिसे लेकर एक अठारह साल का लड़का आया। लड़के को देखते ही छगन को विश्वास हो गया कि यह लड़का बिल्कुल वैसा ही है जैसा बाबा चाहते हैं। उसने होटल के मालिक से उस लड़के को अपने साथ ले जाने की अनुमति माँगी। इससे गुस्सा होकर मालिक ने छगन को उठाकर बाहर फिंकवा दिया।

तब छगन होटल के बाहर एक पान बेंचने वाले से बिना किसी डर के बात करने लगा। उसने पान वाले से पूछा कि लड़के को अपने साथ ले जाने के लिये वह होटल के मालिक को किस तरह तैयार करे। पान वाले ने बताया कि मालिक अपने भूतपूर्व स्कूल मास्टर का बहुत सम्मान करता था और हमेशा उसी की सलाह के अनुसार काम करता था।

स्कूल मास्टर का पता मालूम करने के बाद, छगन उसके पास गया और बाबा का नाम लिये बिना, अपने उद्देश्य के बारे में कहा कि उसने उस लड़के में एक उज्ज्वल भविष्य की झलक देखी है। वह चाहता है कि उस लड़के की मुक्ति के लिये स्कूल मास्टर उसकी मदद करें।

अगले दिन सुबह वे दोनों होटल में गये और थोड़ी देर तक समझाने बुझाने के बाद, उस लड़के को छगन के साथ जाने की अनुमति मिल गई। बाबा ने उस लड़के को पसंद किया लेकिन उसके पैर में दो दाने देखकर उन्होंने उसको होम्योपैथिक इलाज के लिये मेहेराबाद में पादरी (एक शिष्य) के पास ले जाने का निर्देश दिया, हालांकि छगन ने, जो आयुर्वेदिक इलाज में निपुण थे, महाबलेश्वर में ही उस लड़के का इलाज करने की इच्छा प्रगट की। बाबा ने छगन से कहा कि वह रास्ते में पूना में रूककर पाटिल (एक शिष्य) को उनका एक संदेश भी दे दे।

दूसरे दिन छगन पूना पहुँचा और रेलवे स्टेशन से पाटिल के घर के लिये ताँगा लिया। जिस समय वह घर के बाहर से पाटिल को पुकार रहा था, पास में स्थित कुयें से पानी खींचने वाली औरतों में से एक ने, ताँगे में लड़के को देखा और एक तेज चीख के साथ वह छगन के पास से होती हुई ताँगे की ओर दौड़ी और रोते हुये उसने लड़के को अपनी बाँहों में भर लिया और बोली, "मेरे कई सालों से खोये हुये बेटे ! तुम अब तक कहाँ थे ? क्या तुम्हारा अपहरण कर लिया गया था ? तुम्हारे साथ क्या हुआ था ?"

निःसंदेह, छगन चकित था और अपनी इस नाजुक स्थिति के लिये तैयार नहीं था। उसने पाटिल को जल्दी आने के लिये आवाज़ दी और जल्दी–जल्दी उसे अपने कार्य के बारे में बताते हुये कहा कि परिस्थितियों ने कैसा रूप धारण कर लिया था। इस समय तक भीड़ जमा हो गई थी। छगन ने इस कठिन स्थिति पर सावधानीपूर्वक विचार करते हुये, ताकि उस पर कहीं लड़के के अपहरण का दोष न लगाया जाये, पाटिल के साथ विचार विमर्श किया और उस औरत का पता लेने के बाद, लड़के को उसके साथ जाने देने का निश्चय किया।

तब दोनों शिष्यों ने शीघ्र ही एक तार लिखा जिसे छगन ने बाबा को भेज दिया। इसमें लिखा था, "वह एक खोया हुआ लड़का था और जब मैं

पाटिल को आपका संदेश दे रहा था, माँ अपने बच्चे को ले गई। कृपया आगे संदेश भेजिये।"

बाबा द्वारा दिये गये तार में लिखा था, "मेरा कार्य हो गया। मैं बहुत प्रसन्न हूँ। बच्चा अपनी माँ के पास पहुँच गया।"

माँ की बेचैनी बहुत तीव्र थी और उसने इतने सच्चे हृदय से प्रार्थना की थी कि प्रभु ने उसकी पुकार सुन ली और उन्होंने बच्चे का माँ से मिलन कराकर उसकी पुकार का उत्तर दिया।

उस दयालु पिता की कार्य करने की ऐसी ही गूढ़ रीति है।

• • •

r= e= ds fy;s dksbZ LFkku ugha

एक नवयुवक तांत्रिक विद्या जानता था और उसका एक तांत्रिक गुरु भी था। मेहेरबाबा को अवतार स्वीकार कर लेने के बाद, उसने अपना नाम रामदास से बदलकर मेहेरदास (मेहेर का सेवक) रख लिया और अन्त में बाबा ने उसे मंडली के साथ रहने की अनुमति दे दी।

जैसे–जैसे समय बीतता गया, बाबा अक्सर उसे एक जगह से दूसरी जगह पर भेजते थे और क्योंकि मेहेरदास का स्वर अत्यंत मधुर था, वह प्रभु की स्तुति में भजन गाता था और वहाँ एकत्रित लोगों को बाबा का प्रेम संदेश देता था।

अपने भ्रमण के दौरान एक दिन, वह एक ऐसे गाँव में पहुँचा जहाँ किसी ने भी मेहेरबाबा का नाम नहीं सुना था, इसलिये उसने कुछ लोगों को अवतार के अवतरण के बारे में बताया। शीघ्र ही उन लोगों में उत्सुकता जाग गई और उन्होंने प्रियतम के बारे में और अधिक जानने की इच्छा प्रकट की।

अतः मेहेरदास ने कहा कि सभी लोग एक जगह इकट्ठा हो जायें और गाँव के मुखिया ने एक प्रोग्राम का प्रबंध किया। भजन गायन के बीच–बीच में बाबा के संदेश देने का प्रोग्राम रात तक चलता रहा। गाने के बीच में औरतों का रोना सुनाई पड़ा। शीघ्र ही एक आदमी दौड़ता हुआ आया और उसने बताया कि मुखिया का इकलौता बेटा मर गया था। ऐसा

प्रतीत होता था कि लड़का पहले से बीमार था और ईश्वर से कृपा करने की प्रार्थना करने के लिये, वे लोग इस आशा से प्रोग्राम कराने के लिये उत्सुक थे ताकि बाबा के आशीर्वाद से लड़का ठीक हो जाये।

मेहेरदास इस स्थिति में पूरी तरह से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया और जब उसने इस पर विचार किया; उसने अनुभव किया कि गाँव के लोगों पर बाबा के बारे में बुरा असर पड़ेगा। इसलिये क्षणिक आवेश में उसने कहा कि उस लड़के को लाकर उसकी गोद में रख दिया जाय और उसने भजन गाना ज़ारी रखा। उसने लोगों से उसके साथ गाने के लिये कहा। वह जितनी अधिक गहराई से बाबा की याद कर सकता था, उसने की। उसने अपने तांत्रिक गुरु का भी ध्यान किया और साथ ही उसने उन तांत्रिक क्रियाओं की भी याद की जिनमें वह कभी व्यस्त रहता था।

अचानक बच्चा जीवित होकर अपने हाथ पैर हिलाने लगा और भीड़ ने मेहेरबाबा की जय–जयकार की। मेहेरदास का अत्यंत प्रसन्न होना स्वाभाविक था और सुबह उसने बाबा को एक तार भेजा जिसमें इस घटना का वर्णन था।

जब मैंने बाबा को तार पढ़कर सुनाया, वह बहुत नाराज़ लगे क्योंकि समय–समय पर उन्होंने हमें तांत्रिक अभ्यासों के प्रति चेतावनी दी थी। तार के उत्तर में, मेहेरबाबा ने मेहेरदास को निम्नलिखित संदेश भेजा, “मैं उस समय बहुत खुश होता अगर बच्चे को फिर से जिंदा करने के बजाय तुम स्वयं मर गये होते।”

बाबा हमेशा यह चाहते थे कि हम इस प्रकार के कार्यों से दूर रहें। कष्ट के समय भी, हमें उसके प्रेम में कष्ट भोगना चाहिये, क्योंकि केवल कष्ट ही हमें इस सीमा तक निराश कर सकता है कि हम ईश्वर की ओर उन्मुख हों।

• • •

Ino ân; e

डा. अब्दुल गनी मुन्सिफ़ मेहेरबाबा के पुराने शिष्यों में से एक ही नहीं थे बल्कि बाबा और वे स्कूल के समय के दोस्त थे और उनमें आपस में

बहुत प्रेम था। विद्यार्थी जीवन में उन्होंने एक दूसरे के साथ हँसी मज़ाक किया था और साथ–साथ खेले थे और बाद में जब गनी मेहेरबाबा के शिष्य हो गये, तब भी यह घनिष्ठ दोस्ती रही।

इसीलिये गनी को बाबा से स्वतंत्रतापूर्वक बात करने का सौभाग्य प्राप्त था। समय–समय पर वे और बाबा आपस में व्यंग्य करते थे। फिर भी, गनी बाबा का प्रभु की तरह सम्मान करते थे और वे यह अच्छी तरह जानते थे कि वे इस घनिष्ठता को किस सीमा तक रख सकते हैं।

फिर भी, एक दिन बातचीत के दौरान, गनी ने किसी तरह अपनी सीमा का उल्लंघन किया और उनसे बाबा के प्रति कुछ अशिष्टता हो गई होगी जिससे उनका (बाबा) भाव अचानक बदल गया।

बाबा ने गनी को आज्ञा दी, “इस कमरे से तुरंत निकल जाओ। मैं तुम्हारा चेहरा फिर नहीं देखना चाहता।”

गनी ने तुरंत आज्ञा का पालन किया और वे अपना थोड़ा सा सामान समेटने के लिये चले गये। थोड़ी देर बाद, वह कपड़ों का अपना छोटा सा बंडल लेकर वापस आये। बाबा के सामने खड़े होकर उन्होंने कहा, “अब मैं जा रहा हूँ।”

बाबा ने गुस्से से दोहराया, “ठीक है, तुरंत चले जाओ। मैं तुम्हारा चेहरा फिर कभी नहीं देखना चाहता।”

गनी ने उत्तर दिया, “मैं दूर चला जाऊँगा और आप मेरा चेहरा फिर कभी नहीं देखेंगे। लेकिन मैं आपसे यह कहने का साहस कर रहा हूँ कि आप मेरे हृदय से चले जायें जहाँ आप हमेशा रहते हैं।”

बाबा इन शब्दों से इतने अधिक द्रवित हो गये कि उनका गुस्सा दूर हो गया और उन्होंने गनी को क्षमा करके प्रेमपूर्वक उनका आलिंगन किया।

• • •

Mk- n'ke[k dh xf.kr

यह कहानी डा. देशमुख की है जो, सन् १९३२ में लंदन में मेहेरबाबा से मिलने के बाद, उनसे प्रभावित होकर भारत वापस आये। भारत में वे नागपुर विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख हो गये।

बाबा के प्रति उनकी भक्ति के कारण, विश्वविद्यालय में उनकी एक अजीब आदत बन गई थी। अपने भाषणों के दौरान, कभी–कभी वह जो कुछ भी कह रहे होते थे, उसके बीच में ही रूक जाते थे और अपने सामने रखी हुई किताब को खोलते थे। तब उसमें छिपाकर रखी हुई चीज़ को झाँककर देखने के बाद वह मुस्कराते थे और अपना भाषण फिर से शुरू करते थे।

अपने प्रोफ़ेसर का यह अजीब व्यवहार विद्यार्थियों से छिप न सका जिन्हें पहले यह शक हुआ कि डा. देशमुख किसी अंग्रेज़ लड़की से प्रेम करने लगे थे जिसकी फोटो देखने से वह कक्षा के दौरान भी स्वयं को रोक नहीं पाते थे। अतः उनके इस विचित्र कार्य के प्रति अपनी उत्सुकता को रोक न पाने के कारण, वे उनसे उस वस्तु को दिखाने का आग्रह करने लगे जिससे वे प्रेम करते थे, और जब डा. देशमुख ने उन्हें अपने प्रियतम बाबा की फ़ोटो दिखाई, उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ और वे बाबा के बारे में और अधिक जानने का आग्रह करने लगे।

मेहेरबाबा के प्रति इस भक्ति के कारण ही, जब भी विश्वविद्यालय में छुट्टी होती थी, डा. देशमुख बाबा से मिलने के लिये मेहेराबाद जाते थे। लेकिन उनकी शैक्षिक और धार्मिक मानसिकता कुछ भी रही हो, बाबा के प्रति आदर के बावजूद, डा. देशमुख शीघ्र ही यह विचार करने लगे कि क्योंकि वे ब्राह्मण थे इसलिये उनके लिये यह अधिक उचित होगा कि वे ब्राह्मण सद्‌गुरु के ही शिष्य बनें। निःसंदेह, उनके मन में उपासनी महाराज के अलावा दूसरा कोई सद्‌गुरु नहीं था जिनका अतिरिक्त गुण यह भी था कि वे ब्राह्मण होने के साथ साथ मेहेरबाबा के गुरु भी थे। यह तर्क डा. देशमुख को बहुत ठीक लगा।

डा. देशमुख के मन में इस विचार के आते ही, उन्होंने अपनी अगली छुट्टियाँ साकोरी में बिताने का निश्चय किया जहाँ उपासनी महाराज रहते थे। उन्होंने फल और हार खरीदे और उस समय का इन्तज़ार करने लगे जब महाराज अपनी झोपड़ी से निकलकर अपने भक्तों को दर्शन देने जाते। जब डा. देशमुख महाराज की ओर बढ़े, उस समय उनका जो स्वागत हुआ वह अप्रत्याशित था, क्योंकि महाराज ने उनको डाँटना शुरू कर दिया। उन्होंने एक छड़ी लेकर, उन्हें ठग कहते हुये, दूर तक खदेड़ दिया।

डा. देशमुख अत्यंत निराश होकर घर जाने लगे लेकिन अगले ही क्षण उन्होंने मेहेराबाद जाने का निश्चय किया। उनके आने पर, मेहेरबाबा ने प्रेमपूर्वक उनका स्वागत किया। उन्होंने (बाबा) डा. देशमुख से देर से आने का कारण पूछा। उदास प्रोफ़ेसर ने बहुत से झूठे उत्तर दिये लेकिन अन्त में उन्होंने अपनी ग़ल्ती मान ली और अपने साकोरी जाने का कारण और वहाँ जो कुछ हुआ था, उसकी पूरी कहानी बताई।

बाबा ने उन्हें बताया, ''तुम चाहे महाराज के साथ हो अथवा मेरे साथ, यह एक ही बात है। लेकिन अगर तुम मुझे अपने मन की बात बता देते, तो मैं स्वयं तुम्हें महाराज के पास भेज देता।''

डा. देशमुख अत्यंत शर्मिन्दा थे और उन्होंने क़सम खाई कि वे बाबा से दूर कभी नहीं भटकेंगे। इस पर बाबा ने उनसे कहा, ''अब मैं चाहता हूँ कि तुम महाराज के पास जाओ।''

डा. देशमुख ने बाबा से अभी अभी यह वादा किया था कि वे बाबा से दूर फिर कभी नहीं जायेंगे, इसलिये उन्होंने इस आज्ञा का पालन करने से बचने की कोशिश की लेकिन उन्होंने जल्दी ही अपने आपको सँभाल लिया और बाबा की आज्ञा का पालन किया।

साकोरी पहुँचने पर, उन्होंने एक बार फिर फल और फूल लिये और वे महाराज के पास पहुँचे। इस बार महाराज का भाव बिल्कुल बदला हुआ था। उन्होंने डा. देशमुख का बड़े अपनेपन के साथ स्वागत किया, भेंटें स्वीकार कीं और उन्होंने (डा. देशमुख) ने जो ग़ल्ती की थी उसकी पूरी कहानी सुनी।

महाराज ने समझाते हुए पूछा, ''तब तुम्हें ठग कह कर क्या मैंने ग़ल्ती की थी ?''

इस अनुभव से उचित शिक्षा प्राप्त करके, डा. देशमुख अन्तिम समय तक मेहेरबाबा का दामन दृढ़तापूर्वक पकड़े रहे। कुछ साल पहले उनकी मृत्यु हो गई। अपने जीवन में उन्होंने बाबा के लिये बहुत अधिक कार्य किया और कई तरह से उनकी सेवा की।

हम साधारण मनुष्य सच्चे सद्‌गुरुओं की रीतियों को, जो आध्यात्मिक पथ के प्रदर्शक हैं, कभी भी समझ नहीं पायेंगे। यही कारण है कि

मेहेरबाबा अक्सर अपने प्रेमियों को चेतावनी देते रहते थे कि वे इधर उधर न भटकें या उनसे दूर न जायें और उन मध्यस्थों के प्रति आकर्षण के द्वारा स्वयं को विचलित न होने दें जो उनका उत्तराधिकारी होने का दावा करते हैं, अथवा यह घोषणा करते हैं कि वे चेतना की ऊँची भूमिका पर हैं।

• • •

सन 1952 में भारत में सार्वजनिक दर्शन

कई वर्षों तक मेहेरबाबा ने किसी को भी आसानी से अपने पास नहीं आने दिया और उन्होंने बहुत कम अवसरों पर सार्वजनिक अथवा व्यक्तिगत दर्शन दिया। फिर भी, अगस्त १९५२ में पश्चिम से भारत लौटने पर उन्होंने, अपने प्रेमियों की प्रार्थनाओं के उत्तर में वचन दिया कि वे १८ नवम्बर से उत्तर, मध्य और दक्षिण भारत में कुछ चुनी हुई जगहों में ३५ दिनों के लिये सार्वजनिक दर्शन देने के लिये जायेंगे।

जिस क्षण से प्रेमियों को यह समाचार मिला, उन्होंने अपने प्रियतम के स्वागत और आराम के लिये हर संभव कोशिश की। उन्होंने उनके ठहरने के कमरे के बाहर पायदान से लेकर, हमीरपुर जाने के रास्ते में बाबा और उनके दल को घुटने तक गहरे पानी से होकर जाने से बचाने के लिये यमुना नदी पर अस्थायी पुल बनाने के लिये दिन–रात कड़ी मेहनत की। बाबा की यात्रा को आसान बनाने के लिये यह प्रेमपूर्ण मेहनत हर जगह की गई। प्रत्येक यात्रा के अन्त में, जीवन के हर स्तर और सभी धर्मों तथा जातियों के हजारों लोग, जिनमें से कुछ लोग मीलों की दूरी से पैदल आये थे, ''अवतार मेहेरबाबा की जय !'' की गगनभेदी जय जयकार के बीच बाबा का स्वागत करने के लिये इकट्ठा होते थे।

एक प्रेमी २३ मील की दूरी से पूरे रास्ते जमीन पर लेट लेट कर प्रणाम करता हुआ आया। उसने रास्ते में कुछ नहीं खाया और मौन रहा। बाबा से उसके मिलन का दृश्य देखने लायक था, और जब उसने लोगों की भारी भीड़ के बीच प्रियतम बाबा की आरती की, सभी लोग उसके प्रेम के आनंद से और बाबा के प्रसन्न और देदीप्यमान प्रत्युत्तर से, जब उन्होंने

उस व्यक्ति को अत्यंत आत्मीयतापूर्वक आलिंगन में लिया, अत्यंत प्रभावित हुये।

एक दूसरा व्यक्ति जो पाँच वर्ष से इस अवसर की प्रतीक्षा करता रहा था, बाबा से मिलने के लिये १२ मील तक दौड़ता हुआ आया। लेकिन वहाँ पहुँचने पर वह यह जानकर बहुत निराश हुआ कि दर्शन देने के बाद बाबा वहाँ से जा चुके थे। फिर भी, उस व्यक्ति ने बिना किसी झिझक के, बाबा की कार तक पहुँचने की आशा न होने के बावजूद, फिर दौड़ना शुरू कर दिया और, बाबा की सर्वज्ञता पर विश्वास रखते हुये, रात होने की परवाह न करते हुये, दौड़ना ज़ारी रखा। लेकिन उसका बाबा तक पहुँचने का विचार भले ही पागलपन से भरा लगता हो, उसके प्रेम और विश्वास ने असंभव को संभव कर दिया। क्योंकि बारहवें मील पर बाबा ने अचानक ड्राइवर से कार की रफ़्तार कम करने और फिर कार रोक देने को कहा। थोड़ी ही देर बाद, वह व्यक्ति हाथों को ऊपर उठाये हुये; अंधकार से प्रकट हुआ और बुरी तरह हाँफता हुआ कार तक पहुँचा। शान्त होने पर, उसने जल्दी जल्दी कुछ वाक्यों में बाबा के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया और सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ बाबा ने प्रसन्न प्रेमी को अपना आशीर्वाद दिया और उसे अपने अच्छे भाग्य के प्रति अत्यंत प्रसन्न अवस्था में छोड़कर चल दिये। जब उस व्यक्ति ने कार को जाते हुये देखा, वह बाबा से बिछड़ने के विचार से दुखी होकर, कार के बगल में तब तक दौड़ता रहा जब तक बाबा ने उसे अपने गाँव लौट जाने की आज्ञा नहीं दे दी।

बाबा ने अछूत जाति के एक दूसरे आदमी से कहा, ''तुम्हारा प्रेम सबसे कीमती भेंट है जो तुम मुझे दे सकते हो।'' अपनी बीमारी के कारण वह दर्शन–स्थल पर बाबा के दर्शन करने नहीं जा सका था जिसके निर्माण के लिये उसने प्रेमपूर्वक कठिन मेहनत की थी। जब बाबा उसके कष्टपूर्ण निवास स्थान पर आये और सँकरी, टूटी–फूटी चारपाई पर बैठकर उसे प्यार से सहलाने लगे, उसे अपनी गरीबी पर शर्म आई क्योंकि उसके पास बाबा को भेंट करने के लिये कोई पारम्परिक उपहार नहीं था।

एक बूढ़े पति–पत्नी का प्रेम प्रदर्शन कभी भी न भुलाने लायक था। गरीब पति के पास जो कुछ था, वह उसने बाबा का स्वागत करने के लिये, अपनी झोपड़ी के सामने एक छोटा सा चबूतरा बनाने में खर्च कर दिया

था। यद्यपि उनमें बाबा को अपने घर आने का निमंत्रण देने की हिम्मत नहीं थी फिर भी उन्हें विश्वास था कि उनका प्रेम बाबा को उनकी छोटी सी झोपड़ी में खींच लायेगा। दर्शन–प्रोग्राम खत्म हुआ और बाबा उनकी झोपड़ी में नहीं आये, लेकिन अगले दिन सुबह, जब बाबा गाँव से जा रहे थे, उन्होंने एक आम रास्ते की बजाय दूसरा रास्ता चुना जिससे उनकी कार बूढ़े पति–पत्नी के घर पहुँच गई। बाबा उनके घर गये और उनका आलिंगन किया। तब बाबा उस नये बनाये गये चबूतरे पर बैठे और उनको हार पहनाया गया। बाद में इस महत्त्वपूर्ण घटना को याद रखने के लिये गाँव के लोगों ने इस जगह पर एक छोटा सा मंदिर बना दिया।

पूरी यात्रा के दौरान, भक्ति के सहज प्रदर्शन की ऐसी घटनायें एक दो नहीं थीं बल्कि जो भी व्यक्ति बाबा के सम्पर्क में आया, उसकी ओर से प्रेम की ऐसी तत्काल आदान–प्रदान की घटनायें रोज़ और हर घंटे होती रहती थीं। वे सब लोग अपने हृदयों की गहराई में पहुँच गये और अपने प्रेम का झरना पूरी तरह से खोल दिया जो इतना अधिक भर गया था जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था।

सभी उम्र के बच्चों का अपने बड़े बूढ़ों के साथ बाबा की कार के पीछे दौड़ने का दृश्य देखने लायक था। कभी कभी यह भीड़ बहुत अधिक हो जाती थी और मीलों की दूरी तक फैल जाती थी। वे लोग ऐसा इसलिये करते थे ताकि बाबा की कार इस विशेष अवसर के लिये गाँव वालों द्वारा बनाई गई अस्थायी सड़कों से होती हुई 'मुख्य सड़क तक' आसानी से पहुँच जाये। बाबा कार के पीछे दौड़ती भीड़ को, साथ ही उन लोगों को भी जो रास्ता बताने के लिए आगे–आगे जाते थे, साथ आने से रोकने की कोशिश करते थे, लेकिन उनकी सुरक्षा के लिये उनके (बाबा) साथ आने के आनंद से भीड़ को वंचित नहीं किया जा सका और बाबा को उनके इस प्रेम के प्रदर्शन के अधीन होना पड़ा।

कोई भी व्यक्ति यह सरलतापूर्वक देख सकता था कि जहाँ कहीं भी यह दल गया, हर जिले, शहर और गाँव के लोगों के बीच, अपने प्रियतम बाबा के प्रति उनके असीमित प्रेम ने उन्हें इस तरह एक कर दिया था जैसे कि केवल ईश्वर के प्रति प्रेम ही कर सकता है। लोग स्वयं को और अपने दैनिक कार्यों को भूल गये क्योंकि उनका पूरा ध्यान बाबा पर इतनी

अधिक एकाग्रता के साथ केन्द्रित था कि इसके परिणाम स्वरूप बाबा के आगमन के दिन सभी स्कूल, कालेज और व्यापार बंद हो जाते थे। यह ऐसा अपूर्व दृश्य था कि उन लोगों के पास जिन्हें इसे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, इस दृश्य की हृदयस्पर्शी और चिरन्तन यादें रह गईं।

एक गाँव में बाबा से एक स्थानीय अनाथालय में चलने के लिये कहा गया और उन्होंने इस शर्त पर जाना स्वीकार किया कि वे बच्चों के पैर धोयेंगे और उनके पैरों पर माथा रखकर उन्हें नमन करेंगे। छः या सात लड़के बाबा के सामने लाये गये। बाबा ने उन्हें समझाया कि उनका शांत रहना बहुत महत्त्वपूर्ण है और जब बाबा उनका दर्शन लें तो वे (लड़के) हिलें नहीं। फिर भी, पहला लड़का चारों ओर खड़ी हुई भीड़ के बीच अपनी स्थिति की विचित्रता से डर गया और पीछे हट गया। इस पर बाबा ने घोषणा की कि उनके कार्य की हानि हो गई थी और उन्होंने दूसरे गाँवों में अपना जाना स्थगित कर दिया। इस पर लोगों ने उनसे प्रार्थना की कि वे अपने निर्णय को बदल दें। तब बाबा ने कहा कि वे तभी दया करेंगे अगर अगले दिन सुबह दूसरे गाँव में चौदह वर्ष के चौदह अनाथ बच्चे उनके पास लाये जायें।

जब बाबा अपने रहने के लिये बनाये गये स्थान पर जा रहे थे, एक लड़के ने कार रोककर पूछा कि मेहेरबाबा किस जगह पर मिल सकेंगे क्योंकि वह उनके दर्शन के लिये आया था। उसकी उम्र पूछने पर लड़के ने उत्तर दिया, "चौदह" और इस उत्तर से बाबा बहुत खुश हुये। उन्होंने कहा कि यह एक अच्छा शगुन था। तब बाबा ने लड़के को आशीर्वाद देते हुये कहा कि किसी दिन वह सन्त बन जायेगा।

यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि बाबा की आवश्यकता के अनुसार चौदह लड़के मिल गये और बाबा ने उनके पैर धोये, उनके पैरों पर माथा टेका और हर लड़के को १४ रु. दिये। सब लोगों के लिये यह एक सुखद अन्त था।

मुझे बच्चों से संबंधित एक दूसरी घटना याद आ रही है। बाबा एक स्कूल में गये थे। वहाँ बाबा का दर्शन करने के लिये इकट्ठा हुये कुछ बच्चों के अलावा, सारे बच्चे लाइन में उनके पास होकर चले गये थे। थोड़े बचे बच्चों में से एक बच्चे का गाल बाबा ने संयोगवश थपथपा दिया। दूसरे

बच्चों ने जिद की कि इसी तरह थपथपाये जाने के लिये वह फिर से बाबा के पास लाइन में जायेंगे। बाबा इससे बहुत खुश हुये और उनकी इच्छा के आगे समर्पण कर दिया।

एक दूसरे उदाहरण में, बाबा ने एक शिष्य को तार देने के लिये भेजा था। लेकिन, हालांकि तारघर खुला था, वहाँ काम करने वाला कोई आदमी नहीं था। वहाँ से गुज़रने वाले लोगों ने बताया कि सब लोग बाबा का दर्शन करने के लिये गये थे। इस पर उस शिष्य ने आवश्यक सेवा प्राप्त करने के लिये एक नये तरीके का सहारा लिया। उसने हेड क्लर्क का नाम मालूम किया और दर्शन स्थल पर वापस आकर स्टेज पर रखे हुये लाउडस्पीकर पर घोषणा की कि क्लर्क की आफ़िस में तुरंत ज़रूरत थी।

जिन स्थानों पर बाबा गये, वहाँ लोगों में इतना अधिक उत्साह था कि इन स्थानों पर यह जानकर आश्चर्य नहीं होता था कि सद्गुरु को भेंट की जाने वाली सभी प्रचलित चीजें बिक चुकीं थीं। मिठाइयाँ, ताजे और सूखे फल, कड़े छिल्के वाले फल और साथ ही सब्जियाँ और फूल सब ख़त्म हो जाते थे। इसलिये जब कभी इन्तज़ाम करने वाले बाबा के जनों को आखिरी समय में कोई सामान खरीदना होता था, वे खाली हाथ वापस लौटते थे।

लेकिन दूसरे प्रकार की भेंटें भी थीं, जैसे कि हमीरपुर शहर में लोगों ने २४ घंटे का अखण्ड कीर्तन किया। इसी जिले में धनौरी गाँव के सब लोगों ने, जो लगभग २००० थे, नई ज़िन्दगी के अन्त में, बाबा के मनोनाश कार्य की सफलता के लिये, उसके पहले वर्ष १६ अक्टूबर को उपवास रखा था।

अपनी एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा के दौरान, बाबा अपनी २५ से ३० पुरुषों की मंडली के साथ, एक साधारण तीसरी श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करते थे, और बाद में जब वे दक्षिण भारत में आन्ध्र प्रदेश गये, यह संख्या ७५ हो गई। बाबा ने केवल पूर्व निर्धारित स्थानों पर ही दर्शन नहीं दिया बल्कि जब भी कभी रास्ते में गाड़ी रुकती थी, गाड़ी के यात्री और वे लोग जो प्लेटफार्म पर प्रतीक्षा कर रहे होते थे, साथ ही कुली से लेकर स्टेशन मास्टर तक सारे रेल कर्मचारी और पुलिस वाले भी, बाबा का दर्शन करने के लिये उनके डिब्बे की ओर दौड़ते थे।

सार्वजनिक दर्शन के लिये चुने गये स्थानों में, बाबा ने अपने लिये तीन कार्य निर्धारित कर रखे थे। सबसे पहले, वे केवल कुछ मंडली जनों को लेकर वेश बदलकर, स्थानीय मस्तों और सन्तों की खोज में जाते थे और उनके सम्मुख नतमस्तक होते थे। उसके बाद, वहाँ इकट्ठा हुई भीड़ के सामने, वे सात गरीब लोगों के पैर धोकर और उनके पैरों पर सर रखकर उन्हें प्रणाम करते थे और फिर हर एक व्यक्ति को ५१ रु. भेंट में देकर उन्हें वापस भेज देते थे।

इन दोनों कार्यों के पूरा हो जाने के बाद ही, बाबा मुख्य कार्यकर्ता को उन्हें (बाबा) दर्शन स्थल पर कार से ले जाने की अनुमति देते थे। दर्शन स्थल प्रायः बड़ा और खुला हुआ मैदान होता था जिसमें हजारों व्यक्तियों को छाया देने लायक विशाल पण्डाल होता था जो सुंदर ढँग से फूलों, मालाओं, फर्न और ताड़ की पत्तियों से सजा रहता था।

रास्ते में, कई बार बाबा की कार प्रेम से भरी हुई भीड़ द्वारा, अवतार की जय जयकार के बीच रोकी जाती थी और साथ ही फूलों और कभी कभी फलों की वर्षा भी की जाती थी। अन्ततः कार दर्शन स्थल पर पहुँच जाती थी और मैदान तक पहुँचने के रास्ते से होकर धीरे–धीरे आगे बढ़ती थी जबकि रास्ते के दोनों ओर पुरुष, महिलायें और बच्चे, फूलों और जय जयकार से बाबा का स्वागत करने के लिये उत्सुक और तैयार खड़े रहते थे। इस समय प्रायः बाबा के आगमन में छोड़ी गई बन्दूक की तेज आवाज़ पार्श्व में सुनी जा सकती थी।

प्रायः स्वागत समिति के लोग बाबा को मंच तक ले जाते थे और एक या दो मिनट तक वे भीड़ की ओर मुँह करके खड़े रहते थे जब कि लोगों से बैठने के लिये प्रार्थना की जाती थी। महिलायें व बच्चे एक ओर तथा पुरुष दूसरी ओर बैठते थे।

इसके बाद, लाउडस्पीकर पर बाबा का संदेश पढ़ा जाता था। फिर बाबा भीड़ को सामूहिक रूप से नमन करते थे और तब वे विशेष रूप से तैयार किये गये ऊँचे मंच पर बैठ जाते थे। बाबा अपने संदेश में उन्हें बताते थे कि वे बाबा द्वारा नमन किये जाने से व्यग्र न हों क्योंकि वे (बाबा) इस प्रकार उनके प्रेम व विश्वास को प्रणाम करते थे।

यह तीसरा कार्यक्रम खत्म हो जाने के बाद, उस दिन के कार्यक्रम

की घोषणा की जाती थी जिसमें विभिन्न समितियों तथा लोगों द्वारा दिये गये स्वागत भाषण होते थे और उसके बाद अपने बीच उपस्थित अवतार की स्तुति में भजन और आरती गायन होता था जिसमें सभी भाग लेते थे। अन्त में, बाबा अपने किसी भक्त को एक दूसरा सन्देश पढ़ने के लिये कहते थे जो उस अवसर और उस स्थान के लिये विशेष रूप से तैयार किया जाता था। तब, जोर से जय जयकार, हार पहनाने और भिन्न भिन्न प्रकार की भेंटों के बीच, सब लोग बाबा का दर्शन करते थे।

बहुत से हार पहने हुये, फल और मिठाइयों का प्रसाद बाँटते हुये बाबा कई घंटे तक बैठे रहते थे और जब उनके पास पहुँचने की अपनी व्याकुलता में भीड़ अनियंत्रित होती हुई लगती थी, वह तुरंत किसी व्यक्ति से अपने इस आश्वासन की घोषणा करवा कर, कि जब तक आखिरी व्यक्ति को प्रसाद नहीं मिल जाता है वह किसी भी परिस्थिति में वहाँ से नहीं जायेंगे, शीघ्र ही व्यवस्था स्थापित कर देते थे।

जब कार्यक्रम समाप्त हो जाता था, बाबा को जय जयकार और ताजे फूलों की वर्षा के बीच, उनके विश्राम के लिये निश्चित घर तक ले जाया जाता था, लेकिन लोग अभी भी मैदान में इकट्ठा होकर लगभग पूरी रात भजन गाते रहते थे। सुबह, बहुत से लोग बाबा की एक झलक प्राप्त करने के लिये फिर इकट्ठा होते थे और उनकी भक्ति के प्रत्युत्तर में बाबा न तो अपनी परवाह करते थे और न ही मण्डली की।

सार्वजनिक दर्शन के अगले दिन, बाबा अपने प्रेमियों के घरों में जाते थे और उस समय कई गज कपड़ा सड़कों पर बिछाया जाता था तथा गलियों में अच्छी अच्छी रेशमी और कामदार साड़ियाँ बिछी रहतीं थीं ताकि बाबा कार से उतरकर घर के दरवाजे तक रंग बिरंगे रास्ते से होकर जायें। वहाँ प्रेमी और उनके पड़ोसी बाबा को हार पहनाते थे और 'अवतार भगवान मेहेरबाबा की जय' की जय जयकार से उनका स्वागत करते थे। इसके साथ ही उनकी आरती और पूजा की जाती थी। उनके बीच में बैठकर, बाबा आध्यात्मिक उपदेश और नीति वचन देते थे जब कि प्रत्येक व्यक्ति अपने बीच उपस्थित ईश्वर के प्रति अपने अपने ढँग से आभार प्रकट करने में व्यस्त रहता था।

जहाँ कहीं भी बाबा गये, उन्होंने समाज में प्रचलित धर्म, जाति, ऊँचे

अथवा नीचे सामाजिक पद का कोई भेदभाव नहीं किया; और वे लोग भी जिन्हें स्थानीय लोग सर्वोच्च आध्यात्मिक स्थिति का मानते थे, बाबा को दण्डवत् प्रणाम करके अत्यंत प्रेम और नम्रता से उनकी पूजा करते थे और प्रायः बाबा की उपस्थिति में रोते थे।

पूर्वावलोकन करने पर, उन न भूलने वाले पैंतीस दिनों का पूरा विवरण देनें में शब्द असमर्थ हैं क्योंकि वह निःसंदेह प्रेम के नाटक की पूरी रील थी। दुनियाँ की सभी चिन्तायें और ज़िम्मेदारियाँ लुप्त हो गये थे और प्रेमी केवल प्रियतम के लिये जीवित थे। और प्रियतम, रानी मधुमक्खी की तरह, प्रेम की ओर आकर्षित, आज्ञापालन के लिये व्याकुल, सेवा करने के लिये तत्पर, रक्षा करने के लिये तैयार और अपने प्रियतम अवतार मेहेरबाबा के लिये, जो शाश्वत् रूप से उनके हृदयों में निवास करते थे, मरने के लिये इच्छुक, हज़ारों मधुमक्खियों से घिरे हुये थे।

• • •

;kx] ;kxh vkj lUr

'योग' का वास्तविक अर्थ है 'मेल'—प्रियतम ईश्वर के साथ उसका मिलन। जब आत्मा की आकांक्षा बहुत बढ़ जाती है और आत्मा आत्म—साक्षात्कार प्राप्त करती है। यह प्रियतम ईश्वर के साथ प्रेमी का मिलन है और इसकी प्राप्ति के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के योग, और भिन्न—भिन्न मार्ग हैं। परन्तु मेहेरबाबा ने हमेशा भक्तियोग, ईश्वर से प्रेम और उसकी सेवा को ही महत्त्व दिया।

मेहेरबाबा के साथ हमारे निवास की अवधि में, वे सैकड़ों, हज़ारों योगियों और महात्माओं से मिले। इन साधकों की पुकार को प्रभु ने स्वयं सुना था और, यद्यपि उन्होंने उन पर यह कृपा नहीं की कि वे उन्हें पहचान सकें, वे (बाबा) उनके सम्मुख माथा टेकने गये।

बाबा की सन् १९५२ में की गई अमरीका यात्रा में मैं उनके साथ नहीं गया था लेकिन उसकी जगह उन्होंने मुझे व पेण्डू को एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर उनके प्रेम व सत्य के सन्देश के प्रसार के लिये, भारत के लम्बे दौरे पर भेजा।

एक दिन हम लोग आन्ध्र प्रदेश के एक कस्बे में थे और वहाँ के लोगों के साथ बातचीत के बाद, योग के कुछ विद्यार्थी हमारे पास आये। वे चाहते थे कि हम उनके योग के शिक्षक से मिलें। इच्छा न होने के बावजूद हम उनसे मिलने के लिये तैयार हो गये।

स्कूल पहुँचने पर हमारा परिचय एक बूढ़े व्यक्ति से कराया गया जिसने दुभाषिये के माध्यम से बात करते हुये, बहुत आदर व अपनेपन के साथ हमारा स्वागत किया और अपने अधिकारियों के साथ हमारा परिचय करवाने के बाद, उसने घोषणा की, ''क्योंकि ये लोग स्वयं प्रभु की ओर से आये हैं इसलिये मेरे लिये यह दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। अतः मैं इनके साथ हुई इस भेंट के सम्मान में कुछ योगासनों का प्रदर्शन करूँगा।'' तब उसने कई योगासनों का प्रदर्शन किया जिनमें से उसके दो कार्य अत्यंत आश्चर्यजनक व प्रभावशाली थे।

उसने कहा कि वह एक ऐसे योगासन का प्रदर्शन करेगा जिससे उसके शरीर से शहद निकलने लगेगी अतः हमें यह क्रिया देखने की बहुत उत्सुकता हुई। उसने एक विशेष स्थिति तक पहुँचने के लिए अपने शरीर को भिन्न भिन्न प्रकार से मोड़ा और उसी स्थिति में उसने एक डंडा लेकर अपने शरीर को दबाया। तब उसने एक ज़ोर की आवाज़ की और एक बर्तन में किसी चीज़ की उल्टी करने लगा जिसे शहद कहते थे। उसके विद्यार्थियों ने इस प्रदर्शन के खत्म होने पर उत्साह के साथ तालियाँ बजाईं।

सम्मानित अतिथि होने के कारण वह बर्तन जल्दी ही हमारे पास लाया गया और मुझे एक चम्मच दिया गया। पेण्डू ने लेने से मना कर दिया लेकिन उस तथाकथित शहद का एक चम्मच पीने के अलावा मेरे पास दूसरा कोई रास्ता नहीं था। मैंने बाबा का नाम लिया और बहुत खराब स्वाद की आशा रखते हुये, मैंने एक चम्मच भरकर मुँह में रखा, लेकिन मुझे यह जानकर बहुत ताज्जुब हुआ कि इसका स्वाद बहुत मीठी और स्वादिष्ट शहद जैसा था।

योगी का अगला कार्य भी इतना ही चकित करने वाला था। वह नहाने के लिये कमरे से चला गया और वापस आकर घोषणा की कि अब वह एक ऐसी योग की क्रिया करेगा जिससे उसकी त्वचा के छेदों से

चन्दन की महक बाहर निकलेगी। इसलिये एक बार फिर उसने कठिन आसन लगाया और इस आसन में तब तक रहा जब तक उसके शरीर से पसीना नहीं निकलने लगा। उसके सहायक ने तब उसके शरीर को तौलिये से सुखाया और हमें सूँघने के लिये तौलिया दिया। निःसंदेह तौलिया से चन्दन की ख़ास महक आ रही थी।

इसके बाद, मैंने मेहेरबाबा और योग के वास्तविक अर्थ पर एक वार्ता दी और जब हम योग के स्कूल से जा रहे थे, मैंने आने वालों की किताब में लिखा, ''हम अवतार मेहेरबाबा के अनुयायी हैं। उन्होंने अपने योग के विषय में कहा है, 'तुम जाओ और तब मैं आता हूँ।''

सन् १९५६ में, मेहेरबाबा ने मुझे सन्तों और आध्यात्मिक गुरुओं से भेंट करने के लिये निम्नलिखित संदेश के साथ फिर भेजा। मेहेरबाबा कहते हैं, ''आप उनके प्यारे बच्चे हैं और वे चाहते हैं कि आप उनकी याद करें और उनसे प्रेम करें।''

मैं कई गुरुओं के पास गया और एक गुरु के अलावा, जो अपने आपको सद्‌गुरु कहता था, हर एक ने आदर और गहरे प्रेम के साथ संदेश को स्वीकार किया। बम्बई में जब मैंने इस गुरु के पास जाकर बाबा का संदेश दिया, उसने गुस्से से कहा, ''मैं उनका बच्चा नहीं हूँ। तुमने इस तरह का संदेश लाने की हिम्मत कैसे की ?'' फिर वह गुस्से से चिल्लाता रहा और थोड़ी देर तक बाबा के खिलाफ़ बेकार की बकवास करता रहा।

मैं धीरज के साथ उसकी बातें सुनता रहा और उसे बाबा को गालियाँ देते हुए सुनता रहा। बहुत जल्दी गुस्सा होने वाला व्यक्ति होने के बावजूद, मैं शान्त रहा। उसने यह भी कहा, ''अगर बाबा मेरे पास आयें तो मैं उन्हें सिर के बल खड़ा कर दूँगा ताकि उनकी टाँगें हवा में झूलें और वह मुझे अपना प्यारा बच्चा कहने की हिम्मत करता है।''

उसकी गालियों के बीच बीच में मैं बाबा की महानता और दया का बखान करता रहा। तब उसने वे घटनायें बताना शुरू कर दिया कि किस प्रकार आध्यात्मिक गुरु उसके पास आते थे और किस तरह उसका सम्मान करते थे। उसने कहा, ''और बाबा उसे 'अपना बच्चा' कहने की गुस्ताखी करते हैं।'' उसने उनमें से कई गुरुओं के नाम बताये। मैंने कहा कि मैं उन्हें जानता था और यह सुनकर उसे आश्चर्य हुआ तथा वह और ज़्यादा गुस्सा हो गया।

शीघ्र ही मेरे जाने का समय हो गया इसलिये मैंने उससे कहा, ''तुम देख रहे हो कि मैं कितना लम्बा चौड़ा और ताकतवर हूँ। लगभग दो घंटे से तुम मेहेरबाबा को गालियाँ दे रहे हो और अगर मैं गुस्सा होकर तुम पर हमला कर दूँ और तुम्हें गर्दन से पकड़ लूँ, तो तुम एक चूजे की तरह चूँ चूँ करते रहोगे। लेकिन मैं तुम्हें उस रूप में नहीं देखता जैसे तुम बाहर से हो। मैं तुम्हारे द्वारा अपने बाबा को बोलता हुआ देखता हूँ, और तुम्हारे माध्यम से वह मुझे अपने दूसरे रूप की झलक दिखा रहे हैं क्योंकि वह अनन्त हैं और वह हर एक वस्तु में हैं।''

जब उसने यह सुना, वह आश्चर्यचकित हो गया। तब उसने कहा, ''बहुत अच्छा, मेरे बेटे। मैं केवल तुम्हारी परीक्षा ले रहा था।''

मैं उसे धन्यवाद देकर चला आया।

• • •

vkKkdkfjrk dk fo"k;

एक बहुत ही धार्मिक, ब्राह्मण व्यापारी था। जब भी वह मेहेरबाबा के दर्शन के लिये आता था, वह बहुत सुरीले स्वर में गाता था। एक विशेष भेंट के समय वह बाबा के चरणों पर माथा रखकर, जमीन पर लेट गया और कहा कि वह उनसे प्रेम करता था और उनके साथ रहना चाहता था।

बाबा ने कहा, ''तुम मुझसे मिलने के लिये आते रहते हो; लेकिन तुम जहाँ कहीं भी हो, मैं पहले से ही तुम्हारे साथ हूँ।''

व्यापारी ने प्रार्थना की, ''बाबा, मैं ईश्वर का अनुभव प्राप्त करना चाहता हूँ। कृपया मुझे स्वीकार कीजिये।''

बाबा ने उत्तर दिया, ''मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। लोग मेरे पास आकर मुझसे धन, अच्छी नौकरी और दूसरी तरह की चीज़ें माँगते हैं। लेकिन, इसके विपरीत तुम ईश्वर के लिये आये हो और इससे मैं बहुत खुश हूँ। परन्तु, अगर तुम मेरे साथ रहना चाहते हो तो तुम्हें मेरी आज्ञाओं का पालन करना होगा।''

उस व्यक्ति ने कहा, ''निःसंदेह बाबा, मैंने आपकी आज्ञाओं का पालन करने का दृढ़ निश्चय किया है।''

बाबा ने उसे चेतावनी दी, ''यह आसान नहीं है। तुम्हें बिल्कुल वैसे ही करना होगा, जैसा मैं कहूँगा।''

उस व्यक्ति ने जिद की, ''आप जो कुछ कहेंगे, मैं करने के लिये तैयार हूँ।''

तब बाबा ने उससे कमरे से बाहर जाकर, अपनी बात पर गंभीरता से विचार करने के लिये, और फिर अपना अंतिम निर्णय देने के लिये कहा।

उसके आने पर, बाबा ने उससे पूछा, ''तुम्हारा क्या निर्णय है ? क्या तुमने मेरी आज्ञा का पालन करने का दृढ़ निश्चय कर लिया है ?''

उसने तुरंत उत्तर दिया, ''मैंने आपकी आज्ञा का पालन करने का निश्चय कर लिया है।''

बाबा ने कहा, ''मैं बहुत खुश हूँ। अब बैठो, थोड़ी देर में मैं तुम्हें अपनी आज्ञायें बताऊँगा।''

लगभग आधे घंटे के बाद, बाबा ने उससे कहा, ''मैं नहीं चाहता कि तुम केवल शाकाहारी खाना खाओ। मैं चाहता हूँ कि तुम माँस, मछली और मुर्गा रोज़ के खाने में खाओ।''

यह स्पष्ट था कि उस व्यक्ति को मानसिक रूप से धक्का लगा क्योंकि वह शाकाहारी भोजन करने में दृढ़ विश्वास रखता था और, ब्राह्मण होने के कारण, माँस खाने के विचार मात्र से ही उसे बहुत घृणा थी।

बाबा कहते रहे, ''मेरी दूसरी आज्ञा है कि तुम शराब पीना शुरू कर दो।''

उस व्यक्ति ने अपने जीवन में कभी भी शराब नहीं छुई थी, इसलिये वह आश्चर्य चकित था और किसी तरह हकलाकर वह इतना ही कह सका, ''बाबा, आप निश्चय ही मज़ाक कर रहे हैं।''

लेकिन बाबा की बात अभी खत्म नहीं हुई थी। वह कहते गये, ''मेरी तीसरी आज्ञा है कि तुम शादी कर लो और अगर तुम्हें अपने लायक साथी न मिले तो तुम दूसरी स्त्रियों के साथ संबंध रख सकते हो।''

इस अंतिम आज्ञा से वह व्यक्ति अत्यंत व्याकुल हो गया क्योंकि उसने अभी अभी जो कुछ सुना था, वह उसके विचार से आध्यात्मिक मार्ग में जो आवश्यक है, उसके विपरीत था।

उसने बाबा से कहा, ''बाबा, आप मेरी बात को गंभीरतापूर्वक नहीं ले रहे हैं। ब्राह्मण होने के नाते मैंने कभी मांस नहीं खाया, न ही शराब पी, और अब तक मैंने ब्रह्मचर्य का जीवन भी बिताया है।'' उसे विश्वास था कि बाबा उसे मूर्ख बना रहे थे और उसकी इच्छा को गंभीरतापूर्वक नहीं ले रहे थे। इसलिये उसने फिर से कहा, ''बाबा, मैं वास्तव में गंभीर हूँ। आप जानते हैं कि मैं ईश्वर–साक्षात्कार के लिये कितना अधिक लालायित हूँ। कृपया मुझे अपने साथ रहने की अनुमति दीजिये।''

बाबा ने ज़ोर देकर कहा, ''मैं तुम्हें बता चुका हूँ कि मेरे साथ रहने के लिये तुम्हें मेरी आज्ञाओं का पालन करना होगा और तुम्हारे लिये मेरी ये तीन आज्ञायें हैं''।

इसके बावजूद, वह व्यक्ति हिचकिचाता रहा क्योंकि उसे अभी तक यह विश्वास था कि बाबा उसकी बात को गंभीरतापूर्वक नहीं ले रहे थे। उसने कहा, ''मैं ईश्वर के लिये आया हूँ और जो आज्ञायें आपने दी हैं, मुझे ईश्वर से दूर ले जायेंगी।''

बाबा ने उत्तर दिया, ''ठीक है, मैंने तुमसे मेरी आज्ञाओं का पालन करने के लिये कहा और तुमने ऐसा करना स्वीकार किया। अब मैं जैसे कहता हूँ, वैसे ही करो।'' बाबा इस बात पर जोर देते रहे कि उनकी आज्ञाओं का पालन करना आवश्यक था लेकिन उस व्यक्ति ने आत्म समर्पण नहीं किया। वह यह आशा करता रहा कि बाबा उन आज्ञाओं को बदल देंगे और उसकी इच्छा को गंभीरतापूर्वक लेंगे।

इस समय बाबा ने मेरी ओर मुड़कर कहा, ''मैं उसे सोने के बड़े थाल में रखकर ईश्वर भेंट कर रहा हूँ, लेकिन उसके भाग्य में इसे स्वीकार करना नहीं है।'' इस बीच मैं उस व्यक्ति और मण्डली के बीच तुलना करता हुआ मन में विचार कर रहा था। मण्डली को पूर्ण आत्म–संयम और कठिन सादगी का जीवन बिताना पड़ता था जबकि उस व्यक्ति को प्रभु स्वयं दया करके भोग–विलासपूर्ण जीवन और साथ–साथ ईश्वर–साक्षात्कार प्रदान कर रहे थे और वह उसे अस्वीकार कर रहा था।

अन्ततः दयालु प्रियतम मेहेरबाबा ने, उस व्यक्ति को बताया, ''ठीक है, मैंने जो भी आज्ञायें दी हैं, तुम्हें उनका पालन नहीं करना है।'' उस व्यक्ति ने स्पष्ट रूप से मुक्ति का अनुभव किया।

फिर बाबा ने कहा, ''क्या तुम सभी तीर्थस्थानों पर पैदल जा सकोगे और भीख माँगकर भोजन करोगे ?''

इस बात ने उस व्यक्ति के चित्त को आकर्षित किया और वह उत्साहित हो गया। उसने प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया कि वह बाबा की नई आज्ञा का पालन विश्वासपूर्वक करेगा।

बाबा ने आगे कहा, ''और जिस समय तुम यात्रा कर रहे हो, ईश्वर की स्तुति में भजन गाओ और अपनी यात्रा के दौरान साधुओं और सन्तों से भेंट करो और उन्हें प्रणाम करो।''

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''हाँ बाबा। आप जो कुछ कहते हैं मैं वह सब करूँगा।'' वह इस बात से उत्साहित था कि अन्त में बाबा ने उसकी बात को गंभीरतापूर्वक लिया था।

तब बाबा ने उसका आलिंगन किया और उसे वापस भेज दिया। उसके जाने के बाद बाबा ने शिष्यों से कहा, ''मैं क्या कर सकता हूँ ? उसके भाग्य में यह नहीं है।''

इसके बाद शीघ्र ही (अक्टूबर, सन् १९४९ में), बाबा और साथियों ने एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हुये आशारहितता और असहायपन की नई ज़िन्दगी में प्रवेश किया और इस घटना की याद धुंधली पड़ गई। लेकिन सन् १९५२ में, जब बाबा ने मुझे और पेण्डू को उनके सत्य और प्रेम के संदेश के प्रसार के लिये भेजा, हम एक दिन एक कस्बे में पहुँचे जहाँ हमारे लिये एक औपचारिक सभा का आयोजन किया गया था। अचानक मुझे याद आया कि यह वही कस्बा था जहाँ से ब्राह्मण व्यापारी बाबा के पास ईश्वर–साक्षात्कार की प्राप्ति के लिये गया था। इसलिये मैंने उस व्यक्ति से पूछताँछ की जिसने इस सभा का आयोजन किया था। ''क्या तुम इस व्यक्ति को जानते हो जिसे बाबा ने तीर्थयात्रा पर जाने के लिये कहा था ? क्या वह वापस आ गया है ?''

सभा का आयोजक व्याकुल दिखाई पड़ा। उसने कहा कि वह इस बारे में मुझे सभा के बाद बतायेगा और अपने वादे के अनुसार उसने मुझे संक्षेप में बताया। ''हाँ, वह व्यक्ति तीर्थयात्रा पर गया था और अन्त में वापस आ गया लेकिन हम कभी भी उसके विषय में चर्चा नहीं करते हैं क्योंकि अब उसे जाति से बाहर कर दिया गया है।''

इस आखिरी बात से आश्चर्यचकित होकर, मैंने उद्विग्नतापूर्वक इसका कारण पूछा। आयोजक ने बताया, ''वह तीर्थयात्रा पर गया और जब वापस आया उसने हमें अपनी यात्राओं से संबंधित कहानियाँ सुनाईं। लेकिन कुछ महीनों बाद उसमें एक अप्रत्याशित और चौंकाने वाला परिवर्तन आया। उसे शराब घरों में शराब पीते हुये देखा जा सकता था और शीघ्र ही, ब्राह्मण होने के बावजूद, उसने माँस खाना शुरू कर दिया और ब्राह्मण समाज ने गुस्सा होकर उसका बहिष्कार कर दिया। सबसे बुरी बात यह हुई कि उसने वेश्याओं के पास जाना शुरू कर दिया और इस समय वह एक वेश्या–घर का स्वामी है।''

निःसदेह, समाज में किसी को भी इस बात का ज्ञान नहीं था कि पर्दे के पीछे क्या हुआ था। दयालु बाबा ने उस व्यक्ति के संस्कारों को नष्ट करना चाहा था और मैंने सोचा अगर उस व्यक्ति ने कह दिया होता, ''हाँ, बाबा ! मैं बिल्कुल वैसा ही करूँगा जैसा आप कहते हैं,'' तो उसकी स्वीकृति मात्र से ही बाबा ने उसके मन के सभी संस्कारों को, जो उस समय सतह पर आने लगे थे, नष्ट कर दिया होता क्योंकि बाबा उसे उन तीन आज्ञाओं का पालन करने की अनुमति कभी नहीं देते, जो उन्होंने उसे दी थी।

यहाँ हमें यह याद रखना चाहिये कि बाबा ने अक्सर कहा है कि प्रेम ईश्वर की मनुष्य को दी गई देन है, आज्ञाकारिता गुरु की मनुष्य को दी गई देन है और समर्पण मनुष्य द्वारा गुरु को दी गई भेंट है। यह देन हममें से प्रत्येक के अन्दर है और जब भी बाबा चाहते हैं कि हम उनकी आज्ञा का पालन करें, हमें इसे क्रियात्मक रूप देना चाहिये क्योंकि एक बार जब हम उन्हें अपना प्रभु और गुरु स्वीकार कर लेते हैं, इस स्वीकृति में ही उसकी आज्ञाकारिता की देन सन्निहित है।

मुझे याद है जब हम एक दिन "The Ten Commandments" (दस आज्ञायें) फिल्म देखने गये थे, अन्त में बाबा ने मुझसे इसके बारे में बात की, ''लोग विश्वास करते हैं कि ये दस आज्ञायें ऊपर से आईं थीं। उन्हें इसका ज़रा सा भी ज्ञान नहीं है कि ये दस आज्ञायें हर व्यक्ति के अन्दर गुप्त रूप से स्थित हैं और दो चक्रिकाओं (Tablets) पर जो कुछ दिखाया गया, वह केवल सांकेतिक वर्णन है। प्रत्येक व्यक्ति इन दस आज्ञाओं के प्रति सचेत है, लेकिन मनुष्य का स्वभाव इस प्रकार का है कि वह उनसे बचने की हर संभव कोशिश करता है।

अगर हम आत्म–विश्लेषण करने का कष्ट करें तो हमें मालूम होगा कि उसकी प्रसन्नता और अप्रसन्नता के प्रति सचेतनता हममें से प्रत्येक में सन्निहित है। मूल रूप से हम सब जानते हैं कि हमें क्या करना चाहिये और क्या नहीं करना चाहिये लेकिन हम निरंतर दूसरों के दोष ढूँढने में लगे रहते हैं। बाबा ने कहा है कि उनकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए किसी भी व्यक्ति को यह बताने की जरूरत नहीं है कि क्या उचित है और क्या अनुचित है क्योंकि उन्होंने हमें पहले ही आज्ञाकारिता की देन दे दी है और इसका अच्छी तरह उपयोग करना हमारे ऊपर निर्भर है।

• • •

egjckck dh ;kn djus dk fo"k; e

उत्तर भारत में दर्शन प्रोग्राम के दौरान, एक दिन मेहेरबाबा ने कहा, ''मैं तुम्हारे बीच एक बार फिर से उसी पुरातन पुरुष के रूप में आया हूँ। समय–समय पर बार–बार मैं तुम्हारे बीच उसी संदेश को लेकर आता हूँ, मुझसे प्रेम करो, ईश्वर से प्रेम करो।'' तब भीड़ में से किसी ने ज़ोर से कहा, ''बाबा हम आपसे किस प्रकार प्रेम करें ?''

बाबा ने उत्तर दिया, ''जब तुम्हारा विवाह हुआ था, क्या तुमने मुझसे पूछा था कि तुम्हें अपनी पत्नी से किस प्रकार प्रेम करना चाहिये ? तुमने उसे देखा और तुम उससे प्रेम करने लगे, लेकिन जब तुम मुझे देखते हो, तुम मुझे मेरे वास्तविक रूप में नहीं देखते हो क्योंकि यह शरीर मात्र एक कोट की तरह है जो मैं पहनता हूँ। जब तुम मुझे मेरे वास्तविक रूप में देखोगे, तब तुम मुझसे प्रेम करने लगोगे।''

बाबा ने कहना ज़ारी रखा, ''तब प्रश्न यह है कि तुम मुझे उस रूप में किस तरह देख सकोगे जैसा कि मैं वास्तव में हूँ ? इस संसार में पुरुष और स्त्रियाँ एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं लेकिन इस प्रेम के लिये, पुरुष अथवा महिला को सबसे पहले एक दूसरे को देखना पड़ता है। क्या तुम ऐसा नहीं मानते ?''

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''जी, हाँ।''

बाबा ने समझाया, ''उसके बाद एक दूसरे को खुश करने की इच्छा से मन पागल हो जाता है। एक दूसरे को खुश करने की इच्छा से दोनों ही अपने सर्वोत्तम रूप को सामने रखते हैं क्योंकि अब सारी दुनियाँ उस व्यक्ति के इर्द–गिर्द केन्द्रित हो जाती है जिससे हम प्रेम करते हैं। इसका मतलब है कि तुम अपनी प्रियतमा की हर समय याद करते हो, तुम जिससे प्रेम करते हो उसे अपना बनाने का ही एकमात्र विचार करते हो और तुम सोचते हो कि किस प्रकार हर समय उसके साथ रह सको।

''लेकिन जब तुम मुझसे प्रेम करते हो, तब बिल्कुल इसके विपरीत होता है। जबकि अपनी दुनियाँ में तुम एक दूसरे को देख सकते हो और प्रेम करने लगते हो, तुम मुझे मेरे वास्तविक रूप में नहीं देख सकते हो। इसलिये मुझसे प्रेम करने के लिये तुम्हें सबसे पहले हर समय मेरी याद करना चाहिये। तब तुम मुझे मेरे वास्तविक रूप में देखोगे और केवल तभी तुम मुझसे वास्तव में प्रेम करोगे।''

उस व्यक्ति ने पूछा, ''बाबा, तब हम किस प्रकार आपकी याद कर सकते हैं ?''

''अब, जबकि तुमने मुझे इस कोट में, इस रूप में, देख लिया है, मेरी फ़ोटो रखो अथवा जो कुछ भी तुम्हें मेरी याद दिलाये अथवा मेरी याद करते रहने में तुम्हारी सहायता करे, उसे अपने पास रखो। अपने घर में और अपने शौचालय में भी, मेरी फोटो रखो ताकि वहाँ भी तुम हर समय मेरी याद कर सको। सुबह उठकर नित्यकर्म करने से पहले मेरी याद करो।

''अब मेरी याद करना एक यांत्रिक क्रिया हो जाती है लेकिन मन विविधता चाहता है। इसलिये, तुम मेरे बारे में प्रकाशित सभी पुस्तकें और

वे पत्रिकायें पढ़ सकते हो जिनमें मेरे जीवन तथा मेरे कार्य के बारे में वर्णन रहता है। मेरी याद करने का यह दूसरा ढंग है।

''लेकिन अभी भी मन किसी विविधता के लिये लालायित रहता है और साधक को उन स्थानों की तीर्थयात्रा पर जाने के लिये प्रेरित करता है जहाँ प्रभु गये थे और कुछ समय व्यतीत किया था। तीर्थयात्री इस विचार से प्रसन्न होता है कि वह उन सभी स्थानों में कुछ समय व्यतीत करने में समर्थ हो सका है जो प्रभु की उपस्थिति से पवित्र हो चुके हैं और इस तरह जब वह एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है, वह प्रभु की अधिकाधिक याद करता है।

''इसके बाद, साधक उन लोगों से मिलता है जो प्रभु के साथ रहते थे अथवा उनके साथ कुछ समय बिताया। वह उनसे प्रभु के बारे में सब कुछ जान लेने के लिये लालायित रहता है। शीघ्र ही वह हृदय मन का स्थान ले लेता है और जैसे जैसे हृदय में प्रभु के लिये आकांक्षा उत्पन्न होने लगती है, प्रभु के प्रति थोड़ा सा प्रेम उत्पन्न हो जाता है।

''साधक के लिये मेरा यह संदेश है वह मुझसे प्रेम करे और यह सृष्टि मेरी निरन्तर याद दिलाने का एक साधन है। तब साधक का मन प्रभु की सभी यादों से एकदम तृप्त हो जाता है और वह प्रभु के प्रति प्रेम में जाग्रत हृदय के साथ अपने प्रतिदिन के कार्यों में लग जाता है और प्रतिदिन, प्रत्येक कार्य में साधक प्रभु का कुछ चिन्ह पाता है और जागते हुये वह प्रभु के विचारों में लीन रहता है।

''जिस प्रकार तुम अपने चारों ओर सृष्टि को देखते हो जो ईश्वर के बारे में सोचने में तुम्हारी सहायता करती है, उसी प्रकार तुम्हारा प्रत्येक कार्य मेरी याद करने में तुम्हारी सहायता करेगा। इसी प्रकार मेरी याद करने से जब हृदय अधिकाधिक खुल जाता है, अन्ततः हृदय हर वस्तु में प्रभु की शोभा पाने लगता है। अन्त में एक अवस्था ऐसी आती है जब तुम प्रभु की शोभा से अभिभूत हो जाओगे और यही वह समय है जब मैं तुम्हें प्रेम की देन दूँगा।

''और वह देन क्या है ? वह देन वह क्षण है जब तुम मुझे मेरे वास्तविक रूप में देखते हो। तुम मेरी कान्ति को देखते हो, तुम मुझे देखते

हो और तुम अन्य वस्तुओं को देखना बंद कर देते हो। यह छठवीं भूमिका की चेतना का अनुभव है और जब तुम मुझे मेरे वास्तविक रूप में देखते हो, तब तुम पहली बार मुझसे प्रेम करते हो। अन्त में तुम अपना प्रेममय जीवन शुरू करते हो जिसके लिये तुम्हारा सृजन हुआ था और जितना अधिक तुम प्रेम करते हो उतना ही अधिक तुम मुझे प्रसन्न करना चाहते हो। यह ठीक उसी तरह है जैसे कि जब कोई व्यक्ति किसी स्त्री से प्रेम करता है, वह अधिक गहराई के साथ उसे प्रसन्न करने का हर संभव प्रयत्न करता है।

''अन्ततः एक महत्त्वपूर्ण घटना होती है। प्रेमी का प्रियतम के प्रति अत्यधिक प्रेम देखकर, प्रियतम प्रेमी से प्रेम करने लगता है और प्रेमी प्रियतम का स्थान ले लेता है। उस समय प्रियतम प्रेमी के स्तर पर उतर आता है। मन का नाश हो जाता है, प्रेमी और प्रियतम एक दूसरे में लीन हो जाते हैं और यह मिलन ही ईश्वर–साक्षात्कार है।''

• • •

egjckck dh eMyh

सन् १९५४ में हमीरपुर के पास के जिलों में सार्वजनिक दर्शन प्रोग्राम के दौरान, मेहेरबाबा ने चर्चा की कि वे मण्डली की सहायता से एक विशेष कार्य को पूरा करेंगे। तब मैंने बाबा से पूछा कि मण्डली किन लोगों ने बनाई और उन्होंने उत्तर दिया, ''मंडली उन लोगों ने बनाई है जो कई वर्षों से मेरे साथ हैं, लेकिन वे मुझसे कुछ नहीं माँगते। वे मेरे अपने लोग हैं जो अब तक और अभी भी, मेरे लिये अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार हैं।''

इस परिभाषा को और अधिक स्पष्ट करने के लिये, बाबा ने आगे कहा, ''वह व्यक्ति मेरी मण्डली में है, जो मुझे अपना जीवन अर्पित कर देता है, मेरी आज्ञाओं का पालन करता है, मुझसे किसी भी तरह का इनाम नहीं चाहता, जो फल की चिन्ता नहीं करता। भले ही वह बरबाद हो जाये अथवा सफलता प्राप्त करे, फिर भी वह बाबा की प्रसन्नता में ही प्रसन्न रहता है, लेकिन इसके साथ साथ मैं भी उसके साथ घनिष्ठता महसूस करता हूँ।''

मैंने दूसरा प्रश्न किया, ''आपके साथ किसी व्यक्ति का संबंध तीस वर्ष का है अथवा केवल एक वर्ष का, इसके बावजूद अगर वह अनुभव करता है कि वह मण्डली का एक सदस्य है तो क्या वह स्वयं को मण्डली का सदस्य कह सकता है ?''

बाबा ने उत्तर दिया, ''हाँ, अगर तुम अपने साथ मुझे घनिष्ठ पाते हो। उदाहरण के लिये, देहरादून के एलचा (एरच. डी मिस्त्री) को लो। मैं उसके साथ पूरी तरह स्वतंत्र अनुभव करता हूँ, लेकिन अगर वह अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिये तैयार नहीं है, तब वह मण्डली में नहीं है।''

मैंने कहना ज़ारी रखा, ''क्या कोई व्यक्ति यह घोषित कर सकता है कि वह मण्डली का एक सदस्य है ?''

बाबा ने कहा, ''जिन लोगों के लिये मैं अनुभव करता हूँ कि मण्डली में हैं, वे ही मेरी मंडली में हैं और कोई भी व्यक्ति यह घोषित नहीं कर सकता कि वह मण्डली में है।''

मेहेरबाबा की मण्डली ने अपने प्रभु की निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के अपने प्रयत्न में कर्तव्य की सीमा से परे काम किया; लेकिन उनसे समय समय पर भूल हो जाती थी जिसे बाबा अनदेखा नहीं करते थे।

एक बार धनौरी में जब मण्डली का एक सदस्य भीड़ को नियंत्रित करने के लिये अपने स्थान पर रहने के बजाय, दर्शन स्थल से चला गया और पुनः जब एक दूसरा सदस्य अपनी निर्धारित ड्यूटी को पूरा नहीं कर सका, बाबा अपने कर्तव्य पालन के प्रति उनकी असावधानी के लिये, उनको डाँटने में हिचकिचाये नहीं।

यहाँ तक कि गुस्तादजी भी, जो मण्डली के वयोवृद्ध सदस्यों में से एक थे, बाबा की डाँट से नहीं बच पाते थे। सन् १९५४ में, जब वह बाबा के साथ इछौरा से होकर जा रहे थे, उन्होंने एक पेड़ से कुछ बेर तोड़ लिये और बाबा ने मालिक की अनुमति लिये बिना बेर तोड़ने के लिये उन्हें डाँटा। तब बाबा ने बेरों के मालिक से, गुस्तादजी की ओर से क्षमा माँगी, जब कि तोड़े गये बेरों की कीमत कुछ पैसों से ज़्यादा नहीं थी।

बाबा अपनी मण्डली की भक्ति और कार्य को स्वीकार करते थे लेकिन वे उनके स्वास्थ्य का सदैव बहुत ध्यान रखते थे। सन् १९५४ में,

सार्वजनिक दर्शन प्रोग्राम के लिये महाबलेश्वर से चलने से पहले, बाबा ने इस बात पर जोर दिया कि सभी मण्डली के सदस्य अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें और अगर कोई भी अस्वस्थ अनुभव करे, तो उन्हें (बाबा को) सूचित किया जाये।

जब वे ६ फ़रवरी को हमीरपुर से होकर जा रहे थे, काफ़ी रात बीत जाने पर रमजू की तबियत खराब हो गई और हालांकि वह बाबा की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता चाहता था, उसने रात के उस समय बाबा को जगाना ठीक नहीं समझा। फिर भी, कुछ देर बाद उसने बाबा के पास जाने का निश्चय किया। रास्ते में उसे एक दूसरा मण्डली जन मिला जिसने उसे बताया कि बाबा उसे बुला रहे थे। जैसे ही रमजू ने कमरे में प्रवेश किया, बाबा ने उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछताँछ की और कुछ दवायें लेने की सलाह दी।

मेहेरबाबा का मस्तों के साथ कार्यकाल, साथ ही नई ज़िन्दगी का समय, स्वयं मेहेरबाबा तथा उनके शिष्यों के लिये कठोर शारीरिक मेहनत से भरा समय था, लेकिन वास्तव में यह उनकी कृपा और दया और सबसे अधिक उनकी उपस्थिति का प्रभाव था जिसने हमें सहारा दिया और हमें लगभग अलंघनीय कठिनाइयों का सामना करने के लिये, हर प्रकार के कष्ट को सहने में और कल्पना से परे परीक्षाओं का सामना करने में समर्थ बनाया।

• • •

egjckck dk eku

हम लोग मेहेरबाबा से उनके लम्बे समय से चले आ रहे मौन के बारे में अक्सर प्रश्न करते थे और उनसे पूछते थे कि उनका मौन खोलने का कब तक इरादा था और सन् १९५४ में एक दिन, इसके उत्तर में उन्होंने वर्णमाला तख्ती छोड़ दी और कहा, ''आज से भविष्य में इस तख्ती का उपयोग नहीं करूँगा।'' हमने सोचा कि यह शायद इस बात का संकेत था कि वे मौन तोड़ने वाले थे। लेकिन बिना किसी घटना के दिन बीतते गये। बाबा ने उँगलियों के संकेतों द्वारा बात करना शुरू कर दिया। अपने मौन

के विषय में वे केवल इतना ही कहते थे, ''यह कैसा बंधन है'' लेकिन यह बंधन किसी उद्देश्य से था—हमारे लिये था।

फिर भी, इस सबसे एक स्थायी लाभ उस समय मिला जब उन्होंने एक दिन हमसे एक प्रश्न पूछा!

''जब लोग नाराज़ होते हैं तो एक दूसरे पर चिल्लाते क्यों है ?''

हमने कहा, ''वे इसलिये चिल्लाते हैं क्योंकि वे गुस्सा होते है। और वे अपने गुस्से को प्रकट करना चाहते हैं।'' बाबा ने उत्तर दिया, ''हाँ, वे अपने गुस्से को इस तरह प्रकट कर सकते हैं, लेकिन अगर कोई व्यक्ति उनकी बगल में बैठा हो, तो भी वे उस पर चिल्लाते हैं। क्या वे धीरे से, कोमल स्वर में नहीं बोल सकते ?'' हमने इसका अलग अलग कारण बताया और उस समय जो भी मन में आईं, अलग अलग बातें कहीं, लेकिन हमारे उत्तरों से बाबा को संतोष नहीं हुआ। इसलिये उन्होंने हमें बताया, ''जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से नाराज़ होता है, वह व्यक्ति उसके हृदय से दूर हो जाता है और उसके बीच दूरी पैदा हो जाती है। यही कारण है कि शारीरिक प्रतिक्रिया चिल्लाने की होती है और जितनी अधिक दूरी होती है, उतना ही अधिक चिल्लाते हैं। प्रेम लुप्त हो जाता है और वह व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर चिल्लाता चला जाता है जो बदले में उस पर चिल्लाता है। तब पहला व्यक्ति चिल्लाता है और यह क्रिया इसी तरह होती रहती है।''

लेकिन बाबा रुके नहीं क्योंकि निःसंदेह वे यह चाहते थे कि हम इसी बात को दूसरे कोण से देखें। इसलिये वे कहते रहे, ''अब एक दूसरा उदाहरण लो जिसमें दो व्यक्ति आपस में प्रेम करते हैं। जब दो व्यक्ति आपस में प्रेम करते हैं, वे किस प्रकार बोलते हैं ?''

हमने उत्तर दिया, ''वे कोमल स्वर में बात करते हैं।''

बाबा ने सहमति प्रकट की, ''हाँ वे कोमलता से बात करते हैं और उनके बीच जितना अधिक प्रेम होता है, उनकी बातचीत का स्वर उतना ही कोमल होता है। और जब वे और अधिक प्रेम करते हैं, शब्दों की कोई आवश्यकता नहीं होती और वे एक दूसरे की ओर केवल देखते रहते हैं। अन्त में, देखने की भी आवश्यकता नहीं होती—बिल्कुल आवश्यकता नहीं होती।''

यही कारण है कि मेहेरबाबा ने मौन रखा। शब्दों के आदान प्रदान की उन्हें कोई ज़रूरत नहीं थी। यह सुनकर बहुत अच्छा लगा। यह याद करके बहुत आनंद होता था कि वे हमारे कितने अधिक पास थे। जैसा कि उन्होंने कहा है, ''मैं तुम्हारी साँस से भी अधिक तुम्हारे निकट हूँ।''

संसार ने उनकी निकटता को स्वीकार किया अथवा नहीं, यह उनके लिए महत्त्वपूर्ण नहीं था क्योंकि उन्हें बोलने की कोई ज़रूरत नहीं थी। यह बात इतनी अधिक सच थी कि जब कभी लोग उनके सम्पर्क में आये, मेहेरबाबा लोगों के हृदयों से सीधे बात करते थे, हालांकि व्याख्यानों के माध्यम से संकेतों अथवा शब्दों का आदान–प्रदान होता था। इस बारे में कोई सन्देह नहीं है कि वह बहुत आसानी से लोगों के दिलों में गहराई तक उतर जाते थे।

• • •

u rk xku d fy; vkj u gh fl[kyku d fy;

मेहेरबाबा की आवाज़ बहुत सुंदर थी और वे मधुर स्वर में गाने गाया करते थे। यहाँ तक कि जब भी वे बोलते थे, लोग उनकी आवाज़ के सुरीलेपन और उनके शब्दों की गूढ़ता से आकर्षित होते थे। वे उपदेश देते थे और लोग उनके सत्य के शब्दों को सुनने के लिये, उनके चारों ओर एकत्रित होते थे।

सन् १९२५ के शुरू में, बाबा ने अपने आसपास के लोगों को भिन्न–भिन्न अवसरों पर संकेत देना शुरू कर दिया कि वे मौन रखना चाहते थे। इसलिये एक दिन, जब उन्होंने फिर यह इच्छा प्रकट की तो किसी व्यक्ति ने कहा, ''बाबा, आप मौन रखने के बारे में गंभीर लगते हैं। कृपया ऐसा न कीजिये। आपके मौन हो जाने पर हमें सत्य के ये शब्द कौन सिखायेगा ?''

इस पर बाबा ने उत्तर दिया, ''मैं सिखलाने के लिये नहीं, बल्कि जगाने के लिए आया हूँ।''

• • •

Lo; nnhl;eku vdFkuh; gkrk g

मेहेरबाबा के मौन संकेतों की व्याख्या करने का कार्य करते हुये मुझे अपने मन में अक्सर उठने वाले एक प्रश्न के रूप में, एक अत्यंत दुखदायी भ्रमजाल का सामना करना पड़ा। मुझे इस बात पर आश्चर्य हुआ करता था कि मेहेरबाबा ने चौथे अथवा पाँचवें दशक में अपने ईश्वरत्व की घोषणा क्यों नहीं की जबकि उस समय वे अत्यंत सुंदर और शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं शक्तिशाली दिखते थे। उस समय जब उनका विरोध किया जाता था; उन्होंने कभी भी इस तरह की साहसिक घोषणायें नहीं की जैसी कि उन्होंने छठवें और सातवें दशक में कीं जबकि वे शारीरिक रूप से असहाय और अशक्त थे और प्रायः उनके पैर व कूल्हे पर प्लास्टर चढ़ा रहता था। वे मुझे श्रोताओं के भारी जमाव के बीच जो सन्देश देने को कहते थे उनमें स्पष्ट रूप से यह कहा जाता था कि वे पुरातन पुरुष थे, वे वही मसीहा थे जिसकी प्रतीक्षा मानवजाति लम्बे समय से कर रही है, लेकिन मेरे मन को यह विचार कष्ट देता था, ''ये सब लोग मेहेरबाबा को ऊँचे से ऊँचा, अवतार के रूप में किस तरह स्वीकार करेंगे जबकि वे उन्हें इतना अधिक कष्ट सहते हुये और अशक्त देखते हैं।''

इस प्रकार के विचार मेरे मन से उस समय पूर्णरूप से दूर हो गये जब एक दिन बाबा ने हमें बताया, ''आज ईसामसीह की पूजा इसलिये नहीं की जाती कि वे लोगों के कष्ट दूर करते थे अथवा चमत्कार करते थे। उनकी इसलिये याद की जाती है क्योंकि अवतार होने के बावजूद, ईसामसीह ने स्वयं को मानवजाति के सामने नीचा बनाया। वे इस सीमा तक असहाय बन गये कि उन्होंने स्वयं को शूली पर चढ़ाने दिया। वह उनकी वास्तविक महानता थी और यही कारण है कि ईसामसीह का संबंध स्वयं शूली के चिन्ह से है।'' और जैसे–जैसे समय बीतता गया, हम सबने यह अनुभव किया कि बाबा की इस शारीरिक स्थिति के बावजूद, लोगों ने उन्हें मनुष्य रूप में ईश्वर, वही पुरातन पुरुष अथवा अवतार के रूप में स्वीकार किया।

छठवें दशक के अन्त में बाबा ने सीधे सीधे यह घोषित किया कि वे वही अवतार थे जो भूतकाल में जुरथस्त्र, अब्राहम, राम, कृष्ण, बुद्ध,

ईसामसीह और मुहम्मद के रूप में आया था। लेकिन इस घोषणा के कई वर्ष पहले से वे लोग, जो उनको कुछ समय से जानते थे और दूसरे लोग भी, जो उनसे पहली बार मिले थे, उनको पूर्णरूप से मनुष्य रूप में ईश्वर स्वीकार करते थे। जिन लोगों को उनकी कृपा प्राप्त हुई थी, वे लोग जानते थे। उन्हें यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि वे कौन थे। पारसी लोग, जो उनके पास आते थे, जानते थे कि वे जुरथस्त्र थे जो फिर से इस रूप में आये थे और इसी तरह ईसाई भी जानते थे कि वे ईसामसीह थे जो फिर आये थे और इसी प्रकार दूसरे लोग भी जानते थे।

• • •

lc dN ckck dh eth l

एक बार मेहेरबाबा को उनके प्रेमियों ने हमीरपुर आने के लिये आमंत्रित किया जहाँ से उन्हें एक छोटे से कस्बे, नौरंगा जाना था। जिस व्यक्ति ने नौरंगा की यात्रा का प्रबंध किया था, वह बाबा को अपने साथ नौरंगा ले जाने के लिये हमीरपुर आया। उसने नौरंगा में लोगों से कह दिया था कि वे प्रभु से भेंट करने के लिये उसके घर पर एकत्रित हों।

गाँव में कुछ लोग इस बात के खिलाफ़ थे कि गाँव के लोग एक ग़ैर–हिन्दू गुरु के अनुयायी बनें इसलिये उन्होंने रात में नहर की मुख्य शाखा को तोड़ दिया जिससे पूरे क्षेत्र में बाढ़ आ गई। जब बाबा सुबह वहाँ पहुँचे तब इस भयानक मुसीबत का पता चला और बाबा न तो उस प्रेमी के घर जा सके और न ही दूसरे प्रेमी, जो वहाँ इकट्ठा हुये थे, बाबा से भेंट कर सके।

इस अचानक हुई गड़बड़ी से वह व्यक्ति रोने लगा और उसने बाबा से पूछा कि उन्होंने ऐसा क्यों होने दिया। बाबा ने उसे शान्त किया और कहा कि यह सब उनकी मर्ज़ी के अनुसार हुआ था। तब बाबा ने वचन दिया कि वह अगले वर्ष उस व्यक्ति के घर आयेंगे और यह सब करने वालों का हृदय परिवर्तन होगा।

बाबा ने अपने वचन को पूरा किया और जिस समय बाबा वहाँ पहुँचे, लोगों में अनोखा परिवर्तन आ चुका था। नहर तोड़ने वाले लोग केवल बाबा

का स्वागत करने में ही शामिल नहीं हुये बल्कि दूसरे प्रेमियों के साथ मिलकर, उन्होंने एक ऐसी जगह को बनाने में मदद की जहाँ लोग उनके (बाबा के) प्रेम में एकत्र हो सकें।

इस प्रकार प्रियतम बाबा की दया स्वयं को प्रकट करती है।

• • •

mUgs viu i'uks dk mÙkj fey x;k

आन्ध्र प्रदेश के एक दौरे के दौरान, हजारों लोग मेहेरबाबा के दर्शन के लिये आये। उनमें से अधिकांश लोग मात्र उनकी उपस्थिति में रहने और उनके साथ रहने का आनंद लेने आये थे, लेकिन कई लोगों को प्रश्न भी पूछने थे।

जब कोई व्यक्ति बाबा से प्रश्न पूछता था, बाबा उससे अपना प्रश्न, नाम व पता लिखकर देने के लिये कहते थे। उन्होंने वचन दिया कि इस दौरे के समाप्त होने पर वह प्रत्येक व्यक्ति को उत्तर भेजेंगे। सभी पर्चे हमीरपुर के एक प्रेमी, पुकार को देने थे जो हमारे साथ था। थोड़े ही समय में पुकार के पास सैकड़ों पर्चे इकट्ठा हो गये।

मेहेराज़ाद वापस आने के कुछ दिनों बाद, बाबा ने पुकार को बुलाया और पर्चे लाने को कहा। पुकार ने कहा, ''बाबा, बहुत से लोगों ने आपके लिये प्रश्न लिखे, लेकिन कुछ लोगों ने कुछ घंटों के बाद और अन्य लोग कुछ दिनों के बाद वापस आये और मुझसे प्रार्थना की कि मैं उनके पर्चे वापस कर दूँ। उन्होंने कहा कि उनके प्रश्नों के उत्तर मिल गये थे। पहले मेरे पास सैकड़ों पर्चे थे, लेकिन अब मेरे पास एक भी नहीं है।''

यह सुनकर बाबा के चेहरे पर अज्ञानता का शरारतपूर्ण भाव आया और उन्होंने कहा, ''क्या सचमुच ऐसा ही है ? मैं प्रसन्न हूँ।''

पुरातन पुरुष की ऐसी अगाध रीतियाँ हैं जिन्हें समझना बहुत कठिन है।

• • •

egjckck d iHkkRo dk vuk[kkiu

सार्वजनिक सभाओं में मेहेरबाबा का प्रभुत्व अनोखा था और यह उस समय भलीभाँति स्पष्ट हो गया जब एक बार बाबा ने एक ऐसे शहर में दर्शन दिया जहाँ बहुत से ब्राह्मण पुरोहित यांत्रिक रूप से किये गये धार्मिक अनुष्ठानों को व्यर्थ ही बढ़ावा देते थे।

दर्शन प्रोग्रामों में, बाबा कार्यकर्ताओं का मुखिया अक्सर इस बात का ध्यान रखता था कि जिस मंच पर बाबा बैठते थे, उसके एक ओर दीवार हो। लेकिन इस शहर में ऐसी कोई सावधानी नहीं रखी गई थी। मंच चारों ओर से खुला था और भीड़ बाबा के दर्शन करने के लिए अधीरता पूर्वक धक्के देकर आगे आ रही थी।

कुछ समय बाद, भीड़ का दबाव इतना अधिक बढ़ गया कि मण्डली बाबा की सुरक्षा के लिए भयभीत हो गई। हालांकि हम लोग हजारों लोगों की भीड़ की तुलना में बहुत कम संख्या में थे, फिर भी हमने भीड़ को दूर रखने के लिये अपने आपको तैयार किया।

इसी बीच बाबा खड़े हो गये और भीड़ को पीछे हटने का संकेत किया जैसे कि उनसे कह रहे हों कि अधीर होने की ज़रूरत नहीं है, हर एक को उनके पास आने का अवसर मिलेगा।

भीड़ का दबाव तुरंत कम हो गया और हजारों लोग शान्ति पूर्वक बैठे रहे। अपने आसन पर पुनः बैठने के बाद, बाबा ने माइक्रोफोन पर संदेश देने के लिए मुझे संकेत किया। भीड़ के लिये उनका संदेश था, ''मैं सभी धार्मिक रीतियों और अनुष्ठानों को खत्म करने के लिये आया हूँ।'' क्योंकि बाबा ने काफ़ी ज़ोर देकर संकेत किया था इसलिये मैंने उनके संदेश को उसी ढँग से व्यक्त किया।

मैंने माइक्रोफोन पर जैसे ही संदेश बोला, मैं चिन्तित हो गया क्योंकि मुझे लगा कि मैंने जो संदेश बोला था उससे भीड़ उत्तेजित हो जायेगी और फिर परेशानी होगी लेकिन जैसे ही यह विचार मेरे मन में आया, बाबा ने मुझे संकेत किया, ''चिन्ता मत करो।''

भीड़ शान्त रही और उस समय बाबा का प्रभुत्व स्पष्ट था। बाबा के

सन्देश के साथ कोई भी अविश्वास अथवा घृणा जन्म नहीं ले सकी और प्रत्येक व्यक्ति अपनी भावनाओं के अनुसार, बाबा की देन को अपने साथ ले गया।

• • •

lR;eo t;r

सन् १९५५ में दक्षिण भारत से एक मेहेरबाबा प्रेमी मेहेराज़ाद आया और प्रियतम बाबा के दर्शन के लिये प्रार्थना की। जैसे ही वह बाबा से मिला, वह बाबा के चरणों में गिर पड़ा और उनसे सहायता करने के लिये प्रार्थना की, ''बाबा मैं बहुत मुसीबत में हूँ। कृपया मेरी सहायता कीजिये।''

बाबा ने उसकी समस्याओं के बारे में पूछा और उसने कहा, ''मैं भारतीय रेल विभाग में काम करता हूँ और कुछ सहकर्मियों के साथ मुझ पर रेलवे का सामान चुराने का आरोप लगाया गया है।''

बाबा ने पूछा, ''क्या तुमने सचमुच कोई चीज़ नहीं चुराई है ?''

उस व्यक्ति ने कहा, ''नहीं बाबा, मैंने कोई चीज़ नहीं चुराई है।''

बाबा ने उससे फिर पूछा, ''फिर तुम क्यों डर रहे हो ?'' तुम्हें इतनी दूर आने की क्या जरूरत थी ? सत्य की हमेशा जीत होगी। तुम पर मेरी नज़र है। अब घर जाओ और निश्चिन्त रहो, कुछ नहीं होगा।''

फिर भी, कुछ हफ़्तों के बाद, समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ कि उन लोगों पर अदालत में मुकदमा चला और सबको सात साल के लिये कठोर कारावास की सज़ा मिली। जैसे ही मैंने यह समाचार सुना, मुझे आश्चर्य हुआ, ''बाबा कहते हैं कि वे मनुष्य रूप में ईश्वर हैं। उनका प्रेमी दक्षिण भारत से इतनी दूर उनसे सहायता की याचना करता हुआ आता है। वे उससे कहते हैं कि वे (बाबा) उसकी सहायता करेंगे, उनका प्रेम और कृपा उस पर है और सत्य की जीत होगी.... और फिर भी, इस सबके बावजूद उस व्यक्ति को सात साल के लिये कारावास की सजा हो गई है।'' इस प्रकार के विचार मेरे मन में आते रहे, लेकिन मैंने उन्हें बाबा के सम्मुख प्रकट नहीं किया।

लगभग दो महीने बाद, बाबा ने मुझसे कहा कि मैं दक्षिण भारत के उनके कुछ प्रेमियों को पत्र लिखकर उस व्यक्ति के जेल जाने और उसके परिवार के निराश्रित तथा बिना घर के होने की सूचना दूँ क्योंकि उस व्यक्ति के अपराधी सिद्ध होने पर, रेलवे अधिकारियों ने उसके परिवार को उस क्वार्टर से निकाल दिया था जिसमें वे रहते थे।

मैंने प्रेमियों को सूचना दी कि बाबा चाहते थे कि वे लोग इस परिवार को मकान दिलाकर और बच्चों की पढ़ाई का इन्तज़ाम करके उनकी सहायता करें। क्योंकि यह प्रार्थना बाबा की ओर से की गई थी, उनके सभी प्रेमियों ने इतनी अधिक तत्परता से कार्य किया कि वह परिवार उनकी सहायता से शीघ्र ही पुनः व्यवस्थित हो गया।

दो साल बाद उस व्यक्ति ने जेल से बाबा को पत्र लिखा और उसके परिवार के लिये बाबा ने जो कुछ किया था, उसके लिये उन्हें धन्यवाद दिया और जब सात साल बीत गये वह व्यक्ति जेल से मुक्त हो गया।

सन् १९६२ में, पूर्व–पश्चिम–मिलन के दौरान, यह व्यक्ति प्रियतम बाबा के दर्शन करने के लिये लाइन में खड़ा था और जब उसकी बारी आई तो वह बाबा के पास आया, उनके चरणों पर अपना माथा रखा और चला गया। बाबा ने तुरंत मुझे संकेत किया कि मैं उस व्यक्ति को वापस बुलाकर उसे मंच पर लाऊँ।

क्योंकि अब वह व्यक्ति बाबा के पास खड़ा था, बाबा ने कहा, ''अब तुम मुक्त हो !'' और उस व्यक्ति ने स्वीकार किया। तब बाबा ने उसे अपने और पास आने का संकेत किया और पूछा, ''अब मुझे सच सच बताओ क्या हुआ था ?'' उस व्यक्ति ने अपना अपराध स्वीकार किया और बताया कि उसने चोरी का सबसे अधिक सामान लिया था।

बाबा ने कहा, ''मैंने तुमसे कहा था, 'सत्य की हमेशा जीत होगी।' जब तुम मेहेराज़ाद आये थे, उस समय तुमने मुझसे सच क्यों नहीं बोला?'' और ऐसा कहकर बाबा ने उसके कान खींचे और आगे कहा, ''अब फिर कभी ऐसा मत करना। मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ।''

कुछ महीने बाद उस व्यक्ति ने मुझे लिखा कि बाबा की कृपा से रेल

अधिकारियों ने उसका अपराध क्षमा करके उसे फिर नौकरी पर वापस ले लिया था और सब कुछ ठीक था।

इस घटना से, उस व्यक्ति के अतिरिक्त मुझे भी लाभ हुआ क्योंकि अपने कार्य की गूढ़ रीति से, बाबा ने मेरे मन से परेशान करने वाले संदेहात्मक विचारों को निकाल दिया।

• • •

el gh drk g] el gh Qynkrk g

सन् १९५६ में, मैं सतारा के पास मेहेरबाबा को कार से ले जा रहा था और उस समय एक भयानक दुर्घटना हो गई। एकदम सुनसान सड़क पर हमारी कार अचानक सड़क के दूसरी ओर जाकर एक गड्ढे में गिर गई। उस समय वहाँ दूसरी कोई गाड़ी नहीं थी।

बाबा के सिर व चेहरे पर गंभीर चोटें आईं। उनकी जीभ कट गई और उनके दाहिने कूल्हे की हड्डी टूट गई थी। टूटी हुई हड्डी अपने स्थान से थोड़ा हट गई थी। मैं अंदर से टूट गया था और बहुत ही चिड़चिड़ा और उदास रहता था क्योंकि दुर्घटना के समय मैं कार चला रहा था। लेकिन बाबा मुझे बार बार तसल्ली देते थे। बाबा ने कहा, ''स्वयं को इस दुर्घटना के लिये ज़िम्मेदार मत मानो। यह मत भूलो कि सब कुछ मैं ही करने वाला हूँ और मैं ही फल देने वाला हूँ।''

डा. की रिपोर्ट में था कि बाबा अब कभी नहीं चल सकेंगे। मुझे बहुत दुख था और बाबा ने फिर मेरी उदासी को दूर किया। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया, ''डाक्टर चाहे कुछ भी कहें, मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि मैं फिर से चलूँगा।'' और अपने वचन के अनुसार, बाबा ने डॉक्टरों को झूठा साबित कर दिया और अपना शरीर छोड़ने तक वह चलते रहे।

मानव मन ऐसा है कि वह कभी भी संतुष्ट नहीं होता और मैं यह सोचकर अभी भी उदास रहता था कि बाबा चलते समय लँगड़ाते थे। एक दिन बाबा के अंग्रेज़ शिष्य, डॉक्टर विलियम डंकिन ईसामसीह के जीवन के बारे में एक किताब लेकर आये। यह रॉबर्ट ग्रेव्ज की जीवनी, ''किंग्स जेसस'' थी जिसमें यह बताया गया था कि अपने कूल्हे की चोट के कारण ईसामसीह लँगड़ाते थे।

इस पर बाबा ने कहा कि रावण के साथ युद्ध के समय राम के पैर में चोट लगी थी और कृष्ण की मृत्यु उनके पैर में चोट के कारण हुई। सभी अवतरणों में, पैर में हमेशा चोट लगती थी।

यह मुझे तसल्ली देने की दयालु बाबा की एक रीति थी और जिस घटना के लिये स्वयं को ज़िम्मेदार मानकर मैं इतने लम्बे समय से दुखी था, उसके लिये स्वयं को ज़िम्मेदार ठहराकर उन्होंने मेरी अपराध–भावना को दूर किया।

• • •

jke dk vUrjky

हालांकि मेहेरबाबा, सन् १९५६ में सतारा के पास हुई कार दुर्घटना में आई चोटों से अभी भी पीड़ित थे, फिर भी सन् १९५८ में उन्होंने आस्ट्रेलिया में वूमबाई (Woombye) और दक्षिण कैरोलिना में मिरटिल बीच में अपने प्रेमियों को सहवास देने की अपनी घोषणा के अनुसार कार्य करने का निश्चय किया।

हमारे हवाई जहाज को रास्ते में लगभग चार घण्टे तक रोम के हवाई अड्डे पर रुकना था। डॉक्टर डंकिन इटली की भाषा बोलते थे इसलिये बाबा ने उनसे कहा कि वे हवाई जहाज के चालक (Pilot) कर्मचारियों की मदद से हवाई अड्डे में उनके लिये एक अलग कमरे में आराम करने की व्यवस्था करा दें। डॉक्टर डंकिन ने कमरे की व्यवस्था करके बाबा को सूचना दी।

हवाई जहाज से उतरने के बाद, बाबा को तुरंत एक पहिये वाली कुर्सी में बिठाया गया, जो उनका इन्तज़ार कर रही थी लेकिन डॉ. डंकिन का कहीं भी पता नहीं था। अचानक हमने एक रोगी को ले जाने वाली गाड़ी (Ambulance) की घंटी की आवाज़ सुनी; लेकिन हमने यह सोचकर कि हवाई अड्डे पर कोई दुर्घटना हुईं होगी, इस पर उस समय तक कोई ध्यान नहीं दिया जब तक यह हमारे पास आकर, पीछे चलकर ठीक उस स्थान पर खड़ी नहीं हो गई जहाँ बाबा बैठे थे। दो आदमी स्ट्रेचर लिये हुये जल्दी से बाहर निकले और इसे बाबा की कुर्सी के सामने ज़मीन पर रख

दिया और यह स्पष्ट था कि उनके मन में बाबा की सेवा करने का विचार था।

उस समय बाबा के पास केवल मैं था और मैं इटली की भाषा नहीं बोलता था। मैं जानता था कि ''सी'' (si) का अर्थ था ''हाँ'', लेकिन मैं यह नहीं जानता था कि ''नहीं'' कैसे कहा जाय। इसलिये मैं पागल की तरह ''नी, सी, नी, सी'' (Ni, Si) चिल्लाने लगा लेकिन वे लोग इसके विपरीत ''सी, सी,'' कहने लगे और उन्होंने बाबा को कुर्सी से उठाकर स्ट्रेचर पर लाद दिया। बाबा ने परेशान होकर मेरी ओर देखा लेकिन मैं, जो कुछ हो रहा था, उससे बहुत ही घबरा गया था। मैंने उन लोगों को यह बताने की भरसक कोशिश की कि बाबा केवल थोड़ा सा आराम चाहते थे लेकिन मैं उन लोगों को बाबा को ले जाने से रोक न सका। हम लोगों को अस्पताल ले जाया गया। एक डॉक्टर ने सैनिक संस्थान में, जहाँ रोगी की गाड़ी को लाया गया था, हमारा स्वागत किया और कुछ परिचारिकाओं (Nurses) ने बाबा की कुछ जाँच शुरू कर दी।

भाग्य से डॉक्टर अंग्रेज़ी बोलता था इसलिये मैंने उसे बताया कि क्या भूल हुई थी। बाबा के लिये सबसे अच्छा इन्तज़ाम करने की उत्सुकता में, डॉक्टर डंकिन ने अतिशयोक्ति का सहारा लिया था और अस्पताल के कर्मचारियों पर यह प्रभाव पड़ा था कि बाबा की हालत बहुत गंभीर थी। डॉक्टर को यह समझ में आ गया था कि हमें अपनी यात्रा ज़ारी रखनी थी और बाबा ने अस्पताल के कमरे में उस समय तक आराम किया जब तक रोगी को ले जाने वाली गाड़ी हमें वापस हवाई अड्डे तक नहीं ले गई।

वहाँ हमें डॉ. डंकिन और मेहेर जी चिन्तित मिले। उन्हें आश्चर्य हो रहा था कि बाबा कहाँ गये। डॉ. डंकिन ने बताया कि वह देखने के लिये दौड़ गये थे कि बाबा के लिये उचित व्यवस्था हुई या नहीं और उन्होंने बाबा से इसके लिये क्षमा याचना की कि उनके न रहने पर उन्हें (बाबा को) अस्पताल ले जाया गया था।

यह घटना उन बहुत सी घटनाओं में से एक है जो हमारी बाबा के साथ की गई यात्राओं के दौरान हुईं। उनमें से कुछ आनन्दपूर्ण थीं जबकि दूसरी व्याकुल करने वाली और कष्टपूर्ण थीं।

• • •

fopkjk d vknku&inku e dkbl ck/kk ugh

सन् १९५६ में, एक दिन हम लोग एक विदेशी हवाई अड्डे की सीढ़ियों से ऊपर जा रहे थे। मेहेरबाबा धीरे धीरे चल रहे थे क्योंकि उनके एक पैर में प्लास्टर चढ़ा हुआ था और मैं उनके पास ही पीछे पीछे चल रहा था। जब हम आधी सीढ़ियाँ चढ़ चुके, एक व्यक्ति ने मेरा कंधा थपथपाकर पूछा, ''मैं रोमानियाँ का रहने वाला हूँ। क्या वे मेहेरबाबा हैं ?'' मैंने उत्तर में सिर हिलाकर इशारा किया।

उसने पूछा, ''क्या वे रोमानियाँ की भाषा बोलते हैं ?''

मैंने उत्तर दिया, ''नहीं, वे रेमानियाँ की भाषा नहीं बोलते हैं।''

बाबा इस बातचीत को सुन रहे थे और उसी समय उन्होंने संकेत किया, ''यद्यपि मैं रोमानियाँ की भाषा नहीं बोलता हूँ, मैं जानता हूँ कि तुम क्या पूछना चाहते हो और मुझे जो कुछ कहना है, तुम जान जाओगे।''

''मैं बहुत प्रसन्न हूँ,'' उस व्यक्ति ने कहा और चला गया।

एक दूसरे अवसर पर, जब मैं एक मस्त यात्रा के दौरान एक पहाड़ी पर बाबा को कार चलाकर ले जा रहा था, एक चाय की दुकान ने हमारा ध्यान अपनी ओर खींचा। मैंने कार खड़ी की और हम सब चाय पीने गये लेकिन बाबा आराम करने के लिये कार में ही रहे। हमारे साथ भाऊ भी था जो अभी हाल ही में बाबा का शिष्य बना था और इसीलिये उसे बाबा के संकेतों को समझने का अधिक अभ्यास नहीं था।

मैंने भाऊ को बाबा के लिये एक कप चाय दी जिन्होंने चाय लेकर कुछ संकेत किये जिन्हें वह समझ नहीं सका। बाबा के बार बार संकेत करने के बावजूद, भाऊ उनका मतलब नहीं समझ सका।

उसी समय, कुछ दूरी पर एक पेड़ के नीचे बैठे हुये गाँव के एक व्यक्ति ने पुकारकर कहा, ''तुम उनकी ओर घूर कर क्या देख रहे हो ? वह अपनी चाय में दूध और चाहते हैं।'' और जब बाबा ने इस बिन माँगे मिली सहायता को सिर हिलाकर स्वीकार किया, भाऊ समझ गया और दूध डलवाने के लिये चाय की दूकान पर वापस आया। उसने हमें यह घटना मज़ाक के रूप में सुनाई।

● ● ●

ckck vkj oKkfud

यह कहानी निरंजन सिंह की है जो दिल्ली कालेज के प्रधानाचार्य, वैज्ञानिक और विद्वान पुरुष थे। वे बाबा से उस समय मिले थे जब उन्होंने (बाबा ने) दिल्ली में एक बार सार्वजनिक सभा की थी।

समय समय पर बाबा उन्हें अपने पास आने की अनुमति देते थे। बुद्धिवादी होने के कारण वे प्रायः प्रश्न पूछते थे जिनका उत्तर बाबा इच्छानुसार देते थे और उनसे हम लोगों को भी लाभ होता था। ये उत्तर बाद में ''सबकुछ और कुछनहीं'' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुये।

पुस्तक प्रकाशित होने के एक दिन बाद, निरंजन सिंह बाबा के पास आये और शिष्यों के साथ उनके सामने बैठे। बाबा ने उनसे फिर से मिलने पर अपनी खुशी ज़ाहिर की और उनके परिवार के बारे में पूछा। कुछ समय बाद बाबा ने फ्रांसिस ब्रेबेजोन से कहा, ''जाओ और वह किताब लेकर आओ जो निरंजनसिंह के कारण प्रकाशित हुई है।'' फ्रांसिस ने बाबा को पुस्तक लाकर दे दी। बाबा ने कुछ पन्ने पलटने के बाद निरंजनसिंह से कहा, ''यह तुम्हारे प्रयत्नों का परिणाम है। तुमने ये सब प्रश्न पूछे और बहुत से पाठकों को इस किताब से लाभ होगा। पिछली बार जब तुम यहाँ थे, तुमने कहा था कि तुम पूरी तरह से संतुष्ट हो और यह भी कहा था कि अब पूछने के लिये कुछ नहीं है।''

निरंजनसिंह ने गहरी सांस ली। अपने चेहरे पर खुशी का कोई भी चिन्ह लाये बिना उन्होंने किताब की ओर देखा जबकि हम उनके इस मनोभाव को देखकर आश्चर्य चकित हुये क्योंकि उनके चेहरे पर अभी भी कोई भाव नहीं था।

बाबा ने पूछा, ''क्या बात है। क्या तुम इस किताब को देखकर खुश नहीं हो ?''

निरंजन सिंह ने उत्तर दिया, ''जब मैं पिछली बार आपसे मिलकर गया, मैं बहुत प्रसन्न और संतुष्ट था। मेरा मन शान्त था क्योंकि मैंने वे सभी प्रश्न पूछ लिये थे जो मुझे परेशान करते थे और आपने मुझे अपने उत्तरों से पूर्णरूप से संतुष्ट कर दिया था। जब मैं यहाँ से अहमदनगर रेलवे स्टेशन के लिये चला, मैं वास्तव में अत्यंत आनंदित था।''

बाबा ने आग्रह के साथ पूछा, “तब क्या तुम खुश नहीं हो कि तुम्हारे सभी प्रश्नों के उत्तर तुम्हें मिल गये हैं?”

निरंजनसिंह ने कहा, “हाँ, बाबा। आपने मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर दे दिये थे लेकिन जब मैं गाड़ी में बैठा, मेरे इस सरपट भागते मन में एक बार फिर से भ्रमित करने वाले प्रश्न आने लगे।”

बाबा ने पूछा, “अब तुम किस भ्रम में हो ?”

निरंजन सिंह ने कहा, “मेरे मन में यह विचार आया : बाबा कहते हैं कि वे इस रूप में अनन्त चेतना हैं। लेकिन अनन्तता सीमा में कैसे बँध सकती है ? बाबा, मैं इस भ्रम से परेशान हूँ। ऐसा किस प्रकार संभव है?”

बाबा ने कहा, “क्या केवल यही बात तुम्हें भ्रमित किये हुये है ? देखो, मैं इस सृष्टि का निर्माता हूँ और फिर भी ऐसी बहुत सी बातें हैं जो मुझे भ्रमित किये रहती हैं। तुम एक वैज्ञानिक होने के कारण, शायद मुझे उन बातों को अच्छी तरह समझा सकते हो। मुझे बताओ, उस खुले दरवाजे के बाहर क्या तुम्हें कुछ दिखाई देता है ?”

“हाँ, बाबा ! मुझे सैंडिलें दिखाई देती हैं।”

“और कुछ ?”

“हाँ, पेड़ और ज़मीन दिखाई देते हें।”

“तुम्हें और क्या दिखाई देता है ?”

“हाँ, मुझे जानवर चरते हुये दिखते हैं।”

“तुम और क्या देखते हो ?”

“लोग इधर उधर चल रहे हैं।”

“तुम और क्या देखते हो ?”

‘बाबा, पहाड़ियों की एक पंक्ति दिखाई देती है।”

“और कुछ ?”

“मुझे बादल दिखाई देते हैं।”

बाबा ने कहा, “इससे मैं भ्रमित हो जाता हूँ। तुम्हारी ये नन्हीं सी आँखें इतनी अधिक विशालता को अपने घेरे में किस प्रकार ले लेती हैं।

यह कैसे संभव है ? मैं भ्रम में पड़ जाता हूँ कि तुम्हारी आँख का यह छोटा सा आइरिस इतनी विशालता को अपने में कैसे समा लेता है ?”

निरंजनसिंह समझ गये और मौन बैठे रहे।

• • •

okLrfod nf"V

११ अप्रैल, १९५९ को मेहेरबाबा को पूना में अंधे बच्चों के लिये स्थापित एक संस्था ने निमंत्रित किया और वे सुबह ६ बजे स्कूल गये जहाँ वे लगभग ५०० अंधे विद्यार्थियों और लगभग एक दर्जन अंधे शिक्षकों से मिले और उनका आलिंगन किया।

लड़कों ने गाने गाये और बाबा का स्वागत किया। बाबा उनके प्रेम से बहुत प्रसन्न हुये। तब बाबा ने उनसे कहा, “लोग अक्सर यह सोचते हैं कि अंधे लोग अभागे होते हैं और तुम भी कभी कभी ऐसा सोचते होगे। लेकिन वास्तव में वे लोग अभागे हैं जिनके नेत्रों में दृष्टि होती है।”

वह कहते गये; “लोग सोचते हैं कि वे जो वस्तुयें देखते हैं, वे सब सत्य है। लेकिन वे ईश्वर को कभी नहीं देखते जो एकमात्र सत्य है। वे सभी लोग जो ईश्वर को नहीं देखते, अंधे हैं, क्योंकि एकमात्र ईश्वर ही देखने योग्य है। इसलिये वे लोग भी, जिनके पास भौतिक दृष्टि है, उन लोगों की अपेक्षा अधिक अंधे हो सकते हैं जो भौतिक रूप से अंधे हैं और जिनके हृदय में ईश्वर के प्रति प्रेम है। आज मैं तुम्हारा अपने प्रेम के साथ आलिंगन करता हूँ ताकि किसी दिन तुम्हें वास्तविक दृष्टि प्राप्त हो सके और तुम मुझे हर जगह देख सको।”

• • •

gkfu e! ykHk

दर्शन यात्राओं के दौरान मैं मेहेरबाबा के संकेतों की व्याख्या करने में काफी समय बिताता था लेकिन अक्सर वे मुझे कुछ विशेष व्यक्तियों को संदेश देने के लिये भेजते थे और बाबा से दूर होने पर, लोग मुझसे बहुत से प्रश्न करते थे जैसे कि, मैं बाबा के साथ कितने सालों से था और एक

प्रश्न सभी लोग ज़रूर पूछते थे, 'इतने सालों तक मेहेरबाबा के साथ रहकर आपको क्या मिला ?'' मैं बहुत अधिक परेशान हो जाता था क्योंकि इस अंतिम प्रश्न का उत्तर मैं कभी नहीं दे सका।

एक दिन बाबा ने मुझे बहुत परेशान देखकर, मेरी परेशानी का कारण पूछा। मैंने उन्हें इस प्रश्न के बारे में बताया जिसका उत्तर देने में मैं असमर्थ था।

तब बाबा ने कहा, ''तुम इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रहे हो, क्योंकि यह प्रश्न ठीक नहीं है। प्रश्न यह नहीं होना चाहिए कि 'मेरे साथ रहकर तुम्हें क्या मिला ?' बल्कि यह होना चाहिये कि 'तुमने क्या खोया ?'

तब मुझे बाबा की बात समझ में आने लगी जो वे अक्सर कहते थे, ''याद रखो, जो कोई मेरे साथ दोस्ती करता है, वह सब कुछ, यहाँ तक कि स्वयं को भी खो देता है।''

वह इस बात को इस तरह भी कहते थे, ''जब तुम जाते हो, तब मैं आता हूँ।''

• • •

,d >yd i;kIr g

कई वर्षो तक मैं सैकड़ों, हजारों लोगों को, अवतार मेहेरबाबा की पास से एक झलक पाने के लिये, लम्बी कतारों में खड़े हुये देखता था। उन कतारों में मातायें होती थीं जो अपनी गोद में बच्चे और हाथों में मुरझाये हुये हार लिये रहती थीं और उनमें से कुछ लम्बे समय तक इन्तज़ार करने से बेहोश भी हो जाती थीं। अन्त में, जब वे बाबा के पास पहुँचती थीं, मुश्किल से केवल थोड़े समय उनके पास रहने के बाद, उन्हें जाना पड़ता था।

कुछ वर्षों तक यह देखने के बाद और इससे दुखी होकर, मैंने बाबा से पूछा, ''बाबा, आप उन्हें अधिक समय क्यों नहीं देते हैं ? वे कई घण्टे तक खड़े रहते हैं और पुरस्कार स्वरूप उन्हें आपकी बहुत थोड़ी सी झलक प्राप्त होती है।''

बाबा ने उत्तर दिया, ''झलक ! मेरी केवल झलक ही एक जीवनकाल के लिये पर्याप्त है।''

मैंने आग्रह किया, ''लेकिन बाबा, आप दर्शन का समय बढ़ा क्यों नहीं देते ?''

उन सुंदर और दयाभरी आँखों से मेरी ओर देखते हुये, बाबा ने उत्तर दिया, ''एक समय आयेगा जब मैं एक स्थान पर नहीं रहूँगा। मैं उन्हें हजारों स्थानों पर हजारों रूप में दिखाई दूँगा। मैं उन्हें उनके घरों में दर्शन दूँगा; लेकिन इस समय मेरी केवल एक झलक ही पर्याप्त है।''

दक्षिण कैरोलिना में, मिरटिल बीच केन्द्र की एक यात्रा के दौरान, बाबा ने अपने चारों ओर सभी प्रसन्न चेहरे देखे और जब वे उन्हें प्रसाद दे रहे थे, उन्होंने लोगों से कहा, ''तुम्हारी प्रसन्नतापूर्ण हँसी सुनकर और यह देखकर कि मेरे पास आकर तुम लोग कितने अधिक प्रसन्न हो, मैं बहुत खुश हूँ। दुनियाँ में हजारों साधक ऐसे हैं जो मेरी एक झलक के लिये तरसते हैं; लेकिन तुम लोग सचमुच भाग्यशाली हो जो मेरे साथ यहाँ पर हो।''

हम सबके लिये यही समय है कि हम उनके लिये अपनी तड़प को बढ़ायें और तब वे स्वयं को प्रकट करेंगे।

• • •

eDdk vkj dkck ,d gh e lek;s g;s g

एक दिन एक बहुत ही बूढ़ा मुसलमान मेहेरबाबा के दर्शन के लिये गुरुप्रसाद, पूना आया। वह लम्बा कोट और टोपी पहने हुये था। वह इतना अधिक कमज़ोर था कि उसके साथ आये हुये दो व्यक्तियों को उसकी मदद करनी पड़ रही थी।

बाबा ने उसकी ओर देखकर कहा, ''आप बूढ़े हो गये हैं। अब आपको चिन्ता नहीं करना चाहिये बल्कि अल्लाह की याद करनी चाहिये।''

बाबा को 'हज़रत' कहकर संबोधित करते हुये, उस व्यक्ति ने दुखी होकर कहा, ''हज़रत, मैं चिंतित हूँ। मैं बूढ़ा हो गया हूँ लेकिन मैं काबा

की परिक्रमा करने के लिये मक्का नहीं जा पाया हूँ। मेरी यह तीव्र आकांक्षा रही है और मुझे डर है कि यह पूरी नहीं हो पायेगी।''

इस पर, बाबा ने सहायकों से प्रार्थना की कि वे उस बूढ़े व्यक्ति को सहारा दें। बाबा ने उस व्यक्ति से उनकी कुर्सी के चारों ओर सात बार चलने के लिये कहा और उसने ऐसा ही किया।

बाबा ने उससे कहा, ''अब आपको मक्का जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। आपकी हज यात्रा (तीर्थयात्रा) पूरी हो गई।''

ऐसा कहने के बाद, बाबा ने प्रेमपूर्वक उस व्यक्ति को गले लगाया।

• • •

og 0;fDr tk egjckck dh vkKk dk ikyu ugh dj ldk

मेहेरबाबा ने कहा है कि प्रेम ईश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई देन है, आज्ञाकारिता सद्गुरु द्वारा मनुष्य को दी गई देन है और समर्पण हमारे द्वारा गुरु को दी गई भेंट है।

देहरादून में एक परिवार था जो मेहेरबाबा के प्रति पूर्णरूप से समर्पित था और बाबा के वहाँ जाने पर वह परिवार उनके साथ अपना समय व्यतीत करता था। बच्चे आते थे और खेलते थे और वे मंडली का ही एक हिस्सा बन चुके थे। जब बाबा देहरादून से चले, वे लोग अत्यंत व्याकुल और उदास थे—पूरे परिवार की आँखों में आँसू थे।

कई वर्ष बीत गये और बाबा और उनकी मंडली अब दक्षिण भारत में थे। इस विशेष अवसर पर बाबा ने अपने आपको महिला और पुरुष मंडली से अलग कर लिया था और वे अपना विश्वव्यापी कार्य करते हुये एक छोटी झोपड़ी में एकान्त में रहते थे। हम सब मंडली जन बाहर पहरा देते थे और प्रतिदिन सुबह अलोबा, बाबा को उनके निवास–स्थान से इस छोटी सी झोपड़ी तक अपने साथ लेकर आता था।

एक दिन अलोबा जब बाबा को उनके बँगले पर छोड़कर वापस आ रहा था, उसे सड़क पर इस परिवार का मुखिया मिला जिससे देहरादून

में हमारी काफी घनिष्ठता हो गई थी। अलोबा ने अत्यंत आश्चर्य के साथ उससे पूछा, ''तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? क्या तुम्हें बाबा का गश्ती पत्र नहीं मिला कि वे दर्शन नहीं दे रहे हैं ?''

१५०० मील की दूरी तय करने के पश्चात्; थके हुये उस व्यक्ति ने कहा, ''क्या बाबा यहाँ हैं ?'' अलोबा ने कहा, ''हाँ, बाबा यहाँ हैं लेकिन वे किसी से मिलते नहीं हैं।'' उस व्यक्ति ने कहा, ''बाबा का प्रेम मुझे उनकी केवल एक झलक प्राप्त करने के लिये यहाँ तक खींच लाया है। मेरा दिल उनके लिये तड़प रहा है। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि कृपा करके मुझे उनको एक नज़र देख लेने दो।''

उस व्यक्ति को प्रियतम बाबा की केवल एक झलक पाने के लिये गिड़गिड़ाते देखकर, अलोबा का दिल पिघल गया और उसने उस व्यक्ति से कहा कि वह अगले दिन उसी स्थान पर रहे। अलोबा ने कहा, ''तुम दूर खड़े होकर बाबा को देखना और तुरंत चले जाना।'' उस व्यक्ति ने अलोबा को धन्यवाद देते हुये उसकी आज्ञा के अनुसार काम करना स्वीकार किया।

अगले दिन सुबह, जब अलोबा बाबा को झोपड़ी तक ले जा रहा था, अचानक बाबा ने दूर सड़क के मोड़ पर उस व्यक्ति को खड़े देखा। बाबा ने अलोबा की ओर देखकर पूछा, ''यह व्यक्ति यहाँ क्यों है ? क्या तुमने उसे बताया है ?'' बाबा सड़क के बीच में रुक गये थे। अलोबा ने उन्हें बताया कि उस व्यक्ति का बाबा के प्रति प्रेम उसे यहाँ खींच लाया था और वह अपने प्रियतम की केवल एक झलक प्राप्त करना चाहता था। अलोबा ने कहा कि वह व्यक्ति जिद कर रहा था कि उसका बाबा के प्रति प्रेम उसे यहाँ खींच लाया था।

बाबा ने मुस्कराकर उस व्यक्ति को संकेत से बुलाकर कहा, ''तुम जानते हो कि अपने इस कार्य के दौरान मैं किसी से नहीं मिलता हूँ। फिर भी तुमने आने की कोशिश क्यों की ?''

उस व्यक्ति ने फिर से वही बात दोहराई कि यह उसका बाबा के प्रति प्रेम था जो उसे यहाँ खींच लाया था। उसने कहा, ''आपका प्रेम मुझे यहाँ लाया है। मैं प्रेम के कारण आया हूँ।''

तब बाबा ने कहा, ''तुम खुश हो कि तुमने मुझे देख लिया है। अब तुम वापस जा सकते हो।'' लेकिन वह व्यक्ति रुका रहा और तब उसने बाबा से कहा, ''मैं बहुत कठिनाई में हूँ क्योंकि मेरे सामने कई समस्यायें हैं।''

यह सुनकर बाबा अलोबा की ओर मुड़े और संकेत किया, ''यह प्रेम के कारण आया है।'' फिर भी वह व्यक्ति कहता गया, ''बाबा मेरे ऊपर छः मुकदमे चल रहे हैं, मेरी पत्नी को तपेदिक (टी.बी.) हो गया है, मेरी बेटी की शादी तय हो गई थी लेकिन रिश्ता टूट गया और मेरे सामने दूसरी कई समस्यायें हैं। बाबा, कृपा करके मुझे आशीर्वाद दीजिये क्योंकि मैं इतनी सारी समस्याओं से घिरकर व्याकुल हूँ।''

एक बार पुनः बाबा ने अलोबा की ओर मुड़कर संकेत किया, ''यह प्रेम के कारण आया है।'' और अलोबा बहुत व्याकुल हो गया।

बाबा ने उस व्यक्ति को सान्त्वना दी और उससे कहा कि वह अपने साथ उनका प्रेम ले जाये। फिर उन्होंने आगे कहा, ''तुम इन समस्याओं के बारे में इतनी चिंता क्यों करते हो ? जिस चीज़ का प्रारम्भ है, उसका अंत भी होना चाहिये। मैं तुम्हारे साथ हूँ।''

उस व्यक्ति ने जिद की, ''बाबा, आपको मुझे आशीर्वाद देना होगा ताकि मैं अपनी सभी परेशानियों से छुटकारा पा सकूँ।''

बाबा ने कहा, ''मुझसे मेरा आशीर्वाद मत माँगो। मैं अपना 'कार्य' कर रहा हूँ। एक तो तुम्हें यहाँ पर होना नहीं चाहिये। अब क्योंकि तुम आ गये हो, तो वापस जाओ और अपने साथ मेरा प्रेम ले जाओ। अपनी समस्याओं का बहादुरी से सामना करो और याद रखो कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।''

उस व्यक्ति ने हठ किया, ''बाबा, मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। कृपा करके मुझे अपना आशीर्वाद दीजिये।''

बाबा ने धैर्यपूर्वक उसे समझाया कि उसके लिये उनका प्रेम लेकर जाना अधिक मह त्वपूर्ण था और उसे उनके आशीर्वाद के लिये ज़िद नहीं करना चाहिये।

उस व्यक्ति ने कहा, ''बाबा, केवल आपका आशीर्वाद ही मेरी समस्याओं को सुलझा सकता है।'' अन्ततः बाबा ने कहा, ''अगर तुम मेरा

आशीर्वाद चाहते हो, तो तुम मुझे खो दोगे।'' लेकिन उस व्यक्ति ने तर्क किया, ''जब मैं आपसे इतना अधिक प्रेम करता हूँ, मेरे लिये आपको खोना किस प्रकार संभव है। मेरे लिये आपको भूल जाना असंभव है।''

बाबा ने कहा, ''इसीलिये मैं तुमसे मेरा प्रेम लेकर वापस जाने को कह रहा हूँ। तुम्हारे साथ मैं हूँ, मेरा प्रेम है। अब शान्तिपूर्वक जाओ, चिन्ता मत करो।''

उस व्यक्ति ने कहा, ''लेकिन मेरे लिये आपका आशीर्वाद आवश्यक है।'' तब बाबा झुके और उस व्यक्ति के पैरों पर कई बार अपना मस्तक रखकर उससे जाने की प्रार्थना की लेकिन वह व्यक्ति बाबा का आशीर्वाद माँगता रहा।

तब बाबा ने कहा, 'ठीक है, मैं तुम्हें अपना आशीर्वाद देता हूँ लेकिन तुम मुझे खो दोगे। मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ। अब जाओ।''

अन्ततः वह व्यक्ति चला गया, लेकिन वह बाबा के दर्शन के लिये फिर कभी नहीं आया और बाबा के शरीर छोड़ने के बाद, न ही कभी समाधि में आया।

बाबा से दूर रहकर उनकी आज्ञा का पालन करना, जब उनकी ऐसी इच्छा हो, उनके साथ रहने के समान है। लेकिन ऐसे समय पर उनके साथ रहने की ज़िद करना, उनकी आज्ञा का उल्लंघन करना है और इस प्रकार हम उन्हें खो देते हैं।

इस कहानी का अन्त यह है कि देहरादून का यह व्यक्ति अपने सभी मुकदमें जीत गया, उसकी पत्नी का तपेदिक ठीक हो गया, उसकी बेटी का विवाह एक अच्छे परिवार में हो गया और वह स्वयं एक समृद्ध व्यापारी बन गया। अन्ततः, उसकी लड़की बाबा की समाधि पर माथा टेकने आई और हमने उसके पिता के बारे में पूछा। उसने पूरी कहानी सुनाई और कहा कि बाबा के साथ उस भेंट के पश्चात्, उसके पिता ने बाबा के बारे में उन लोगों से कभी भी बात नहीं की। स्पष्ट था कि उसे बाबा का आशीर्वाद मिला, लेकिन अन्त में उसने बाबा को खो दिया।

• • •

ckck vkj cãokn dh vu;k;h

एक दिन मेहेरबाबा के दर्शन के लिये बहुत से लोग गुरुप्रसाद बंगला में आये थे और उनमें से एक प्रसिद्ध ब्रह्मवाद की अनुयायी (Theosophist) थी जो मेहेरबाबा के पास पहली बार मात्र उत्सुकतावश आई थी।

मेरा काम था कि मैं बाबा के आने से पहले प्रत्येक व्यक्ति को बड़े कमरे में बिठाऊँ और उनके आराम का ध्यान रखूँ। जिस समय मैं यह कार्य कर रहा था, मैंने ब्रह्मवाद की अनुयायी को अपने साथी से यह कहते सुना, ''अगर मेहेरबाबा स्वयं को मनुष्य रूप में ईश्वर कहते हैं तो उन्हें इन सब लोगों को अपने पास एकत्र करने की क्या ज़रूरत है ?'' उसने अपनी बात मुश्किल से समाप्त ही की थी जब बाबा कमरे में आये और मैंने जल्दी से उनके पास जाकर, उन्हें आराम से बिठा दिया।

बाबा ने कमरे में चारों ओर यह देखने के लिये निगाह दौड़ाई कि प्रत्येक व्यक्ति आराम से बैठा था और तब उन्होंने लोगों को संबोधित करना शुरू किया। उन्होंने कहा, ''मैं तुम सबको यहाँ देखकर प्रसन्न हूँ, लेकिन मुझे आश्चर्य है कि तुम सब यहाँ क्यों एकत्र हुये हो। तुम मेरे दर्शन के लिये आये हो, पर मैं हर जगह हूँ; क्योंकि अगर मैं ईश्वर हूँ तो मुझे सब जगह होना चाहिये। इसलिये तुम लोगों ने इतनी गर्मी में यहाँ आने की इतनी अधिक परेशानी क्यों उठाई ?''

वह कहते रहे, ''फिर भी मैं समझता हूँ। यह तुम्हारा प्रेम है जो तुम्हें मेरे पास खींचकर लाता है और मैं उस प्रेम से बहुत खुश हूँ। उसी प्रेम के कारण सब कुछ घटित होता है। मैं तुम्हें अक्सर यह बताता हूँ कि मैं ईश्वर हूँ, लेकिन मैं मनुष्य भी हूँ और मैं मनुष्यों के बीच में मनुष्य के रूप में आया हूँ। मैं क्यों आया हूँ और मैंने तुम्हें आज क्यों बुलाया है ? मैंने तुम्हें इस बात का ज्ञान कराने के लिये बुलाया है कि तुम्हें मेरे पास नहीं आना चाहिये क्योंकि जब तक मैं तुम्हें बुलाता नहीं हूँ, तुम यह किस प्रकार जान सकोगे कि मेरे पास तुम्हारे आने की ज़रूरत है ?''

जबकि प्रत्येक व्यक्ति को इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि बाबा ने अचानक इस विषय पर अपने विचार क्यों प्रकट किये थे, मैं जानता था कि ये विचार ब्रह्मवाद की अनुयायी के लिये थे जो अपने मन में संदेह

लेकर आई थी और बाबा उसके प्रश्नों के उत्तर दे रहे थे। ऐसी मेहेरबाबा की अगाध रीतियाँ थीं।

• • •

egjckck dk vL=

आपने हिन्दू देवी, देवताओं की मूर्तियाँ और चित्र देखे होंगे जिसमें उनके हाथों में भाला, तलवार अथवा अन्य शस्त्र रहते हैं।

लेकिन, मेहेरबाबा का अस्त्र अज्ञानता थी जिसका प्रदर्शन वे हमें यह विश्वास दिलाने के लिये करते थे कि वे कुछ नहीं जानते थे। इस दैवी दिखावे में, जिसके कारण उनसे संबंध स्थापित करना सरल होता था, वे अजनबी लोगों से प्रेमपूर्वक प्रश्न पूँछते थे और इसके बदले में एक अच्छे और विश्वसनीय मित्र की भाँति उनका प्रेम बाबा की ओर प्रवाहित होता था।

सन् १९६० में, गुरु प्रसाद पूना में बाबा ने मुझे बताया, ''मुझे ज्ञान और अज्ञानता की दोहरी भूमिका एक ही समय पर, एक साथ निभानी पड़ती है क्योंकि मैं ऊँचे और नीचे दोनों ही धरातल पर हूँ। हालांकि मैं जानता हूँ कि कोई ख़ास घटना किसी ख़ास महीने में घटने वाली है, फिर भी मैं इस तरह योजनायें बनाता हूँ जैसे कि वह घटना आने वाले कई वर्षों तक नहीं घटेगी।''

दो दिन बाद उन्होंने कहा, ''यह कहना कि 'मैं जानता हूँ कि मैं नहीं जानता' अज्ञानता का ज्ञान है। यहाँ तक कि स्थूल भूमिका पर भी, ज्ञान और अज्ञानता एक ही समय पर, एक साथ प्रकट होते हैं। उदाहरण के लिये, एरच ईश्वर और मनुष्य दोनों हैं। लेकिन, उसे इस बात का ज्ञान है कि वह मनुष्य है, पर वह इस सत्य से अनजान है कि वह ईश्वर है।''

• • •

,d vk[k dk vuqeku djus okyk

मेहेराबाद में हमें हमेशा पानी की कमी के कारण परेशानी होती थी और एक बार जब यह कमी वास्तव में बहुत अधिक हो गई तब मेहेरबाबा के सामने जमीन में छेद करके (बोरिंग) कुआँ खोदने की प्रार्थना की गई।

उस समय बाबा मंडली के साथ गुरुप्रसाद, पूना में थे लेकिन काका और पादरी मेहेराबाद की देखभाल कर रहे थे और आदी अहमदनगर में अपने आफ़िस में थे। उनसे अपनी समझ के अनुसार कोशिश करने के लिये कहा गया था और काफ़ी खोजबीन करने के बाद, उन्हें ज़मीन के अंदर पानी का अनुमान करने वाले एक आदमी का पता चला और उसे मेहेराबाद लाया गया।

पानी का अनुमान लगाने वाले उस व्यक्ति पर, जिसकी एक आँख में रोशनी नहीं थी, एक नज़र डालने के बाद काका ने उसे नापसंद कर दिया। सब लोगों ने काका को समझाया कि उसकी यह कमी उसके काम में बाधा नहीं थी, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

उस व्यक्ति ने किसी तरह से अनुमान द्वारा कुआँ खोदने के लिये एक जगह को चुना। आदी ने ज़मीन में छेद करने वाली मशीन (Drilling Machine) का आर्डर दिया जो बहुत लम्बे इन्तज़ार के बाद मेहेराबाद आई। ज़मीन में छेद करने का काम शुरू हुआ और कुआँ गहरा होता चला गया। क्योंकि वहाँ पानी होने का कोई भी संकेत नहीं मिल रहा था, इसलिये काका और पादरी ने काम रोक देने के लिये कहा और आदी को सूचना दी। ज़मीन में छेद करने वाली मशीन बड़ी मुश्किल से मिली थी अतः आदी इसे जल्दी छोड़ने के लिये तैयार नहीं थे। इसलिये उन्होंने बाबा से पूछने के लिये फ़ोन किया।

बाबा ने आज्ञा दी कि वे पचास फुट ज़मीन और खोदें। बाबा की आज्ञा के अनुसार खुदाई करने से उन्हें पानी मिला।

• • •

egjckck dh lqx/k

मेहेरबाबा के एकान्तवास का लम्बा समय समाप्त होने के बाद, एक दिन हम लोग उनके कुछ घनिष्ठ शिष्यों के साथ, जिन्हें उन्होंने अपने पास आने की अनुमति दी थी, मंडली हाल में बैठे थे। बाबा ने उन लोगों से पूछा कि जब वे लोग बाबा से दूर थे, क्या उन्होंने उनकी याद की थी ?

वहाँ पर मौजूद सभी लोगों ने एक स्वर में कहा कि वे उनसे प्रेम करते थे और उन्हें याद करते थे।

बाबा ने पूछा; "और तुम यह किस तरह करते थे ?"

उनमें से एक व्यक्ति ने कहा कि सभी प्रेमी इकट्ठा होकर उनकी आरती करते थे, एक दूसरे व्यक्ति ने कहा कि वे लोग भजन गाते थे और तीसरे ने कहा कि वे उनके नाम का जप करते थे। एक दूसरे व्यक्ति ने कहा कि उसके ग्रुप ने बाबा को केवल याद ही नहीं किया, बल्कि साथ ही बाबा प्रेम का वातावरण भी उत्पन्न किया।

बाबा ने पूछा, "तुमने यह कैसे किया ?"

उसने उत्तर दिया, "बाबा हमने अपने कस्बे में एक सन्त के बारे में सुना था और हम अक्सर उसके पास जाते थे। आपने हमें बताया है कि हम सन्तों और योगियों के पास न जायें, लेकिन आपने यह भी कहा है कि आप उनमें हैं। इसलिये मैं अपने परिवार के साथ इस सन्त के पास गया और मैंने उसमें आपको देखा।"

बाबा ने कहा, "अगर तुमने उसमें मुझे देखा तो आज तुम्हें यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी ? तुमने बाबा प्रेम का वातावरण चाहा और तुमने उस व्यक्ति की उपस्थिति में इसका अनुभव किया। इसलिये तुम्हें यहाँ आने की कोई ज़रूरत नहीं थी।"

जब उस व्यक्ति ने कोई उत्तर नहीं दिया तो बाबा ने कहना ज़ारी रखा, "मैं वैश्या, दुराचारी और चोर में भी हूँ। तुम उनके पास क्यों नहीं जाते हो ? तुम मुझे वहाँ पाओगे।"

उस व्यक्ति की आँखों से पश्चाताप के आँसू बहने लगे। बाबा कहते

रहे, ''तुम जो कह रहे हो और तुमने जो अनुभव किया, वह ठीक है। मैं हर वस्तु में हूँ, लेकिन मैं वह वस्तु नहीं हूँ। सन्त, सन्त है जबकि मैं ईशपुरुष हूँ। एक अपराधी का सुराग पाने के लिये पुलिस क्या करती है? वे कुत्तों का इस्तेमाल करते हैं जिन्हें सबसे पहले वे अपराध की जगह पर लाते हैं ताकि वे अपराधी की सुगंध ले लें। उसी तरह तुम्हारा यहाँ आना, तुम्हारे द्वारा दिलों को चुराने वाले को पकड़ने की तैयारी करने के समान है। मैं मनुष्यों का दिल चुराता हूँ और अगर तुम मेरा सुराग पाना चाहते हो, तो तुम्हें उस जगह पर आना होगा जहाँ मैंने अपना ज़्यादा समय बिताया है।

''कभी कभी कुत्ते अपराधी की सुगंध खो देते हैं और पुलिस उन्हें फिर से अपराध की जगह पर लाती है। इसी तरह तुम्हें मेरे पास बार बार आना चाहिये जब तक तुम्हें यह विश्वास न हो जाये कि तुमने मेरी सुगंध पा ली है और अब इसे खो देने की कोई संभावना नहीं है। जब तुम सुगंध से भरपूर (Saturated) हो जाओगे, तब तुम्हें मेरे पास आने की कोई ज़रूरत नहीं होगी।''

• • •

lklkfjd vkSj nSoh U;k;

गुरु प्रसाद पूना में मेहेरबाबा के ठहरने की अवधि के दौरान, एक दिन बम्बई (अब मुंबई) उच्च न्यायालय (हाईकोर्ट) के मुख्य न्यायाधीश (चीफ जस्टिस) अपनी पत्नी व बच्चों के साथ बाबा के दर्शन करने के लिये आये।

बाबा उस समय एकान्तवास में थे लेकिन फिर भी उन्होंनें उनको दर्शन के लिये पाँच मिनट का समय दिया। पूरा परिवार बाबा के चरणों के पास बैठा और बाबा ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें रात में अच्छी नींद आई थी। बाबा ने परिवार के हर सदस्य के स्वास्थ्य के बारे में पूछताँछ की।

फिर बाबा ने उस व्यक्ति से पूछा, ''तुम्हारा व्यवसाय क्या है ?''

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''बाबा, मैं जज हूँ।''

बाबा ने मुस्कराकर कहा, ''मेरा भी यही व्यवसाय है।''

वह व्यक्ति थोड़ा भ्रम में प्रतीत हुआ। थोड़ी देर बाद बाबा ने स्पष्ट किया, ''तुम्हारे और मेरे बीच एक अंतर है। जब एक अपराधी तुम्हारे सामने लाया जाता है, तुम उसके अपराध को सिद्ध करते हो और फिर उसे सजा देते हो। लेकिन जब एक अपराधी मेरे सामने लाया जाता है, मैं उसका अपराध सिद्ध करता हूँ और फिर उसे क्षमा कर देता हूँ।''

• • •

b'oj ok.kh (God Speaks) dh r;kjh

मेहेरबाबा ने अपनी किताब 'गॉड स्पीक्स' अलग अलग भाषाओं में अनोखे ढँग से बोलकर लिखवाई। वे मुख्य रूप से अंग्रेज़ी का इस्तेमाल करते थे लेकिन वे उसमें मराठी, गुजराती और फ़ारसी के शब्द भी मिला देते थे और मैं उनकी बात को ठीक उसी तरह लिख लेता था, जैसा कि वे बोलते थे। इसलिये वे जो कुछ कहते थे, उसकी हर लाइन में भिन्न–भिन्न भाषाओं के शब्दों की मिलावट होती थी और क्योंकि सब कुछ संकेतों के माध्यम से कहा जाता था इसलिये हर भाषा के शब्द के लिये हर संकेत को समझने में बहुत ज्यादा मानसिक एकाग्रता की ज़रूरत होती थी। इसके साथ ही बाबा मेरे माध्यम से जो भी विचार प्रकट करना चाहते थे, मुझे उनके अभिप्राय को समझने की कोशिश भी करनी पड़ती थी।

बाद में, जब बाबा दूसरे कामों में व्यस्त होते थे और मुझे उनके द्वारा बोले गये लेखों पर काम करने का समय मिलता था, मुझे पूरे विषय को, उसके मतलब को खोये बिना, अंग्रेज़ी में लिखना पड़ता था।

मुझे इस काम के लिये कोई विशेष समय नहीं दिया जाता था। मुझे समय निकालना पड़ता था जबकि मैं अपने रोज के काम भी करता था जिनमें बाबा की ज़रूरतों का ध्यान रखना, बाज़ार से सामान लाना तथा दूसरे काम भी शामिल थे। मैं रात में देर तक बैठकर इन संक्षिप्त लेखों पर कार्य करता था। ऐसा कोई कमरा नहीं था जिसमें डेस्क अथवा मेज हो और जहाँ मुझे वह एकान्त तथा शान्ति मिल सकती जिसकी ज़रूरत एक लेखक को होती है। पूरी मंडली एक साथ, एक छोटे कमरे में रहती थी

और एकान्त प्राप्त करने के लिये, मैं अपने शरीर को चादर अथवा कम्बल से ढँक लेता था। फिर मैं अपने घुटने पर अपना छोटा सूटकेस रख लेता था ताकि मैं उसके ऊपर रखकर लिख सकूँ।

कभी कभी दूसरे लोगों की बातचीत अथवा भिन्न भिन्न विषयों पर होने वाली बहस से इतनी अधिक बाधा होती थी कि मुझे उनसे शान्त रहने के लिये प्रार्थना करनी पड़ती थी जिसे वे हमेशा स्वीकार कर लेते थे। लेकिन, मैं उन्हें कितनी बार चुप रहने के लिये याद दिलाता ? किसी प्रकार मैंने यह काम पूरा कर लिया और मैं अक्सर मिट्टी के तेल के लैम्प की रोशनी में लिखता था।

अपने लेख को लिखवाने के अगले दिन, बाबा यह पूछते थे कि क्या मैंने हस्तलेख पर अपना काम ख़त्म कर लिया था और मैं हमेशा हाँ में उत्तर देता था क्योंकि मैं बाबा की नज़र में अपने काम की ज़रूरत और महत्त्व को अच्छी तरह समझता था। अक्सर जब मैं रात में चौकीदारी के काम पर रहता था, बाबा मुझसे पूछते थे कि क्या मैंने अनुवाद का कार्य ख़त्म कर लिया था अथवा मुझे किसी ख़ास विषय पर कोई कठिनाई थी।

मुझे याद है कि किसी ख़ास विषय को समझने में मुझे कठिनाई थी। महाबलेश्वर में ठंडी रात में, जब बाबा कम्बल ओढ़कर बिस्तर पर लेटे थे, मैंने उनसे इसकी चर्चा की। वे मुझे देखकर मुस्कराये और कहा, ''एरच, इधर देखो, ईश्वर का विषय ठीक इस तरह है। पूरा विषय इस कम्बल पर बने हुये नमूने की तरह है जो तुम देखते हो। अगर तुम यह जानना चाहते हो कि यह नमूना किस तरह बना, मैं तुम्हें यह किस तरह समझा सकता हूँ। मैं तुम्हें इस नमूने के धागे को बाहर खींचने के अलावा अन्य किसी भी तरह से नहीं दिखा सकता हूँ।''

तब उन्होंने एक धागे को अपने अँगूठे और तर्जनी उँगली के बीच में पकड़ा और कहा, ''इधर देखो। मैं तुम्हें यह दिखलाने के लिये कि यह नमूना किस प्रकार बना है, इसे बाहर खींच रहा हूँ। लेकिन जितना ज्यादा मैं धागे को खींचता हूँ, तुम देखते हो कि तुम्हें इसका और अधिक अच्छा चित्र दिखने के बजाय नमूना गायब होता जा रहा है। जब तक नमूना है, तुम यह कह सकते हो, 'यह कम्बल है' लेकिन अगर मैं धागों को बाहर

खींचना शुरू कर दूँ तो कम्बल नहीं रहेगा; वहाँ केवल धागे होंगे और नमूना भी नहीं होगा। इसी तरह ईश्वर का विषय है; ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है और दूसरा सब कुछ, कुछ नहीं है बल्कि माया है। एक मात्र ईश्वर है।''

कई बार मेरी कठिनाइयों के बावजूद, बाबा बहुत धैर्य रखते थे। वे धैर्य की साकार मूर्ति थे और जब कभी मैं वर्णमाला तख्ती पर उनकी उँगलियों का अनुसरण करने अथवा उनके संकेतों को समझने में असफल होता था, वे लगातार उन संकेतों को दोहराते जाते थे जब तक मैं समझ नहीं जाता था।

अक्सर हम अपनी अज्ञानता के कारण बाबा से प्रश्न पूछते थे और वह कहते थे, ''गॉड स्पीक्स सम्पूर्ण सत्य नहीं है। यह सत्य का केवल एक भाग है क्योंकि कोई भी चीज़ कुछ नहीं है बल्कि सत्य का एक भाग है, इसमें वह भी सम्मिलित है जो कुछ कोई व्यक्ति कहता है। ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है और प्रत्येक वस्तु, जो तुम ईश्वर के अलावा देखते हो, माया है। और वह ईश्वर का नमूना है।''

बाबा चाहते थे कि गॉड स्पीक्स जल्दी ही पूरी हो जाये और जब कभी हाथ से लिखी किताब के बारे में अमरीका के प्रेमियों के पत्र आते थे; बाबा मेरे ऊपर जोर डालते थे कि मैं यथासंभव काम को जल्दी ही खत्म करूँ और तब मैं और अधिक मेहनत करता था। अन्त में पूरी किताब हाथ से लिखी गई लेकिन बाबा से टाइप की हुई प्रतियाँ चाहते थे। सतारा में, जहाँ उस समय हम रहते थे, न तो कोई टाइप राइटर मशीन थी और न ही कोई टाइपिस्ट था। हमें ढूँढने पर एक क्लर्क मिला जिसके पास एक टूटा–फूटा टाइपराइटर था। मैं उसे मशीन के साथ सतारा लाया। मैं हाथ से लिखी किताब से बोलता गया और वह टाइप करता गया और इस तरह काम पूरा हुआ और मैंने बाबा को टाइप की हुई किताब दे दी।

• • •

Kku d i dkj

सन् १९५६ में एक दिन मेहेरबाबा ने मुझसे कहा, ''इस संसार में दो प्रकार का ज्ञान होता है, एक ज्ञान बुद्धि के द्वारा (दिमाग़ का इस्तेमाल करके) प्राप्त किया जाता है और दूसरा गुप्त ज्ञान है (जिसमें दिमाग़ का इस्तेमाल नहीं होता)।''

बाबा ने आगे समझाया, ''एक चार वर्ष के बच्चे को मेज और कुर्सी का चित्र दिखाना पड़ता है। जिसके नीचे लिखा होता है। बच्चा तभी चीज़ों के सही नाम बता सकता है। लेकिन, एक अनपढ़ आदमी मेज़ और कुर्सियों के बारे में सब कुछ जानता है, लेकिन वह शब्दों को पढ़ना और लिखना नहीं जानता।''

• • •

vkKkdkfjrk] mudh ¼ckck dh½ bPNk vkj mudh eth dh egjckck }kjk dh xb O;k[;k

मेहेरबाबा की इच्छाओं और आज्ञाओं का पालन, उनके साथ रहने के लिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण ज़रूरत थी और इस बारे में उन्होंने चार तरह की आज्ञाकारिता के उदाहरण दिये।

एक सैनिक की आज्ञाकारिता जो देश–प्रेम के कारण होती है।

एक सेवक की आज्ञाकारिता जो वेतन के कारण होती है।

एक दास की आज्ञाकारिता जो बलपूर्वक दबाव के कारण होती है।

एक प्रेमी की आज्ञाकारिता जो अपनी इच्छा से, किसी पुरस्कार की आशा के बिना होती है।

मेहेरबाबा ने बताया कि अपनी इच्छा से की गई आज्ञाकारिता में भी नीचे लिखी चार अवस्थायें होती हैं।

प्रेमी व्यवहारिक ज्ञान का प्रयोग किये बिना, आज्ञाओं का पालन अक्षरशः करता है।

प्रेमी व्यवहारिक ज्ञान और विवेक का प्रयोग करता है।

प्रेमी प्रियतम की खुशी के लिये पूर्ण आज्ञाकारिता का प्रदर्शन करता है।

प्रेमी स्वतंत्रतापूर्वक आज्ञाकारिता का प्रदर्शन करता है।

बाबा ने आगे कहा कि अन्तिम प्रकार की आज्ञाकारिता बहुत कम देखने को मिलती है और केवल उन व्यक्तियों में पाई जाती है जो आध्यात्मिक रूप से उन्नत हैं।

जब एक मंडली जन ने बाबा से प्रार्थना की कि वे अपनी इच्छा (His Wish) और अपनी मर्ज़ी (His Will) के संबंध में, जिनका मंडली से संबंध था, स्पष्ट रूप से बतायें तो बाबा ने उत्तर दिया, ''जब मैं मंडली से कहता हूँ, मैं चाहता हूँ कि तुम यह करो, इसका मतलब है कि अगर तुम कर सकते हो, तो मैं चाहूँगा कि तुम यह काम करो। यह मेरे द्वारा की गई प्रार्थना के समान है।

''जब मैं कहता हूँ, 'मेरी इच्छा है कि तुम यह करो', 'इसका मतलब है मैं चाहता हूँ कि तुम आज्ञा का पालन करो, भले ही तुम यह काम कर सकते हो अथवा नहीं। यह एक आज्ञा है और तुम्हारे द्वारा आज्ञा का पालन न किये जाने पर, मेरी आज्ञा के उल्लंघन की संभावना है।

''जब मैं कहता हूँ, 'मेरी मर्ज़ी है कि तुम यह करो,' इसका मतलब है कि तुम्हें यह निश्चित रूप से और अपने आप करना है और तुम इसे करने में समर्थ होते हो क्योंकि मैं इसे संभव बना देता हूँ।''

• • •

vlyh rjuk

मेहेरबाबा अक्सर लोगों से पूछते थे कि क्या वे तैरना जानते थे और अगर उनका उत्तर नकारात्मक होता था, वे उन्हें सलाह देते थे कि वे तैरने का अभ्यास शुरू कर दें।

वे कहते थे, ''अगर तुम तैरना नहीं जानते हो तो तुम मेरे प्रेम के महासागर में किस तरह तैर सकोगे ? इसके अलावा यह एक बहुत अच्छी कसरत है।''

एक दिन जब लोगों का एक ग्रुप उनसे मिलने आया, उन्होंने उनमें से एक व्यक्ति से यही प्रश्न पूछा जिसने उत्तर दिया, ''नहीं बाबा, लेकिन मैंने सुना है कि आप भी तैरना नहीं जानते हैं।''

बाबा ने उत्तर दिया, ''मुझे तैरना न आना स्वाभाविक है क्योंकि मैं महासागर हूँ। महासागर, महासागर में किस तरह तैर सकता है।'' इस पर दर्शकों के ठहाकों से वातावरण गूँज उठा।

• • •

^^cjkb]** vPNkb dh ltkrh;

मेहेरबाबा ने लम्बे समय तक, दर्शन की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति को उनसे मिलने के लिये अपने निवास स्थान मेहेराज़ाद आने की अनुमति नहीं दी। हम बाबा से हमेशा प्रार्थना करते थे कि वे अपने प्रेमियों को अपने पास आने की अनुमति दें लेकिन उससे कोई फ़ायदा नहीं होता था। वे बाबा की इच्छा के अनुसार ही बुलाये जाते थे और मैं इसे कभी नहीं समझ सका।

एक दिन बाबा ने किसी ख़ास व्यक्ति को अपने पास आने की अनुमति दी। इस व्यक्ति ने अत्यधिक भक्ति का प्रदर्शन किया और बाबा की उपस्थिति में प्रेम का अच्छा खासा नाटक किया। मैं उसके सारे दिखावे को समझ रहा था क्योंकि मैं जानता था कि वह व्यक्ति बहुत नीच है, लेकिन मैंने बाबा से इस विषय में कोई चर्चा नहीं की।

इसके बाद वह व्यक्ति कई बार आया और हर बार उसने अत्यंत प्रेम और भक्ति का प्रदर्शन किया जिससे दर्शकों को नाटकीय अभिनय का आनंद मिला। अन्त में, जब मैं इसे और अधिक सहन नहीं कर सका तो मैंने उस व्यक्ति के जाने के बाद बाबा को बताया कि वह बहुत नीच व्यक्ति था और प्रेम तथा भक्ति का मात्र दिखावा कर रहा था।

बाबा ने सरलतापूर्वक कहा, ''हाँ, मैं जानता हूँ कि वह दिखावा कर रहा था। तुम केवल उसकी छाया देख रहे हो लेकिन मैं उसका सार–रूप देखता हूँ। वह नीच हो सकता है लेकिन उसमें ईश्वर के सच्चे प्रेमी होने की क्षमता है।

''तुम उसे बुरा समझते हो, लेकिन तुम यह नहीं जानते हो कि केवल इतना बुरा बनने के लिये उसे कितनी दूर आना पड़ा।''

• • •

bl'k&i|#"k dh uhn

मेहेरबाबा के प्रेमी कई बार मुझसे पूछते थे कि क्या बाबा रात में सोते थे और मेरा उत्तर हाँ में होता था लेकिन उनका सोना और हमारा सोना दो अलग अलग बातें थीं। बाबा की नींद ईश–पुरुष की नींद थी जबकि साधारण व्यक्ति जिस समय सोता है, यह मिथ्या संसार का मात्र दूसरा पहलू होता है। रात के समय पहरेदारी करने और बाबा के पास सोने से, अपने व्यक्तिगत अनुभव से मुझे यह पूरा विश्वास हो गया था कि बाबा का सोना, हम लोगों के सोने से बिल्कुल अलग था।

एक बार बाबा बम्बई में दादाचाँजी के फ्लैट में ठहरे हुये थे। उन्होंने किसी कष्ट के लिये अरनवाज़ को एसपिरिन लेने की आज्ञा दी थी। एसपिरिन उस कमरे में एक बक्स में रखी हुई थी जिसमें बाबा ठहरे हुये थे और अरनवाज़ को बाबा के सोने के बाद उनकी आज्ञा का ध्यान आया। उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। वह मेरे पास आई। मैंने उसे तसल्ली देते हुये कहा कि हालांकि वह डर रही है कि बाबा की नींद खराब होगी, लेकिन मुझे कमरे से गोली लाने में कोई मुश्किल नहीं होगी क्योंकि बंद दरवाजे के अंदर से, हमें बाबा के खर्राटे सुनाई पड़ रहे थे।

यह निश्चित करने के लिये कि बाबा जोर से और नियमित रूप से खर्राटे ले रहे थे या नहीं, मैंने एक बार फिर सावधानी के साथ सुना ताकि मेरे कमरे में जाने पर उनकी नींद खराब न हो। रात के लगभग दस बजे थे और कमरे के अंदर चौकीदारी करने के लिये भाऊ कलचुरी थे। इसलिये मैं बहुत धीरे से दरवाजा खोलकर, पंजों के बल धीरे धीरे उस बक्स की ओर बढ़ा जिसमें दवाइयाँ थीं। मैं बहुत खुश था कि बाबा की नींद ख़राब किये बिना मैं गोली पाने में सफल हो गया। बाबा के आशीर्वाद से, स्वयं ईश–पुरुष के सोने के कमरे से इस 'चोरी' को करने में अपनी योग्यता के लिये, मैंने अपने आप को मानसिक रूप से बधाई दी।

मैं अब एसपिरिन लेकर, कमरे से बाहर निकलकर अरनवाज़ के पास जाने के लिये तैयार था, लेकिन जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोलकर, देहरी के बाहर एक पैर रखा ही था कि भाऊ को बुलाने के लिये बाबा ने अचानक ताली बजाई। मैं जल्दी से बाहर आया और चुपचाप दरवाज़ा बन्द कर दिया। फिर भी बाबा जाग गये थे और उन्होंने भाऊ से पूछा कि कमरे में कौन आया था। भाऊ के बताने पर, उन्होंने कारण जानने के लिये मुझे अंदर बुलाया।

यह ध्यान रहे कि अपनी 'गहरी–नींद' की अवस्था में भी ईश–पुरुष जानता था कि कमरे में क्या हो रहा था अैर इससे मुझे विश्वास हो गया कि उनकी नींद, हमारी नींद से बिल्कुल भिन्न थी।

बाबा की नींद से संबंधित दूसरी कहानी गुस्तादजी के अनुभव की है।

उत्तर भारत के किसी स्थान की, एक थकावट भरी मस्त यात्रा के बाद हम लोग बहुत थके हुये थे और हमने एक अनजानी जगह पर कब्र के पास बने हुये अतिथि गृह (गेस्ट हाउस) को चुना जहाँ बाबा बची हुई रात में आराम कर सकें तथा उनके साथ के चार मण्डली जन बाहर बरामदे में सो सकें।

बाबा के साथ यात्रा करना, हमेशा बहुत ही तकाज़ों से भरपूर होता था जहाँ हर चीज़ उनकी उपस्थिति से इस तरह व्यवस्थित थी कि हर समय हमें उनके (बाबा के) सामने तुरंत हाज़िर होना पड़ता था। इससे हमें किसी तरह की स्वतंत्रता का आनंद लेने का समय नहीं मिलता था। यहाँ तक कि हमें स्वाभाविक ढँग से अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों पर ध्यान देने के लिये भी, थोड़ी सी भी स्वतंत्रता नहीं थी।

उस रात मंडली जन इतने अधिक थके थे कि उन्होंने व्यक्तिगत आवश्यकताओं की उपेक्षा की और तुरंत सो गये। पहरा देने की पहली पारी मेरी थी और अगली पारी गुस्तादजी की थी जो एक बूढ़े आदमी थे और बाबा की आज्ञा से कई सालों से मौन थे। मैंने उस जगह के चारों ओर बनी हुई एक दीवार की ओर इशारा किया जहाँ गुस्तादजी बैठकर पहरा दे सकते थे।

थोड़ी देर बाद ही गुस्तादजी को बहुत जोरों से पेशाब लगी। शायद उनकी थकान ने इसके पहले थोड़ी देर के लिये पेशाब को दबा दिया था। गुस्ताद जी अपनी जगह से कहीं जा नहीं सकते थे क्योंकि वे यह नहीं जानते थे कि वे कब्र के पवित्र स्थान से बाहर कहाँ जायें। लेकिन कोई निर्णय लेने से पहले उन्हें, इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण इस बात का निश्चय करना था कि क्या बाबा सो रहे थे क्योंकि इससे उन्हें पेशाब करने का मौका मिल जाता।

इसलिये गुस्ताद जी बाबा के कमरे के दरवाजे तक गये और उन्हें लगातार खर्राटे लेते हुए सुनकर, उनमें (गुस्तादजी) पेशाब करने के लिये दीवार से नीचे कूदने का साहस आया और वे पेशाब करने के लिये अपनी जगह पर वापस आये। सबसे पहले उन्होंने एक पैर नीचे लटकाकर जमीन पर रखने की कोशिश की। वे अपने शरीर को और अधिक लटकाने वाले थे जब बाबा ने अचानक जोर से ताली बजाई। गुस्ताद जी यह निर्णय नहीं कर सके कि नीचे कूदकर, जल्दी से पेशाब करके तब बाबा के पास जायें या पहले जायें। लेकिन बाबा इतनी जोर से, लगातार ताली बजा रहे थे कि उन्होंने पहले बाबा के पास जाने का निश्चय किया और इसके साथ ही उनकी पेशाब करने की इच्छा भी गायब हो गई।

कोई भी व्यक्ति उस बातचीत की कल्पना कर सकता है जो इन दो मौन व्यक्तियों के बीच रात के अंधेरे में हुई जब कि गुस्ताद जी की टार्च की रोशनी में वे एक दूसरे के संकेतों को देखकर समझ सकते थे। बाबा ने उन्हें आज्ञा दी, ''कहीं मत जाओ; बैठे रहो, हिलो मत।'' इसलिये गुस्तादजी अपनी जगह पर वापस आये और बैठे रहे।

पन्द्रह मिनट बाद उन्हें फिर इतनी जोर से पेशाब लगी कि गुस्ताद जी दीवार के नीचे ज़मीन पर पहुँचने की दोबारा कोशिश करने लगे लेकिन जैसे ही उन्होंने ज़मीन पर रखने के लिये अपना पैर फैलाया, उन्होंने झील के पानी में तारों की परछाईं देखी और तब उनकी समझ में आया कि क्या हो गया था।

पहले जब उन्होंने पेशाब करने की कोशिश में ज़मीन पर पैर रखना चाहा था, उस समय पहले से ही अँधेरी रात में बादलों की परत इतनी अधिक थी कि वे झील के पानी को समझ नहीं पाये और अगर बाबा ने

सही समय पर ताली नहीं बजाई होती तो वे झील में डूब गये होते और मौन होने के कारण किसी को भी अपनी मदद के लिये बुला भी नहीं पाते।

सुबह गुस्ताद जी ने पूरी घटना हमें बताई और अन्त में कहा, ''सुबह तुम लोग मुझे ढूँढते और तीसरे दिन पानी में उतराता हुआ पाते।''

बाबा ऐसे हैं। ईश–पुरुष की नींद भी इतनी अधिक जाग्रत अवस्था है कि जिस समय वे गहरी नींद में सोते हुये प्रतीत होते हैं, उस समय भी वे हम सबकी निगरानी करते हुये प्रतीत होते हैं।

• • •

d"V dk nl jk igy

मेहेरबाबा हमें अक्सर बतलाते थे कि कष्ट किसी भी व्यक्ति को उनके समीप लाता है।

एक दिन हम सब मंडली हाल में बैठे हुये, बहुत से लोगों के साथ संगीत का आनंद ले रहे थे। इस जमाव में एक औरत भी थी जो एक छोटे बच्चे को अपनी गोद में लिये हुये थी।

अचानक बच्चा रोने लगा और गोद से उतरने के लिये मचलने लगा। इससे माँ बहुत व्याकुल हो गई और बच्चे को पकड़े रही। लेकिन जितना अधिक वह बच्चे को पकड़ने और चुप कराने की कोशिश करती थी, उतनी ही ज़्यादा जोर से वह रोता था।

बाबा ने माँ की परेशानी को देखकर बच्चे को फर्श पर खेलने के लिये छोड़ देने को कहा। जैसे ही उसे गोद से नीचे उतारा गया, वह चुप हो गया और अपनी इस स्वतंत्रता प्राप्ति पर खुशी से किलकारी मारने लगा।

संगीत ख़त्म होने पर, बाबा उपदेश देने लगे और सबका ध्यान उनकी बातों पर केन्द्रित हो गया। उपदेश के बीच में बाबा रुक गये और बच्चे की ओर इशारा किया जो दरवाज़े की देहरी से नीचे गिरने वाला था। उन्होंने माँ को संकेत किया कि वह बच्चे को पकड़कर ले आये और अपने पास खेलने दे।

तब बाबा ने उपदेश देना बंद कर दिया और समझाया, ''जब मैं कहता हूँ कि मेरी नज़र (कृपा) तुम्हारे ऊपर है, इसका मतलब होता है कि

मैं तुम्हें अपने छोटे छोटे खेलों को खेलने देता हूँ जिस प्रकार तुमने इस बच्चे को खेलते देखा और जब तुम गिरकर अपने आपको चोट पहुँचाने वाले होते हो, मैं तुम्हें उठा लेता हूँ और फिर से तुम्हें सुरक्षित स्थान पर रखकर, तुम्हें अपना खेल खेलने देता हूँ। लेकिन, जब मैं तुम्हें उठाता हूँ, इस बच्चे की तरह तुम रोते चिल्लाते हो क्योंकि तुम्हें उठाने का मेरा कार्य तुम्हारे लिये कष्ट के रूप में प्रकट होता है। लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम्हारी भलाई किसमें है। केवल तुम्हारा कष्ट ही तुम्हें मेरे पास लायेगा और जब भी तुम कष्ट में होते हो, हमेशा ध्यान रखो कि मेरी नज़र तुम्हारे ऊपर है।''

• • •

^fu;fr* dk fu"Bj fu;e

एक बार मेहेरबाबा ने मानवीय अस्तित्व की गति को निम्नलिखित ढँग से समझाया–

''इस सृष्टि में हर एक व्यक्ति और हरएक वस्तु, इसके भूतकाल द्वारा आवश्यक रूप से निर्धारित किये गये मार्ग पर चलने के लिए विवश है।

''दैवी नियम से उत्पन्न एक निष्ठुर नियति है जो छोटे अथवा बड़े, धनी अथवा निर्धन, पुरुष अथवा स्त्री, कमज़ोर अथवा ताकतवर, सुंदर अथवा कुरूप, बुद्धिमान अथवा मूर्ख, हर व्यक्ति पर शासन करती है। कोई भी व्यक्ति इससे बच नहीं सकता है क्योंकि हर व्यक्ति भूतकाल के संस्कारों से आवश्यक रूप से बँधा हुआ है।

''मनुष्य जिस स्वतंत्रता का आनंद लेता प्रतीत होता है, वह स्वयं आन्तरिक संस्कारों के दबाव और वातावरण के कारण होती है जो उसके क्रियाकलापों को सीमित कर देते हैं।''

इसका अर्थ है कि प्रत्येक वस्तु, जो किसी व्यक्ति के पास व्यक्तित्व अथवा राष्ट्रीयता के रूप में होती है, यहाँ तक कि उसके सुख और दुख के अनुभव भी, कुछ भी नहीं है बल्कि भूतकाल में इकट्ठा हुये अनगिनत संस्कारों की शक्ति का परिणाम होते हैं। ये एकत्रित संस्कार हर अवस्था

में और बाद में होने वाले हर जन्म में आत्मा को ढँके रहते हैं। यह निष्ठुर 'नियति' है जो मनुष्य के भाग्य को निर्धारित करती है।

मेहेरबाबा ने बताया है कि इस दैवी नियम का, जो हर वस्तु पर लागू होता है, केवल दैवी मर्ज़ी द्वारा ही उल्लंघन हो सकता है।

• • •

ckck d: LokLF; dh fuxjkuh

हम लोग मेहेरबाबा के स्वास्थ्य के बारे में हमेशा चिन्ता करते थे और उनके साथ बिताये गये सालों के दौरान, उनके शारीरिक स्वास्थ्य की देखभाल करना और उनके आराम का ध्यान रखना ही मेरा एकमात्र केन्द्र बिन्दु था ताकि जहाँ तक संभव हो उन्हें कोई बाधा न होने पाये, क्योंकि अपने शारीरिक कष्ट के बावजूद वे अपना 'विश्व व्यापी कार्य' ज़ारी रखते थे।

सन् १९५२ में, जब हम बाबा की पश्चिम यात्रा की तैयारी कर रहे थे, हमने उन्हें सलाह दी कि वे नकली दाँतों का सेट लगवा लें लेकिन वह हमें यह कहकर मना कर देते थे कि उन्हें नकली दाँतों की ज़रूरत महसूस नहीं होती। जब हमने बहुत ज़िद की तो उन्होंने इस शर्त पर हमारी बात मान ली कि नकली दाँतों का सेट चिड़िया के पंख की तरह हल्का हो। हमने नाप लेने के लिये पूना से दाँतों के एक डाक्टर को बुलाया। आठ दिन के अंदर दाँत बनकर आ गये लेकिन कुछ दिनों तक उन्हें लगाने के बाद, बाबा ने यह कहकर उन्हें लगाना बंद कर दिया कि वे बहुत भारी थे।

इसके बाद जल्दी ही हम हैदराबाद गये जहाँ मेरे दाँत में बहुत दर्द हो गया और दाँतों के डॉक्टर से अपनी भेंट के दौरान, मैंने उसे बताया कि मेरे एक 'दोस्त' को बहुत अधिक हल्के नकली दाँतों के सेट की ज़रूरत थी। डॉक्टर ने मुझे तसल्ली देते हुये कहा कि उसने निज़ाम के लिये विदेशों से आयात किये गये पदार्थ से एक ऐसा सेट बनाया था। उसने बाबा के लिये भी एक वैसा ही सेट बनाया जिसे बाबा ने पसंद किया।

उस समय मैं यह नहीं जानता था कि यही नकली दाँत, बाद में ओकलाहामा में होने वाली कार दुर्घटना में बाबा के लिये अत्यंत कष्ट का कारण बनेंगे। दाँतों ने उनके मसूढ़े और जीभ को काट दिया था और उस दुर्घटना में बाबा के शरीर में आई दूसरी चोटों के साथ उनके कष्ट को और अधिक बढ़ा दिया था।

उस दुर्घटना में बाबा की नाक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई थी और इसके साथ ही उनकी जीभ दो जगहों से कट गई थी जिससे उन्हें साँस लेने में बहुत कष्ट होता था और वे अक्सर घुटन महसूस करते थे। इस सबके बावजूद बाबा ने कोई भी इलाज कराने से साफ़ मना कर दिया लेकिन मैंने एक रास्ता निकाल ही लिया। जिस समय हम पूना में थे, मैंने बाबा की अनुमति के बिना एक डॉक्टर से सम्पर्क किया और उसे अपने मित्र के रोग के लक्षण बताये। मैंने इस बात का इन्तज़ाम कर दिया कि जैसे ही मैं अपने मित्र को क्लीनिक में लाऊँगा, उसका इलाज तुरंत किया जायेगा।

इस प्रोग्राम के अनुसार, एक दिन जब हम घर जा रहे थे, मैंने क्लीनिक की तरफ कार मोड़कर बाबा को बताया कि मैंने एक डॉक्टर से उनके लिये समय ले लिया था। बाबा ने कहा कि मैंने उनसे पूछे बिना डॉक्टर से समय क्यों लिया और पूछा कि क्या मैंने डॉक्टर को उनका परिचय दिया था। जब मैंने बताया कि मैंने उन्हें केवल 'अपने भाई' के रूप में बताया है, तब बाबा इच्छा न होते हुये भी साथ गये। लेकिन जैसे ही हम क्लीनिक में घुसे, डॉक्टर ने बाबा को पहचान लिया और जाँच करने के बाद उनके घावों को जलाने (Cauterize) लगा।

घर लौटने पर बाबा ने अपनी नाक की ओर संकेत करते हुये दूसरे लोगों से कहा, "देखो, एरच ने मेरे साथ क्या किया है ?" बाबा न तो कुछ खाते थे और न ही कुछ पीते थे। वह कहते थे कि हर चीज़ से रबर जैसी महक आती थी। वे कई दिनों तक यही बात कहते रहे और मैं बहुत दुखी हो गया। अन्त में बाबा को बहुत ज़्यादा आराम हो गया और मैं खुश हो गया।

पश्चिम की यात्रा के पश्चात्, हम देहरादून गये जहाँ बाबा की आँख में तकलीफ़ हो गई। वे आँख में किसी रेतीली वस्तु के होने की शिकायत

करते रहे। वे कहते थे कि उनकी आँख में बहुत अधिक दर्द था लेकिन स्थानीय डॉक्टर के इलाज से कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उनकी हालत और भी अधिक बुरी हो गई और यह हमारे सतारा जाने तक रही। हमने जितने भी मरहम लगाये, किसी से भी बाबा को आराम नहीं मिला।

हमने आँख के एक डॉक्टर से फिर सम्पर्क किया और उसे बताया कि हमारे 'बड़े भाई' को घर पर इलाज की ज़रूरत थी। डॉक्टर ने हमारी बात मान ली और बाबा की आँखों की जाँच करने के बाद, कुछ पीले रंग के दाने निकाले, आँखों को धोया और दो दिन के अंदर बाबा को आराम हो गया।

• • •

egjckck d: vfre fnu

मेहेरबाबा और उनके शिष्यों ने, सन् १९६८ में गर्मी के तीन महीने, अप्रैल, मई और जून, हर साल की तरह गुरुप्रसाद पूना में बिताये जहाँ बाबा ने अपने सोने के कमरे में अपना एकान्तवास ज़ारी रखा। यह एकान्तवास इतना अधिक कठोर था कि उन्होंने किसी भी आने वाले व्यक्ति को, यहाँ तक कि पूना में रहने वाले अपने खास शिष्यों को भी, अपने पास आने की अनुमति नहीं दी थी। इस एकान्त की रक्षा करने के लिये, पूना बाबा केन्द्र में गश्ती पत्र और जबानी हिदायतें दी जाती थीं और लोगों की जानकारी के लिये जगह जगह सूचना–पट रखे गये थे। लोगों को गुरुप्रसाद के अंदर आने से रोकने के लिये स्वयंसेवक और कुछ मंडलीजन भी पहरा देते थे लेकिन इसके बावजूद भी कुछ स्थानीय लोगों को, जो बाबा का आशीर्वाद लेने आते थे, रोक पाना मुश्किल हो जाता था।

साधकों में एक व्यक्ति था जो साधुओं की तरह गेरुये रंग की कफ़नी पहने था। उसने बाबा के दर्शन के लिये ज़िद की। हमने उसे मैदान में ही रोककर वापस जाने को कहा लेकिन वह नहीं माना। वह ज़मीन में बैठकर समाधिस्थ हो गया, इसलिये हमने उसे गोद में उठाकर अहाते के दरवाजे के बाहर कर दिया।

२८ मई को बाबा ने कहा, ''एकान्तवास का कार्य २१ मई को खत्म हो गया था और मेरा विशेष कार्य २५ जून को समाप्त होगा। शीघ्र ही

घटने वाली महान घटना को ध्यान में रखते हुये अब मुझे यह निश्चय करना होगा कि मैं कब और किस तरह दर्शन दूँ। एक बार मैं लोगों से मिलना शुरू करूँगा, तो यह बंद नहीं होगा क्योंकि तब मैं यह बाबा नहीं रहूँगा जो मैं अब हूँ। वह मेरे प्रकटीकरण के समान होगा और फिर कोई भी एकान्तवास नहीं होगा।''

मेहेराज़ाद लौटने पर, बाबा ने कठोर एकान्तवास ज़ारी रखा और अपना काम करते रहे। वह ज्यादातर समय अपने कमरे में बिताते थे। बीच बीच में अपने शिष्यों के साथ समय बिताने के लिये वे मंडली हाल में जाते थे और फ्रांसिस से कभी कभी ग़ज़लें पढ़ने के लिये कहते थे अथवा विश्व के भिन्न भिन्न बाबा केन्द्रों से आये हुये समाचारों को सुनते थे। उनकी सामान्य दिनचर्या थी : सुबह आठ बजे अथवा पहले मंडली हॉल जाना, ११ बजे अपने कमरे में लौटना, महिला शिष्याओं के साथ भोजन करना, डेढ़ बजे मंडली हाल में लौटना और अन्त में अपने कमरे में रात में सोने से पहले चार बजे तक मंडली हाल में रहना।

हम बाबा के काम के बारे में नहीं जानते थे लेकिन हम यह देख सकते थे कि इसमें की गई मेहनत का उनके स्वास्थ्य पर असर होने लगा था। वे दुबले और पीले होते जा रहे थे और कभी उनके चेहरे पर रहने वाली गुलाबी आभा, जिसे देखकर हमेशा खुशी होती थी, अब नहीं थी और इसलिये डॉ. गौहर को विचार आया कि उनके खून की जाँच की जाये।

इसी समय मेरे चाचाजी को, जो अहमदनगर में बीमार थे, खून देने की ज़रूरत हुई और बाबा ने, जो हमेशा यह जानने के लिये उत्सुक रहते थे कि चाचाजी के स्वास्थ्य में किस प्रकार सुधार हो रहा है, कहा, ''एरच, यह कैसी बात है कि तुम्हारे चाचाजी को खून दिया जा रहा है और मुझे नहीं। मुझे खून क्यों नहीं दिया जा सकता है ?''

मंडली जनों ने एक दूसरे की ओर देखकर मुस्कराते हुये कहा, ''बाबा, आपके शरीर में खून की कमी नहीं है इसलिये आपको खून देने की ज़रूरत नहीं है।''

बाबा ने तुरंत उत्तर दिया, ''हाँ, लेकिन यह अच्छा होगा। मुझे खून क्यों नहीं दिया जा सकता है ?''

बाबा हमें अपनी इस प्रार्थना के बारे में याद दिलाते रहे और जब यह खबर मेहेराज़ाद आई कि मेरे चाचाजी के स्वास्थ्य में सुधार हो रहा था और उन्हें दोबारा खून देने की ज़रूरत थी, बाबा और अधिक कटु हो गये और हमसे कहा, ''अच्छा, यह कैसी बात है ? दूसरों को खून दिया जा रहा है लेकिन मेरी केवल उपेक्षा की जा रही है। मुझे खून क्यों नहीं दिया जा रहा है ?''

बाबा से मज़ाक सा करते हुये हमने कहा, ''बाबा आपने मनुष्य रूप धारण किया है लेकिन आप अभी भी उस मनुष्य रूप में ईश्वर हैं और अवतार भी हैं। जब आपके खून में किसी दूसरे व्यक्ति का खून प्रवेश करेगा तब क्या होगा ?''

बाबा ने कड़ाई के साथ कहा, ''क्या तुम सब पागल हो ? मेरे ईश–पुरुष होने के साथ खून का क्या संबंध है ?'' केवल बाद में बीती हुई बातों पर विचार करने पर हमें समझ में आया कि बाबा हमें इशारा कर रहे थे जो हम उस समय नहीं समझ पाये।

हमें बाबा की ज़िद पर आश्चर्य था लेकिन तभी डॉ. गौहर को बाबा के खून की जाँच करने की ज़रूरत महसूस हुई और अहमदनगर में जाँच की कोई सुविधा न होने से, खून का नमूना पूना भेजा गया। खून की जाँच की रिपोर्ट उसी दिन आ गई और डॉ. गौहर को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि खून में हीमोग्लोबिन बहुत कम था। सामान्य दशा में १४–१५ ग्राम हीमोग्लोबिन की तुलना में केवल ५ ग्राम हीमोग्लोबिन था। डॉ. ग्रान्ट भी, जो पूना में गुरु प्रसाद के सामने रहते थे और बाबा के स्वास्थ्य की देखभाल से संबंधित थे, इतने अधिक परेशान थे कि उन्होंने खून का दूसरा नमूना भेजने की प्रार्थना की। उन्हें लगता था कि कहीं पर ग़ल्ती हो गई थी।

अपने शरीर से खून निकलवाना बाबा को कभी पसंद नहीं था लेकिन डॉ. गौहर और डॉ. डंकिन ने उनको किसी तरह समझाया और नतीज़ा पहले जैसा ही रहा। हम सब यह जानकर एकदम हक्का–बक्का रह गये कि बाबा के खून में हीमोग्लोबिन इतना अधिक कम था कि डॉ. ग्रान्ट ने उन्हें तुरंत खून देने की सलाह दी थी।

पूना में मेहेरजी को सारी खबर कर दी गई और डॉ. ग्रान्ट ने बाबा को खून देने के लिये ज़रूरी डाक्टरों और नर्सों के मेहेराज़ाद जाने का प्रबंध किया। जिस समय खून दिया जा रहा था, बाबा ने जानना चाहा कि खून देने वाला व्यक्ति कौन था और कहा कि उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त है और वह सबसे अधिक भाग्यशाली है। प्रधान परिचारिका (Head Nurse) ने हमें बताया कि बाबा का नाम बताये बिना, उसने खून देने वाले व्यक्ति को पहले ही बता दिया था कि उसका खून किसी बहुत महान हस्ती के लिये था। यह जानकर उस व्यक्ति ने नर्स से प्रार्थना की थी कि वह उसके लिये उस महान हस्ती का आशीर्वाद प्राप्त करे।

इसी समय में बाबा चाहते थे कि दिसम्बर में मेहेराज़ाद में उनके परिवार और मित्रों के होने वाले छोटे से जमाव के लिये हम प्रबंध करें। यह बाबा के भतीजे दारा तथा देहरादून के एक बाबा–प्रेमी की लड़की, अमृत की शादी का समारोह था। यह समारोह बहुत सादगी से होना था जिसमें दूल्हा और दुल्हन को बाबा की उपस्थिति में एक दूसरे को हार पहनाकर, उनका आशीर्वाद प्राप्त करना था।

जिस समय बाबा की इस इच्छा का पालन अहमदनगर में आदी सीनियर (बाबा के सचिव) और सरोश को हमारे द्वारा भेजी गई आज्ञाओं के माध्यम से किया जा रहा था, यह प्रत्यक्ष था कि खून दिये जाने के बावजूद, बाबा के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं था। इसलिये; निःसंदेह आदी सीनियर और सरोश जिन्हें बाबा की दशा की हर पल की जानकारी दी जा रही थी, शादी की तैयारी के बारे में दी गई आज्ञाओं का पालन करने में, उतने ही अधिक परेशान थे जितने हम लोग थे। प्रकट रूप में, खून देने से कोई लाभ नहीं हुआ था और निःसंदेह बाबा की दशा बिगड़ रही थी। दोबारा परीक्षा के बाद बाबा को फिर से खून देने की सलाह दी गई और एक बार फिर उन्हें खून दिया गया।

बम्बई के डॉ. राम गिंडे ने, जो बाबा के एक और डॉक्टर थे, बाबा को २२ अक्टूबर को देखा और उन्हें कमज़ोर तथा नाजुक हालत में पाया और जब उन्होंने १६ दिसम्बर को बाबा की फिर से जाँच की, बाबा का स्वास्थ्य काफी बिगड़ चुका था। खून की कमी के कारण बाबा पीले हो गये थे। उनके पैर और टखने सूज गये थे। वे बैठ नहीं पाते थे और उनके पैरों में

ऐंठन होती थी। इसके अलावा, उनके खून में यूरिया की मात्रा बढ़ गई थी जब कि खून में हीमोग्लोबिन की गणना सामान्य से बहुत कम थी और बाबा समय–समय पर निद्रालु हो जाते थे।

इस सबके बावजूद, बाबा ने अपना क्रियाकलाप ज़ारी रखा। वे बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे और जो भी समाचार आते थे, उनमें रुचि लेते थे। उन्होंने शादी की तैयारियों के बारे में पूछताँछ करना भी ज़ारी रखा। वे अपनी योजना के अनुसार १९६९ के शुरू में दिये जाने वाले अपने दर्शन प्रोग्राम के बारे में भी, जिसके बारे में उन्होंने २८ मई को बताया था, पूछताँछ करते रहते थे।

दर्शन प्रोग्राम के संबंध में, प्रेमियों के एक दल से, जिन्हें उन्होंने बुलाया था, बाबा ने लापरवाही के साथ कहा कि उनका समय बहुत निकट आ गया था लेकिन फिर भी वे अपने प्रेमियों को यथासंभव अधिक संख्या में, किसी प्रकार, कहीं भी और किसी भी समय दर्शन देंगे। उन्होंने कहा कि यह दर्शन लेटकर पूर्ण मौन में हो सकता था और उस समय शायद कोई भी व्यक्ति न तो उनके निकट जायेगा और न ही उनको छुयेगा।

बाबा मंडली हाल में नियमित रूप से आते रहे और १३ जनवरी को अंतिम बार आये। चौदह जनवरी को डॉक्टरों ने उन्हें अपना कमरा व बिस्तर छोड़ने के लिये मना कर दिया। इसलिये उस दिन से बाबा मंडली हाल में नहीं आते थे बल्कि हम लोग तीन–चार बार उनके पास जाते थे।

बाबा पर अपने कमरे में रहने के बंधन के लगभग एक हफ्ता या उसके कुछ पहले, सरोश का दामाद अहमदनगर आया जो दक्षिण भारत में एक अस्पताल का इंचार्ज था। जब उसने बाबा की निम्न रक्त गणना (Low Blood count) तथा उच्च यूरिया स्तर के बारे में सुना तो वह इस बात की सच्चाई जानने के लिये मुझसे और डॉ. गौहर से मिलने आया। हम जो कुछ जानते थे, उसे बताया और हमसे यह जानकर कि बाबा में प्रकट रूप से स्पष्ट रूप से विचार करने की शक्ति थी तथा उनके संकेतों में किसी प्रकार का भ्रम नहीं था, उसे विश्वास नहीं हुआ क्योंकि यह चिकित्सा विज्ञान के तथ्यों के बिल्कुल विपरीत था।

उसने कहा, ''एरच, मुझे आपसे यह कहते हुये अफ़सोस है कि कभी कभी सही लक्षण बताने में प्रेम और स्नेह रूकावट बन जाते हैं।'' यह कहकर वह इस बात की संभावना की ओर संकेत कर रहा था कि बाबा के प्रति मेरा प्रेम व स्नेह स्थिति की वास्तविकता के प्रति मुझे अंधा बना रहे थे।

आगे पूछताँछ करते हुये डॉक्टर ने पूछा, ''क्या बाबा चलते फिरते हैं और क्या वे अभी भी मंडली हाल में जाते हैं ?'' मैंने स्वीकार किया और उसे अगले दिन आकर स्वयं देखने के लिये आमंत्रित किया।

वह अगले दिन शाम को देर से उस समय आया जब बाबा रात्रि विश्राम के लिये जा चुके थे। इसलिये हमने उसे अगले दिन आने के लिये कहा। उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसे जो खबरें मिली थीं, उनके अनुसार बाबा को पूना में किसी क्लीनिक में ले जाना ज़रूरी था। अतः हम बाबा की अनुमति लेकर डॉ. को उनके कमरे में ले गये। डॉ. डंकिन ने भी, जो उस समय वहाँ मौजूद थे, बाबा से कहा कि अच्छे इलाज के लिये उन्हें पूना जाना चाहिये लेकिन बाबा ने कहा कि उनका मेहेराज़ाद में रहना ठीक है।

फिर भी, डॉ. ने बाबा के खून में यूरिया की मात्रा की जाँच की। उसके बाद उसने बाबा की आँखों और उनके नाड़ी संस्थान की जाँच की। बाबा की जाँच के बाद, डॉ. की प्रतिक्रिया उसके अपने ही शब्दों में बताना अधिक उपयुक्त होगा, जो उसने बाबा के कमरे से बाहर आने के बाद मुझसे कहे। उसने कहा, ''एरच, पहले मैं सोचता था कि आप सबको भ्रम हो रहा है कि बाबा की विचारशक्ति स्पष्ट नहीं है। लेकिन अब ऐसा लगता है कि बाबा को देखने के बाद मैं भ्रमित हो गया हूँ। खून की इस प्रकार की रिपोर्ट वाला कोई भी व्यक्ति इतना अधिक सामान्य और इतनी अधिक स्पष्ट विचार शक्ति वाला नहीं हो सकता जितने बाबा है।'' शायद अन्य बातों के साथ साथ उसे यह भी याद आ रहा था कि बाबा से विदा लेते समय, बाबा ने उसको गले लगाकर चूमा था और कहा था कि वह चिंता न करे, सब कुछ ठीक हो जायेगा।

२७ जनवरी, सन् १९६९ को बाबा ने मुझसे कहा कि यद्यपि डॉक्टरों ने उन्हें पूना जाने की सलाह दी है फिर भी वह वहाँ पर हर बार की तरह

मार्च के अन्त में ही जायेंगे। उन्होंने इस बात की अनुमति दी कि डॉ. गिंडे आकर मेहेराज़ाद में रहें तथा कष्टपूर्ण ऐंठन की रोकथाम करें जो उन्हें पीड़ा दे रही थी।

अगले दिन यह ऐंठन लगभग सोलह घंटे तक रही जिससे बाबा बहुत थके हुये और बैचेन हो गये। इस ऐंठन की अनुभूति इस प्रकार की थी जैसे किसी व्यक्ति को अचानक बिजली का मेन स्विच छू लेने से कष्टदायक झटका लगता है और उस समय मंडली के चार जनों को बाबा के शरीर को बिस्तर में दबाकर रखना पड़ता था। ऐंठन से लगने वाला प्रत्येक झटका, बाबा की गर्दन को लगभग तोड़ देता था और उनके ज़रा सा भी हिलने डुलने से, जैसे कि हाथ उठाने अथवा हमें कुछ बताने के लिए उँगलियां चलाने से, उन्हें झटका लगता था जिससे उनका शरीर सिर से पैर तक ऊपर उठ जाता था। बाबा को साँस लेने में भी कठिनाई होती थी। डॉ. गौहर ने, जो चौबीस घंटे बाबा की देखभाल कर रहीं थीं, सलाह दी कि डॉ. गिंडे को ज़रूरत पड़ने पर, बाबा के कमरे में आपरेशन करने के लिये तैयार होकर आना चाहिये। डॉ. ग्रान्ट ने, जिन्होंने बाबा के नाड़ी–संस्थान की जाँच की थी, बताया कि बाबा बिल्कुल सामान्य थे। केवल उनकी स्नायु संबंधी प्रतिक्रिया थोड़ी कम हो गई थी।

३० जनवरी को बाबा ने कहा कि वे चाहते थे कि पाँच शिष्य हर समय उनके पास रहें जिनमें से पादरी और छगन का नाम उन्होंने विशेष रूप से लिया।

मंडली ने पूरा दिन और उस पूरी रात पहरा दिया और बाबा के प्रोत्साहन से, अगर संभव हो तो ऐंठन को दूर करने के लिये, उनके शरीर को कसकर दबाये रखने की कोशिश की अथवा ऐंठन होने पर उनके शरीर को बिस्तर पर दबाये रखा ताकि उनकी रीढ़ की हड्डी को झटका न लगे क्योंकि झटके से बाबा की गर्दन और कंधों में घोर पीड़ा होती थी। जिस समय हम उनके शरीर को दबाते थे, हमें अपने हाथों के नीचे पहले छोटी लहरें सी महसूस होती थीं और जब वे शक्तिशाली हो जातीं थी, हम समझ जाते थे कि अब बाबा को तेज ऐंठन होने वाली है। तदनुसार हम उनके शरीर को और अधिक ज़ोर से दबाने की कोशिश करते थे, लेकिन डॉक्टरों ने सलाह दी कि दबाव हल्का होना चाहिये वरना झटके से उन हड्डियों को

नुकसान पहुँचेगा जो सन् १९५२ तथा सन् १९५६ की दो कार दुर्घटनाओं में पहले ही चोट ग्रस्त हो चुकी थीं।

बाबा की इस देखभाल में हम सब अत्यंत व्यस्त रहे। निःसंदेह इसमें महिला मंडली भी शामिल थी। बाबा ने लगभग दो हफ्ते पहले से खाना काफ़ी कम कर दिया था और मेहेरा उनको फल, जूस, महीन किया हुआ सेब तथा अन्य चीजें देकर पोषण पहुँचाती थीं। पहले बाबा ने कहा कि वे महीन किया हुआ सेब नहीं खाना चाहते लेकिन मेहेरा फिर संदेश भेजतीं थीं कि उन्हें खाना चाहिये और तब एक या दो चम्मच खाने के बाद, बचा हुआ सेब बाबा मंडली को प्रसाद की तरह बाँटते थे। क्योंकि हम यह अनुभव करते थे कि बाबा को भोजन की आवश्यकता थी, इसलिये हम उनसे कहते थे कि हम कुछ नहीं खा सकते क्योंकि हमने अभी अभी पान खाया है। लेकिन हम इस तरह बाबा को धोखा नहीं दे सकते थे। बाबा मज़ाक करते हुये कहते थे, "इधर आओ, तुम सब यह कहकर बहाना बना रहे हो कि तुमने अभी अभी पान खाया है ताकि मैं तुम्हें जो कुछ दे रहा हूँ, उसे खाने से तुम बच जाओ।" अपना शरीर छोड़ने तक बाबा बहुत विनोदपूर्ण रहे।

क्योंकि ऐंठन न तो कम हुई और न ही ठीक हुई, इसलिये पादरी ने होम्योपैथिक दवा की सलाह दी और बाबा ने उसकी कुछ गोलियाँ लेना स्वीकार कर लिया। छगन ने, जो एक आयुर्वेद विशेषज्ञ था, कुछ जड़ी बूटियाँ लेने की सलाह दी। उसके विचार से वे ऐंठन में बहुत लाभप्रद थीं। बाबा ने जानना चाहा कि क्या वे वास्तव में अच्छी थीं और छगन से कहा कि वह अपनी किताब से उनके गुण पढ़कर सुनाये। इसके बाद उन्होंने छगन को कुछ जड़ी बूटियों को खिलाने की अनुमति दी। इस प्रकार बाबा ने सभी मंडली जनों को अपनी सेवा करने का मौका दिया।

इसके कुछ समय पहले, बम्बई के डॉ. राम गिंडे ने यह खबर भेजी थी कि वे मेहेराज़ाद आकर बाबा के पास कुछ समय बिताने के लिये तैयार थे। बाबा ने उन्हें सूचना भेजी कि बाबा उन्हें मेहेराज़ाद आने के संबंध में सूचना भेजेंगे लेकिन इस बीच उन्हें अपने काम का इस तरह प्रबंध करना चाहिये ताकि उनके मेहेराज़ाद आने पर उनके मरीज़ असहाय न हो जायें। उस समय डा. गिंडे ने सोचा कि वे १५ फरवरी तक अपने सारे काम

निबटा कर स्वतंत्र हो जायेंगे और जब बाबा को यह बताया गया तो उन्होंने आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा कि क्या वे और पहले नहीं आ सकते थे। अन्त में, डॉ. गिंडे को सूचना दी गई कि बाबा चाहते थे कि वे ३१ जनवरी को मेहेराज़ाद आयें और क्योंकि उन्हें पूना होते हुये आना था इसलिये हम लोगों ने सलाह दी कि वे डॉ. ग्रान्ट से मिलें जिनकी रिपोर्ट बाबा के इलाज में सहायक होगी। अतः डॉ. गिंडे ३१ जनवरी को सुबह बम्बई से जल्दी चल दिये।

पूना में, डॉ. गिंडे को डॉ. ग्रांट ने बाबा की हालत की ताजी रिपोर्ट दी और जल्दी जल्दी किये गये नाश्ते के दौरान दी गई इस डॉक्टरी रिपोर्ट के मिलने के बाद, डॉ. गिंडे पूना से अहमदनगर के लिये तुरंत चल दिये।

बार बार होने वाली ऐंठन तथा गर्दन में होने वाली घोर पीड़ा के कारण, बाबा ३० जनवरी की रात में लगभग दो घंटे सोये और उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि डॉ. गिंडे दोपहर के भोजन के समय तक उन्हें देखने के लिए आ रहे थे।

दिन के बारह बजने वाले थे जब बाबा ने घड़ी की ओर देखा जैसे कि पादरी को याद दिला रहे हों कि दोपहर में दी जाने वाली होम्योपैथिक दवा की अन्तिम दो गोलियों के देने का समय शीघ्र ही आने वाला था और गोलियाँ खाने के बाद, बाबा ने होम्योपैथिक चिकित्सा के बारे में अपना दीर्घकालीन मत प्रकट करते हुये पादरी से कहा, ''तुम्हारी दवाओं को क्या हो गया है ? तुम्हारी होम्योपैथी बेकार है, इससे कोई फायदा नहीं होता। बोतल को बाहर फेंक दो।'' हम सब हँसने तथा इस विषय में मज़ाक करने लगे।

इस दौरान बाबा डॉ. गिंडे को नहीं भूले थे और जब टेलीफोन के माध्यम से संदेशों के आदान–प्रदान द्वारा यह मालूम हुआ कि वे अभी तक अहमदनगर में आदी सीनियर के ऑफिस में नहीं आये हैं, बाबा ने कहा कि उन्हें आने में देर हो रही थी और उन्होंने आदी सीनियर के पास एक दूसरा संदेश भिजवाया कि वे डॉ. गिंडे के आने पर उन्हें चाय या किसी और बात के लिये न रोकें बल्कि उन्हें सीधे मेहेराज़ाद भेज दें।

जब बाबा अपने विशेष पलंग पर पीठ का सहारा लेकर अधलेटी अवस्था में आराम कर रहे थे, बारह बजकर पन्द्रह मिनट पर उन्हें ऐंठन

का नया दौरा पड़ा। जब वे अपने सिर व पीठ को पलंग के सहारे रखकर बैठे हुए थे, उनका शरीर अंतिम झटके से हिला। उन्होंने अपनी बाँहें झुकाईं, अपना मुँह कसकर बंद किया और प्रियतम के शरीर की समस्त गतिविधि बिल्कुल बंद हो गई। इससे उनके चारों ओर खड़े हुये सभी लोगों को यह आभास हुआ कि वे हमें छोड़कर उस ''असीम, अखण्ड दैवी महासागर की विलक्षण एवं सीधी यात्रा'' पर चले गये थे।

मैंने तुरंत उनका मुँह खोला और लगभग आधे घण्टे तक मुँह से कृत्रिम श्वाँस देकर उन्हें फिर से जीवित करने की कोशिश की जब कि डॉ. गौहर ने मेरे इस कार्य में मदद करने के लिये कई इंजेक्शन लगाये। लेकिन उस एक में, जो सबको जीवन प्रदान करता तथा सबको सहारा देता है, पुनः जीवन स्थापित करने के हमारे सारे निराशापूर्ण प्रयत्न बिस्तर पर पड़े हुये शरीर से कोई भी प्रत्युत्तर प्राप्त नहीं कर सके और मैं थकान के कारण बेहोश होकर फर्श पर गिर गया।

लगभग आधे घंटे के बाद, डॉ. गिंडे और डॉ. ब्रीसमैन अपने साथ आक्सीजन सिलिंडर लेकर अहमदनगर से आये। उन्होंने भी बाबा को फिर से जीवित करने की कोशिश की। फिर भी, हृदय निश्चित रूप से रूक गया था, संवेदनाशक्ति समाप्त हो गयी थी और निःसंदेह जीवन ज्योति बुझ चुकी थी।

पिछली बातों पर विचार करने पर, जब डॉ. ग्रान्ट और डॉ. डंकिन ने मेहेर जी के साथ ३० जनवरी को बाबा से भेंट की, उस समय बाबा के शरीर में ऐंठन हुई लेकिन बाबा ने कहा कि यह उनका शूली पर चढ़ना था, उनका समय आ गया था लेकिन सब कुछ ठीक था और उन्हें पूना क्लीनिक में जाने की कोई ज़रूरत नहीं थी जैसी कि डॉ. ग्रान्ट सलाह दे रहे थे। वास्तव में, बाबा ने अपने आगामी दर्शन प्रोग्राम के बारे में भी डॉ. ग्रांट के साथ बहस की जिन्होंने बाबा को याद दिलाते हुये कहा कि यह एक परिश्रमपूर्ण कार्य था जिसके लिये उन्हें सबसे पहले शक्तिशाली होना चाहिये।

एक बार पुनः बाबा ने डाक्टर से कहा कि वे चिन्ता न करें, वे वास्तव में योजना के अनुसार दर्शन देंगे और उन्हें निमंत्रित किया कि वे पूना में, गुरु प्रसाद (दर्शन–स्थल) के सामने स्थित अपने घर से आकर स्वयं देखें

कि वे किस प्रकार दर्शन देंगे। बाबा ने कहा, ''यह कुछ विलक्षण प्रोग्राम होगा।'' इस संबंध में मैं यह चर्चा करना चाहता हूँ कि इसके पहले बाबा ने मंडली को बताया था कि, ''तुम मेरे लड़कों और मेरी लड़कियों को देखोगे जो अपने सम्पूर्ण प्रेम के साथ इतनी अधिक संख्या में आयेंगे कि मेरे पास आने वाली अत्यधिक भीड़ मंडली को दूर ढकेल देगी।''

बाबा हमें संकेत दे रहे थे कि हमारे साथ उनके रहने का अंतिम समय आ रहा था लेकिन, फिर भी, हमने कभी यह सोचा भी नहीं था कि वे अपना शरीर छोड़ने जा रहे हैं। अब, जब हम दर्शन प्रोग्राम के विषय में हमारे और बाबा के बीच हुये वादविवादों पर विचार करते हैं तो हम पाते हैं कि बाबा द्वारा दिये गये संकेत इतने अधिक अस्पष्ट नहीं थे।

हम लोगों पर दर्शन प्रोग्राम का उत्तरदायित्व रहता था और हम जानते थे कि इसके लिये क्या करना पड़ता था इसलिये हमें यह चिंता थी कि क्या बाबा दर्शन में होने वाले शारीरिक श्रम को सह सकेंगे। लेकिन बाबा कहते थे कि इस दर्शन के बारे में, जिसकी योजना उनके मन में थी, हमें डरने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने कहा, ''तुम सब उसके बारे में कोई चिंता न करो। इस बार दर्शन देना मेरे लिये बहुत आसान होगा।'' और फ्रांसिस की ओर मुड़कर बाबा ने पूछा, ''फ्रांसिस, अगर मैं लेटकर दर्शन दूँ तो क्या यह ठीक रहेगा ?''

फ्रांसिस ने उत्तर दिया, ''क्यों नहीं, आप अपनी इच्छा के अनुसार दर्शन दीजिये, बाबा।''

बाबा ने आग्रहपूर्वक पूछा, ''लेकिन मेरे प्रेमी क्या सोचेंगे। क्या वे पूछेंगे कि बाबा इस तरह लेटे क्यों हैं ?'' फिर उन्होंने ज़ोर देकर कहा, ''जब मैं दर्शन दूँगा, मैं लेटा होऊँगा।''

उस समय हमने यह सोचा कि यह लेटना, जिसके बारे में बाबा बात कर रहे थे, इस कारण होगा क्योंकि वे बुखार अथवा दूसरी किसी बीमारी के कारण बैठने में असमर्थ होंगे। ठीक इसी तरह, इसके पहले जब उन्होंने कहा था कि उनका समय आ गया था, हमने सोचा कि वे आगे होने वाले दर्शन के उन महान दिनों की बात कर रहे थे जब उनके प्रेमी अपने सम्पूर्ण प्रेम के साथ आये होंगे। हमें उस समय इस बात का जरा सा भी आभास नहीं हुआ था कि यह सब किसी गूढ़ बात की ओर संकेत था।

जितना अधिक हम दर्शन प्रोग्राम के बारे में सोचते थे, और बाबा लेटकर दर्शन देने पर अधिक ज़ोर देते थे, उतना ही अधिक हमें इस बात पर आश्चर्य होता था कि इस तरह उन्हें संकेत करने में कितनी अधिक कठिनाई होगी। विशेष रूप से उनके चेहरे के भावों को पढ़ने में कठिनाई होती, जो हमेशा बहुत स्पष्ट रूप से बात को प्रकट कर देते थे।

लेकिन बाबा इसके लिये भी तैयार थे। ''इसमें क्या नुकसान होगा अगर मैं पूर्ण मौन में दर्शन दूँ ?'' उन्होंने हमें आने वाली घटनाओं की एक और झलक देते हुये पूछा। इसलिये हमने कहा, ''ठीक है, इस दर्शन को अपनी रीति से दीजिये, बाबा।''

इसके बाद भी, बाबा ने इस विषय को समाप्त नहीं किया, ''मेरे प्रेमी लेटकर दर्शन देने से कुछ और तो नहीं सोचेंगे ?'' बाबा ने कहना ज़ारी रखा। हालांकि हमने उन्हें आश्वासन दिया कि ऐसा नहीं होगा लेकिन मैं अभी भी यह अनुभव करता था कि उनका शरीर दर्शन प्रोग्राम में होने वाले श्रम को सह नहीं सकेगा जो निश्चित रूप से सुबह चार घंटे और दोपहर के बाद भी चार घंटे होगा। इसीलिये मैं डर रहा था। जब मैंने बाबा के सामने अपने इस डर को प्रकट किया, उन्होंने मुझसे चिन्ता न करने के लिये कहा और एक दूसरे अवसर पर उन्होंने मुझे यह कहकर डाँट दिया, ''मुझसे दर्शन के बारे में कोई बात मत करो। यह बहुत आसान होगा क्योंकि मैं उस समय बहुत ताक़तवर होऊँगा। जाओ और दूसरा काम देखो।''

और तब उन्होने हमसे कहा, ''चिन्ता करने का समय अब है जबकि मैं बहुत कमज़ोर हूँ और तुम्हें मेरी देखभाल करनी है। मैं मार्च तक ठीक हो सकता हूँ और १० अप्रैल को लोगों की भीड़ को दर्शन दे सकता हूँ; और मार्च का अर्थ है ''जल्दी चलो'। यह दूसरा संकेत था जो हम समझ नहीं सके।

एक बार, बाबा के अपने कमरे में ही कैद हो जाने के दौरान, मैं बाबा को प्रतिदिन के जो छोटे—मोटे समाचार दिया करता था, उनमें एक सन्यासी की कहानी थी जिसे उसके अनुयायी बहुत अधिक सम्मान देते

थे। एक दिन जब यह सन्यासी अपने कमरे से बाहर जाने की तैयारी कर रहा था, उसने अपने अनुयायियों को सूचना दी कि वह उन्हें छोड़कर जा रहा था, लेकिन वह लौटकर आयेगा, हालांकि उसने अपने लौटकर आने का समय नहीं बताया। तदनुसार, उसके अनुयायी रोज उसके पलंग पर साफ़ धुली चादर बिछाते थे और उसके आने की आशा में चादरें धोते थे। मैंने जो कुछ पढ़ा था, उसके अनुसार, करोड़ों गज चादरों का प्रयोग हो चुका था क्योंकि २००० वर्ष बीत चुके थे और सन्यासी के लौटने की अभी भी कोई आशा नहीं थी।

हम सब इस समाचार से खुश होकर बाबा के साथ खूब हँसे। बाबा ने कहा, ''वे भी वापस आयेंगे, लेकिन सन्यासी की तरह नहीं।''

• • •

b'oj&ifjHkk"kk ds ij

एक दिन मेहेरबाबा अपने शिष्यों के साथ मंडली हाल में बैठे हुये थे। उन्होंने हमसे कहा, ''मेरे शरीर छोड़ने के पश्चात् ईश्वर की खोज करने वाले तुम्हारे पास आयेंगे और पूछेंगे, 'क्योंकि आप लोग मेहेरबाबा के साथ रहते थे, क्या आप हमें बता सकते हैं कि वे अपने आपको क्या कहते थे?''

''और जब तुम उत्तर दोगे, कि वे मनुष्य रूप में ईश्वर थे, वे तुम से पूछेंगे, 'उन्होंने ईश्वर के बारे में क्या कहा था ?' और तब तुम क्या उत्तर दोगे ?''

हमने उत्तर दिया कि ईश्वर सर्वेसर्वा है, वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है तथा उसमें ईश्वर से संबंधित सभी गुण हैं।

बाबा ने कहा, ''तुम्हारा उ़त्तर केवल सत्य का एक भाग है क्योंकि ईश्वर इन सबके परे है। तुम ईश्वर की जो भी परिभाषा देने की कोशिश करते हो, वह ईश्वर को सीमित बना देती है जो कि स्वयं असीमित है और असीमित होने के कारण, वह सब कुछ है जिसमें कुछ नहीं भी अन्तर्निहित है। इसलिये अब तुम ईश्वर की पूर्ण परिभाषा किस प्रकार दोगे।''

जब मंडली का कोई भी जन संतोषजनक उत्तर नहीं दे सका, बाबा

ने हमें बताया, ''जब लोग तुमसे पूछेंगे 'ईश्वर क्या है ?' इसका एकमात्र उत्तर इसके विपरीत प्रश्न है 'ईश्वर क्या नहीं है ?''

• • •

eR;q dk lgh vFk

मेहेरबाबा द्वारा अपनी मंडली को दी गई कई अत्यंत महत्त्वपूर्ण शिक्षाओं में से एक शिक्षा थी, मृत्यु का सही अर्थ, और आज भी वे लोग, जो मंडली के साथ समय बिताते हैं, यह भलीभाँति देखते हैं कि उनके साथ मृत्यु कुछ हद तक एक उत्सव, एक निरंतरता का रूप ले लेती है।

जून १९६१ में, कलकत्ता से एक बाबा प्रेमी ने पत्र द्वारा बाबा को उनके एक कार्यकर्ता की मृत्यु की सूचना दी, और उन्होंने मुझे निम्नलिखित उत्तर देने का निर्देश दिया : ''जीवन और मृत्यु, बाबा के उत्कृष्ट कार्यकर्ता एवं प्रेमी को प्रभावित नहीं करते हैं; क्योंकि वह, जो बाबा से प्रेम करता है, उसके कार्य के लिये, मरने के लिए जीवित रहता है और उस एक प्रभु में निवास करता है जिसका अस्तित्व अनन्त और शाश्वत है।''

• • •

पत्र और दैनिक पंजी (डायरी)

ub! nfu;k

vxLr] lu 1946 dh Mk;jh l&

जल तपस्वी बाबा कई वर्षों तक गंगोत्री में एक बाहर की ओर निकली हुई चट्टान के नीचे रहते रहे। उसके बाद वे गंगा के किनारे एक मंदिर में रहने लगे। एक दिन बाढ़ के कारण मंदिर गिर गया, लेकिन वे मंदिर के अवशेषों पर पानी में बैठते रहे और इस तरह उनका नाम जल तपस्वी बाबा पड़ गया, जिसका अर्थ है, ''वह व्यक्ति जो जल में तपस्या करता है।''

जब मैंने ऋषिकेश में उनसे संपर्क किया, उन्होंने पूछा, ''बम्बई कैसा है ?''

मैंने उत्तर दिया, ''कहीं भी शान्ति नहीं है और बम्बई का भी यही हाल है।''

योगी ने कहा, ''अब समय आ गया है जब ७५% मानव जाति का विनाश होगा और अवतार पहले ही जन्म ले चुका है।''

मैंने पूछा, ''कोई व्यक्ति उस अवतार को किस प्रकार से प्राप्त कर सकता है ?''

उसने कहा, ''उसे कोई नहीं जानता। वह पहले ही जन्म ले चुका है और मैं यह जानता हूँ। वह एक अनजान, अस्तित्वहीन व्यक्ति की तरह, मनुष्यों के बीच इधर–उधर घूमता है। गाँधी जैसे लोग पूरी दुनियाँ में प्रसिद्ध हैं। लेकिन यह सब अवतार के सहारे हो रहा है। हिटलर ने भी क्रांति की और दुनियाँ को हिला दिया और प्रत्येक व्यक्ति यह समझता था कि हिटलर ने यह सब किया लेकिन अवतार ने ही हिटलर के माध्यम से यह सब किया।''

मैंने प्रश्न किया, ''अवतार अपने आपको कब प्रकट करेगा ?''

सन्त ने उत्तर दिया, ''बाइस वर्ष के बाद! बाइस वर्ष तक यह 'नर्कवासी' (नर्क के समान) दुनियाँ रहेगी और तब एक 'स्वर्गवासी' (स्वर्ग के समान) दुनियाँ का जन्म होगा। क्योंकि इन दोनों दुनियाँओं के लोग न तो एक साथ रह सकते हैं और न ही उनके पारस्परिक विचारों में एकता हो सकती है, इसलिये वर्तमान दुनियाँ का ७५% भाग नष्ट हो जायेगा और बचे हुये लोग नई दुनियाँ के गुणों में लीन हो जायेंगे। जब नई दुनियाँ का जन्म होगा, सब जगह सुख और शान्ति होगी। अवतार द्वारा भौतिक शरीर छोड़ने के बाद ही वह अवतार, मुक्तिदाता के रूप में पहचाना और पूजा जायेगा।''

• • •

lUr d'iky flg d lkFk ,d HkV ¼१९५६½

बरजोर गई ने सन्त कृपालसिंह को जब यह सूचना दी कि मेहेरबाबा सतारा में थे, कृपालसिंह ने बाबा का दर्शन करने की इच्छा प्रकट की क्योंकि वे जल्दी ही पूना जाने वाले थे लेकिन उन्हें बताया गया कि मेहेरबाबा एकान्तवास में थे और वे किसी से नहीं मिलेंगे।

ऐसा लगता था कि कृपालसिंह सोच रहे थे कि यह सब मंडली का काम था क्योंकि उन्होंने पहले घटी एक घटना का उदाहरण दिया जब दिल्ली में उनके साथ इसी तरह का व्यवहार किया गया था। उस समय यह बहाना बनाया गया था कि बाबा भेंट करने वाले व्यक्तियों के साथ व्यस्त थे। कृपालसिंह ने कहा कि जैसे ही बाबा ने उन्हें दूर से देखा, उन्होंने उन्हें अपने पास बुलाकर प्रेमपूर्वक उनका आलिंगन किया और कुछ समय तक अपने पास बैठने का अवसर भी दिया। बरजोर इस शिकायत को शान्तिपूर्वक सुनते रहे, लेकिन अन्त में, उन्होंने कृपालसिंह को प्रणाम किया और अपने घर लौट आये।

यद्यपि यह एकान्तवास का समय था जिसमें बाबा अपना अधिकांश समय मस्त–कार्य में व्यतीत करते थे, फिर भी, जब उन्हें बरजोर के पत्र से इस घटना का पता चला, बाबा ने मुझे आज्ञा दी कि मैं सतारा में सन्त कृपालसिंह के साथ उनकी भेंट के लिये कोई दिन व समय निश्चित करूँ। यह जानने के बाद कि कृपालसिंह कल्याण व पूना आने वाले थे, बाबा ने मुझे इस निर्देश के साथ कल्याण भेजा कि मैं १४ मई को उनसे भेंट करके, उन्हें बाबा का प्रेम दूँ। मुझे यह भी निर्देश दिया गया कि मैं उनके साथ एक घंटा व्यतीत करके, उन्हें बाबा से संबंधित सभी समाचार दूँ।

जब मैंने १४ मई की सुबह कृपालसिंह को देखा, वे लगभग ७५ पुरुषों एवं महिलाओं को एक छोटे पंडाल में उपदेश देते हुये मंच पर बैठे हुये थे। सन्त की बगल में बैठा हुआ एक भद्र पुरुष, पहले कबीर और गुरुनानक के कथन पढ़ता था और तब कृपालसिंह एक संक्षिप्त उपदेश के रूप में उनका अर्थ समझाते थे। यह सभा १०.३० बजे खत्म हुई और यह घोषणा की गई कि दूसरी सभा शाम को साढ़े छः बजे होगी।

अधिकांश सुनने वाले शरणार्थी थे जो कृपालसिंह को १९४७ में हुये

भारत के विभाजन के पहले से जानते थे, उनमें से कुछ कृपालसिंह के गुरु, सन्त सावनसिंह के अनुयायी भी रह चुके थे।

अगर मेहेरबाबा ने मुझे यह नहीं बताया होता कि कृपालसिंह वास्तव में सन्त थे और उन्हें (बाबा को) बहुत प्रिय थे, मैंने उन्हें एक सरल, बहुत अधिक प्रेम करने वाले, नम्र और ईमानदार सिख भद्रपुरुष के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझा होता। वे अपनी जातीय वेशभूषा में थे और सफेद पगड़ी बाँधे हुये थे। यद्यपि वे अधेड़ अवस्था को पार कर चुके थे, अभी भी उनका काफी लम्बा–चौड़ा व्यक्तित्व था।

मुझे श्रोताओं में से एक ने बताया कि कृपालसिंह को सेवामुक्त होने के बाद पेंशन मिलती थी और कई वर्ष पहले वे सेना में काम करते थे। वे दिल्ली में जिस स्थान पर रहते थे, उसका नाम उनके गुरु के नाम पर था किन्तु उनके बच्चे किसी दूसरी जगह पर रहते तथा कार्य करते थे। मुझे सूचना देने वाले व्यक्ति ने यह भी बताया कि यद्यपि कृपालसिंह सबसे पहले गुरु, शिवदयाल के परम्परागत उत्तराधिकारी नहीं थे, फिर भी उनको अपने गुरु की 'गद्दी' अथवा सीट प्राप्त थी। उत्तराधिकार की श्रृंखला में गुरु शिवदयाल के बाद जयदयाल और उसके बाद कोई दूसरे गुरु हुये जिनका नाम मुझे याद नहीं है। उनके बाद सावनसिंह हुये जिन्होंने कृपालसिंह को गोद लिया। इस प्रकार कृपालसिंह को, जो स्वर्गीय सावनसिंह की गद्दी पर थे, अपने तथा सावनसिंह, दोनों के अनुयायियों से सम्मान प्राप्त था और इस कर्तव्य के पालन में कृपालसिंह समय समय पर सावनसिंह के नाम पर बने केन्द्रों में जाते थे और कल्याण का केन्द्र उन केन्द्रों में से एक था।

जैसे ही कृपालसिंह पास में स्थित अपने कमरे में जाने के लिये मंच से उतरे, मैंने उन्हें प्रणाम करके सूचित किया कि मुझे मेहेरबाबा ने एक संदेश के साथ भेजा था और कृपालसिंह को अपना प्रेम देने की आज्ञा दी थी। सन्त यह सुनकर प्रसन्न हुये। और मुझे अपने कमरे में ले गये जहाँ मैंने उन्हें अपने कार्य का उद्देश्य विस्तारपूर्वक बताया।

कृपालसिंह ने सबसे पहले दिल्ली में बाबा से अपनी भेंट के बारे में बताया और यह भी बताया कि किस प्रकार उन पर यह प्रभाव पड़ा कि

मंडली ने उस भेंट में काल्पनिक बाधा पहुँचाई थी। अन्त में, उन्होंने कहा कि मेहेरबाबा प्रेम की साकार मूर्ति थे और उन्हें बाबा द्वारा कहे गये शब्द अभी भी याद थे; ''तुम मेरे पास आये हो, तुम विनीत हो; तुम जीत गये हो और मैं हार गया हूँ।'' सन्त ने कहा कि यह बाबा की महानता थी। फिर उन्होंने मुझसे बाबा के एकान्तवास, स्वास्थ्य और कुशलता के बारे में पूछा और बाबा का संदेश पुनः दोहराने की मुझसे प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि वे बाबा से संबंधित सभी समाचार सुनने के लिये उस समय खाली थे।

इसी समय सन्त के बहुत से शिष्यों ने कमरे में प्रवेश किया और उसमें बाधा न पहुँचाने की इच्छा से, मैंने उनके फुरसत में होने का इन्तज़ार करने का प्रस्ताव रखा। क्योंकि ये सन्त के शिष्यों के साथ उनकी व्यक्तिगत भेंटें थीं इसलिये मैंने कमरे के बाहर जाना चाहा लेकिन कृपालसिंह ने मुझसे कहा कि मैं वहाँ पर अपने घर की भाँति महसूस करूँ और अपने एक शिष्य को मेरे लिये कुछ नाश्ता लाने के लिये कहा।

शिष्यों द्वारा सन्त से की गई प्रार्थनायें भिन्न भिन्न प्रकार की थीं। जिन्हें शारीरिक कष्ट था उन्हें दवाइयाँ बताई गईं। कुछ लोगों को, जो मानसिक रूप से अशान्त थे, सन्त ने सान्त्वना दी और ध्यान करने के लिये कहा। थोड़े से लोगों को, जो आध्यात्मिक मार्ग दर्शन चाहते थे, ध्यान करने के बारे में विस्तृत निर्देश दिये गये– उन्हें किस प्रकार बैठना चाहिये, किस ढँग से साँस लेना चाहिये, किस प्रकार तनाव रहित अनुभव करना चाहिये आदि–आदि। उनसे यह वादा किया जाता था कि अगर उनके निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन किया गया तो ध्यान करते समय उन्हें निश्चित रूप से आन्तरिक अनुभव होंगे।

अक्सर जब हम अकेले होते थे, वे मुझसे कहते थे कि मैं जो कुछ कहना चाहता था, कहूँ लेकिन उसी समय सन्त से सलाह लेने के लिये कोई न कोई व्यक्ति आ जाता था। ऐसे ही एक आगन्तुक का मुझसे परिचय कराया गया जो सन्त का गुरु भाई था और बहुत गरीब था। वह चाहता था कि कृपालसिंह उसके घर जाकर उसकी बीमार पत्नी से मिलें जो वहाँ आने में असमर्थ थीं। सन्त ने यह स्वीकार कर लिया और मुझसे

साथ चलने के लिये कहा। लेकिन मैंने यह कहकर जाने से मना कर दिया कि मुझे विश्वास था कि परिवार के लोग सन्त से अकेले मिलकर अधिक प्रसन्न होंगे।

एक या दो घंटे के बाद, कृपालसिंह अपने कमरे में वापस आये और आगन्तुकों का आना पुनः आरम्भ हो गया। एक दूसरे व्यक्ति ने भी सन्त से घर चलने की प्रार्थना की। सन्त का उत्तर था कि वे एक साधारण मनुष्य मात्र थे और उनके इस प्रकार जाने से कोई लाभ नहीं होगा। फिर थोड़ी देर बाद, सन्त ने उस व्यक्ति से कहा कि वह उसके घर जाने के बारे में उस समय सोचेंगे जब वह अपने घर में रोज़ भजन कीर्तन करने का वचन दे। उन्होंने यह भी कहा कि अगर इस वचन का पालन किया गया तो उस व्यक्ति के साथ साथ सन्त को भी लाभ होगा। अगर इस वचन का पालन नहीं किया गया, जैसा कि अक्सर होता है, तब केवल घर जाने मात्र से कोई फ़ायदा नहीं होगा। वह व्यक्ति ज़िद करता रहा अतः अन्त में कृपालसिंह ने उसके घर जाने का समय निश्चित करना स्वीकार कर लिया।

एक दूसरे अत्यंत वृद्ध व्यक्ति ने, जिसे सन्त ने अपना दूसरा गुरु–बंधु बताया, कमरे में प्रवेश किया और उसका अभिवादन बड़े अपनेपन के साथ किया गया। दोनों एक दूसरे से मिलकर बहुत खुश थे और वे बड़े अपनेपन के साथ बात करते रहे। हालांकि मैं उनके पास बैठा हुआ था पर मैं उनकी बातचीत को समझ नहीं सका लेकिन यह अन्दाज़ लगाया कि कृपालसिंह के पुराने मित्र को कुछ कठिनाइयाँ थीं जिनके बारे में सन्त ने उन्हें कुछ सलाह दी। बाद में मुझे यह मालूम हुआ कि यह व्यक्ति एक सेवानिवृत्त (रिटायर्ड) प्रोफ़ेसर था तथा वह और सन्त कृपालसिंह, दोनों सन्त सावनसिंह के शिष्य थे।

इस पुराने दोस्त के जाने के बाद, जब मैं और सन्त अकेले रह गये, उन्होंने मुझसे बात शुरू करने के लिये कहा। लेकिन मैंने उन्हें याद दिलाया कि यह उनके भोजन का समय था। मैंने उन्हें सलाह दी कि वे भोजन के बाद आराम करते समय मेरी बात सुनें।

इस समय एक सम्भ्रान्त दम्पत्ति ने कमरे में प्रवेश किया और सन्त के सामने बैठकर उनसे निःसंकोच बातें करने लगे। वे सन्त के किसी

अनुयायी के निकट संबंधी प्रतीत होते थे। कृपालसिंह ने एक महिला से पूछा कि क्या वह ध्यान के बारे में दिये गये उनके निर्देशों का पालन कर रही थी और क्या उसे किसी प्रकार के आन्तरिक अनुभव हुये थे। उसने शरमाते हुये स्वीकार किया कि पारिवारिक कार्यों के कारण वह आवश्यक ध्यान नहीं दे सकी थी। उसने बताया कि उसने कोशिश की थी लेकिन कोई सफलता नहीं मिली।

यह सुनकर सन्त ने कहा कि अगर ऐसा था तो उसे उनको पत्र लिखना चाहिये था और वे उसकी कठिनाइयों को दूर करने के लिये आगे निर्देश देते। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि कठिनाइयों को दूर करने के लिये, उन्हें (सन्त को) पत्र लिखना चाहिये। तब उन्होंने उस महिला को दूसरे कमरे में जाकर, एक एकान्त जगह पर कुछ घंटे बैठने की आज्ञा दी और उससे कहा कि इस प्रकार ध्यान करते समय होने वाले किसी प्रकार के आन्तरिक अनुभव को वह बाद में उन्हें बताये।

यहाँ मैं ध्यान करते समय होने वाले अनुभवों के बारे में कुछ कहना चाहूँगा जो मुझे कृपालसिंह के लोगों से मालूम हुआ।

यह कहा जाता था कि जब कभी कृपालसिंह अपने शिष्यों को ध्यान में बैठने का निर्देश देते थे, उन्हें कुछ आन्तरिक अनुभव अवश्य होते थे। इससे उन्हें बहुत संतोष होता था और वे और अधिक उत्साह के साथ ध्यान का अभ्यास करते थे। यह सब सन्त की कृपा से हुआ माना जाता था और मुझे इनमें से कुछ अनुभवों को विस्तारपूर्वक सुनने का अवसर मिला। इनमें से कुछ अनुभव थे– अँधेरे कमरे में भिन्न भिन्न प्रकार के रंगों का प्रकाश देखना, कुछ समय के लिये शारीरिक चेतना का लुप्त होना आदि आदि। मैंने इस बात पर ध्यान दिया कि स्वयं सन्त इस प्रकार के अनुभवों पर काफ़ी जोर और उन्हें महत्त्व देते थे क्योंकि, जैसा कि उन्होंने मुझसे कहा, ये अनुभव साधक का उत्साह बढ़ाने का काम करते थे।

दोपहर के भोजन के बाद कृपालसिंह ने इन्टरव्यू देना बंद कर दिया और अब हम कमरे में अकेले थे। वह उस समय आराम करने के मूड में थे और उन्होंने मुझसे अपनी बात कहने के लिये कहा लेकिन जैसे ही मैंने बोलना शुरू किया, सन्त की दो निकट महिला अनुयायियों ने कमरे में प्रवेश किया। ये महिलायें, सन्त के अधिकांश अनुयायियों की तरह, जिन्हें

मालूम था कि मैं मेहेरबाबा के पास से आया था, बाबा के बारे में सुनने के लिये बेचैन थीं और जब भी उन लोगों को मौका मिलता था, वे मेरे चारों ओर एकत्र होकर अत्यंत आदर और प्रशंसा के साथ, बाबा के बारे में मुझसे पूछते थे।

इस समय दोपहर के ठीक बारह बजे थे और मैंने अपनी बात शुरू करते हुये कहा कि बाबा अपने शिष्यों को अक्सर बतलाते थे कि भारत के संतों और योगियों में से केवल सात सन्त उन्हें बहुत प्रिय थे और वे कृपालसिंह को बहुत प्यार करते थे जो उनमें से एक थे। मैंने इस बात की भी चर्चा की कि बाबा अक्सर कहते थे कि यद्यपि वे सृष्टि के स्वामी थे फिर भी वे अपने प्रेमियों के दास थे। कृपालसिंह यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और कहा कि यह मेहेरबाबा की कृपा थी और उनके लिये यह बड़े भाग्य की बात थी कि मेहेरबाबा ने उन्हें याद किया जो प्रेम की साकार मूर्ति थे।

मैंने अपनी बात ज़ारी रखते हुये कहा कि बाबा गाडगे महाराज और कम्मू बाबा को अक्सर याद करते थे और उनसे उतना ही प्रेम करते थे जितना वे अपने कृपालसिंह से करते थे। मैंने गाडगे महाराज के साथ मेहेरबाबा की भेंट का वर्णन विस्तारपूर्वक किया और यह भी बताया कि उन्होंने और कम्मू बाबा ने मेहेरबाबा के बारे में क्या कहा था। मैंने दूसरे सन्तों के बारे में भी सभी सूचनायें दीं जो बाबा से बहुत प्रेम करते थे।

कृपालसिंह ने पूछा कि उपरोक्त संतों ने क्या उनके बारे में कुछ कहा था और मैंने उन्हें बताया कि मैंने ऐसा कुछ नहीं सुना था। उन्होंने उनके पते पूछे और कहा कि उन्हें संतों के पास जाने में हमेशा खुशी होती थी। अतः वे अपनी अगली बम्बई यात्रा में इन दोनों संतों से भेंट करेंगे।

मैंने उन घटनाओं को दोहराया जिनके कारण मैं कल्याण आया था और यह भी बताया कि किस प्रकार बाबा, जो इस समय एकान्तवास में थे, यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुये कि उनका कृपालसिंह उनके दर्शन करना चाहता है।

मैंने सन्त को एकान्तवास के दौरान, मेहेरबाबा द्वारा मस्तों और सन्तों के साथ किये जाने वाले कार्य के बारे में बताया और कहा कि यद्यपि इस समय बाबा अपने किसी भी अनुयायी अथवा आगन्तुक को दर्शन नहीं देते थे, उनके एकान्तवास रूपी कमरे के दरवाज़े, उनके अत्यंत प्रिय मस्तों एवं

संतों के लिये कभी भी बंद नहीं थे। इस पर कृपालसिंह ने रसिकतापूर्वक कहा कि वे मस्त नहीं थे। तब पूना से सतारा तक की दूरी जानने के बाद, सन्त ने बाबा से अपनी भेंट के लिये १८ मई का दिन निश्चित किया और मैंने सलाह दी कि सुबह ६ से १० बजे के बीच का समय सुविधाजनक होगा।

अब सन्त ने बाबा के बारे में और अधिक जानने की इच्छा ज़ाहिर की इसलिये मैंने उन्हें उस समय तक का बाबा का जीवन संक्षेप में बताया जिसमें मैंने मेहेराबाद में होने वाले भिन्न भिन्न क्रियाकलापों, बाबा का मौन, एकान्तवास की विभिन्न अवधियों, उनके व्रत, विदेश यात्रायें, नई ज़िन्दगी, विभिन्न प्रोग्राम और विभिन्न संदेशों के बारे में बताया। मैंने बाबा के मौन होने के बावजूद प्रकाशित होने वाले साहित्य के बारे में भी बताया। मैंने पूर्व–पश्चिम में विभिन्न बाबा केन्द्रों, गरीबों के साथ कार्य और अपने पश्चिमी प्रेमियों को अपना सहवास देने के लिये, जुलाई सन् १९५६ में बाबा की आगामी विदेश यात्रा के बारे में भी बताया।

अपने वर्णन के दौरान मैंने उन विषयों को भी शामिल किया जो बाबा ने अपने पिछले सार्वजनिक दर्शन प्रोग्रामों के दौरान जनता को बताये थे जैसे कि "मैं पुरातन पुरुष हूँ, मैं इस युग का अवतार हूँ, मैं प्रेम का महासागर हूँ।" मैंने बाबा–प्रेमियों के कुछ चमत्कारिक अनुभवों की भी चर्चा की और यह भी बताया कि किस प्रकार बाबा उन अनुभवों को कोई महत्त्व नहीं देते थे। वे यहाँ तक कहते थे कि ये सब उनके लिये समाचार थे।

मैंने जो कुछ कहा, सन्त उसे रुचि के साथ ध्यानपूर्वक सुनते रहे। वे कभी कभी अधिक जानकारी के लिये प्रश्न पूछते थे। जैसे ही कमरे में लगी घड़ी में एक बजा, मैंने उन्हें याद दिलाया कि मैंने बाबा की आज्ञा के अनुसार एक घंटे की बातचीत पूरी कर ली थी। वास्तव में उन्हें बताने के लिये मेरे पास अब कुछ नहीं था।

मैंने जो कुछ बताया था उससे सन्त खुश हुये और बाबा की जीवनी के संदर्भ में सद्‌गुरुओं के बारे में पूछा जो मैंने उन्हें बता दिया। उन्होंने उनके पते पूछे। मैंने उन्हें बताया कि उन्होंने शरीर छोड़ दिया था। उन्होंने कहा कि बाबा के कथन के अनुसार पृथ्वी पर हमेशा पाँच सद्‌गुरु रहते थे।

मैंने इस बात की पुष्टि करते हुये बताया कि सद्‌गुरुओं और आध्यात्मिक पथ के बारे में बहुत से तथ्य बाबा की पुस्तक गॉड–स्पीक्स में दिये गये थे। उन्होंने उत्सुकता के साथ पूछा कि क्या बाबा ने वर्तमान पाँच सद्‌गुरुओं के नाम बताये थे। मैंने कहा कि ऐसा नहीं था। तब उन्होंने मुझसे एक सन्त और सद्‌गुरु के बीच में अन्तर पूछा और मैंने पुनः गॉड–स्पीक्स को उद्‌धृत किया।

एक नये विषय पर चर्चा करते हुये सन्त ने कहा कि जिस समय वे विदेश में थे, उन्होंने सुना था कि बाबा उस समय भारत में कुछ महत्त्वपूर्ण सभायें कर रहे थे जिनमें उन्हें कुछ महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक तथ्यों की व्याख्या करनी थी। मैंने उन्हें बताया कि यह मेहेराबाद में हुआ एक महीने का सहवास कार्यक्रम था और इसका विस्तृत विवरण अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ था।

सन्त ने यह भी जानना चाहा कि वर्णमाला तख्ती के इस्तेमाल के बिना, मौन रखते हुये बाबा किस प्रकार अपनी बात कहते थे, इसलिये मैंने बाबा के बात करने के तरीके को समझाया। मैंने कहा कि जब वे बाबा के दर्शन के लिये सतारा जायेंगे तब वे स्वयं इसे देख सकेंगे।

अन्त में कृपालसिंह ने कहा कि बाबा के बारे में यह सब सुनने के बाद, वे यह सोचते थे कि अगर बाबा अपने प्रेमियों को 'अनुभव' दें तो बहुत अच्छा होगा। इस पर मैंने उत्तर दिया कि सामान्य तौर पर प्रेमियों को इसकी ज़रूरत अनुभव नहीं होती थी क्योंकि बाबा आध्यात्मिक पथ पर इस प्रकार के मायावी इन्द्रजाल को कोई महत्त्व नहीं देते थे। प्रेमियों के लिये, उनके प्रति बाबा का प्रेम और बाबा के प्रति उनकी भक्ति का सबसे अधिक महत्त्व था।

मैंने और अधिक स्पष्ट करते हुये कहा कि प्रत्येक साधक को, जो आध्यात्मिक पथ पर चलता है, कुछ आन्तरिक अनुभव होते हैं क्योंकि सब कुछ साधक की 'आत्मा' के अंदर है और बाहर से देने के लिये कुछ भी नहीं है। इसीलिये बाबा आन्तरिक अनुभवों की अपेक्षा ईश्वर के प्रति प्रेम को अधिक महत्त्व देते हैं।

तब कृपालसिंह ने कहा कि पश्चिम में बाबा के बहुत से प्रेमी व अनुयायी थे। उनमें से कुछ से वे मिले थे और एक बार उन्होंने फिर से अपने प्रिय विषय पर आते हुये कहा कि यह बहुत अच्छा होगा अगर अपने प्रेमियों को उत्साहित करने के लिये, बाबा उन्हें आन्तरिक अनुभवों की कुछ झलकियाँ दें।

मैंने कहा कि बाबा ध्यान अथवा यौगिक क्रिया के कारण होने वाले छोटे छोटे अनुभवों को कोई महत्त्व नहीं देते थे क्योंकि ये हमारी स्वयं की रचना होने के कारण मायावी होते हैं। बाबा, ईश्वर साक्षात्कार के अंतिम अनुभव की प्राप्ति के पहले होने वाले सभी अनुभवों से प्राप्त किये जाने वाले संतोष और बाधाओं से उत्पन्न होने वाले ख़तरों के प्रति सचेत होने पर अधिक महत्त्व देते हैं। मैंने बाबा के कथन को उद्धृत करते हुये अपनी बात समाप्त की। ''सद्गुरु के प्रति प्रेम से अधिक आज्ञाकारिता का महत्त्व है और इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण अपने सद्गुरु के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण है क्योंकि वह व्यक्ति जो 'स्वयं' को खोने का साहस करता है, लक्ष्य को पाता है और ईश–स्थिति (God-State) की चेतना का अनुभव करता है, भले ही उसे कोई आन्तरिक अनुभव हुये हों अथवा नहीं।''

इस पर संत कहने लगे कि वे पश्चिम में बाबा के कुछ प्रेमियों से मिले थे जो बाबा के इन कथनों के बावजूद आन्तरिक अनुभव चाहते थे और मैंने उत्तर दिया कि कुछ लोग अपवाद हो सकते थे। संत इस बात पर सहमत नहीं हुये और मुझसे बाबा से यह कहने के लिये प्रार्थना की कि वे अपने प्रेमियों को, आध्यात्मिक पथ पर उनका उत्साह बढ़ाने के लिये आवश्यक अनुभव दें।

मैं अपनी हँसी नहीं रोक सका। तब मैंने आदरपूर्वक हाथ जोड़कर उन्हें बताया कि किस प्रकार हममें से कुछ लोग इस प्रकार की प्रार्थनाओं से अक्सर बाबा को परेशान करते थे और उनकी कृपा प्राप्त करने में असफल रहे थे। मैंने प्रस्ताव रखा कि सतारा आने पर संत सभी प्रेमियों की ओर से प्रार्थना करें और बाबा अपने प्रिय कृपालसिंह की प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे। इस पर संत प्रसन्नतापूर्वक हँसे।

अब संत से विदा लेने का समय आ गया था लेकिन उन्होंने आग्रह किया कि पहले मैं भोजन करूँ। उन्होंने वहाँ बैठी हुई महिलाओं में से एक महिला को, जिसका नाम श्रीमती नरेन्द्र था, भोजन परोसने की आज्ञा दी। इस अवधि में, श्रीमती नरेन्द्र ने कहा कि यह उनका सौभाग्य था कि वे मेहेरबाबा की जीवनी सुन सकीं। उनके बारे में वे पहले सुन चुकीं थीं और उन्होंने बाबा के दर्शन की इच्छा प्रकट की। मैंने कहा कि यह तभी संभव था अगर वे संत के साथ सतारा आयें लेकिन उन्होंने इस पर संदेह प्रकट किया।

वह भी आन्तरिक अनुभवों की ज़रूरत महसूस करती थीं और मुझे सलाह दी कि मैं बाबा से अपने प्रेमियों को कुछ अनुभव देने के लिये कहूँ। मैंने उत्तर दिया कि खिलौने छोटे बच्चों के लिये होते हैं जब कि बाबा के प्रेमी वयस्क थे और किसी अधिक यथार्थ वस्तु की इच्छा रखते थे। उसने मेरी इस बात को विनोदपूर्वक सुना और तब अपने कुछ अनुभवों का वर्णन किया।

मैं भोजन करने के बाद जाना चाहता था लेकिन मुझे रुकना पड़ा क्योंकि संत आराम कर रहे थे और मैं उन्हें बाधा नहीं पहुँचाना चाहता था। इसलिये मैं समय बिताने के लिये पंडाल में बैठ गया और संत के शिष्यों से उनके बारे में कहानियाँ सुनने लगा। इसके साथ ही मैं बाबा के बारे में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी देता जाता था। वे बहुत सम्मानपूर्वक बाबा के बारे में बात करते थे। महिलाओं में से एक ने साहसपूर्वक कहा कि संसार में विभिन्न प्रकार के संत थे जो सामान्य सांसारिक व्यक्तियों के समान प्रतीत होते थे। उनमें से कुछ बी.ए. थे और कुछ एम.ए. थे। मैंने स्वीकार करते हुये कहा कि मेहेरबाबा के समान, इससे भी अधिक योग्यता वाले किसी महापुरुष के लिये भी हमारे जीवन में स्थान होना चाहिये जो कहते हैं कि वे इस युग के अवतार, सबसे ऊँची आध्यात्मिक हस्ती हैं।

इस समय मैंने देखा कि कृपालसिंह जाग गये थे इसलिये मैंने उनके कमरे में जाकर, उन्हें प्रणाम करके विदा माँगी। उन्होंने हाथ जोड़कर मुझसे प्रार्थना की कि मैं बाबा से उनका प्रणाम कहूँ और उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि वे १८ मई की सुबह ६ बजे से १० बजे के बीच, बाबा से मिलने के लिये सतारा में होंगे। मैंने उनसे प्रार्थना की कि वे सतारा में १८

मई की सुबह, पहले मुझसे ट्रावेलर्स बँगला में मिलें और उसके बाद मैंने कल्याण से प्रस्थान किया। मैं अगले दिन सतारा पहुँच गया जहाँ मैंने बाबा को अपनी भेंट की पूरी रिपोर्ट दी। बाबा यह जानकर बहुत प्रसन्न हुये कि कृपालसिंह ने भेंट के लिये तारीख़ तय कर दी थी।

जब कृपालसिंह १८ मई की सुबह ६ बजे, पूना से कार द्वारा सतारा आये, उनके साथ एक महिला और दो भद्र पुरुष थे। मैं उन्हें ट्रावेलर्स बँगले में उनके लिये आरक्षित कमरे में ले गया। जैसे ही संत ने कमरे में प्रवेश किया, उन्होंने बाबा के बारे में पूछा और यह जानने के बाद कि वे दूसरे बँगले में थे, कहा कि वे बाबा से मिलने आये थे अतः उनका पहला कर्त्तव्य यह था कि वे जाकर उनके दर्शन करें।

बाबा के बँगले की ओर जाते समय, रास्ते में संत ने पूछा कि क्या मैं अपनी कल्याण की यात्रा के बाद बाबा से मिला था और बाबा ने मेरी रिपोर्ट सुनने के बाद क्या कहा था। मैंने उन्हें बताया कि बाबा यह जानकर अत्यंत प्रसन्न हुये कि उनके कृपालसिंह ने मिलने का निश्चय कर लिया था और जब मैंने बाबा से अपने प्रेमियों को आन्तरिक अनुभव देने के लिये, संत की प्रार्थना की चर्चा की, वे प्रेमपूर्वक मुस्कराये। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैंने ('Sobs and Throbs') पुस्तक में दिये गये अनुभवों तथा समय–समय पर दूसरे लोगों द्वारा बताये गये अनुभवों के बारे में संत को क्यों नहीं बताया। इस पर मैंने बाबा से कहा कि क्योंकि वे (बाबा) इस प्रकार के अनुभवों को कोई महत्व नहीं देते थे, इसलिये मैं उन अनुभवों को उद्धृत नहीं करना चाहता था। जब मैं संत की पार्टी को कार से बाबा के बँगले पर लिये जा रहा था, संत बहुत ध्यानपूर्वक यह सब सुन रहे थे। मैंने उन्हें बताया कि बाबा ने मुझसे कहा था कि मैं बाबा की ओर से संत को भेंट देने के लिये 'Sobs and Throbs' पुस्तक की एक प्रति तैयार रखूँ।

जिस समय कार बाबा के बँगले पर पहुँची, बाबा दरवाजे के पास खड़े दिखाई दिये और सन्त सहित सभी लोग एक स्वर में आश्चर्यपूर्वक चिल्लाये, ''देखो, बाबा वहाँ खड़े हैं।'' वे सब कार से उतरकर जल्दी ही बाबा की ओर चले जो उनसे बरामदे में आधे रास्ते में मिले और उन्होंने बहुत प्रेम के साथ कृपालसिंह का आलिंगन किया। अन्य लोगों को बाहर

इन्तज़ार करने की आज्ञा देकर, बाबा कृपालसिंह को अपने कमरे में ले गये।

बाबा कमरे में अपने सामान्य स्थान पर बैठे और कृपालसिंह से बैठने के लिये कहा जिन्होंने आदरपूर्वक बाबा को बताया कि वे उनके दर्शन करके अत्यंत प्रसन्न थे और अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझते थे। बाबा ने कहा कि वे भी प्रसन्न थे।

बाबा ने कहना प्रारंभ किया, ''मैं सृष्टि का स्वामी हूँ। मैं हर व्यक्ति के अंदर हूँ और मैं सब कुछ हूँ। मैं सब कुछ जानता हूँ और फिर भी, इसके साथ ही मैं कुछ नहीं जानता।'' कृपालसिंह ने कहा, ''यह आपकी महानता का प्रतीक है।''

बाबा ने कहना ज़ारी रखा, ''वास्तव में तुम लोग महान हो। मैं अपने प्रेमियों का दास होने के अलावा और कुछ नहीं हूँ। मैं उस समय वास्तव में खुश होता हूँ जब मुझे अपने प्रेमियों के पैर धोने का अवसर मिलता है और उनका आलिंगन करने में मुझे खुशी होती है। मैं प्रेम का महासागर हूँ।'' बाबा अपने स्थान से उठकर खड़े हो गये और यद्यपि उन्होंने कृपालसिंह से बैठने के लिये कहा फिर भी वे आदरपूर्वक खड़े रहे। वे इस तरह उस समय तक खड़े रहे जब तक बाबा अपनी जगह पर बैठकर फिर से बात नहीं करने लगे।

बाबा ने कहा, ''तुम जो काम कर रहे हो, मैं उससे बहुत खुश हूँ। तुम्हारे तथा दूसरे लोगों के माध्यम से मैं अपना कार्य स्वयं करता हूँ।'' तब अनुभवों के विषय पर बाबा ने कहा, ''यद्यपि आन्तरिक अनुभवों का होना अच्छी बात है लेकिन उन्हें महत्त्व देना बहुत खतरनाक है। अगर साधकों को पहले से चेतावनी नहीं दी जाती है तो छोटे छोटे अनुभव भी विश्वासघाती सिद्ध होते हैं और लगातार उन्नति में बाधा पहुँचाते हैं।''

तब बाबा ने दो व्यक्तियों का उदाहरण दिया जो उनके अनुयायी थे और जिन्हें कुछ अनुभव हुये थे। बाबा ने कृपालसिंह को बताया कि अब उनके अपने अनुयायी और ग्रुप थे और वे नये लोगों को दीक्षा देते थे। यद्यपि वे अभी भी बाबा से प्रेम करते थे, लेकिन वे अपने ढँग से स्वतंत्रतापूर्वक जीवन बिता रहे थे। बाबा ने कहा कि छोटे छोटे अनुभवों के

आधार पर किये गये ऐसे उत्तरदायित्वहीन कार्य, दीक्षा देने और दीक्षा लेने वाले, दोनों ही व्यक्तियों के लिये हानिप्रद हैं।

कृपालसिंह ने साधकों की उन्नति के लिये, इन अनुभवों से होने वाले लाभ पर कुछ कहना चाहा लेकिन बाबा ने यह कहकर रोक दिया कि उन्होंने जो कुछ बताया, वह कृपालसिंह के लिए नहीं था। लेकिन वे उन्हें यह बताना चाहते थे कि छोटे छोटे अनुभव किस प्रकार अपने जाल में फँसाकर, साधक को भटका देते हैं। बाबा ने मुझे 'Sobs and Throbs' पुस्तक की एक प्रति लाने के लिये संकेत किया और उन छोटे बच्चों की फोटो निकाली जिन्हें लगभग तीस वर्ष पहले बाबा के 'प्रेम आश्रम' में आन्तरिक अनुभव हुये थे।

कृपालसिंह ने भोलेपन से कहा कि बचपन में लड़कों को अनुभव होना कठिन नहीं था। बाबा ने उनकी इस बात पर आश्चर्य जताया और मुस्कराते हुये कहा, "बचपन"। वे यह कहते हुये प्रतीत होते थे कि बचपन अथवा बुढ़ापे का 'आत्मा' द्वारा प्राप्त किये जाने वाले अनुभवों से कोई संबंध नहीं था। आत्मा उम्र की सीमा से परे है।

तब बाबा ने कृपालसिंह को अपने पास खींचा और उनका हाथ पकड़कर उन्हें कैकोबाद दस्तूर के कमरे में ले गये ताकि संत उनके कुछ आन्तरिक अनुभवों के बारे में सुन सकें। बाबा कैकोबाद के बिस्तर पर बैठ गये और कृपालसिंह से कैकोबाद के पास कुर्सी पर बैठने के लिये कहा। बाबा ने कहा, "कैकोबाद मेरा पुराना प्रेमी है और इसे बहुत से आन्तरिक अनुभव होते हैं जिन्हें यह मुझे कभी कभी बताता है लेकिन मैं उन्हें समझ नहीं पाता। यह जो कुछ कहता है, शायद तुम इसे समझ सकोगे।" बाबा ने तब कैकोबाद से कहा कि वह अपने सभी अनुभव बताये और कृपालसिंह से कहा कि वे धैर्य के साथ सुनें क्योंकि कैकोबाद हिन्दी और गुजराती की मिली जुली भाषा में बात करेगा।

बाबा दोनों व्यक्तियों को कमरे में छोड़कर, बचे हुये लोगों के पास आये। वे लोग बाहर बाबा के दर्शन का इन्तज़ार कर रहे थे। क्योंकि बाबा एकान्तवास में थे इसलिये उन लोगों को आलिंगन के बजाय केवल थपकी मिली। जिस समय बाबा उन लोगों के साथ सीढ़ियों पर बैठे हुये थे, कृपालसिंह आ गये। बाबा ने उनसे कुर्सी पर बैठने के लिये कहा लेकिन

वे बाबा के पास सीढ़ियों पर बैठ गये। बाद में कैकोबाद ने बताया कि सन्त ने उसने कहा था कि उन्हें जो आश्चर्यजनक आन्तरिक अनुभव हुये थे, वे सब गुरु की कृपा के कारण थे और इस प्रकार के अनुभव सन्त को अभी तक नहीं हुये थे।

कृपालसिंह और उनकी पार्टी ने, बाबा की अकेले और सन्त के साथ कुछ फोटो खींचने की इच्छा प्रकट की जिसे बाबा ने मान लिया। क्योंकि भेंट का समय समाप्त होने वाला था इसलिये बाबा ने सन्त के अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे सन्त का 'दामन' मज़बूती के साथ पकड़े रहें और प्रेम तथा भक्ति के साथ उनके निर्देशों का पालन करें। बाबा ने एक बार फिर से कृपालसिंह का आलिंगन किया जिन्होंने गहरे प्रेम के साथ बाबा का आलिंगन किया।

पार्टी के किसी व्यक्ति ने बाबा से निकट भविष्य में दिल्ली आने की प्रार्थना की और बाबा ने सिर हिलाकर स्वीकृति का संकेत किया, लेकिन जब कृपालसिंह के उपदेशों को सुनने के लिए पूना आने का निमंत्रण दिया गया तो उन्होंने उत्तर दिया, "मैं जहाँ हूँ वहाँ से हर समय, हमेशा सब कुछ सुन रहा हूँ।" एक बार बाबा ने फिर से अत्यंत प्रेमपूर्वक कृपालसिंह का आलिंगन किया और इस बार सन्त को अपने कमरे में ले गये।

वहाँ बाबा ने कमरे में रखी हुई एक मेज से कागज़ का एक पुर्जा उठाया और इसे कृपालसिंह को दे दिया। इस पर बड़े बड़े अक्षरों में "१५ फरवरी, १९५७" लिखा हुआ था। बाबा ने सन्त से पूछा कि क्या वे यह रात बाबा के साथ बिताना पसंद करेंगे (इस दिन बाबा का एक साल का एकान्तवास ख़त्म होना था जिसमें केवल उनकी जुलाई, १९५६ में होने वाली एक महीने की विदेश यात्रा से विघ्न पड़ने वाला था)।

कृपालसिंह ने उत्तर दिया कि अगर वे उस समय भारत में हुये तो वे आना चाहेंगे और इस पर बाबा ने उत्तर दिया कि यह सन्त का कर्तव्य था। तब कृपालसिंह ने आदरपूर्वक हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं इसे आपके ऊपर छोड़ता हूँ।" बाबा ने सन्त को वचन दिया कि अगर वे उस समय भारत में हुये तो वे मुझे उनको मेहेराज़ाद लाने के लिये भेजेंगे। सन्त ने इसे स्वीकार करके कागज़ को अपनी जेब में रखा और बाबा ने एक बार फिर से उनका आलिंगन किया तथा हाथ पकड़कर उनको बाहर लाये।

बाबा से विदा होने से पहले, कृपालसिंह ने बाबा से प्रार्थना की कि वे उन्हें ट्रावेलर्स बँगला में रुके बिना, सीधे पूना जाने की अनुमति दें। बाबा यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और अनुमति दे दी। यह बाबा की सामान्य रीति के अनुसार था।

कृपालसिंह और उनकी पार्टी अब अपनी कार की ओर चले, लेकिन अचानक उनमें से एक को याद आया कि वे बाबा को फलों की डलिया भेंट करना भूल गये थे। इस पर सन्त आनन्दपूर्वक हँसे और कहा, ''हम सब कुछ भूल गये हैं क्योंकि हम यहाँ एक दूसरे ही संसार में हैं।'' बाबा ने प्रेमपूर्वक फलों की डलिया स्वीकार की ओर इसके बदले में सन्त का एक बार फिर से आलिंगन किया।

दूसरी बार पार्टी कार की ओर चली और वे कार में बैठने ही वाले थे जब उन्होंने कहा कि वे बाबा के लिये लाया गया मिठाई का डिब्बा भी उन्हें देना भूल गये थे और वे सब यह कहकर प्रसन्नतापूर्वक हँसे कि इससे उन्हें बाबा के दर्शन का एक और अवसर मिलेगा। कार के चलने से पहले मैंने कृपालसिंह को यह कहते सुना कि अब बाबा उनके साथ रहेंगे।

कार कम्पाउन्ड से बाहर चली गई थी जब मुझे याद आया कि Sobs and Throbs तथा Wayfarers की प्रतियाँ, जो बाबा ने संत को भेंट में दीं थीं, यहीं रह गईं थीं। इसलिये मैंने बड़ी मुश्किल से कार को रोककर किताबें दीं जिन्हें सन्त ने प्रेमपूर्वक और हँसी के ज़ोरदार ठहाकों के बीच स्वीकार किया।

• • •

dN Mk;jh y[k&

गुरुप्रसाद पूना, जनवरी, १९५६

एक ईसाई भद्र पुरुष ने, जो ईसामसीह की शिक्षाओं के अनुसार प्रेम और सेवा का जीवन व्यतीत करना चाहता था, मेहेरबाबा से मार्गदर्शन के लिये इच्छा प्रकट की। इसलिये बाबा के साथ उसके इन्टरव्यू की प्रार्थना स्वीकार कर ली गई और जब वह निर्धारित समय पर आया, बाबा अपने

शिष्यों और अनुयायियों के साथ बैठे थे। वह इससे परेशान लगता था क्योंकि वह व्याकुल तथा झिझकता हुआ दिखाई दे रहा था।

तब बाबा ने उससे कहा, ''तुम चिन्तित क्यों हो ? तुम अकेले में इन्टरव्यू की आशा करते थे इसलिये क्या तुम भीड़ के कारण परेशान हो? लेकिन वास्तव में तुम्हें यहाँ अकेले ही इन्टरव्यू मिल रहा है क्योंकि यहाँ मेरे अलावा और दूसरा कोई नहीं है। इसलिये बोलने में संकोच मत करो।''

बाबा ने उससे पूछा, ''तुम क्या चाहते हो ?'' उसने उत्तर दिया, ''मैं ईसामसीह के दर्शन करना चाहता हूँ और उन्हीं की तरह प्रेम और सेवा का जीवन बिताना चाहता हूँ। मैं इसलिये चिन्तित हूँ क्योंकि मैं ऐसा करने में असमर्थ हूँ।''

बाबा ने उससे पूछा कि क्या ईसामसीह में उसका विश्वास पूर्ण व सच्चा था और उसने इसे स्वीकार किया। तब बाबा ने कहा, ''अगर तुम्हें ईसामसीह में वास्तव में इतना ही विश्वास होता, तब क्या तुम्हें यह चिन्ता करने की ज़रूरत होती कि तुम उनकी शिक्षाओं का पालन किस तरह करो? इसके उत्तर के लिये अपने दिल को टटोलो।''

बाबा कहते रहे, ''तुम ईसामसीह के दर्शन के लिये लालायित हो और निःसंदेह इससे तुम्हें कुछ सीमा तक प्रेम और सेवा का जीवन बिताने में सहायता मिलेगी, लेकिन पूर्णता के जिस जीवन की तुम इच्छा रखते हो क्या यह तुम्हें उसकी प्राप्ति में पर्याप्त सहायता कर सकेगा ? तुम अपूर्ण हो और पूर्णता का जीवन बिताने के लिये, तुम पूर्ण होना चाहते हो। लेकिन जो तुम चाहते हो, सभी साधक वही चाहेंगे और ईसामसीह के दर्शन कौन नहीं करना चाहेगा ? तुम यह नहीं जानते हो कि तुम जो चाहते हो, वह पहले से ही तुम्हारे अंदर मौजूद है। लेकिन तुम इसे प्राप्त नहीं कर पाते हो; ऐसा क्यों है ? इसका उत्तर यह है कि अगर तुम पूरी ईमानदारी के साथ अपने अंदर देखो तो तुम्हें ज्ञात होगा कि तुम वास्तव में वह नहीं चाहते हो जो तुम सोचते तथा कहते हो कि तुम चाहते हो।

''तुम्हारे पास बहुत सी चीज़ें हैं और तुम अनुभव करते हो कि तुम उनसे छुटकारा पाकर स्वतंत्र होना चाहते हो, लेकिन अगर तुम वास्तव में

उनसे छुटकारा पाना चाहते हो तो तुम एक क्षण में ऐसा कर सकते हो, क्योंकि तुम्हें कौन रोकता है ? यह तुम स्वयं हो जो वास्तव में ऐसा नहीं करना चाहते हो। अगर तुम मुक्त होना चाहते हो तो तुम मुक्त हो, लेकिन तुम मुक्त नहीं होना चाहते हो और इसीलिये तुम अपने आपको बंधन में अनुभव करते हो। तुम प्रेम और सेवा का पूर्ण जीवन बिताना चाहते हो और जब तुम वास्तव में ऐसा चाहते हो, तुम्हें यह चिंता करने की ज़रूरत नहीं होगी कि ऐसा जीवन किस प्रकार बिताया जाये—तुम इसी प्रकार की ज़िन्दगी जियोगे।

''ईसामसीह चाहते थे कि उनके सभी अनुयायी वह चाहें, जिसकी उन्हें इच्छा करनी चाहिये, लेकिन उनके बारह निकट शिष्यों सहित, कोई भी शिष्य उस वास्तविक इच्छा की चाह नहीं कर सका। यह बहुत कठिन है, बहुत—बहुत कठिन है लेकिन असंभव नहीं है।

''करोड़ों व्यक्तियों में से एक के अंदर वास्तविक इच्छा उत्पन्न होती है। केवल एक ईश्वर का आदमी (मर्दे—खुदा) वह चाहने का साहस कर सकता है, जिसकी इच्छा किसी भी व्यक्ति को करनी चाहिये। तुम्हें वास्तविक इच्छा के लिये ही लालायित होना चाहिये और केवल यही, तुम्हारी एकमात्र निरंतर इच्छा होनी चाहिये। एक बार ऐसा हो जाने पर, एक समय ऐसा आयेगा जब तुम इस इच्छा से भी मुक्त हो जाओगे और वह स्वतंत्रता प्राप्त करोगे जो स्वयं स्वतंत्रता से भी नहीं बँधी है।''

गुरुप्रसाद, पूना — जनवरी, १६५६

जब किसी व्यक्ति ने बाबा का अनुसरण करने की इच्छा व्यक्त की तो बाबा ने उससे कहा, ''क्या तुम जानते हो कि मेरा अनुसरण करने का क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है सब कुछ छोड़कर मेरा अनुसरण करना। और क्या तुम जानते हो, सब कुछ छोड़ने का क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है सब कुछ, यहाँ तक कि अपने आपको भी, अपने पीछे छोड़ देना। इसका अर्थ है कि सब कुछ पीछे छोड़ने के पश्चात्, तुम्हें मेरा अनुसरण करना है और मेरे आगे—आगे नहीं दौड़ना है। ऐसा करना बहुत कठिन है क्योंकि यह बहुत सरल है।

''अगर तुम अपनी मर्ज़ी के अनुसार काम करते हो तो तुम मेरे आगे—आगे चलते हो और तुम्हारा पथ प्रदर्शन करने के मेरे कार्य में तुम स्वयं बाधा बन जाते हो। क्योंकि तुम आध्यात्मिक पथ के अन्धकूपों से अनजान हो इसलिये मुझे निरंतर तुम्हारी निगरानी करनी पड़ती है ताकि तुम गिर न जाओ। इसका परिणाम यह होता है कि बजाय इसके कि तुम मेरा अनुसरण करो, मुझे तुम्हारा अनुसरण करना पड़ता है।

''मैं इस रूप में सीमित नहीं हूँ। मैं प्रत्येक व्यक्ति के अंदर हूँ और तुम्हारे अंदर एक वास्तविक पथ प्रदर्शक की तरह हूँ। इसलिये मेरा अनुसरण करने का यह अर्थ नहीं है कि सब कुछ छोड़कर, मेरे पास रहो। इसका यह भी अर्थ नहीं है कि तुम मुझे अपनी चिन्तायें फेंकने का एक डिब्बा समझो। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि तुम मुझसे अपनी इच्छाओं की पूर्ति की आशा करो। इसका अर्थ है मेरी मर्ज़ी के पूर्ण रूप से अधीन होना और पूर्ण आत्म—समर्पण की भावना में स्थिर रहना।

''मेरा अनुसरण करने का अर्थ है मेरी आज्ञाओं का पालन करना और मेरी इच्छा के अनुसार काम करना। जब मेरी मर्ज़ी तुम्हारा पथ—प्रदर्शन करने लगती है तब तुम वास्तव में मेरा अनुसरण करते हो और तुम सुरक्षित तथा ख़तरों से बचे रहते हो। मुझे आध्यात्मिक मार्ग तथा इसकी भूलभुलैयों का पूरा ज्ञान है क्योंकि मैं ही मार्ग हूँ और मैं ही लक्ष्य हूँ।''

गुरुप्रसाद पूना, १६५६

यद्यपि मेहेरबाबा ने इन्टरव्यू अथवा उपदेश देना बंद कर दिया था फिर भी उन्होंने स्थानीय समाचार पत्र के कुछ सदस्यों को अपने पास आने की अनुमति दी जो उनका दर्शन करने के लिये लालायित थे। बाबा ने उनसे कहा, ''हमारा जीवन ऐसा होना चाहिये जो इस संसार में ईश्वर का सत्य का संदेश बन जाये। अगर हम अपने दैनिक जीवन में प्रेम, सेवा और ईमानदारी का आचरण करते हैं, तब संसार का त्याग किये बिना ही सन्यास की प्राप्ति होगी।''

समाचार पत्र के प्रतिनिधियों में से एक ने पूछा, ''आध्यात्मिक पथ क्या है और इस बात का ज्ञान किस प्रकार हो कि कोई व्यक्ति आध्यात्मिक पथ पर है ?''

बाबा ने स्पष्ट करते हुये कहा, ''जब तुम यह सोचने लगते हो कि तुम पथ पर हो, तब तुम पथ पर नहीं होते हो। पथ कोई निश्चित दिशा नहीं है जो तुमसे अलग निर्धारित किया गया है क्योंकि यह तुम्हारे अंदर ही शुरू होता है और तुम्हारे अंदर ही खत्म होता है। इस बात का इतना महत्त्व नहीं है कि कितना अधिक मार्ग पार किया गया है जितना कि इस बात का महत्त्व है कि अज्ञानता का पर्दा कितना अधिक उठ गया है। संक्षेप में, 'मैं कुछ नहीं चाहता' ही आध्यात्मिक पथ है।

''फिर भी, यद्यपि यह किसी भी वस्तु की इच्छा से मुक्ति को प्रकट करता है, कुछ नहीं की यह इच्छा भी एक 'इच्छा' है। यह भी एक बंधन है अतः सभी इच्छाओं से पूर्ण मुक्ति प्राप्त करने तथा लक्ष्य तक पहुँचने से पहले, हमें इस 'इच्छा' को भी नष्ट करना होगा।''

इस पर एक संवाददाता ने कहा, ''लेकिन, कितने ही दृढ़ निश्चय के साथ कोई व्यक्ति, इस दिशा में कोशिश करे, जब उसकी कोशिशों का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण मिलता प्रतीत नहीं होता है तो उसका उत्साह धीरे धीरे समाप्त हो जाता है और इससे मानसिक खिन्नता होती है।''

बाबा ने उत्तर दिया, ''तुम जो कुछ भी कोशिश करते हो उनमें जो भी असफलतायें मिलती हैं और तुम उनसे जितना भी निरुत्साहित होते हो, इस सबका कारण यह वास्तविकता है कि तुम ईश्वर की अपेक्षा अपने आप से अधिक प्रेम करते हो और ईश्वर से पूरे दिल से प्रेम करने की अपेक्षा, अपने आप से प्रेम करने के कारण, यह स्वाभाविक है कि असफलतायें और निराशा तुम्हारे रास्ते में बाधक होती हैं।

''इसलिये अपनी मानसिक खिन्नता को स्वयं पर बोझ न बनने दो। क्या तुमने इस खिन्नता के कारण पर विचार किया है ? यह तुम्हारे अनचाहे आई और इसीलिये इसे लुप्त होना चाहिये। इससे छुटकारा पाने के तुम्हारे सारे प्रयत्न, इसे तुम्हारे मन पर और अधिक गहराई से अंकित कर देंगे और बंधन का कारण बनेंगे। इसलिये इसकी ओर से पूर्णतया उदासीन हो जाओ और यह लुप्त हो जायेगी। इसका एकमात्र उपाय यह है कि हम ईश्वर से उस तरह प्रेम करें जिस तरह उससे प्रेम किया जाना चाहिये। एकमात्र ईश्वर के प्रति प्रेम ही महत्त्वपूर्ण है।''

गुरुप्रसाद, पूना, १६५६

एक समाज सेविका, जिसने अपने कार्य के दौरान बहुत अधिक यात्रा की थी, १७ जनवरी को मेहेरबाबा से मिलने आई और उन्होंने उससे कहा, ''तुम कहती हो कि तुम मुझे देखने आई हो, लेकिन अगर तुम मुझे मेरे वास्तविक रूप में देख सकती तो अन्य सब कुछ शून्य के समान हो जाता। तुम बहुत से स्थानों में गई हो और एक तरह से यह अच्छा है लेकिन मुझे यह बताओ कि जिन स्थानों में तुम गई हो, उनमें से किस स्थान को तुमने सबसे ज़्यादा पसंद किया ?''

उस महिला ने उत्तर दिया, ''हिमालय ! मैं हिमालय से उसकी शोभा और आध्यात्मिक वातावरण के कारण प्रेम करती हूँ।''

बाबा ने कहा, ''हाँ, युगों से हिमालय में ऋषि, मुनि रहते आये हैं लेकिन उन्होंने भी मुझे मेरे वास्तविक रूप में नहीं देखा है। तुम हिमालय को आध्यात्मिक वातावरण के कारण पसंद करती हो, लेकिन तुम्हारे अंदर स्थित उस स्थान के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है जहाँ ईश्वर निवास करता है ? क्या तुम उस स्थान से सबसे अधिक प्रेम नहीं करती हो ? एक बार तुम वहाँ जाओगी तो तुम्हें दूसरे सभी स्थानों के प्रति, भले ही वह कितने सुंदर, शानदार और आध्यात्मिक वातावरण से भरपूर हों, बिल्कुल भी आकर्षण नहीं रहेगा। तब तुम अपने अंदर ही निवास करोगी और दूसरे स्थानों को देखना बंद कर दोगी। और तब तुम केवल मुझे, मेरे वास्तविक रूप में देखोगी।''

गुरु प्रसाद, पूना, १६६०

१२ मई को, बम्बई के सियना स्कूल के सेन्ट कैथरीन के प्रधानाचार्य, फ़ादर एन्थोनी, मेहेरबाबा के दर्शन के लिये आये। उन्होंने अपना जीवन अनाथ एवं परित्यक्त बच्चों की सेवा में अर्पित कर दिया था। उनसे बाबा ने कहा :

''अनाथ और परित्यक्त बच्चों के साथ किये गये तुम्हारे कार्य से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ। अनाथों की सेवा करके, तुम वास्तव में ईसामसीह की सेवा कर रहे हो क्योंकि उन्हें सभी ने, यहाँ तक कि उनके ख़ास शिष्यों

ने भी छोड़ दिया था। परित्यक्त होने का प्रतीक शूली (Cross) है। इसलिये परित्यक्तों की सेवा करना, ईसामसीह की सेवा करना है और मैं निःसंदेह वही (ईसामसीह) हूँ।

"मैं तुम्हारे कार्य में तुम्हारे साथ हूँ क्योंकि मैं स्वयं तुम्हारे अंदर हूँ। तुम्हारे कार्य में कठिनाइयाँ, सहानुभूति का अभाव और विरोध होगा, लेकिन मैं तुम्हारी सहायता करूँगा। मेरा प्रेम और आशीर्वाद तुम्हें प्राप्त है। ईसामसीह की शूली, बलिदान का प्रतीक है। इसलिये मैं कहता हूँ कि तुम अपनी सम्पूर्ण आत्मा का बलिदान कर दो और अपने आपको स्वतंत्र रूप से अनाथ बच्चों की सहायता करने के कार्य में लीन कर दो। अपना सब कुछ बलिदान करके, तुम सब कुछ पा जाओगे।"

जब फ़ादर एन्थोनी ने कहा कि वे बाबा के संदेश को अपनी पत्रिका में प्रकाशित करेंगे तो बाबा ने उनसे संदेश को दोहराने के लिये कहा। उन्होंने संदेश को दोहराया लेकिन "....और मैं, निःसंदेह, वही (ईसामसीह) हूँ" छोड़ दिया। इस पर बाबा ने टिप्पणी की कि उन्होंने संदेश का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग छोड़ दिया था और बाबा ने पुनः दोहराया, "मैं, निःसंदेह, वही हूँ।"

पूना, १९६०

मेहेरबाबा, हिन्दू महिलाओं की रेस्क्यू होम सोसायटी (Rescue Home Society) के प्रधान के निमंत्रण पर वहाँ गये और निम्नलिखित संदेश दिया :

"प्रेम और आपसी समझ कभी भी किसी को दोष नहीं देते। पुरुष और महिलायें इस रीति तथा सत्य और अच्छाई के नियमों से दूर हो गये हैं, लेकिन ईश्वर हमें कभी भी दोष नहीं देता और न ही अपने दरवाजे से वापस लौटाता है, इसलिये हमें उन लोगों की भी निंदा नहीं करनी चाहिये जो हमारी निंदा करते हैं।

"मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ ताकि तुम उन लोगों से प्रेम करने और उन्हें समझने की कोशिश कर सको जो उसकी मानवता की सेवा के द्वारा, ईश्वर के कार्य में अपना स्थान लेने में, तुम्हारी सहायता करने की कोशिश कर रहे हैं।"

मेहेराज़ाद, पिम्पलगाँव, १९६८

जैसा कि मैंने किसी और स्थान पर बताया है, मेहेरबाबा की शारीरिक अवस्था बिगड़ रही थी, लेकिन जो कष्ट वे सहन कर रहे थे, उसके बावजूद भी वे सामान्य रीति से मंडली हॉल में आते रहे और २२ सितम्बर को उन्होंने ज्ञान–प्राप्ति (Enlightenment) के साधन के रूप में, आत्म–परित्याग (Self-denial) पर निम्नलिखित उपदेश दिया:

"किसी भी व्यक्ति को इस बात का स्पष्ट रूप से ज्ञान प्राप्त होने से पहले, कि वह कौन है, बहुत सी झूठी आत्माभिव्यक्तियाँ होती हैं जैसे कि– मैं एक आदमी हूँ, मेरा नाम जैक है, मैं एक औरत हूँ और मेरा नाम जिल है।

"आत्मा द्वारा सत्य का ज्ञान प्राप्त करने से पहले, सभी झूठी आत्माभिव्यक्तियों का त्याग होना चाहिये। और क्योंकि यह शरीर ही जैक, एक आदमी के रूप में उसकी पहचान का स्त्रोत तथा झूठी आत्माभिव्यक्तियों का कारण है, इसलिये उसे अपने शरीर की इच्छाओं का परित्याग करना चाहिये।

"यह शरीर खाना, पीना चाहता है इसलिये खाने पीने का परित्याग करना चाहिये। यह शरीर आराम और नींद चाहता है इसलिये आराम और नींद का परित्याग करना चाहिये। यह शरीर बैठना और इधर उधर घूमना चाहता है, इसलिये बैठने अथवा चलने का परित्याग करना चाहिए। लेकिन अधिक समय तक शरीर की इच्छाओं का परित्याग करना असंभव है। इससे अधिक अच्छा रास्ता, वह रास्ता जो सदैव अधिक आनंदपूर्ण और सहज है, यह है कि हम अपने आपको भूलना प्रारंभ करें और आत्मविस्मृति इतनी अधिक पूर्ण हो जाये कि वास्तविक आत्मा (Real self) के अतिरिक्त और कुछ भी याद न रहे।

"हमें अपनी झूठी आत्मा (False self) के भूलने में मदद करने के लिये बहुत से आध्यात्मिक अनुशासन बनाये गये हैं और अगर हम पूर्ण विश्वास के साथ उनका अभ्यास करें तो वे हमें विस्मृति के मार्ग पर आगे ही नहीं ले जाते हैं बल्कि क्रिया और प्रतिक्रिया के नियम के अनुसार, वे सभी लोग जो आत्म विस्मृति के रास्ते पर आगे चलने वाली आत्मा के

निकट संबंधी हैं अथवा दूसरे किसी रूप में उससे संबंधित हैं, जितना अधिक उस आत्मा पर अपना ध्यान केन्द्रित करने लगते हैं, उतना ही अधिक अपने आपको भूलने लगते हैं।

''आत्म–विस्मृति का अभ्यास करने की एक सबसे सरल विधि गुरु की फ़ोटो पर अपना ध्यान केन्द्रित करना है क्योंकि इससे साधक को, अपने ऊपर ध्यान को केन्द्रित करना छोड़कर, ऐसे व्यक्ति पर ध्यान केन्द्रित करने में, जो पूर्ण होने के साथ साथ पूर्णता का साकार रूप है, सहायता मिलती है। और जब वह फ़ोटो, जिस पर वह अपना ध्यान केन्द्रित करता है, सजीव हो जाती है, इसे प्रकाश–युक्त होना (illumination) कहते हैं। और सजीव फ़ोटो को देखने से और अधिक आत्म–विस्मृति प्राप्त होती है।

''शीघ्र ही साधक को, अब अपना विचार बिल्कुल नहीं रहता है क्योंकि उसका मन पूर्ण रूप से गुरु के सजीव चेहरे और रूप पर केन्द्रित रहता है जो सनातन प्रियतम है और अन्त में वह सदा के लिये उसमें (गुरु में) लीन हो जाता है। तब उसे ज्ञान होता है कि अपने ध्यान के पूरे समय वास्तव में वह स्वयं था। यह आत्म–प्रकाशन (Self-revelation) है और यही वास्तविक आत्म–ज्ञान है। 'मैं वह हूँ।'

अपने आप को भूल जाने वाला व्यक्ति, अब यह याद रखने वाला व्यक्ति बन गया है कि वह कौन है। और वे सारे व्यक्ति भी, जो उसे याद करने में अपने आपको भूल गये, मुक्त हो जाते हैं। यह कहा जाता है कि अगर परिवार का एक सदस्य मुक्ति प्राप्त करता है तो उसके साथ उसके भूतकाल की पीढ़ियाँ तथा वर्तमान संबंधी भी मुक्त हो जाते हैं।

''आत्म परित्याग बहुत कठिन है और ज़बर्दस्ती होता है जबकि आत्म विस्मृति सरल और स्वाभाविक होती है। आत्म परित्याग का मार्ग, अगर यह करना संभव हो तो लक्ष्य तक जल्दी पहुँचायेगा, लेकिन यह असंभव है। अगर साधक अपनी इच्छाओं को जीतने में सफल भी हो जाता है, जैसे कि भूख– तो कुछ समय बाद वह उपवास करने में आनंदित होने लगता है और यह एक नई इच्छा बन जाती है– वह उपवास करना चाहता है। इससे उसे व्रत रखने के आनंद का त्याग करना चाहिये और उसे

भोजन करना शुरू करना चाहिये, भले ही भोजन को देखने मात्र से उसका जी मिचलाने लगता हो। फिर वह नींद को जीतने में सफल हो जाता है और जागने का आनन्द लेने लगता है और वह जागृत अवस्था में ही रहना चाहता है। लेकिन अगर उसे इस 'इच्छा' को जीतना है तो उसे सोना चाहिये, भले ही सोने से, उसने जो कुछ प्राप्त किया है, उसे खो देने की आशंका हो।

''परित्याग (denial) और प्रति–परित्याग (counter denial) का कोई भी अन्त समझ में नहीं आता है और सबसे अधिक बलवती इच्छा और सबसे अधिक साहसी हृदय वाला व्यक्ति भी इस रास्ते में टूट जायेगा। लेकिन आत्म–विस्मृति का अभ्यास प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है और यह मार्ग आनन्दपूर्ण, सरल और सुरक्षित है क्योंकि यह हमेशा गुरु की कृपापूर्ण देखरेख में होता है।''

अन्त में यहाँ मेहेरबाबा द्वारा अचानक दिये गये, मूल्यवान सत्य के कुछ अंश हैं जो उन्होंने हमें अपने सामान्य, स्मरणीय ढँग से दिये :

''ईश्वर का अस्तित्व अनंत है।

ईश्वर का आनंद अंतहीन है।

ईश्वर की दया असीम है।

ईश्वर की दया का संस्कारों के साथ निकट संबंध है।

माया का कानून संस्कारों पर शासन करता है और संस्कार माया पर शासन करते हैं।

माया का कानून, दैवी मर्ज़ी से भिन्न है।

दैवी मर्ज़ी के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार से माया के कानून का उल्लंघन नहीं हो सकता है।

अब्राहम लिंकन, महात्मा गाँधी और जॉन कैनेडी की इस रीति से मृत्यु माया के कानून के अनुसार हुई जो संस्कारों पर शासन करता है और इसका दैवी मर्ज़ी से कोई संबंध नहीं था।

हाफ़िज़ ने कहा है कि हजारों बार अनुभव करने के पश्चात्, उसने यह पाया कि यह दुनियाँ और इसके सारे व्यापार, कुछ नहीं में कुछ नहीं

हैं। मैं (मेहेरबाबा) कहता हूँ कि सारे ब्रह्माण्ड और उसके कार्य, कुछ नहीं में कुछ नहीं और उसमें भी कुछ नहीं हैं।

अपनी एक ग़ज़ल में हाफ़िज़ ने भविष्यवाणी की, ''मैं देखता हूँ कि संसार में कितनी भयानक आपत्ति आने वाली है– मैं समुद्र और ब्रह्माण्डों के टुकड़े–टुकड़े होते हुये देखता हूँ। इसलिये अब जो कुछ घटित हो रहा है और भूतकाल में जो कुछ हुआ, वह उसकी तुलना में कुछ नहीं है जो बहुत जल्द घटित होने वाला है।''

• • •

n'k|u dh ?kfM;k|

ईश्वर की खोज करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को देने के लिये जो मेहेरबाबा के दर्शन की आकांक्षा से आते थे, प्रियतम के पास कुछ न कुछ होता था। एक शब्द, एक स्पर्श, यहाँ तक कि एक साधारण वाक्य भी श्रोता के हृदय तन्तुओं को झकझोर देता था और उनमें एक नई चेतना जागृत कर देता था।

मेहेरबाबा की सांकेतिक भाषा की व्याख्या करने वाले के रूप में, एरच बाबा के अनन्त ज्ञान के उत्तराधिकारी थे और जिस समय बाबा रात्रि विश्राम के लिये अपने कमरे में होते थे, वे प्रियतम की कृपा सागर के मोतियों को संक्षेप में लिख लेते थे। उनमें से ऐसे ही कुछ मोतियों को, उनकी १९५९ की डायरी से हम यहाँ उद्धृत कर रहे हैं।

५ फरवरी–जिस समय मैं बाबा को कार से मेहेराबाद से मेहेराज़ाद ले जा रहा था, वे मेरी ओर मुड़े और कहा, ''मैंने मशीन युग के आध्यात्मिक पक्ष को अखण्ड रखते हुये, इसके भौतिक पक्ष के मूलाधार (Back bone) को तोड़ने के लिये, अपने भौतिक शरीर की हड्डियाँ तुड़वाईं।''

उसी दिन सुबह जब मैं बाबा को मेहेराज़ाद से मेहेराबाद ले जा रहा था, बाबा ने कहा था, ''महासागर बूँद बन जाता है। बूँद को महासागर बनने के लिये स्वयं को अपने आपमें डुबोना पड़ता है ताकि वह (बूँद) इस बात को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव कर सके कि वह सदैव महासागर थी।''

१८ जुलाई– शाम के समय साढ़े पाँच बजे बाबा ने एक जज और उसकी पत्नी का गुरुप्रसाद में स्वागत किया।

अन्य बातों के अलावा, बाबा ने उनसे कहा, ''मैं प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में हूँ लेकिन मैं वहाँ सो रहा हूँ। यह मेरी बहुत बहुत पुरानी आदत है। मुझे जगाने के लिये तुम्हें हमेशा मुझे पुकारना चाहिये और हर समय बाबा, बाबा, कहना चाहिये। तब मैं तुम्हारे हृदय में सोते रहने में ज़रा भी सुख नहीं पाऊँगा। सोना तो दूर रहा, मुझे ऊँघने के लिए भी समय नहीं मिलेगा। तब, तुम्हारी निरन्तर पुकार सुनकर, धीरे धीरे मैं तुम्हारे हृदय में जाग जाऊँगा। जब मैं एक बार तुम्हारे हृदय में जाग जाता हूँ, तब तुम भी जाग जाओगे और हमेशा जागे रहोगे। इसलिये, निरंतर मेरा नाम लेते रहो और मुझे अपने हृदय में जगाओ ताकि तुम हमेशा के लिये जाग जाओ।''

१९ अगस्त– हम मेहेराज़ाद में मंडली हॉल में बैठे थे जब बाबा ने हमसे पूछा, ''अगर ईश्वर एक है, तब अनेक क्या है ?''

हममें से एक व्यक्ति ने कहा, ''यह वह चीज़ होनी चाहिये, जो ईश्वर नहीं है।''

बाबा ने पूछा, ''क्योंकि ईश्वर हर वस्तु में है, तब ऐसी कौन सी वस्तु है जो ईश्वर नहीं है ?''

हमने उत्तर दिया, ''ईश्वर की छाया ईश्वर नहीं हो सकती इसलिये 'ईश्वर नहीं' का मतलब ईश्वर की छाया होना चाहिये।''

तब बाबा ने अर्थ बताते हुये कहा, ''यह माया है जो अज्ञान अथवा इन्द्रजाल का सार है। क्योंकि ईश्वर अनन्त है, इसलिये माया भी, जो ईश्वर की छाया है, अनन्त है। लेकिन माया भी एक है और अज्ञान का सार होने के कारण, वह एक से अधिक नहीं हो सकती है। अगर ईश्वर एक है और माया एक है, तब अनेक क्या है ? ईश्वर अखण्ड अनन्तता है, माया खण्डनीय (जिसके भाग हो सकें) अनन्तता है। इसलिये, ईश्वर एक तथा अखण्ड, अनन्त है; जबकि माया वह एक है जो अनन्तरूप से खंडनीय है।''

४ अक्टूबर– मेहेराज़ाद में बाबा ने तत्क्षण (उसी समय) एक प्रार्थना लिखवाई और वहाँ आये हुये एक अमरीकी प्रेमी से बाबा की उपस्थिति में

वह प्रार्थना बोलने के लिये कहा गया, ''हे पूर्ण पुरुष, मेरी नहीं, तेरी मर्ज़ी पूरी हो क्योंकि, जहाँ तक आपके साथ मेरे मिलन का संबंध है, मेरी मर्ज़ी उसमें किसी भी तरह सहायक नहीं हो सकती है। जब तक आपके साथ मेरा मिलन नहीं हो जाता है, जब तक मैं जीवित हूँ, मैं दिन रात आपसे प्रेम करने और आपकी आज्ञाओं का पालन करने के लिये कठिन परिश्रम करने की कोशिश करूँगा।''

एक महीने बाद, जब वही प्रेमी अमरीका जाने की तैयारी कर रहा था, बाबा ने उससे कहा, ''मेरे अमरीकी प्रेमियों से कहना कि यद्यपि भौतिक रूप से वे मुझसे बहुत दूर हैं, आध्यात्मिक रूप से वे अपने आपकी अपेक्षा मेरे अधिक निकट हैं और वे सब मुझे बहुत प्रिय हैं।''

• • •

gkfQ t d dN dFku

१४ अप्रैल १९६० को, जिस समय मेहेरबाबा गुरुप्रसाद, पूना में मण्डली के साथ सुबह के समय बैठे हुये थे, उन्होंने अपने एक फ़ारसी शिष्य को हाफ़िज़ के पद्य की कुछ पंक्तियाँ बोलने के लिये कहा। तब बाबा ने उनका अँग्रेज़ी में निम्नलिखित अनुवाद किया और कहा, ''ये पद्य सूफ़ी मत की नींव का प्रतिनिधित्व करते हैं।'' उन्होंने कहा कि पद्य की ये पंक्तियाँ कवि की सर्वश्रेष्ठ रचना हैं और आध्यात्मिक पथ पर साधक के लिये अत्यंत मह त्वपूर्ण हैं।

''हे अज्ञानी पुरुष, कोशिश करो ताकि एक दिन तुम ज्ञान के स्वामी बन जाओ। जब तक तुमने स्वयं इस रास्ते की पूरी यात्रा नहीं की है, तुम दूसरों का पथ–प्रदर्शन कैसे कर सकते हो ? हे पुत्र, दैवी स्कूल में, सद्‌गुरु की उपस्थिति में, आज्ञा पालन करने की कोशिश करो, कोशिश करो, कोशिश करो, ताकि एक दिन तुम पिता के समान बन सको।

''इस मार्ग पर चलने वाले वीर पुरुषों की भाँति इस ताम्र के जैसे अस्तित्व से अपने हाथ धो लो (अर्थात् छुटकारा पा लो) ताकि एक दिन तुम प्रेम की रसायन विद्या प्राप्त कर सको और सोना बन जाओ।

''शरीर की इच्छाओं–नींद और भोजन ने तुम्हें प्रेम की देहरी से दूर

रखा है। जब तुम सभी इच्छाओं से मुक्त हो जाओगे तभी तुम्हारा प्रियतम से मिलन होगा।''

तब बाबा ने उपरोक्त अंश पर टिप्पणी की, ''इच्छाओं से मुक्त होना बहुत मुश्किल है। 'मैं सोना चाहता हूँ, मैं खाना चाहता हूँ।' ये इच्छायें हैं। 'मैं खाना अथवा सोना नहीं चाहता हूँ।' यह भी एक इच्छा है। इसलिये, इच्छाओं से मुक्त होना लगभग असंभव है। तब इसका उपाय क्या है ? हाफ़िज़ एक उपाय बतलाते हैं।

''केवल सद्‌गुरु की कृपा ही तुम्हें सभी इच्छाओं से मुक्त कर सकती है। अगर ईश्वर की प्रकाशवान् शोभा का थोड़ा सा भी अंश तुम्हारे सामने प्रकट हो जाये तो तुम इस पृथ्वी के सूरज की अपेक्षा करोड़ों गुना अधिक प्रकाशवान हो जाओगे।

''अगर तुम्हें प्रेम के महासागर में डूबने का क्षणांश के लिये भी सौभाग्य प्राप्त हो तो हिचकिचाओ नहीं। वह क्षण बार बार नहीं आता है। जैसे ही सद्‌गुरु कहे, 'डूब जाओ', तो उस समय हिचकिचाओ नहीं। जिस क्षण सद्‌गुरु तुम्हें डूबने की आज्ञा देता है, डूब जाओ। इस बात की चिन्ता न करो कि यह संसार तुम्हारे बारे में क्या सोचेगा। यह संसार तुम्हें 'पागल' कहेगा लेकिन तुम्हें हिचकिचाना नहीं चाहिये। अगर तुम्हारा एक बाल भी प्रेम के महासागर में डूब जाता है तो तुम सनातन काल के लिये भीग जाते हो। प्रियतम के साथ मिलन के उस आनन्द में, जो तुम अनुभव करते हो, कोई विघ्न नहीं होता। यह आनन्द निरंतर रहता है। अगर तुम इस मार्ग में 'सिररहित और पैररहित' हो जाते हो तो तुम सिर से पैर तक ईश्वर बन जाते हो।''

हम 'सिररहित और पैररहित' किस प्रकार बनें, इस विषय में बाबा ने हमें बताया, ''मैं जो कुछ कहता हूँ, तुम वही करो। अपने दिमाग़ का प्रयोग मत करो। जब प्रियतम की मर्ज़ी तुम्हारी मर्ज़ी बन जाती है, तब तुम 'सिररहित और पैररहित' होते हो। फिर भी यह सब असंभव है। यहाँ तक कि प्रियतम ईश्वर के साथ मिलन की इच्छा भी पागलपन है। इसलिये एक ही उपाय रह जाता है और वह है सद्‌गुरु के पैरों की धूल बन जाना।''

• • •

le; l ij

(मेहेरबाबा द्वारा दिया गया एक दृष्टांत) ''मैं समय से परे हूँ लेकिन जब पाँच सद्गुरु मुझे पृथ्वी पर नीचे लाते हैं तब मैं समय की सीमा में बँधा हुआ लगता हूँ और चेतना के विभिन्न धरातलों पर समय में भी अंतर होता है। सभी लोगों का, समयरहितता (timelessness) में छलांग लगाने के लिये, मार्गदर्शन करने का मेरा कार्य, सभी भूमिकाओं पर निरंतर चलता रहता है। मेरा समय, जिसके अन्तर्गत दूसरे सभी प्रकार का समय आता है, बिल्कुल भिन्न है।

''उदाहरण के लिये, जब मैंने मौन प्रारंभ किया था, मैंने कहा था कि मैं शीघ्र ही मौन खोलूँगा। तीन दशक से अधिक समय बीत चुका है लेकिन मेरा मौन अभी भी चल रहा है। फिर भी, समय के बारे में मैने जो कुछ कहा था, बिल्कुच सच है।

निम्नलिखित कहानी से तुम्हें इसका थोड़ा सा आभास होगा।

''एक वीर योद्धा एक अच्छे कार्य के लिये कुछ क्रूर सिपाहियों के साथ लड़ रहा था। जो लोग उस पर गोलियाँ चला रहे थे, उनके लिये अपनी आँखों में दया की ज्योति लिये हुये, वह हँसते हँसते आक्रमण का सामना करता रहा। अन्त में, अपने अन्तिम विश्राम के लिये जब वह ज़मीन पर गिरने जा रहा था, उसने कुछ चीटियों को इधर–उधर चलते देखा। अत्यधिक कष्ट सहने पर भी, उसके हृदय में चीटियों के लिये दया थी। इसलिये उसने अपने शरीर को थोड़ा दूसरी ओर झुकाया और चीटियों के जीवन को बचा लिया। उस दया की भावना के कारण उसके शरीर को जमीन पर गिरने में जो देर हुई, समय का यह अंतराल तुम्हें अत्यंत अनावश्यक लग सकता है लेकिन इसकी तुलना, मेरा मौन शुरू होने और मौन खुलने के बीच के समय से की जा सकती है। इसका उद्देश्य सत्य से प्रेम करने वाली मानवजाति को कुचलने से बचाना है।''

(एरच द्वारा रिकार्ड किया गया)

• • •

lko/kku jgk

(मेहेरबाबा द्वारा दिया गया एक दृष्टान्त) ''मैं उन लोगों को, जो मुझसे प्रेम करते हैं, एक प्रेमपूर्ण चेतावनी देना चाहता हूँ कि वे मेरे दामन पर अपनी पकड़ के बारे में, विशेष रूप से असहायता और अपमान की इस अवधि के दौरान, अत्यंत सावधान रहें। आने वाली परिस्थितियों के डर से, उन्हें मेरे प्रति अपनी भक्ति को गुप्त (छिपाकर) नहीं रखना चाहिये और उन्हें हर समय सावधान रहना चाहिये ताकि वे अनजाने में भटक न जायें। अचानक आई हुई कष्टपूर्ण परिस्थितियों द्वारा दी गई चुनौती का सामना करने में, उन्हें असफल नहीं होना चाहिये।

''एक समय एक सरल और शुद्ध हृदय वाली विधवा स्त्री थी जिसने ईश्वर में सच्चे विश्वास के साथ, उसकी याद करते हुये अपना जीवन बिताने का निश्चय किया। सुन्दर होने के कारण उसे विवाह के कई प्रस्ताव मिले, लेकिन उसने वे सभी प्रस्ताव, जिसमें राजा का प्रस्ताव भी था, अस्वीकार कर दिये। इसलिये राजा ने गुस्से में घोषणा की कि वह व्यभिचारिणी औरत थी और उसे महल के फाटक के सामने रस्सियों से बँधवा दिया। राजा ने यह आज्ञा दी कि उसके पास से जाने वाले सभी लोग उसे गालियाँ दें और पत्थर मारें।

''संयोगवश, इस विधवा स्त्री के एक पुत्री थी जिसे उस स्थान से होकर जाना था जहाँ उसकी माँ बँधी हुई थी। राजा के क्रोध के डर से लड़की ने अपने होठों को ज़रा सा हिलाया और अपनी माँ पर एक फूल फेंक दिया। उस विधवा को इससे गहरी मानसिक चोट पहुँची और उसने कहा, ''प्यारी बच्ची, तुम्हारे होठों के जरा सा हिलने और फूल के अत्यंत कोमल स्पर्श से मेरे हृदय में, मेरे ऊपर फेंके गये पत्थरों के कारण हुये घावों से खून बहने के बावजूद, अधिक गहरा घाव हुआ है।

''इसलिये सावधान रहो। मुझमें अपने विश्वास की अभिव्यक्ति में सावधान तथा ईमानदार रहो और मैं तुम्हारी मदद करने के लिये हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।''

(एरच द्वारा रिकार्ड किया गया)

• • •

,dfu"B fo'okl

(मेहेरबाबा द्वारा दिया गया एक दृष्टान्त) ''मेरी जय जयकार की अवधि उन सभी बातों को पूरा होता हुआ देखेगी जिन्हें मैं उद्धृत करता आया हूँ। वे लोग, जो मेरी दिव्यता पर अविश्वास करते हैं और इसके विषय में सन्देहयुक्त हैं, तब मेरी दिव्यता पर विश्वास करने लगेंगे। निम्नलिखित कहानी इसकी व्याख्या करती है।

''एक हृष्ट–पुष्ट युवक ने, अपने जीवन में किसी उद्देश्य से कुछ वर्षों के लिये, ब्रह्मचर्य का व्रत लिया, लेकिन अपने बूढ़े माता–पिता को खुश करने के लिये उसने शादी कर ली। उसने यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी कि किसी भी हालत में वह अपना ब्रह्मचर्य व्रत नहीं तोड़ेगा। जैसे–जैसे समय बीतता गया, परिवार में किसी बच्चे का जन्म न होने से, शहर के निंदा करने वाले लोग उसे नपुंसक कहकर अपमानित करने लगे लेकिन वह व्यक्ति सिर्फ चुप रहा और अपने उच्च उद्देश्य में लगा रहा। जब, उसकी शपथ का निश्चित समय समाप्त हो गया, उसके कई सुंदर बच्चे हुये और इससे उसकी बुराई करने वालों का मुँह बंद हो गया।

''जब मैं यह शरीर छोड़ दूँगा, लोग मेरे जीवन से संबंधित बहुत सी सुंदर और आश्चर्यपूर्ण बातें सुनेंगे। लेकिन इस समय, मुझमें एकनिष्ठ विश्वास रखना और मुझसे पुरातन पुरुष के रूप में प्रेम करना, मेरा साक्षात्कार पाने का सबसे अधिक सरल मार्ग है– मुझसे प्रेम करना, जो सभी कालों में सबके लिये मार्ग और लक्ष्य दोनों ही है।''

(एरच द्वारा रिकार्ड किया गया)

• • •

,jp i= 0;ogkj djus okyk dk mÙkj nrs g&

मेहेरबाबा अपने प्रेमियों से बिना किसी शर्त के किया गया प्रेम माँगते हैं–

सतारा
७ अगस्त, १९५५

प्रियतम बाबा को आपका सम्मिलित पत्र पढ़कर सुनाने में बहुत खुशी हुई और आपने अपने पत्र में जो कुछ व्यक्त किया है, उसे सुनकर बाबा भी अत्यंत प्रसन्न हुये।

बाबा, आपकी भक्ति से तथा आपके सम्पूर्ण हृदय से उनकी मर्ज़ी के पूर्णतया अधीन होने से, अत्यंत प्रभावित हुये और वे मेरे द्वारा आप सबको अपना प्रेम भेजते हैं। इस समय बाबा अपने एकान्तवास के कार्य से मुक्त है। और इसीलिये वे बम्बई के अपने सभी प्रेमियों को दर्शन दे रहे हैं।

उन लोगों को, जो बाबा के दर्शन अथवा उनसे सम्पर्क की इच्छा रखते हैं, भौतिक अथवा आध्यात्मिक, किसी प्रकार की किसी भी आशा के बिना, केवल अपने शुद्ध प्रेम के साथ उनके (बाबा के) पास पहुँचना चाहिये। इसके बाद से, अपने पुराने तथा नये प्रेमियों के साथ अपने सभी भावी सम्पर्कों के लिये, बाबा स्वयं को सभी वादों, प्रबंधों, बन्धनों और कार्यों से मुक्त करते हैं। केवल बाबा के प्रति शुद्ध और निष्कपट प्रेम के आधार पर ही, भविष्य में कोई भी सम्पर्क स्थापित होगा।

मैं यह थोड़ी सी सूचना आपके ग्रुप के सभी बाबा प्रेमियों की सहायता करने के लिये भेज रहा हूँ ताकि वे एक बार और सदा के लिये स्वयं इस बात का निर्णय करें कि क्या वे बाबा का दामन, मात्र शुद्ध प्रेम की मज़बूत पकड़ के साथ, हमेशा पकड़े रहेंगे अथवा नहीं।

भूतकाल में बाबा ने कई बार इस बात पर ज़ोर दिया है कि प्रेम और आशाओं के मिश्रण से भरपूर पकड़ के साथ उनके दामन को पकड़ना,

प्रियतम के प्रति प्रेमी के प्रेम की प्रतिष्ठा को बिगाड़ देगा। अब समय आ गया है जब प्रियतम सभी प्रेमियों को यह सीधी चुनौती देते हैं कि वे पूरी दुनियाँ के सामने यह सिद्ध कर दें कि प्रियतम के प्रति शुद्ध प्रेम बदले में किसी भी चीज़ की आशा नहीं करता जब कि यह प्रियतम के दैवी प्रेम से प्रेमी की आत्मा को परिपूर्ण करने के लिये, प्रेमी के 'मैं' को नष्ट करता रहता है।

प्रियतम के प्रेमी का शुद्ध प्रेम, मोमबत्ती की लौ के समान है। जब प्रेमी मोमबत्ती की बत्ती के समान बन जाता है, तब प्रियतम मोमबत्ती की भाँति व्यवहार करता है और प्रियतम की कृपा उस साधना की तरह कार्य करती है जो बत्ती में आग लगाता है।

शुद्ध प्रेम की लौ, जो प्रियतम की कृपा से प्रज्वलित होती है; हृदय के अँधेरे में आशा का प्रकाश फैलाती है और जिस समय यह आग बत्ती को जलाकर नष्ट करती रहती है मोम, अपना सब कुछ बलिदान करने में बत्ती की सहायता करता है और लौ के प्रकाश के द्वारा बत्ती के कष्ट की शोभा बढ़ाता है। इस प्रकार, प्रेमी और प्रियतम दोनों ही, दैवी प्रेम को पूर्णता तक पहुँचाने में अपना सर्वस्व बलिदान कर देते हैं।

भूतकाल में बाबा जब उपदेश देने के लिए तत्पर होते थे, उस समय उन्होंने दैवी प्रेम के लिये उपर्युक्त उदाहरण दिया था जिसमें प्रेमी और प्रियतम अनन्त रूप से उस समय तक कष्ट पाते हैं जब तक ऐसे प्रेम की पराकाष्ठा प्रेमी की प्यास नहीं बुझा देती और प्रियतम की आशाओं को शान्त नहीं कर देती है।

• • •

egjckck ,d ijkru lUn'k dk fQj l nkgjkr g&

सतारा,
२२ सितम्बर, १९५५

आज सुबह मैंने बाबा को आपका पत्र पढ़कर सुनाया और उन्होंने जन साधारण तक उनका प्रेम संदेश पहुँचाने के लिये आपके द्वारा प्रस्तावित योजनाओं पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की।

जहाँ तक बाबा द्वारा कोई संदेश दिये जाने की बात है, वे कहते हैं कि उन्होंने युगों पहले अच्छे विचार, अच्छे वचन और अच्छे कर्म का जो संदेश दिया था, उससे अच्छा और दूसरा कोई सन्देश नहीं हो सकता।

इन सात शब्दों का उच्चारण करना बहुत आसान है लेकिन इनका मूल्य समझना और इन नीतियों के अनुसार जीवन बिताना लगभग असंभव है। कोई वीर पुरुष ही इन नीतियों का पालन करने की कोशिश कर सकता है और किसी भी व्यक्ति के द्वारा इन तीन नीतियों के अनुसार जीवन बिताने की कोशिश करने से पहले बाबा के प्रेम का सहारा प्राप्त करना, सबके लिये समान रूप से निश्चित रूप से सहायक होगा।

केवल बाबा का प्रेम ही, हमारे हृदयों में पवित्र अग्नि प्रज्वलित करता है और ऊँचे से ऊँचे की वेदी पर सभी विचारों, वचनों और कर्मों को निरन्तर समर्पित करना, ईश्वर के प्रत्येक प्रेमी का कर्त्तव्य है। अगर सभी विचार, वचन और कर्म, इस प्रकार दृढ़तापूर्वक समर्पित किये जाते हैं, तो वे कितने भी बुरे हों, वे धीरे धीरे अच्छे विचार, अच्छे कर्म और अच्छे वचनों में परिवर्तित हो जाते हैं।

• • •

lc/kk vkj mÙkjnkf;Rok dk ckj e&

सतारा,
५ जनवरी, १९५६

आपके १ जनवरी के पत्र की सम्पूर्ण विषय सामग्री प्रियतम बाबा को पढ़कर सुनाई गई।

बाबा ने सभी बातें सुनी और वे यह जानकर प्रसन्न हैं कि वर्तमान समय में सब कुछ शान्त है। इस प्रकार का वातावरण बनाये रखने के लिये, दोनों पक्षों की ओर से काफ़ी प्रयत्न करने की ज़रूरत है। वायुमंडल में हवा के दबाव में कमी अथवा बवण्डर के स्थान पर शून्य हुये बिना, बवण्डर नहीं आ सकता है। सन्तुलन को बनाये रखने के लिये, जैसे ही शून्य हवा द्वारा भर जाता है, सारा कोलाहल और 'तूफ़ान' तुरंत शान्त हो जाता है। इसी तरह 'तूफान' का अधिकांश भाग अपनी कोशिशों से शान्त

होना चाहिये। अपनी पत्नी के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को कभी लुप्त न होने दीजिये और वातावरण में अपने प्रेम और भक्ति के दबाव में कमी होने का कोई भी कारण पैदा न होने दीजिये।

यह आपके ऊपर है कि आप सीखें और जीवन बितायें। जीवन में बहुत सी आपत्तियाँ आती हैं और हर आपत्ति आपके लिये चाकू के समान है। अगर आप उस चाकू का हत्था पकड़ते हैं तो यह चाकू आपके काम में मदद करेगी लेकिन अगर आप चाकू का फल (Blade) पकड़ते हैं तब आपका हाथ कटने की संभावना है।

इसीलिये बाबा चाहते हैं कि आप जीवन को गंभीरतापूर्वक लें, लेकिन गंभीर होने का अर्थ है किसी भी और सभी परिस्थितियों में शान्त और स्थिर चित्त रहना। दूसरों पर क्रोधित होने अथवा दूसरों पर जोर जोर से चिल्लाने से कोई लाभ नहीं होगा। आप स्वयं अपना संसार हैं और आपके अपने उद्देश्य की पूर्ति के साधन के लिये, हर प्राणी, आपकी अपनी रचना है। अगर आप अपने प्रति मर जाते हैं तो आपकी सम्पूर्ण रचना का अस्तित्व आपके लिये खत्म हो जाता है। निःसंदेह, ज़िन्दगी एक बहुत बड़ा मज़ाक है – लेकिन किस मूल्य पर ? आपके मूल्य पर। जिस प्रकार का आप भोजन करेंगे, वैसी ही आप टट्टी करेंगे।

बाबा चाहते हैं कि आप एक अच्छे लड़के तथा आपके प्रति उनके महान प्रेम के योग्य बनें और आप इसके योग्य तभी बन सकते हैं जब आप अपनी सभी व्यक्तिगत वस्तुओं की निरर्थकता का अनुभव करने लगते हैं।

बाबा आपको एक बार फिर से याद दिलाते हैं कि आप अनावश्यक चिंता न करें, बल्कि केवल उनसे प्रेम करें क्योंकि यथार्थ में वही (बाबा) प्रेम करने लायक हैं, शेष सभी आपके उत्तरदायित्व मात्र हैं जिन्हें आपको ईमानदारी व निष्कपट भाव से निभाना है।

• • •

,d ckck iseh dks tks fdlh lUr ds ikl tkuk pkgrk Fkk&

पूना,
७ फरवरी, १९५७

बाबा चाहते हैं कि मैं आपको निम्नलिखित बातें लिखूँ।

यह अच्छी तरह याद रखिये कि बाबा सृष्टि के स्वामी हैं इसलिये अपने हाथ से बाबा का दामन छूटने न दीजिये, इसे मज़बूती के साथ पकड़िये।

सभी सन्त बाबा के प्रिय बच्चे हैं इसलिये, अगर कोई व्यक्ति उनके पास जाना चाहता है अथवा उनकी संगति में रहना चाहता है तो बाबा को इसमें कोई एतराज़ नहीं है।

फिर भी, बाबा चेतावनी देते हैं कि अगर बाबा के दामन पर आपकी मज़बूत पकड़ के थोड़ा सा भी ढीला होने का ज़रा सा भी ख़तरा है तो आपके लिये सन्तों की संगति का भी त्याग करना अधिक अच्छा रहेगा।

बाबा कहते हैं कि वे सनातन पुरुष हैं। बाबा सदैव एकमात्र यथार्थता थे, हैं और हमेशा रहेंगे।

यहाँ बाबा यह कहना चाहते हैं कि आप सत्य के हेतु बम्बई में जिस रीति के कार्य करने की कोशिश कर रहे हैं, वे उससे खुश हैं।

बाबा चाहते हैं कि आप निष्कपट भाव से और अधिक उत्साह के साथ अपनी कोशिशें ज़ारी रखें क्योंकि वे बहुत जल्दी अपने लम्बे समय से चलने वाले एकान्तवास से बाहर आयेंगे और जनसाधारण को अपने दर्शन तथा सम्पर्क के लिये पर्याप्त अवसर देंगे।

• • •

ckck d dk;ldÙkkvk d chp ,drk gkus ij tkj&

मेहेराज़ाद,
८ मार्च, १९५७

मेहेरबाबा ने मुझसे आपको यह लिखने के लिये कहा है कि आपको किसी भी दशा में चिंता नहीं करनी चाहिये, भले ही वह आपके मन तथा आपकी परिस्थितियों के कितनी ही प्रतिकूल हो। बाबा ने यह सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की है कि अब आप आने वाली सभी परिस्थितियों में समान रहने का प्रयत्न कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सभी परिस्थितियों में, भले ही वे अनुकूल अथवा प्रतिकूल हों, पूर्ण मानसिक संतुलन बनाये रखना, उनके प्रेमियों के लिये सहायक होता है क्योंकि यह सर्वशक्तिमान ईश्वर में पूर्ण विश्वास का प्रतीक है। यद्यपि यथार्थ प्रेम ईश्वर द्वारा मनुष्य को दी गई देन है फिर भी, केवल अडिग विश्वास ही किसी व्यक्ति में, जो गुरु के निर्देशों का पालन करना चाहता है, प्रेम की वृद्धि कर सकता है।

बाबा चाहते हैं कि आप केन्द्र तथा इसकी शाखाओं में और अधिक उत्साह के साथ उस समय तक कार्य करना ज़ारी रखें जब तक वे आपको तथा कुछ अन्य प्रेमियों को, अप्रैल में अथवा उसके बाद अपने पास नहीं बुलाते।

एक बार फिर से बाबा उनका कार्य करते समय प्रेमियों के बीच एकता एवं सामंजस्य होने पर ज़ोर देते हैं। अगर ईश्वर के प्रेमियों तथा कार्यकर्त्ताओं के हृदयों में आपस में विरोध एवं भेदभाव है तो किसी भी प्रकार के कार्य का कोई महत्त्व तथा आकर्षण नहीं रहता। यह कार्य ही (जैसा कि हम इसे कहते हैं) इस प्रकार का है जो विचारों तथा कार्यों की समानता में वृद्धि करता है और अगर कार्य ऐसा करने में असफल होता है, तब कार्य बेकार हो जाता है।

इसलिये स्वयं हमारा कार्य ही इस प्रकार का है कि हम दूसरों के हृदयों को प्रसन्न रखने में अपने आपको व्यस्त रखते हैं। यह कठिन कार्य

केवल सद्गुरु ही करते हैं लेकिन हमारे प्रियतम बाबा ने इस कार्य में भाग लेने का हमें अपूर्व अवसर दिया है और हमें इस कार्य में असफल नहीं होना चाहिये। हमें अपनी ओर से पूरी कोशिश करनी चाहिये और शेष उनके हाथों में छोड़ देना चाहिये क्योंकि उनके हाथ अपनी मर्ज़ी के अनुसार कुछ भी करने में समर्थ हैं।

• • •

,d dkyst d i/kkukpk;l dk ftlu egjckck d fy;s Qy rFkk Qyk d fy; /ku Hktk&

महाबलेश्वर,
२५ मार्च, १९५८

आपका १७ मार्च का पत्र आज यहाँ पुनः प्रेषित (Redirected) किया गया क्योंकि २३ मार्च से प्रियतम बाबा महाबलेश्वर में हैं।

आपका पत्र प्रियतम बाबा को पढ़कर सुनाया गया और आपको यह जानकर बहुत खुशी होगी कि अगले जुलाई माह में बाबा ने आपको अपनी प्रिय पत्नी के साथ अपने पास आने की अनुमति दे दी है।

आपके द्वारा भेजे गये १० रु. के मनीआर्डर के बारे में भाई आदी ने आपको सूचित किया होगा। प्रियतम बाबा नहीं चाहते हैं कि आप उनके लिये फल और फूल खरीदने में पैसा खर्च करें। वे, उनके लिये आपके गहरे प्रेम की सुगंध से बहुत खुश हैं।

भविष्य में, किसी भी प्रकार की भेंट के लिये आप धन न भेजें। पुरातन पुरुष में विश्वास की मज़बूती से बुनी गई डलिया में रखकर, अधिक प्रेम भेजें– सम्पूर्ण प्रेम। अगर आपके पास अपनी आवश्यकता से अधिक धन है तो इसका प्रयोग उन लोगों को मुफ़्त में बाबा का साहित्य बाँटने में करें जो सत्य को जानने की प्यास रखते हैं।

बाबा आपको और आपके परिवार के जनों को अपना प्रेम भेजते हैं। वे आपसे प्रसन्न हैं।

• • •

,d ieh dk] ftldh iRuh o i= >B] /kk[kk nu oky vuHkok d tky e Ql x; Fk&

गुरुप्रसाद,
२६ मार्च, १९५६

आपका पत्र एवं तार मिले तथा बाबा को पढ़कर सुनाये गये।

अब तक आपको पूना से भेजा तार मिल गया होगा जिसमें कहा गया था कि आप अपने पुत्र के साथ बाबा के पास न आ पाने पर चिन्ता न करें। बाबा आपकी कठिनाइयों के बारे में सब कुछ जानते हैं।

आपके पत्र में, आपके द्वारा दिये गये सभी विस्तृत विवरण बाबा ने सुने और उत्तर में बाबा मुझे यह लिखने के लिये कह रहे हैं कि वे यह सुनकर बहुत खुश हैं कि किस प्रकार आपकी पत्नी तथा पुत्र अपने प्रियतम बाबा के प्रति प्रेम से अभिभूत हो गये।

बाबा प्रेम के महासागर हैं और उनका प्रेम सबके लिये समान रूप से प्रकाशित होता है। फिर भी, यह पाया गया है कि कुछ लोग प्रेम से व्याकुल हो जाते हैं और कुछ लोग इससे पूर्णरूप से अप्रभावित रहते हैं। यह सब इस पर निर्भर करता है कि कोई व्यक्ति बाबा के प्रेम को किस प्रकार ग्रहण करता है और इसे ग्रहण करने के पश्चात्, इसे बाबा की भेंट के रूप में अपने पास रखता है अथवा अपने, निजी प्रेम के रूप में इसे प्रतिबिम्बित करता है। लोग अक्सर यह भूल जाते हैं कि यह प्रेम बाबा का है और बाबा समस्त प्रेम का स्त्रोत तथा अन्तिम सीमा हैं।

जब कोई व्यक्ति प्रेम को अपने, निजी प्रेम के रूप में प्रतिबिम्बित करता है, हमेशा उलझनें तथा व्याकुलता पैदा होती है।

यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना ज़रूरी है कि आपकी पत्नी तथा पुत्र बाबा के प्रेम से यथार्थ में अभिभूत हुये और आपके छोटे पुत्र को स्वाभाविक रूप से, थोड़े समय तक अपने शरीर का होश नहीं रहा। यह ऐसी घटना है जब आपके प्रियजन बाबा के प्रेम को अच्छी मात्रा में ग्रहण करने के पात्र सिद्ध हुये। प्रियतम बाबा के प्रेम ने गहराई तक उनका स्पर्श किया और वे इससे प्रभावित हुये।

इसके बाद, शीघ्र ही आपके पुत्र की शारीरिक चेतना वापस लौटी और उसकी प्रतिक्रियायें भी स्पष्ट रूप से, बाबा के प्रेम के अनुरूप थीं। इस प्रकार वह जड़, चेतन जिस किसी भी चीज़ को देखता था, उसमें बाबा का चेहरा प्रतिबिम्बित होता था। यह बाबा का प्रेम था जिसके कारण आपका पुत्र सभी चीजों में बाबा को देखता था। यह ऐसी घटना है जब आपके पुत्र ने बाबा के प्रेम को अपने, स्वयं के प्रेम के रूप में नहीं बल्कि बाबा के प्रेम के रूप में प्रतिबिम्बित किया। यहाँ तक आपका पुत्र बाबा के प्रेम को ग्रहण करने के लिये योग्य पात्र तथा बाबा के प्रेम को प्रतिबिम्बित करने वाला सिद्ध हुआ।

उसके बाद के विवरण, जो आपने अपने पत्र में दिये हैं, इस छली मन की दुखपूर्ण माया है जिसने आपके पुत्र के माध्यम से अपना खेल खेला और आपके पुत्र ने बाबा के प्रेम को, बाबा के प्रेम की अपेक्षा, अपने निजी प्रेम के रूप में प्रतिबिम्बित करने की कोशिश की।

आपके पुत्र का 'प्रसाद' बाँटना, 'शून्य' से पेड़ा उत्पन्न करना, दूसरों को डाँटना, आज्ञा पालन की अपेक्षा रखना, दूसरों के छूने से अपनी सैडिलों को अपवित्र हुआ समझना, यह विश्वास करना कि वह छठीं और सातवीं भूमिका के बीच में है और उसे पाँचवी भूमिका में स्थान दिया जा रहा है, यह सब पाखण्ड और बचपना है। इसका यह अर्थ नहीं है कि आपका लड़का झूठ बोलता है लेकिन जब कोई व्यक्ति बाबा के प्रेम को, अपने निजी प्रेम के रूप में प्रतिबिम्बित करने लगता है तो यह सरपट भागने वाला मन, जो नियंत्रण के बाहर हो जाता है, इसी प्रकार की चालें चलता है।

इस अवस्था में, संबंधित व्यक्ति, अपने तथा अपने प्रियजनों के लिये उलझनें पैदा कर देता है और दूसरों के लिये वह विघ्नों का स्त्रोत बन जाता है। यह इस अर्थ में विघ्न है क्योंकि बाबा के एक सच्चे भक्त के लिये, बाबा के प्रति उसकी भक्ति के बिना रुकावट के होने वाले प्रवाह में बाधा पड़ सकती है जिस प्रकार से आप तथा दूसरे अन्य कई व्यक्तियों के साथ हुआ जो बच्चे की मतिभ्रम की चरम सीमाओं को देखते हैं तथा घर में व्याप्त वातावरण के सम्पर्क में आते हैं।

यथार्थ अनुभव तथा मानसिक भ्रम के बीच ज़मीन आसमान का अंतर है। एक लक्ष्य तक ले जाता है, दूसरा लक्ष्य से दूर ले जाता है। जब प्रेम, बाबा के प्रेम के रूप में प्रतिबिम्बित होता है, यह (प्रेम) व्यक्ति को बाबा के पास ले जाता है और जब यह अपने निजी प्रेम के रूप में प्रतिबिम्बित होता है, यह उस व्यक्ति को बाबा से दूर ले जाता है और दूसरों को गहरे गड्ढों में ढकेल देता है।

बाबा चाहते हैं कि मैं इस तथ्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित करूँ कि बाबा पहले से ही हर एक के अंदर विद्यमान हैं और इस प्रकार, बाबा किसी भी समय, किसी भी व्यक्ति के अंदर कभी भी प्रवेश नहीं करते हैं। यह सोचना सर्वथा ग़लत मार्ग पर ले जाने वाला है कि बाबा ने आपके पुत्र के शरीर में प्रवेश किया। बाबा चाहते हैं कि आप तथा दूसरे सभी संबंधितजन, आपके पुत्र के व्यवहार को कोई महत्त्व न दें।

कई साल पहले, प्रिय आर. का पुत्र भी इसी तरह व्यवहार करता था और तब बाबा ने आर. को चेतावनी दी थी कि अगर उसने अपने पुत्र के क्रियाकलापों को कोई अनुचित महत्त्व दिया तो यह लड़के तथा अन्य सभी संबंधित जनों के लिये नुकसान देह होगा। बाबा ने यह भी चेतावनी दी थी कि अगर उसकी चित्तवृत्तियों तथा मन की मौजों को अधिक समय तक सन्तुष्ट किया गया तो यह बच्चा शीघ्र ही पथ–भ्रष्ट हो जायेगा।

बाबा ने आर. से कहा कि वह अपने पुत्र के व्यवहार पर रोक लगाये और उसे संतुष्ट करने की अब और अधिक कोशिश न करे। तदनुसार, बाबा ने आर. के पुत्र को आज्ञा दी कि वह स्कूल जाये और गंभीरतापूर्वक अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान दे। इसी तरह, बाबा आपको आज्ञा देते हैं कि आप इस बात का ध्यान रखें कि आपका पुत्र स्कूल जाये और अपनी पढ़ाई की ओर ध्यान दे तथा इस नये प्रसंग के बारे में सब कुछ भूल जाये।

बाबा आपकी पत्नी तथा पुत्र से अत्यंत प्रसन्न हैं और वे उनके (बाबा के) प्रति आपकी भक्ति तथा गहरे प्रेम से अत्यंत प्रभावित हैं। वे आप सबको प्रेम आशीर्वाद भेजते हैं। आपके प्रेम को और अधिक मज़बूत बनाने के लिये, बाबा ने सभी संबंधित जनों की भलाई के लिये, मुझे आपको यह पत्र भेजने की आज्ञा दी है।

बाबा चाहते हैं कि मैं यहाँ यह लिखूँ कि उनका अत्यंत प्रिय आर., आप सबको प्रियतम बाबा का सत्य और प्रेम का संदेश समझाने में, स्वयं को थकाने के बाद, यह जानकर बहुत उद्विग्न हो गया कि उसके प्रेमपूर्ण परिश्रम ने आपके अपने घर में, इस प्रकार की प्रतिक्रिया को जन्म दिया। इसलिये, सभी संबंधित जनों के लिये यह अधिक लाभदायक होगा कि वे आपके पुत्र के अनुभव के बारे में सब कुछ भूल जायें और बाबा के प्रति प्रेम तथा विश्वास में बिना किसी संदेह के, बाबा से अधिक से अधिक प्रेम करने में अधिक समय व्यतीत करें।

• • •

,d izseh dks] ftlus ,d chekj cPps dks cpkus ds fy;s ckck ls izkFkZuk dh fd os cnys esa mldk thou Lohdkj djsa&

मेहेराज़ाद,
६ मार्च, १९६०

आपका तार प्रियतम बाबा को पढ़कर सुनाया गया और उन्होंने मुझे आपको यह लिखने का निर्देश दिया कि आपके तार के विषय से उनको गहरा आघात पहुँचा तथा वे निराश हो गये। बाबा ने कहा कि उन्होंने आपसे, जो उन्हें इतने अधिक प्रिय हैं, यह आशा कभी भी नहीं की थी कि आप उन्हें इस तरह नीचा दिखायेंगे।

एक लड़की का जीवन बचाने के लिये, ताकि उसकी रोती हुई माँ खुशी से भर जाये, आपका जीवन लेने के लिये बाबा से कहने का विचार मात्र ही, बाबा के लिये पीड़ादायक तथा घृणित है जिन्हें आप पहले ही अपना जीवन समर्पित कर चुके हैं। बाबा ने कहा कि आपके तार ने उन्हें परेशान कर दिया है क्योंकि इससे उन्हें गहरा आघात पहुँचा है; और उन्हें इसलिए आघात पहुँचा है क्योंकि आपने उनके उस विश्वास को हिला दिया है जो उन्होंने आप पर किया था।

बाबा चाहते हैं कि मैं आपको इस बात का ध्यान दिलाऊँ कि आप

चंचल मन तथा कायर हैं और मैं आपको यह साफ–साफ बताऊँ कि इस विषय पर आपके विचारों के झुकाव से, उन्हें (बाबा को) उन सभी लोगों के प्रति घृणा हो गई है जो एक साँस में बाबा के प्रति अपना जीवन समर्पित करने की भावना व्यक्त करते हैं और इसके साथ ही उसी समय, किसी दूसरे व्यक्ति के लिये जीवन समर्पित करना चाहते हैं जो अपनी मरणासन्न पुत्री के लिये रोता है।

बाबा कहते हैं कि आपके दिमाग का पुर्ज़ा ढीला हो गया है अथवा इस रूप में आपके एक से अधिक जीवन होंगे। बाबा आपसे यह जानना चाहते हैं कि आप बाबा से आपका जीवन लेने के लिये कहने की बात सपने में भी कैसे सोच सके। आपके समर्पण के पश्चात्, आपका अपने स्वयं के जीवन पर भी कभी भी अधिकार नहीं हो सकता है, इसीलिये बाबा कहते हैं कि शायद आपने अभी भी अपना जीवन उनको इस प्रकार समर्पित नहीं किया है जिस प्रकार करना चाहिये।

बाबा जानते हैं कि आपके दिल में उनके लिये कितना गहरा प्रेम है क्योंकि उन्होंने ही यह प्रेम आपको दिया है। वे यह भी जानते हैं कि उनके सत्य और प्रेम का संदेश फैलाने के लिये आप किस प्रकार बेचैन हैं और उनका संदेश फैलाने के लिये आवश्यक लोगों को इकट्ठा करने की कोशिश में बिताये गये, आपके व्यस्त दिनों तथा जागते हुये बिताई गई रातों के बारे में भी वे जानते हैं। इसी सच ने कि वे आपको जानते हैं, उन्हें परेशान कर दिया है और इसी सच के कारण कि वे आपको बहुत ज़्यादा प्यार करते हैं, उन्हें आपकी ओर से निराशा का अनुभव हुआ है क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि आपने उन्हें नीचा दिखाया है।

बाबा कहते हैं कि उन्होंने गॉड–स्पीक्स, स्टे विद गॉड, डिसकोर्सेज़, सन्देशों, सहवासों तथा अन्य चीज़ों से आपका पोषण किया है– लेकिन माँ के समान सावधानीपूर्वक किया गया यह पोषण, पिता की भाँति आप पर किया गया सारा गर्व, मित्र के समान किया गया सारा विश्वास और समस्त ईश्वरीय दया, उस समय एक क्षण में भाप बनकर उड़ गई जब आपने यह सूचना भेजी कि आपने एक मरणासन्न लड़की की मां को रोते हुये देखा।

बाबा कहते हैं कि आप इस प्रकार बच्चों के समान व्यवहार करेंगे,

उन्हें आपसे ऐसी आशा कभी भी नहीं थी। आप अपना जीवन बाबा के कार्य के लिये समर्पित कर चुके हैं और इस प्रकार यह जीवन अमूल्य और क़ीमती हो गया है। इसलिये आप अपने जीवन को, जो अब आपका नहीं है, बेकार में लुटा नहीं सकते हैं और क्योंकि अब इस पर बाबा का अधिकार है इसलिये आप इसे दूसरों की खुशी के लिये गँवा भी नहीं सकते हैं।

बाबा कहते हैं कि रोती हुई माँ तथा उनका (बाबा का) नाम जपती हुई मरणासन्न पुत्री को देखकर, ज्यादा से ज्यादा, आप इस आशय का तार देते : ''प्रियतम बाबा, मरणासन्न भक्त को अधिक से अधिक दर्द और कष्ट दें ताकि इसी जन्म में दर्द और कष्ट के उसके सारे संस्कार समाप्त हो सकें और वह हमेशा के लिये इनसे मुक्त हो जाये तथा होठों पर बाबा का नाम लिये हुये मर सके।'' इससे बाबा प्रसन्न हुये होते और इससे आपके प्रति, जो उन्हें इतने अधिक प्रिय हैं, अपने प्रेम को व्यक्त करने का उन्हें अवसर मिला होता।

प्रियतम बाबा चाहते हैं कि उन्हें जो जीवन समर्पित किया गया है, उसका उपयोग करने में आप अत्यंत सावधान रहें। बाबा यह भी चाहते हैं कि 'प्रेम की मशाल', जो आपके हृदय में जल रही है (और जिसकी देखरेख का भार आपको सौंपा गया है) कालिख से न भरे बल्कि जब यह खुशी फैलाने के लिये, एक हृदय से दूसरे हृदय में ले जाई जाये, यह अधिकाधिक प्रकाश युक्त होती जाये।

प्रियतम बाबा चाहते हैं कि आप इस विषय में बिल्कुल चिन्ता न करें तथा वे यह भी चाहते हैं कि आप हमेशा सतर्क रहें।

बाबा कहते हैं कि इस संसार में उनके प्रति प्रेम की कमी होने से अधिक गंभीर और दूसरी कोई बात नहीं है और वह प्रेम आपमें बहुत अधिक मात्रा में है। इसलिये वे चाहते हैं कि आप चिन्ता न करें बल्कि प्रसन्न रहें।

सभी परिस्थितियों में दृढ़ रहने, उनसे और अधिक प्रेम करने तथा उनकी और अच्छी तरह से सेवा करने में आपकी सहायता करने के लिये, आपके प्रियतम बाबा ने मुझको यह लम्बा और व्याख्यात्मक पत्र लिखने का

निर्देश दिया है। इसलिये बाबा आपको आज्ञा देते हैं कि आप इस पत्र में लिखी बातों पर दुखी न हों और वे चाहते हैं कि आप बिना किसी संशय के, यह जानकर और अधिक प्रसन्न तथा प्रफुल्ल चित्त रहें कि वे (बाबा) हम सबके दयालु पिता हैं।

• • •

ckck }kjk viuk eku [kkyu dk le; dk fujUrj LFkfxr dju dk ckjk ea lUng dju okyk ,d 0;fDr dk Li"V mÙkj&

मेहेराज़ाद,
२० सितम्बर, १९६०

मेहेरबाबा के वर्तमान एकान्तवास के लिये निर्धारित अवधि का आधा भाग बीत चुका है और हमारा ध्यान एकान्तवास पर इतना अधिक केन्द्रित नहीं है जितना कि इस बात पर है कि एकान्तवास की सीमा से परे क्या है।

कुछ लोग ऐसे हैं जिनका ध्यान बाबा का मौन खुलने पर केन्द्रित है क्योंकि बाबा ने कहा है कि इस वर्ष वे मौन खोलेंगे, और कुछ दूसरे ऐसे लोग हैं जो बाबा के साथ रहते हैं और रह चुके हैं और उन्होंने कभी भी यह अनुभव नहीं किया कि वे मौन हैं और इसलिये, इस मौन का अन्त देखने की उनमें प्रबल इच्छा नहीं है क्योंकि उनके पास बाबा हैं और उनका मौन उनके हृदयों में और जीवन में निरन्तर बोलता है।

वे लोग, जिनके पास केवल उनका (बाबा का) मौन है, केवल उनके मौन पर ही विश्वास करने वाले हैं और वे समय समय पर उन लोगों को, जिनके पास उनके हृदयों में बाबा हैं, मौन के बारे में याद दिलाते हैं और वे उत्सुकतापूर्वक इस बात की प्रतीक्षा करते हैं कि मौन का खुलना किस बात का प्रकटीकरण करेगा।

अभी भी, कुछ लोग ऐसे हैं जिनकी पूर्ण रूप से, एकमात्र चिन्ता, अपना मौन खोलने के बारे में दिये गये बाबा के वादे से संबंधित है– उन्हें

इस बात की चिन्ता है कि वे (बाबा) अपना मौन तोड़ने के बजाय अपना वचन तोड़ेंगे। और अन्त में, कुछ ऐसे स्वार्थी लोग भी हैं जो प्रार्थना करते हैं कि बाबा मौन तोड़ने के दिन को स्थगित करते जायेंगे, क्योंकि, यद्यपि बाबा का मौन खुलने के बाद विश्वव्यापी एकता और सामंजस्य का जन्म होगा, लेकिन यह उनके अत्यंत प्रिय शरीर के बलिदान की क़ीमत पर होगा।

उनके मौन खोलने के विषय में दिये गये वचनों के संबंध में, कुछ लोग ऐसा अनुभव करते हुये प्रतीत होते हैं कि 'शब्द' का उच्चारण करने के लिये, अपना मौन तोड़ने से पहले उन्हें कई बार अपना वचन तोड़ना पड़ रहा है और कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्हें इस बात पर आश्चर्य है कि क्या बाबा, इस सबके बाद, कभी अपना मौन तोड़ेंगे ? इस विषय में बाबा ने कहा है, ''निःसंदेह, मैं अपना मौन खोलूँगा वरना मैंने मौन रखा ही क्यों था !''

उचित समय के आते ही बाबा अपना मौन खोलेंगे। ईसामसीह के लगभग १३०० वर्ष पहले मोजेज के संदर्भ में, फ़ेरोह ने कहा था, ''एक दिन, उचित समय पर, वे वह शब्द बोलेंगे जिसे कोई भी ग़लत नहीं समझ सकता।'' इसके आगे, बाबा ने स्वयं जो कुछ कहा है, हम उसे जोड़ सकते हैं, ''अर्थ से परिपूर्ण एक शब्द ने अनगिनत अर्थहीन शब्दों को जन्म दिया है, और जब मैं उस शब्द का उच्चारण करूँगा, सारे शब्द अर्थपूर्ण हो जायेंगे।''

हम अनुभव करते हैं कि बाबा की ओर से मौन खोलने में होने वाली देरी, शब्दों के शब्द को ग्रहण करने में हमारी आन्तरिक तैयारी में होने वाली देरी को प्रतिबिम्बित करती है; इसलिये उनके द्वारा की जाने वाली देरी, अवतार की आन्तरिक दया के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। बाबा अपना मौन खोलने के दिन को शायद इसलिये स्थगित करते जा रहे हैं ताकि वे उन लोगों को अपने आप से दूर कर सकें। जो बाबा में, शब्द प्रदान करने वाली हस्ती के रूप में विश्वास करने की अपेक्षा, मात्र इसलिये विश्वास करते हैं कि वे अपने वचनों के प्रति सच्चे हैं या नहीं। ये सन्देह करने वाले व्यक्ति बाबा पर इसीलिये विश्वास करते हैं, जबकि हम लोग, इसके बावजूद बाबा पर विश्वास करते हैं।

• • •

fdlh 0;fDr dk] ftlus okluk dh leL;k ij lykg ekaxh Fkh&

मेहेराज़ाद,
१७ नवम्बर, १९६२

जैसा कि आपने प्रार्थना की थी, आज आपकी मेहेराज़ाद में बाबा से भेंट के दौरान, आपके संबंध में बाबा द्वारा बताये गये विभिन्न विषयों को मैंने इकट्ठा कर लिया है।

आपके जाने के बाद मैंने तुरंत इन सब विषयों को लिख लिया था ताकि मैं कहीं बिल्कुल भूल न जाऊँ। मैंने इसमें हर बात को सम्मिलित नहीं किया है लेकिन मैंने उन विषयों पर ज़ोर दिया है जिन्हें बाबा चाहते थे कि आपको याद रखना चाहिये।

बाबा ने कहा कि, ''मैं महासागर हूँ और महासागर में हर चीज़ घुल जाती है या डूब जाती है। अब, जबकि तुम मेरे पास आ गये हो, कोई चिन्ता न करो। मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है और तुम्हें प्रसन्न होना चाहिये तथा अतीत की चिन्ता नहीं करनी चाहिये। मन के कारण ही तुम चिन्तित होते हो। जब तक मन अपनी चालें चलता है तथा अपना खेल ज़ारी रखता है तब तक न तो तुम्हें शान्ति मिल सकती है और न ही प्रसन्नता मिल सकती है, जिसकी तुम्हें तलाश है।

''अपने मन के विचारों के अनुसार मत चलो। विचार आयेंगे और चले जायेंगे। मन एक अच्छे विचार से दूसरे विचार पर और एक बुरे, वासनापूर्ण विचार से, दूसरे विचार पर घूमता रहता है, लेकिन जब तक मन का नाश नहीं हो जाता, तब तक विचारों को रोका नहीं जा सकता है। किसी समय अच्छे, प्रसन्न करने वाले तथा ऊपर उठाने वाले विचार आयेंगे तो दूसरे ही क्षण बुरे, उदास करने वाले विचार होंगे और हतोत्साहित करने वाले विचार, ऊपर उठाने वाले विचारों से नीचे खींचकर, तुम्हें पृथ्वी पर पटक देंगे।

''इसलिये विचारों पर कोई ध्यान न दो, लेकिन इस बात का ध्यान

रखो कि तुम इन वासनापूर्ण विचारों को कर्म में परिवर्तित न करो। किसी भी पुरुष अथवा स्त्री के साथ, किसी भी प्रकार का वासनापूर्ण कार्य न करो और वासनापूर्ण कार्य से दूर रहने का भरसक प्रयत्न करो। मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है, इसलिये अब प्रसन्न रहो।

''मैंने पूर्व तथा पश्चिम के प्रेमियों को बताया है कि वे मेरे दामन को मज़बूती के साथ पकड़े रहें क्योंकि वह समय बहुत जल्दी आ रहा है जब मेरे शब्दों के शब्द का प्रभाव, मेरे प्रेमियों द्वारा अपने ह्रदयों में अनुभव किया जायेगा। मैं शीघ्र ही अपना मौन खोलूँगा, उसका समय बहुत पास है।

''व्रत रखने की तथा किसी भी प्रकार के भोजन पर निर्वाह करने की कोई ज़रूरत नहीं है। तुम माँस, मछली और अंडे खा सकते हो। तुम किसी भी प्रकार का भोजन करने के लिए स्वतंत्र हो। तुम्हें मेरी किसी भी फ़ोटो का ध्यान करने अथवा फ़ोटो पर अपने विचारों को केन्द्रित करने की कोई ज़रूरत नहीं है। एक समय आयेगा जब तुम अपने ह्रदय में मुझे मेरे वास्तविक रूप में देखोगे। तब तुम्हारी सभी चिन्तायें अदृश्य हो जायेंगी और तुम्हें वह आनन्द मिलेगा जिसकी तुम आकांक्षा करते हो। संक्षेप में, सब कुछ मेरे ऊपर छोड़ दो और किसी भी बात की चिन्ता न करो।

''इस संसार में कई सन्त हैं लेकिन मैं सन्त नही हूँ और इसीलिये मैं किसी भी प्रकार का आध्यात्मिक अभ्यास करने के लिये नहीं कहता। मैं मनुष्य रूप में ईश्वर हूँ और मेरी कृपा तुम्हें उस अन्तिम लक्ष्य का अनुभव एकाएक करा सकती है। मेरी कृपा तुम्हें उस अन्तिम लक्ष्य तक धीरे धीरे नहीं बल्कि एक क्षण में पहुँचा सकती है, इसलिये मेरी किसी भी फ़ोटो का ध्यान करना अथवा फ़ोटो पर अपने विचारों को केन्द्रित करना, तुम्हारे लिये ज़रूरी नहीं है। मैं एकमात्र स्वामी और ईश्वर हूँ और मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे बारे में अधिक सोचो तथा मुझसे और अधिक प्रेम करो। तुम मेरे दामन को पकड़े रहो क्योंकि शब्द का समय बहुत पास आ रहा है।''

● ● ●

ckck ds lans'kksa dh 0;k[;k djus ds lac/k esa izsfe;ksa dk mÙkj&

मेहेराज़ाद,
१ फरवरी, १९६३

आपका पत्र प्रियतम बाबा को पढ़कर सुनाने तथा आपको उसका उत्तर देने के लिये मेरे पास भेजा गया।

उनके (बाबा के) पास और उनकी ओर से, पत्र व्यवहार पर पूरे एक वर्ष के लिये लगी रोक और उनके एकान्तवास की वर्तमान अवधि के बावजूद, बाबा ने मुझे आपका पत्र पढ़कर सुनाने की अनुमति दी।

संबंधित विषय पर धीरे धीरे आने के बजाय, मैं बाबा से इकट्ठा की गई सूचनाओं के आधार पर आपकी शंकाओं का समाधान करने की कोशिश करूँगा। आपके द्वारा अपने पत्र में पूछे गये, चार प्रश्नों का मैं उत्तर दूँगा जिनके बारे में मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वे मुख्य रूप से, २८ फरवरी, १९६३ को 'मेहेर स्थान' के उद्‌घाटन के अवसर पर, प्रियतम बाबा द्वारा दिये गये आठ संदेशों में से एक के प्रति आपकी शंका के कारण हैं।

यह संदेश इस प्रकार है : ''पूर्व निर्धारित धार्मिक अनुष्ठानों एवं क्रियाकलापों के पर्दे को फाड़ दो और तब तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं ही पूज्य, पूजा और पुजारी हूँ।''

आपका पहला प्रश्न यह है कि क्या धार्मिक अनुष्ठानों का पूर्णरूप से बहिष्कार करना है। इसके उत्तर में मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि इस युग के अवतार के रूप में, मेहेरबाबा यह नहीं चाहते हैं कि उनके प्रेमियों की सच्ची पूजा 'यज्ञ', 'होम–हवन' अथवा अन्य किसी भी रूप में किये गये धार्मिक अनुष्ठान में लिपटी हो।

बाबा यह नहीं चाहते कि उनके प्रेमी कभी भी, निर्धारित रीतियों अथवा किसी भी प्रकार के नियमित अभ्यासों से भरपूर अपनी प्रार्थनायें उन्हें अर्पित करें। किसी भी धार्मिक क्रियाकलाप को, जिस पर बीते हुये युगों के नियमानुसार आचरण करने से, एक लम्बे समय से जंग लग गई है, पूजा

के लिये बने हुये उनके घर में (प्रेमी के हृदय में) कभी भी अपनाना नहीं चाहिये।

बाबा ने अक्सर इस बात पर ज़ोर दिया है कि वे उन वस्तुओं को, जो ईश्वर की सच्ची पूजा की आवाज़ को, दम घोंटने की सीमा तक, सीमित कर देती हैं, जड़ से काटकर साफ़ करने के लिये इस युग के अवतार के रूप में फिर से आये हैं।

प्रियतम बाबा आगे स्पष्ट करते हैं कि जब ईश्वर के लिये प्रेम अपनी इच्छानुसार व्यक्त किया जाता है, तब यह उसकी असली पूजा है और सच्ची पूजा की ऐसी भावनात्मक अभिव्यक्तियाँ फूलों और मालाओं के अर्पित करने, आरती, भजन और स्तुति गीत गाने, हर्षोन्माद से भरपूर होकर नाचने अथवा धूल में लोटने के रूप में, कभी कभी देखी जा सकती हैं। जब इस प्रकार की अभिव्यक्तियाँ नियमानुसार न होकर, इच्छानुसार होती हैं और ऊँचे से ऊँचे की स्तुति में होती हैं, वे ईश्वर की सच्ची पूजा की स्थापना करती हैं क्योंकि यह उस तक (ईश्वर तक) पहुँचती हैं और उसके द्वारा स्वीकार करने के लायक होती हैं।

लेकिन जब मन, नियमानुसार किये गये धार्मिक अनुष्ठानों और रूखी रीतियों के रूप में अपनी अभिव्यक्ति करता है, यह अनगिनत पीढ़ियों से चली आ रही आदतों का खोखला अनुकरण करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं है जो बिना 'दिल' के अपने आप की जाती है। बाबा कहते हैं कि इस प्रकार की पूजा, उन तक तो पहुँचती नही है बल्कि पुजारी को अज्ञानता के फंदे में और अधिक मज़बूती से जकड़ देती है।

आपका दूसरा प्रश्न यह है कि जिस प्रकार श्रीराम के अवतरण के दौरान, उनके द्वारा रामेश्वरम् में श्री रामलिंगेश्वर की स्थापना के समय वैदिक श्लोक पढ़े गये थे, उसी प्रकार 'मेहेर स्थान' के उद्‌घाटन के समय, मूर्ति स्थापना के उत्सव में ऊँचे से ऊँचे की स्तुति में वैदिक श्लोकों का गायन भूतकाल की तरह किया जाये, इस बात से प्रियतम बाबा आपसे सहमत हैं अथवा नहीं।

इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले, मैं सबसे पहले इस तथ्य की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ कि प्रियतम बाबा की मूर्ति की स्थापना नहीं होनी है बल्कि काँसे की मूर्ति में समाविष्ट प्रियतम बाबा के प्रिय व्यक्तित्व का अनावरण किया जाना है।

अनावरण के पश्चात्, ऊँचे से ऊँचे की स्तुति में न केवल वैदिक श्लोक ही गाये जा सकते हैं बल्कि मुसलमानों को ऊँचे से ऊँचे की स्तुति में कुरान पढ़ने की, ईसाइयों को अपने गीत गाने, पारसियों को अपने 'मोनाजात' गाने की और हरिजनों को उसी ऊँचे से ऊँचे की स्तुति में अपने भजन गाने की पूर्ण स्वतंत्रता दी जानी चाहिये। इस संबंध में यह भी याद रखना चाहिये कि मेहेरबाबा के प्रेमियों के लिये 'गॉड–स्पीक्स' और प्रियतम बाबा के उपदेशों और सन्देशों को पढ़ने से बढ़कर और कोई बात नहीं हो सकती। वे सत्य के साकार स्त्रोत से प्रवाहित शब्द हैं क्योंकि वे इस समय हमारे बीच उपस्थित अवतार के द्वारा दिये गये हैं।

हो सकता है भगवान राम ने वास्तव में वैदिक पठन पाठन और श्लोकों के गायन के साथ, रामलिंगेश्वर की स्थापना की हो, लेकिन कृपया यह याद रखें कि अवतार द्वारा किया गया कोई भी कार्य, हमारे द्वारा किये गये कार्य के समान नहीं होता। जैसा कि अक्सर बाबा ने हमें बताया है, ''जैसा मैं कहता हूँ, वैसे ही करो और जो कुछ मैं करता हूँ, वह मत करो।''

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि हालांकि अवतार जो कुछ भी करता है, वह उचित होना चाहिये (क्योंकि वह ईश्वर है), किसी विशेष समय पर किये गये उसके कार्यों का उद्देश्य एवं औचित्य, आवश्यक रूप से सभी समयों के लिये नहीं होता। इसके अतिरिक्त, आने वाले प्रत्येक अवतरण में, अवतार को अपने पिछले कार्यों के कारण पैदा होने वाली गड़बड़ी को भी साफ करना पड़ता है, भले ही प्रकट रूप से उसे, उन कार्यों के उस समय के औचित्य को अस्वीकार करना पड़े।

आपने अपने तीसरे प्रश्न में यह प्रार्थना की है कि बाबा मूर्ति स्थापित करने की विधि निर्धारित करें और आपने इस विषय में बाबा की मर्ज़ी जानने की इच्छा व्यक्त की है कि आप मूर्ति की स्थापना किस प्रकार करें।

यह प्रश्न इस ग़लत विचार के कारण है कि आप मेहेरबाबा की मूर्ति स्थापित करेंगे। बाबा कहते हैं कि उनका सजीव व्यक्तित्व, स्वयं ही ईश्वर की यथार्थ मूर्ति है और दूसरी कोई भी मूर्ति उसका स्थान नहीं ले सकती– ७०० वर्षों के बाद केवल उनका अगला अवतरण ही इसका स्थान ले सकेगा। 'प्राण–प्रतिष्ठा' के लिये की गई कितनी भी धार्मिक क्रियायें, किसी भी मूर्ति में, कभी भी बाबा का जीवन समाविष्ट नहीं कर सकतीं।

जैसे ही आप 'मेहेर स्थान' में बाबा की मूर्ति के बारे में सोचते हैं, आप बाबा के निर्देशों के प्रति अपनी आज्ञाकारिता, बाबा के प्रति अपने प्रेम तथा बाबा के प्रति अपने विश्वास की नींव को ही नष्ट कर देते हैं। केवल वही लोग, जो बाबा की काँसे की मूर्ति के अतिरिक्त, अन्य किसी भी स्थान पर बाबा की उपस्थिति का अनुभव करने में असफल होते हैं, 'मेहेर स्थान' में प्रियतम बाबा को मात्र एक मूर्ति के रूप में पायेंगे।

मेहेरबाबा के प्रेमियों को, उनके प्रति अपने शुद्ध प्रेम की अभिव्यक्ति के द्वारा, 'मेहेर स्थान' को सच्ची पूजा का घर बनाना चाहिये और उन्हें यह विश्वास करना चाहिये कि यहाँ पर प्रियतम अवतार मेहेरबाबा की मूर्ति नहीं बल्कि वे स्वयं उपस्थित हैं।

आपके तीसरे प्रश्न का उत्तर संक्षेप में यह है कि 'मेहेर स्थान' में प्रियतम बाबा की उपस्थिति पर आपको विश्वास होना चाहिये और वैदिक रीतियों द्वारा पवित्र की गई बाबा की मूर्ति की स्थापना के द्वारा बाबा की उपस्थिति को हटाये जाने के सभी विचारों को दूर कर देना चाहिये। भावी मानवता के लिये, 'मेहेर स्थान' में बाबा की उपस्थिति को स्थायी बनाये रखने में, प्रियतम बाबा की काँसे की मूर्ति सहायक हो सकती है।

आपने चौथे प्रश्न में पूछा है कि मूर्ति स्थापना के पश्चात् पूजा की दैनिक नियमित रीति क्या होनी चाहिये।

इस विषय में मैं यह कहना चाहता हूँ कि अगर मेहेरबाबा के सभी प्रेमी, इस विश्वास के साथ 'मेहेर स्थान' में प्रवेश करें कि इस इमारत में बाबा स्वयं हैं तो यह प्रश्न कभी नहीं उठेगा। तब आपका व्यवहार इस प्रकार होना चाहिये, जैसा कि अहमदनगर अथवा पूना में आपके अपने प्रियतम बाबा की उपस्थिति में होने पर होता है।

बाबा का कोई भी प्रेमी, जो 'मेहेर स्थान' में प्रवेश करता है, स्वयं ही बाबा का पुजारी है। 'मेहेर स्थान' में जाने की हर व्यक्ति को स्वतंत्रता होनी चाहिये और जाति, धर्म अथवा रंग के किसी भी भेदभाव के बिना, किसी भी पुरुष अथवा स्त्री को अपने हृदय की भावनाओं के अनुसार, बाबा के प्रति प्रेम प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिये।

'मेहेर स्थान' में बाबा के नाम का जप और उनकी स्तुति में गीत गाने से बढ़कर अन्य कोई पूजा की विधि नहीं हो सकती है। वे लोग जो गा

नहीं सकते हैं, पढ़ सकते हैं। बाबा के सन्देशों और उपदेशों को याद करके, दोहरा सकते हैं अथवा 'ऊँचे से ऊँचा' और 'मेहेरबाबा की पुकार' सन्देशों को जोर से भी पढ़ सकते हैं अथवा बाबा के भजन सुन सकते हैं और इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि वे सहवासों और हाल में हुये पूर्व—पश्चिम मिलन में हुई घटनाओं की याद करते हुये, बाबा की उपस्थिति में; अधिकांश समय शान्तिपूर्वक बैठकर बितायें।

ऊँच—नीच, अमीर—गरीब के किसी भी भेदभाव के बिना, ईश्वर के प्रति प्रेम व्यक्त करने का सभी को पूर्ण अवसर मिलना चाहिये। इसलिये, संक्षेप में 'मेहेर स्थान' में पूजा की रीति पर किसी भी प्रकार का बंधन नहीं होना चाहिये। 'मेहेर स्थान' के उद्घाटन के अवसर के लिये प्रियतम बाबा द्वारा दिये गये आठ बहुमूल्य संदेश स्वयं ही सच्ची पूजा के गुप्त संकेत हैं। ऐसी कोई भी क्रिया, जो कड़ाई के साथ नियमानुसार और स्थापित किये गये अथवा मात्र रीति रिवाज़ों के अभ्यास के कारण की जाती है, कुव्वूर में 'मेहेर स्थान' में पूजा के समय नहीं की जानी चाहिये।

फिर भी 'मेहेर स्थान' के अंदर और बाहर, अनुशासन, सफाई और आरोग्य संबंधी शर्तों का पालन करने के लिये कड़े नियम बनाये जाने चाहिये। जायदाद की देखभाल करने के लिये 'मेहेर स्थान' में एक चौकीदार होना चाहिये लेकिन नियमित और वेतन भोगी पुजारी नहीं होना चाहिये क्योंकि बाबा का प्रत्येक प्रेमी स्वयं एक सच्चा पुजारी है।

आपके द्वारा अपने पत्र में पूछे गये विषयों पर, प्रियतम बाबा द्वारा दिये गये संकेतों के आधार पर और भूतकाल में समय समय पर कुछ दूसरे प्रेमियों द्वारा ज्ञान की खोज में बाबा से, जो ज्ञान व दया के भंडार हैं, पूछे गये इसी प्रकार के विषयों पर बाबा द्वारा दिये गये उत्तर के आधार पर, मैंने जो कुछ समझा है उसे निष्कपट भाव से लिखने का भरसक प्रयास किया है।

बाबा चाहते हैं कि इस पत्र को पाने के बाद आप आंध्र और कुव्वूर में, बाबा के सभी प्रेमियों को इस पत्र की बातें बताकर, इसका सर्वोत्तम उपयोग करें।

प्रियतम बाबा आपको और आपके परिवार के अपने सभी प्रिय जनों को अपना प्रेम भेजते हैं।

• • •

u;s ckckvksa vkSj u;s Lokfe;ksa ds lEca/k esa ,d psrkouh&

गुरुप्रसाद,
२२ मई, १९६७

प्रियतम बाबा चाहते हैं कि उनके सभी प्रिय प्रेमी इस बात का ध्यान रखें कि नवम्बर १९६७ के अन्त तक विश्व के रंगमंच पर बहुत से नये बाबा और नये स्वामी प्रकट होंगे और वे चाहते हैं कि उनके सभी प्रेमी उनसे दूर रहें।

बाबा के प्रेमियों को, इस प्रकार के व्यक्तियों के संबंध में, बाबा द्वारा दिये गये पूर्व निर्देशों को भूलना अथवा उनकी उपेक्षा नहीं करना चाहिये। बाबा चाहते हैं कि उनके प्रेमी सावधान रहें और वे (बाबा) उन्हें याद दिलाते हैं कि वे मज़बूती के साथ उनका दामन पकड़े रहें।

जैसे जैसे उनके प्रकटीकरण का समय आ रहा है, इस प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न होंगी जिनमें उनके प्रेमी बाबा का दामन छोड़ने के लिये विवश हो सकते हैं। इसलिये, थोड़ा सा बहाना मिलने पर, वे समय समय पर बार बार अपने प्रेमियों को याद दिलाने के लिये पत्र भेजते हैं। वे कहते हैं कि वह समय, जिसके बारे में वे प्रायः बात करते आये हैं, इस समय उनके प्रकटीकरण के बहुत पास है।

बाबा चाहते हैं कि उनके प्रेमी यह जानें कि स्वामियों और दूसरे बाबाओं से मिलने के लिये दर दर भटकना केवल व्यर्थ ही नहीं है बल्कि बहुत नुकसानदेह भी है।

• • •

egjckck dh lok e lefilr if=dk] Xyk bUVju'kuy d liknd] uk'kjok vUtkj dk&

गुरु प्रसाद,
२२ जून, १६६८

१८ जून, १६६८ का आपका पत्र प्रियतम बाबा को पढ़कर सुनाया गया और आपने अपने बारे में जो कुछ लिखा है, वह सब सुनकर उन्होंने खुशी ज़ाहिर की।

प्रियतम बाबा चाहते हैं कि आप १ सितम्बर, १६६८ को उन्हें लिखकर बतायें कि आप किस प्रकार अनुभव कर रहे हैं। इस बीच में, वे नहीं चाहते हैं कि आप लम्बी अवधि के लिये व्रत रखें अथवा ध्यान करें। वे चाहते हैं कि आप ऐसा करके स्वयं को कष्ट न पहुँचायें। आपको, जो उसके कार्य के लिये समर्पित जीवन व्यतीत करते हैं, इस प्रकार के अनुशासनों की कोई ज़रूरत नहीं है। आप उनके निकट हैं और उन्हें बहुत प्रिय हैं।

बाबा जानते हैं कि उनके प्रेम में लीन होने के लिये आप किस प्रकार प्रयत्नशील हैं लेकिन वे चाहते हैं कि आप इसके लिये प्रयत्न न करें और अपने प्रिय प्रेम को अपने स्वाभाविक ढंग से उनकी ओर स्वतंत्रतापूर्वक प्रवाहित होने दें। इस आध्यात्मिक मार्ग में एक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात जानने लायक यह है कि उनके पास पहुँचने का आपके द्वारा किया गया कितना भी अधिक प्रयत्न, आपको उनके पास नहीं ले जा सकता। आपके लिये सबसे अधिक सरल उपाय यह है कि आप उनसे सबसे अधिक स्वाभाविक ढँग से केवल प्रेम करें जिस प्रकार एक बच्चा, अपनी माँ से प्रेम करता है और बाबा आपको अपने आप जो कुछ करने की आज्ञा देते हैं, उसे करें।

बाबा चाहते हैं कि आप अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत करें और मानसिक रूप से निश्चिन्त रहें। आप अपने प्रतिदिन के जीवन में किये जाने वाले दूसरे बहुत से कार्यों तथा ग्लो पत्रिका के माध्यम से उनकी सेवा कर रहे हैं और बाबा चाहते हैं कि आप इसी प्रकार उनकी सेवा करते रहें।

इसके साथ ही आपको अपने प्रिय माता–पिता की आज्ञाओं की उपेक्षा नहीं करना चाहिये क्योंकि उनको प्रसन्न करके आप बाबा को प्रसन्न करेंगे।

इस संसार में रहकर, अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करते हुये, सबसे ऊपर और सबसे अधिक बाबा से प्रेम करें और प्रसन्न, आनन्दित तथा निश्चिन्त रहें। मेरे माध्यम से, बाबा आपसे यही कहना चाहते हैं। वे यह भी चाहते हैं कि आप प्रतिदिन की घटनाओं को सहज भाव से लें तथा कभी भी ज़्यादा मेहनत न करें।

• • •

,d fo|kFkh ckck l lykg ekxrk g fd og viuk thou fdl idkj 0;rhr dj&

मेहेराज़ाद,
१८ नवम्बर, १६६८

प्रियतम बाबा के साथ पत्र व्यवहार करने पर लगी हुई रोक के बावजूद, उन्होंने आपका अत्यंत प्रेमपूर्ण पत्र पढ़वा कर सुना और उन्होंने मुझे आपको यह सूचित करने का निर्देश दिया है कि वे चाहते हैं कि आप अपने परिवार के साथ रहें तथा निष्कपट और पवित्र जीवन व्यतीत करें। आप अपने अध्ययन की उपेक्षा न करें।

बाबा चाहते हैं कि आप सम्पूर्ण हृदय से उनकी याद करें और अपने दैनिक क्रियाकलापों के बीच, जितना संभव हो, अधिक से अधिक उनकी याद करें।

अवतार मेहेरबाबा चाहते हैं कि जब तक आपका विवाह नहीं होता, आप कोई भी वासनापूर्ण कार्य न करें और पवित्र जीवन व्यतीत करें। इसके अलावा, आप परोपकार करते हुये, बहादुरी के साथ दुनियाँ का सामना करें और अपने जीवन में बाद में आने वाले उत्तरदायित्वों को निभायें।

बाबा आपको अपना प्रेम और आशीर्वाद भेजते हैं। आप यह जानकर प्रसन्न रहें कि वे लोग, जो उनसे प्रेम करते हैं, उन्हें प्रिय हैं और उनके निकट हैं।

• • •

^izkjC/k* ds ckjs esa ,d iz'u&

मेहेराज़ाद,
१६ दिसम्बर, १६७२

मैंने 'प्रारब्ध' के बारे में आपका दृष्टिकोण ध्यान से पढ़ा और इस विषय पर आपके ग्रुप में परस्पर विरोधी विचारों को जानकर, मुझे बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं हुआ।

किसी व्यक्ति के मन की प्रत्येक स्थिति, अनुभव और क्रिया, उस व्यक्ति द्वारा भूतकाल में एकत्र और अनुभव किये गये संस्कारों के कुल योग के परिणाम स्वरूप होती है। इस प्रकार, वह व्यक्ति; भाग्य द्वारा निश्चित किये गये ढँग से जीवन बिताने के लिये विवश मालूम होता है, लेकिन यह भाग्य उस व्यक्ति द्वारा स्वयं बनाया गया है। वह स्वयं अपने भाग्य का विधाता है।

इस प्रकार, किसी व्यक्ति का जीवन, उसके द्वारा अपने लिये तराशे गये भाग्य के अनुसार नियमित होता तथा बिताया जाता है। और इसमें, अपना जीवन बिताने के लिये उसके द्वारा की गई सारी कोशिशें और इसके साथ साथ उसकी भावनाओं तथा विचारों का सारा प्रवाह और उसके द्वारा किये गये सारे कार्य भी शामिल हैं।

कोई व्यक्ति कितना भी अधिक आलसी होना अथवा चुपचाप बैठना चाहे और बिना किसी काम के अथवा सभी प्रकार के शौकों या कामों में पहल करने से दूर रहना चाहे (यह सोचकर कि सब कुछ प्रारब्ध से होता है), वह ऐसा नहीं कर सकेगा; न ही वह इस प्रकार अनुभव करेगा अथवा जीवन व्यतीत करेगा। वे संस्कार, जो उसने इकट्ठा किये हैं, उसे अपनी अभिव्यक्ति और अनुभवों के लिये उत्तेजित करेंगे और उसका जीवन सदैव परस्पर विरोधी अनुभवों से भरपूर होगा। इन अनुभवों को प्राप्त करने की कोशिश, उनमें किसी भी प्रकार की कमी हुये बिना, बिना किसी रुकावट के चलती रहेगी क्योंकि मनुष्य स्वयं को आत्मा, ईश्वर, सत्य के रूप में अनुभव करने के लिये, इन संस्कारों के बोझ से पूरी तरह से मुक्त होना चाहता है। जिन्होंने उसकी आत्मा को ढँक रखा है।

सबके भाग्य और सबके प्रारब्ध, ईश्वर की सर्वोच्च मर्ज़ी द्वारा पूर्णरूप से नियंत्रित होते हैं क्योंकि यथार्थ में, ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।

प्रियतम अवतार मेहेरबाबा के चरणों में रहकर, मैंने जो कुछ ज्ञान प्राप्त किया है; उसके अनुसार मैंने व्याख्या करने की कोशिश की है।

• • •

'kjhj NksM+us ds i'pkr~ vorkj ds izHkko rFkk vxys vorj.k ds LFkku ds ckjs esa ,d izseh dks&

मार्च ८, १६७३

आपका ५ मार्च, १६७३ का पत्र मिला। मैं सबसे पहले यह बताना चाहता हूँ कि स्वयं प्रियतम मेहेरबाबा से, उनके चरणों में रहते हुये, मैंने जो कुछ ज्ञान प्राप्त किया है, उसे मैं बिना किसी संकोच के दूसरों में बाँटता हूँ।

आपके दो प्रश्नों के उत्तर में, पहले प्रश्न में कही गई आपकी बात से मैं पूर्णतया सहमत हूँ। अगला अवतरण जापान में हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। बाबा ने कहा था कि ७०० वर्ष बाद वे जापान, हमीरपुर आदि स्थानों में होंगे और इससे मैं यह समझता हूँ कि वे जापान, हमीरपुर आदि स्थानों में जायेंगे, भले ही ये स्थान, ७०० वर्षों के बाद इन नामों से न जाने जायें। प्रश्न दो के उत्तर में मैं यह कहना चाहता हूँ कि अवतरण की परिस्थितियों के अनुसार, शरीर छोड़ने के बाद अवतार का प्रभाव मानव जाति पर १०० से २०० वर्षों तक, सौ फीसदी शक्तिपूर्ण एवं प्रभावशाली रहता है। ७०० और १४०० वर्षों के शेष समय में यह शक्ति धीरे धीरे कम होने लगती है और जब पिछले अवतरण का प्रभाव पूरी तरह से क्षीण हो जाता है, अगला अवतरण होता है। पहले १०० से २०० वर्षों के दौरान, यानी कि अवतार के अवतरण का प्रभाव सौ फ़ीसदी शक्तियुक्त रहने के दौरान, पाँच सद्गुरु विश्व के रंगमंच पर आगे नहीं आते हैं बल्कि इस

अवधि के बाद वे तुरंत, पूर्ण उत्तरदायित्व की बागडोर पुनः अपने हाथों में ले लेते हैं।

प्रत्येक अवतार काल का मानवजाति और विशेष रूप से अवतार की मंडली के लिये अपना महत्त्व है। इस मण्डली को, विशेष रूप से आन्तरिक मंडली को, अवतार का मनुष्य रूप छूट जाने के बाद तुरन्त ही ईश्वर साक्षात्कार हो जाता है, लेकिन शब्द 'तुरन्त' का अर्थ पृथ्वी के एक अथवा दो वर्ष नहीं हैं। अवतार की कृपा के ये, पृथ्वी के अनुसार, १० से २० वर्ष तक अथवा १०० से २०० वर्ष तक हो सकते हैं।

इसके अलावा, एक बार कोई साधक, अवतार के प्रेम की परिधि (दायरे) में आ जाता है तो ऐसा साधक, जब तक उसे ईश्वर साक्षात्कार प्राप्त नहीं हो जाता है, तब तक हमेशा के लिये अवतरण के समय से जुड़ा रहता है और किसी भी सद्‌गुरु की कृपा के बजाय, अवतार की कृपा से उसे लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

अवतार, पुरुष के रूप में, ईश्वर का सीधे अवतरण है (यथार्थता से माया में नीचे उतरना है)। यह अवतरण, ईश–पुरुष के माध्यम से, जिसने विभिन्न आकृतियों की इस दुनियाँ के लिये मनुष्य का रूप धारण किया है, ईश्वर के अस्तित्व, उसकी उपस्थिति, उसके प्रेम, उसकी कृपा आदि का स्पष्ट प्रमाण प्राप्त करने में, मानवजाति की सहायता करता है।

ईश्वर शाश्वत् है और उसकी कृपा शाश्वत् है, इसलिये जब ईश–पुरुष शरीर छोड़ता है, वह केवल मनुष्य रूप का त्याग करता है और ईश्वर शाश्वत् रूप से वैसा ही रहता है जैसा वह सदैव है, सदैव था और सदैव रहेगा। उसके प्रेमियों के ऊपर उसकी कृपा के प्रवाह में कोई बाधा नहीं होती है, इसलिये अवतार के प्रेमियों को अन्त तक उसका दामन पकड़े रहना है और किसी भी जीवित गुरु की खोज में नहीं जाना है क्योंकि इससे कोई लाभ नहीं है।

• • •

प्रेम का प्रकटीकरण

eu"; :i vkj mld i'pkr

अपना शरीर छोड़ने के विषय में अवतार और सद्‌गुरु में एक महत्त्वपूर्ण अन्तर होता है।

जब ईश्वर अपनी दया के कारण, किसी अवतरण के समय, अवतार अथवा ईश–पुरुष के रूप में मनुष्य शरीर धारण करता है, यह अनन्त चेतना का ही प्रकटीकरण होता है। अनन्त चेतना होने के कारण, यह सदैव अनन्त चेतना रहती है और इसी रूप में कार्य करती है। इसलिये, जब अवतार अपने मनुष्य रूप को छोड़ देता है, तो उसे उसके बाद भी अपनी सृष्टि और इसके प्राणियों की अनन्त रूप से चेतना रहती है और वह अपने उन प्रेमियों का ध्यान रखता है जो अपने हृदयों में उसकी पूजा करते हैं।

वह अपने प्रेमियों का ध्यान रखता है, इसका प्रमाण यही है कि समय समय पर बार बार वह केवल सम्पूर्ण मानवता के लिये ही नहीं बल्कि उन थोड़े से व्यक्तियों के लिये भी अवतार के रूप में प्रकट होता है जो उससे पूरे दिल से प्रेम करते हैं और जिस रूप में वे उससे प्रेम करते हैं, उस रूप में उसकी एक झलक पाने के लिये, दुख से सूख जाते हैं।

अवतार माया में नीचे इसलिये उतरता है क्योंकि ईश्वर, जो अनन्त रूप से पहुँच के परे समझा जाता है, मानवता के निकट आकर अपने आपको अनन्त रूप से प्राप्य (मिलने लायक) बना देता है। इस प्रकार अपने प्रेम और अपनी दया को साकार रूप देकर, वह मनुष्य के लिये अपने साथियों के प्रति अपने प्रेम का निर्णय करने तथा इसके साथ ही अपनी दूसरी कमज़ोरियों को नापने के लिये एक पैमाना बन जाता है।

जब अवतार भौतिक शरीर को छोड़ देता है, उसके अनन्त प्रेम, कृपा, दया, प्रभुत्व और शक्ति आदि के प्रयोग में बिल्कुल भी कमी नहीं होती है। इसलिये अवतार की समाधि पर जाकर सहायता माँगने वाले किसी भी व्यक्ति को, केवल सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति ही नहीं होती बल्कि उसे आध्यात्मिक लाभ भी मिलता है क्योंकि इस प्रकार, वह सहायता के लिए सीधे ईश्वर के पास जाता है।

वे लोग दोहरे भाग्यशाली हैं जो अवतार की शारीरिक उपस्थिति में रह चुके हैं और जिस समय वह पृथ्वी पर घूम रहा था, उस समय उसकी उपस्थिति और प्रेम को जिन्होंने अनुभव किया है। वे लोग भाग्यशाली हैं जिन्होंने उसकी उपस्थिति और प्रेम का अनुभव किया है लेकिन उसके मनुष्य रूप के दर्शन नहीं किये हैं क्योंकि जिस तरह पृथ्वी पर वायुमण्डल का दबाव होता है उसी तरह अवतार की उपस्थिति का दबाव होता है जो अवतार द्वारा अपना मनुष्य रूप छोड़ने के पश्चात्, पर्याप्त समय तक रहता है।

सद्गुरु के विषय में ऐसा नहीं होता है। अपने भौतिक शरीर में रहते हुये सद्गुरु संसार का अत्यधिक कल्याण करता है। उसकी मृत्यु के पश्चात् यह कार्य बन्द हो जाता है क्योंकि वह चेतना के किसी भी स्तर पर अब संसार से जुड़ा नहीं रहता है। वह अपनी ईश–अवस्था का अनन्त आनन्द पहले की तरह लेता रहता है, लेकिन, हालांकि उसके पास अभी भी अनन्त शक्ति रहती है, पर उसका प्रयोग करने का उसे अधिकार नहीं रहता है।

तदनुसार, जहाँ कभी भी सद्गुरु की समाधि होती है, वहाँ शक्ति होती है लेकिन भक्त को केवल अपने विश्वास की गहराई से ही, सांसारिक चीजों की प्राप्ति के रूप में सीमित लाभ मिल सकते हैं। यही कारण है कि लोगों को, सद्गुरुओं के अन्तिम विश्राम स्थलों से अक्सर भौतिक लाभ मिलते हैं।

सद्गुरु द्वारा जीवित रहते हुये दिया गया आध्यात्मिक लाभ, अब नहीं मिलता है क्योंकि अब वह अपने ऑफ़िस अथवा ड्यूटी पर नहीं है। यह ड्यूटी थी, किसी भी व्यक्ति को उसके अंदर पहले से मौजूद खज़ाने का ज्ञान कराना, लेकिन शरीर छोड़ने के साथ ही, वह इस अधिकार का प्रयोग करना तथा मानवता के लिये सहायक होना बंद कर देता है तथापि वह शाश्वत रूप से अपनी सत्, चित, आनन्द की स्थिति का अनुभव करता रहता है।

• • •

egku ?kVuk vkj mld i'pkr

उस महान घटना के समय, जब मेहेरबाबा ने अपना शरीर छोड़ा था, अहमदनगर का पारसी पुरोहित बाबा के दर्शन के लिये समाधि पर आया और अपनी पुरोहितों वाली वेशभूषा में उसने खुली हुई समाधि में नीचे जाकर बाबा के चरण स्पर्श किये जो उसकी श्रेणी के किसी व्यक्ति के लिये अत्यंत असाधारण कार्य था।

जिस समय बाबा भौतिक रूप में मौजूद थे, यह पुरोहित उनसे प्रेम नहीं करता था, हालांकि वह बाबा का आदर करता था। जिस दिन बाबा ने शरीर छोड़ा, उस दिन सुबह पुरोहित ने एक असाधारण दृश्य देखा। सुबह लगभग ८ बजे, अपनी प्रार्थनायें करने के बाद जब वह वापस बिस्तर में गया तो शीघ्र ही उसने बाबा को तेज प्रकाश के बीच देखा जो सफेद घोड़े पर सवार होकर उसके पास से जाते हुये कह रहे थे कि वह अपनी मंज़िल की ओर जा रहे थे। पुरोहित तुरंत अपने बिस्तर से कूदकर बाहर आया और उसने बाबा के बारे में पता लगाने का निश्चय किया। जब उसे पता चला कि बाबा ने शरीर छोड़ दिया था, वह उन्हें अन्तिम प्रणाम करने के लिये शीघ्रतापूर्वक समाधि पर आया।

इस प्रकार अन्तिम क्षणों में भी बाबा ने उसकी भावनाओं का प्रत्युत्तर दिया जैसा कि वे सदैव करते थे जब वे भौतिक शरीर में हमारे साथ थे। वे हमारे प्रति अत्यंत धैर्यवान्, दयालु, प्रेम करने वाले तथा कोमल थे और अपने अनुभव से हम यह महसूस करते और जानते थे कि वे पुरातन पुरुष थे।

आज मेहेराज़ाद एक सुंदर एवं शान्तिपूर्ण स्थान है। हमारे दैनिक कार्य ठीक उसी तरह चल रहे हैं जैसे बाबा के यहाँ होने पर थे। महिला और पुरुष मंडली यहाँ रहती है और अपने अपने कर्त्तव्यों का पालन करती है लेकिन हम इन चिर परिचित वाक्यों की कमी को बुरी तरह अनुभव करते हैं, ''बाबा आपको बुलाते हैं'' ''बाबा ने यह कहा,'' आदि। लेकिन कुल मिलाकर यह स्वयं को शून्य में अनुभव करने के समान है। हालाँकि हम बाबा की भौतिक कमी को अनुभव करते हैं, हम यह अनुभव नहीं करते हैं कि वे अनुपस्थित हैं। हम उनके मौन की कमी को अनुभव करते हैं जो ४४

वर्षों तक उनके जीवन का प्रमुख भाग था। उनके क्रियाकलापों के बीच में, बाबा के मौन संकेत, उनका वही मौन, स्वयं ही शब्द थे—तरंगित करने वाले शब्द—जो उनके प्रेमियों के हृदयों में गहराई तक जाकर उन्हें उनके (बाबा के) चरणों पर गिरने को मज़बूर कर देते थे। यहाँ तक कि वे बाबा के एक संकेत पर अपना जीवन भी बलिदान करने को तैयार रहते थे। उसी मौन की कमी को हम अब अनुभव करते हैं, वह मौन, जो हमसे बात करता था, अब हमारे साथ नहीं है।

मेहेरबाबा के दूसरे प्रेमी भी यह अनुभव करते हैं कि मेहेरबाबा उनके बीच हैं हालांकि वे शारीरिक रूप से अनुपस्थित हैं। इसका कारण यह है कि बाबा, पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली ढँग से उनके हृदयों में उपस्थित प्रतीत होते हैं। वे उनको देखे बिना ही उनकी उपस्थिति का अनुभव करते हैं और मैं इस बात पर विश्वास करता हूँ क्योंकि मैं भी इसी तरह अनुभव करता हूँ।

समाचार पत्रों में यह खबर थी कि ३१ जनवरी से ७ फरवरी तक, वह समय जब बाबा का शरीर खुली समाधि के अंदर रखा हुआ था, अपनी हज यात्रा पर पवित्र मक्का शहर गये हुए मुस्लिम तीर्थयात्री, काबा के चारों ओर अपनी रीति के अनुसार परिक्रमा नहीं कर सके क्योंकि यह साढ़े छः फुट पानी के अंदर डूबा हुआ था। लोग विश्वास करते हैं कि काबा एक पवित्र काला पत्थर है जिसे देवदूत गेब्रियल ने अब्राहम को दिया था। पिछले चौदह सौ वर्षों में ऐसी घटना एक बार भी नहीं हुई थी और यह जानने के बाद मैंने अनुभव किया कि अपने वर्तमान रूप में मेहेरबाबा, अपने इस अवतरण के सभी अनुयायियों को इस बात का महत्त्व समझा रहे थे कि मेहेराबाद में उनकी वर्तमान समाधि, अब वर्तमान युग का काबा थी।

हम मंडली जन यह अनुभव करते हैं कि एक दिन ऐसा आयेगा जब दुनियाँ के अधिकांश लोग अवतार मेहेरबाबा तथा उनके मौन के बारे में जानेंगे तथा उस शब्दों के शब्द के बारे में भी दुनियाँ जानेगी तथा उसका अनुभव करेगी, जो वे देंगे।

हम अभी भी विश्वास करते हैं कि वे दुनियाँ के लिये अपना प्रकटीकरण करेंगे जिससे दुनियाँ जानेगी कि अति प्रतीक्षित अवतार (जिसका बहुत समय से इंतज़ार था) मनुष्यों के बीच रहता था और उनके

लिये कष्ट सहता था। कुछ लोग उनको उस समय जान गये थे जब वे पृथ्वी पर थे, दूसरों ने उस समय जाना जब वे समाधि में लेटे हुये मौन दर्शन दे रहे थे और बचे हुए लोग उनके बारे में उस समय जानेंगे जब वे उनके हृदयों में प्रकट होंगे। मैं विश्वास करता हूँ कि उस प्रकटीकरण का समय अधिक दूर नहीं है और मुझे इस बात पर बिल्कुल भी आश्चर्य नहीं होगा अगर बाबा अपने प्रेमियों को दर्शन देने के लिये, विभिन्न स्थानों पर एक ही समय अथवा अलग अलग समय पर, अपने भौतिक शरीर में प्रकट हों। मैं इसे उनका विश्वव्यापी प्रकटीकरण समझूँगा।

• • •

i.k i#"k

लोग ईश्वर को भिन्न भिन्न कारणों से धन्यवाद देते हैं। कुछ लोग उसे उन अच्छी वस्तुओं के लिए धन्यवाद देते हैं जो उसने कृपा करके उन्हें दी हैं, कुछ उन्हें जिंदा रखने के लिये उसे धन्यवाद देते हैं और कुछ लोग उन्हें पूरी साल अच्छी फसल देने के लिये धन्यवाद देते हैं। मैं ईश्वर को उन साँसों के लिये धन्यवाद देता हूँ जो उसने हमें दी हैं और जिनके कारण हम उससे पूरे हृदय से प्रेम करने तथा उसकी याद करने के लिये जीवित हैं।

मेहेरबाबा के साथ मंडली ने जो जीवन बिताया, वह यथार्थ में धन्यवाद देने वाला जीवन था और यद्यपि हमने धन्यवाद देने की क्रिया को कभी भी बाह्य रूप से प्रकट नहीं किया, हम उनके प्रति इस बात के लिये बहुत कृतज्ञ थे कि उन्होंने हमें अपने साथ रहने की अनुमति दी और इसके अलावा, उन्होंने शब्दों में उन्हें (बाबा) धन्यवाद देने का कभी भी अवसर नहीं दिया। यह एक गूढ़ बात थी—पूर्ण कृतज्ञता की भावना, जो इस विश्वास के कारण उत्पन्न हुई थी कि उनके कार्य के लिये और उनके कार्य के प्रति, स्वयं को अनन्य भाव से समर्पित करने से अधिक अच्छा जीवन बिताने का दूसरा कोई रास्ता नहीं था।

बाबा अक्सर कहते थे कि जीवन केवल एक मज़ाक है लेकिन हम दैनिक जीवन में इस प्रकार लीन रहते हैं, माया में इतना अधिक डूबे रहते

हैं कि हम उनके विनोद के प्रभाव को अनुभव नहीं कर पाते हैं। एक दिन मुझे समाचार मिला कि एक अत्यंत प्रिय बाबा प्रेमी मरने वाला था और कुछ मिनटों के बाद, मेहेराबाद में काम करने वाला माली, मुझे यह बताने के लिये मुस्कराता हुआ आया कि उसकी पत्नी के पुत्र पैदा हुआ था। इस प्रकार इस जीवन में जन्म है, मृत्यु है और यही बाबा का विनोद है और वे हमें इसके प्रति सचेत करते हैं। जब हम उनके विनोद को समझ नहीं पाते हैं, बाबा हँसते हैं।

मैं व्यक्तिगत रूप से यह अनुभव करता हूँ कि बाबा का सबसे बड़ा मज़ाक वह था जो उन्होंने अपने बारे में कहा था कि वह मनुष्य रूप में ईश्वर थे। सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और अनन्त आनन्द, इन सभी दैवी गुणों के बावजूद, बाबा हमारे बीच में, मनुष्य रूप में कष्ट सहने के लिये आये। वे प्रकट रूप से हमें यह अनुभव कराने के लिये आये कि वे कुछ नहीं जानते थे। मेरे लिये, यह उनका सबसे बड़ा मज़ाक था। प्रत्येक चीज़ का मालिक होते हुये भी, उनके पास कुछ नहीं था और वे हमारे साथ मनुष्यों के बीच एक मनुष्य की तरह ही नहीं रहे बल्कि वे मानवजाति को सान्त्वना देने वाले बन गये। अपनी (बाबा की) असहायता और आशारहितता की अवस्था में, वे हमें सान्त्वना देते थे और इस बात का संकेत करते थे कि हमारे कष्ट में ही, हमारी यथार्थ मुक्ति का बीज निहित है। इन सबके द्वारा वे सृष्टि के रचयिता के विनोद और सृष्टि के मज़ाक को समझने में हमारी सहायता करते थे।

उन्होंने वही किया जो वे ठीक समझते थे क्योंकि, वे हमें सान्त्वना देने वाले हैं, दैवी खेल के रहस्यों को जानते हैं और यह जानते हुये, कि हमें अभी भी इस खेल की चेतना नहीं है, उन्हें हमारे ऊपर तरस आता है और वह हमारे ऊपर दया करते हैं। वे हमारी कमज़ोरियों के प्रति सचेत हैं लेकिन वे उन्हें स्वीकार करते हैं और हम जैसे भी हैं, उसी रूप में हमें अपने गले लगाते हैं और हमें अपने विश्वास में लेकर, इस प्रकार के शब्दों से हमें सात्वना देते हैं जैसे : "यह कष्ट, जो तुम सह रहे हो, अर्थहीन है और यह समाप्त हो जायेगा। इसलिये शान्त रहो और बहादुर बनो। इस सबके बाद, अधिक से अधिक क्या होगा ? तुम मर जाओगे, लेकिन यह असली मौत नहीं है क्योंकि तुम, निश्चय ही पुनः जन्म लोगे।"

अतः इस प्रकार बाबा, एक ही समय पर, एक साथ हमें सान्त्वना देते हैं और हमारा विनोद भी करते हैं जिसका अर्थ होता है, "तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुम्हें इन सब बातों का ज्ञान कराने के लिए मैं यहाँ हूँ।"

जीवन के हर रूप में आप उनके दैवी विनोद की झलक देखेंगे। इस प्रकार, एक ऐसी सत्ता होने के बावजूद, जिसका एकमात्र अस्तित्व है, वे मायावी अस्तित्वों के, जिनसे उनका संबंध है, रंगबिरंगे रूपों से घिरे हुये हैं।

बाबा की उपस्थिति में प्रसन्नता के अतिरिक्त और कुछ अनुभव करना असंभव था क्योंकि हम समग्रता एवं पूर्णता की भावना का अनुभव करते थे। कभी कभी किसी विशेष स्थिति में मंडली जन उदासी का अनुभव करते थे लेकिन अगले ही क्षण, बाबा की उपस्थिति, उनकी निषेधात्मक भावनाओं को दूर कर देती थी।

हममें से प्रत्येक जन को, जो उनकी मंडली में थे, किसी न किसी समय अहं के नाश की क्रिया से होकर गुज़रना पड़ता था जिसमें बाबा हमें डाँटने अथवा प्रशंसा करने के द्वारा, हमारी कमज़ोरियों को सतह पर लाते थे। अगर हमारे अंदर बहुत ज़्यादा अहंकार की भावनायें सतह पर आती थीं, उदाहरण के लिये, यदि हम उनके साथ रहने के कारण स्वयं को महत्वपूर्ण समझते थे तो वे हमें इस बात का ज्ञान कराते थे कि हमें इस भावना को जड़ से उखाड़ना है।

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि वे शारीरिक रूप से हमारे बीच उपस्थित थे और क्योंकि वे वहाँ थे, इसीलिये हमारा अस्तित्व था क्योंकि उनके बिना कोई चीज़ नहीं है। हमारी गल्तियों को दिखाने के द्वारा वे हमें हमारे अहं की अभिव्यक्तियों के मिथ्यापन को दिखाते थे और इसीलिये यह स्वाभाविक था कि हम उदासी तथा व्यग्रता का अनुभव करते थे लेकिन बाबा जल्दी ही ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करते थे जो उन घटनाओं को हमारे मन से बाहर निकाल देती थीं। सम्पूर्ण प्रेम का स्त्रोत होने के कारण, वे हमें गले लगाते थे, हँसाते थे और हमें यह अनुभव करने के लिये विवश कर देते थे कि एक मात्र वही व्यक्ति, जिसे डाँटा गया था, उन्हें प्रिय था। इसलिये, जबकि सभी निषेधात्मक भावनायें दूर हो जाती

थीं, उनके शब्दों का प्रभाव इस प्रकार का था कि वह मनोनाश की धीरे धीरे होने वाली क्रिया में सहायता करता था।

मेहेरबाबा लोहे की तरह कठोर थे लेकिन मक्खन की तरह कोमल भी थे। जब वे लोहे की तरह कठोर होते थे, हम उनकी आग की गर्मी को अनुभव करते थे लेकिन इसके साथ ही हम उस गर्मी के आनन्द का अनुभव भी करते थे। ऐसे अवसर अक्सर आते थे जब उस आग की गर्मी इतनी तेज होती थी कि मन उनसे दूर भागना चाहता था हालांकि हृदय अभी भी ज़्यादा से ज़्यादा उनके पास रहना चाहता था। बाबा की उपस्थिति में मन और हृदय के बीच निरंतर संघर्ष चलता रहता था और वे इस बात का ध्यान रखते थे कि हमेशा हृदय की जीत हो।

अगर मुझसे मेहेरबाबा के बारे में केवल दो शब्दों में बतलाने के लिये कहा जाय तो मैं कहूँगा कि वे पूर्ण पुरुष थे। वे एक ही समय पर एक साथ विभिन्न धरातलों पर थे। वे औरतों के भी उतने ही समीप थे जितने पुरुषों के बच्चों के साथ वे बच्चे बन जाते थे, योगियों के साथ वे उनके गुरु थे और एक सद्गुरु के साथ वे मनुष्य रूप में ईश्वर थे।

वे कहते थे, ''मैं ईश्वर और मनुष्य हूँ'' और वे वास्तव में एक दैवी हस्ती थे तथा इसके साथ ही वे मनुष्य भी थे जो अपने स्तर के किसी भी दूसरे व्यक्ति की समानता कर सकते थे और उससे अधिक भी हो सकते थे।

यद्यपि मेहेरबाबा ईश्वर हैं, उनके साथ रहने के दौरान मैंने उन्हें मनुष्य रूप में देखा। मैंने उन्हें एक मनुष्य की भाँति प्रसन्न, उदास, विनोदपूर्ण, कष्ट सहते हुये, उत्तेजित और मन के दूसरे कई भावों का प्रदर्शन करते हुये पाया लेकिन इन सभी स्थितियों में उनका दैवी गुण हमेशा विद्यमान रहता था जिसके कारण जब वे कष्ट सहते थे, यह दैवी कष्ट था। अगर वे प्रसन्नता व्यक्त करते थे, उसमें स्पष्ट रूप से दैवी गुण की छाप होती थी जिसे कोई भी देख सकता था क्योंकि यह हमारी साधारण प्रसन्नता से भिन्न होती थी जिस पर सदैव स्वार्थ का धब्बा लगा रहता है— हमारी प्रसन्नता में इस दुई के संसार में हारने वाले पर विजय की एक गर्वपूर्ण भावना रहती है।

इसीलिये मनुष्य की भाँति, मेहेरबाबा जो कुछ करते थे, उस पर यह अपूर्व और शानदार मुहर लगी होती थी और मेहेरबाबा के इसी विशेष गुण

ने, मेरे मन पर इतना अधिक प्रभाव डाला क्योंकि मैं प्रारंभ में उनके साथ एक शिष्य की भाँति न रहकर, एक परीक्षक की भाँति रहता था। उस समय मैं ईश्वर साक्षात्कार के बारे में न तो सोचता था और न ही मुझे इसकी आकांक्षा थी— उन्होंने मुझे बुलाया था और मैं गया और क्योंकि मैं परीक्षक की भाँति सभी बातों को देखता था, मैंने अपने सभी परिचित जनों के मानवीय गुण उनमें देखे और मैं बाबा को एक अत्यंत असाधारण मनुष्य के रूप में देखने लगा।

पहले जब मैं बाबा के पास आया, उन्होंने दूसरे किसी भी साधारण मनुष्य की तरह प्रेम प्रकट किया। उन्होंने दया, सहानुभूति और उदारता भी व्यक्त की लेकिन मैं धीरे धीरे इन गुणों की असाधारण मात्रा को देखने लगा। मैंने यह भी देखा कि ये गुण शेष मानव जाति में पाये जाने वाले अपने प्रतिरूपों (Counter Part) की सीमा से अधिक मात्रा में थे।

इस बात का निश्चय करने के मेरे प्रयत्न में, कि क्या वे वही थे, जो वे कहते थे कि वे थे, उनकी (बाबा की) परीक्षा करने की मेरी मूल कमज़ोरी के बावजूद, उन्होंने मुझे अपने बहुत पास खींच लिया और जैसे जैसे यह दूरी कम होती गई, मैं यह देखने लगा कि बाबा साधारण मानवीय गुणों का प्रदर्शन करने वाले, एक साधारण मानव मात्र नहीं थे बल्कि वे एक ऐसी हस्ती थे जो ईश्वर से संबंधित गुणों का प्रदर्शन करती थीं।

उदाहरण के लिये, जब मैं प्रसन्न होता हूँ, मैं जानता हूँ कि इसी गति में दुख और कष्ट इसके बाद आयेंगें और इससे मैं व्याकुल हो जाता हूँ। लेकिन जब बाबा प्रसन्न होते थे, उनकी प्रसन्नता आने वाले किसी भी कष्ट के द्वारा न तो कम ही होती थी और न ही वह धूमिल होती थी। इसीलिये घोर कष्ट के बावजूद, जो हमने बाद में उन्हें सहते देखा, वे लगातार प्रसन्न रहते थे। दूसरी ओर, उनकी उदारता और दया, सहानुभूति और कृपा से परे पहुँचती थी जिससे अन्ततः, उनकी कृपा से मैं उन्हें उस रूप में स्वीकार करने लगा जो वे कहते थे — मात्र दैवी नहीं बल्कि मनुष्य रूप में ईश्वर।

सारांश में मैं यह कहना चाहता हूँ कि मेहेरबाबा में ईश्वर तथा मनुष्य के सभी गुण थे और इसीलिये मेरे लिये वे पूर्ण पुरुष का प्रतिनिधित्व करते हैं।

• • •

n;k

ईश्वर की दया के बारे में हमारी जो धारणा है, वह वैसी नहीं होती। हमें निरंतर पुनर्जन्म के चक्रव्यूह से बाहर निकालने के उद्देश्य से, हमें अपने पास लाने के लिये, उसे जो कुछ करना पड़ता है, वह उसकी दया का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिये ईश्वर की दया का उद्देश्य लोगों को सदैव माया की भूलभुलैया से बाहर निकालना होता है और लोक विरुद्ध होते हुये भी, लोगों को माया से स्वतंत्र कराने की सर्वोत्तम रीति, कष्ट से छुटकारा दिलाना नहीं बल्कि उन्हें कष्ट में डुबो देना है।

सर्वप्रथम यह असंगत प्रतीत होता है कि ईश्वर की दया इस प्रकार व्यक्त हो, लेकिन वास्तव में यह एकमात्र सबल माध्यम है जो वह हमें अपनी ओर मोड़ने और उसका सामना करने के लिये प्रयोग कर सकता है और निश्चित रूप से करता है।

आध्यात्मिक पथ पर अपनी उन्नत स्थिति के कारण प्राप्त होने वाली शक्तियों के कारण, दूसरे लोग जो दूसरे सभी कम मूल्य के अनुभव लोगों को देते हैं, जैसे कि अन्धे को दृष्टि प्रदान करना अथवा मरे हुये व्यक्ति को जिंदा करना, यथार्थ दया को व्यक्त नहीं करते हैं क्योंकि वे, केवल सत्य की खोज करने वाले व्यक्ति के गले के चारों ओर माया के फंदे को कस देते हैं। माया की भूलभुलैया के फन्दे से स्वतंत्र होने का एकमात्र यथार्थ उपाय ईश्वर को इस दृढ़ विश्वास के साथ सहायता के लिये पुकारना है कि वह हमारी यथार्थ आवश्यकता को भलीभाँति जानता है।

लेकिन लोग ईश्वर को प्रायः कब पुकारते हैं ? वे उस समय पुकारते हैं जब उनकी उँगलियाँ जल जाती हैं और उन्हें शारीरिक कष्ट सहन करना पड़ता है। वे उस समय दिल की गहराइयों से उसे रो–रोकर पुकारते हैं।

इसका यह अर्थ नहीं है कि हम कष्ट के लिये कष्ट को निमंत्रण दें क्योंकि कष्ट की भी एक सीमा है और कोई भी व्यक्ति अपनी शारीरिक क्षमता से अधिक कष्ट सहन नहीं कर सकता है। लेकिन जब हमारे हिस्से में कष्ट आता है तो हमें इसे अपनी आँखों पर से माया का पर्दा उठाने में एक सहायक स्थिति के रूप में स्वीकार करना सीखना चाहिये और इसका

अर्थ है कि हमें इसमें वह अवसर नज़र आता है जो बाबा ने हमें उनमें (बाबा में) रहने के लिये प्रदान किया है।

यह सच है कि शरीर निश्चय ही कष्ट भोगता है लेकिन जब हम उनमें कष्ट भोगते हैं जैसा कि मैंने संकेत किया है, तब हम दूसरों की तरह कष्ट नहीं पाते हैं। लोग हमारे कष्ट को बाहर से देख सकते हैं लेकिन आन्तरिक रूप से हम उनमें (बाबा में) रहते हैं और यह अनुभव वैसा नहीं होता जैसा कि देखने वाला व्यक्ति समझता है। इसलिये जब हम कष्ट भोगते हैं लेकिन उनमें रहते हैं, हम ईश्वर की यथार्थ दया के साक्षी होते हैं।

कभी कभी जब हम कष्ट को इसके उचित रूप में समझते हैं, हम इसके अभ्यस्त हो जाते हैं और हम हर समय उनके (बाबा के) साथ रहना चाहते हैं क्योंकि एक बार इसका असली स्वाद मिल जाने पर कष्ट आनन्द में बदल जाता है। इसका कारण यह है कि उस समय ईश्वर की दया का अनुभव अत्यंत शक्तिशाली ढँग से होता है। यह वह क्षण होता है जब आत्मा सीधे सीधे उसका (ईश्वर का) सामना करने के लिए मुड़ती है और उसके प्रति पूर्ण समर्पण अत्यन्त सरलतापूर्वक आ जाता है।

निःसंदेह कोई भी व्यक्ति उस तरह कष्ट नहीं भोग सकता है जिस तरह मेहेरबाबा ने भोगा क्योंकि उनका कष्ट, व्यक्तिगत कष्ट नहीं था। उनका कष्ट विश्वव्यापी था जो वे अपने विश्वव्यापी रूप में, सम्पूर्ण मानवजाति के लिये सहते थे और इसीलिये उसकी तुलना व्यक्तिगत कष्ट से नहीं की जा सकती है। हमें सान्त्वना देने वाले के रूप में; हमारे कष्ट में हिस्सा बँटाकर हमारे बोझ को हल्का करने के लिये, वे अपने ऊपर यह कष्ट लेते थे और फिर भी अपने इस बलिदान में वे कष्ट के प्रति पूर्ण रूप से उदासीन प्रतीत होते थे, यहाँ तक कि वे प्रसन्नचित्त भी दिखाई देते थे। एक तरह से, यह एक उदाहरण था जो उन्होंने हमारे लिये छोड़ा है कि हमें अपने हिस्से में आये कष्ट को किस प्रकार प्रसन्नता और धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिये।

यद्यपि हम न तो बाबा को देख सकते हैं अथवा उनकी उपस्थिति अनुभव करते हैं, फिर भी जब हम कष्ट में होते हैं, वे सदैव हमारे पास होते

हैं। वे हमारे कष्ट को अनुभव करते हैं और यद्यपि हम भले ही कष्ट भोग रहे हों, उस कष्ट का अधिकांश भाग वे अपने ऊपर ले लेते हैं।

जब भी ईश्वर हमारे बीच मनुष्य रूप में आता है, वह अपने अनन्त आनन्द का प्रयोग नहीं करता है। वह कष्ट को अपनाता है ताकि वह मानव जाति को कष्ट से छुटकारा दिला सके। उसके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है, उसे अपमानित किया जाता है, उसके साथ दुर्घटनायें होती हैं और उसे शूली पर चढ़ाया जाता है। उसे लड़ाइयाँ भी लड़नी पड़ती हैं और शारीरिक कष्ट भी भोगना पड़ता है।

हो सकता है हमें कभी इस बात पर आश्चर्य हो कि क्या ईश्वर के मनुष्य रूप में अवतार लेने की वास्तव में आवश्यकता है जबकि उसकी निराकार अवस्था से, उसकी दया हमें सहज रूप से उपलब्ध है। मेहेरबाबा ने हमें बताया है कि उनके बार बार हमारे बीच आने का एकमात्र कारण यह है कि वे अपनी सृष्टि के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। एक दूसरे मनुष्य के माध्यम से सान्त्वना देना अधिक उत्तम होता है। इसलिये बाबा का भौतिक शरीर, उनकी दया की एक अभिव्यक्ति था, लेकिन, हालाँकि उन्होंने उस शरीर को छोड़ दिया है, वे अभी भी हमारी देखभाल कर रहे हैं और उनकी दया पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली ढँग से हमारी ओर प्रवाहित होती है।

सबका पिता होने के कारण और जीवन में कष्ट देने के बाद भी, ईश्वर अपने बच्चों के कष्ट को दूर करने के लिये आता है। उदाहरण के लिये, जब एक घर में आग लग जाती है उस समय एक पिता आग से दूर नहीं भागता है बल्कि परिवार के सभी जनों की रक्षा करने के लिये क्रियाशील हो जाता है। और जिस समय आग बुझाने वाले व्यक्ति घटनास्थल पर आ भी जाते हैं, पिता अपने परिवार के लिये अपने जीवन को खतरे में डालने के लिये अभी भी तैयार रहता है। यही पितृ भावना है। इसी प्रकार सृष्टि के रचयिता और उनकी सृष्टि के बीच यही अत्यंत विशिष्ट संबंध है जो ईश्वर को अपनी सृष्टि से सम्बद्ध होने के लिए विवश करता है और अपने निराकार रूप में हमसे प्रेम करने और हमारी सहायता करने में समर्थ होने के बावजूद, उसकी दया उसे मनुष्य रूप धारण करने

के लिये विवश करती है ताकि वह कुछ समय के लिये हमारे बीच रह सके।

मेहेरबाबा के साथ रहकर इतना लम्बा समय बिताते हुये मैंने देखा और सबसे अधिक यह अनुभव किया कि वे सभी लोगों के कितने अच्छे मित्र थे। उनके द्वारा अपने ऊपर लिये गये बोझ की गुरुता, उनके द्वारा सहन किये गये कष्ट की अधिकता और सबके प्रति मनमोहक ढँग से व्यक्त की गई दया और सहानुभूति, उनके इन गुणों को नवीन तथा गूढ़ अर्थ प्रदान करते थे। प्रायः अगर किसी परिवार अथवा ग्रुप को, जो उनसे दूर होता था, उनकी सहायता की आवश्यकता होती थी; तो वे ठीक समय पर स्वयं जाकर उन्हें सहायता देते थे, क्योंकि उनकी दया किसी भी प्रकार के भेदभाव अथवा सीमाओं को नहीं जानती थी।

एक दिन अपनी दयावश, बाबा ने हमें सलाह दी : ''जब तक तुम संसार की वस्तुओं के पीछे भागते रहोगे, तुम्हें उनके पीछे भागते रहना होगा। जैसे ही तुम उन्हें त्यागकर उनकी ओर से अपना मुँह मोड़ते हो, संसार की वस्तुयें तुम्हारे पीछे भागने लगेंगी।''

मेहेरबाबा का 'कार्य' भी उनकी दया बाँटने का कार्य था जिसको उन्होंने इस तरह समझाया : ''मैं अंधों को दृष्टि अथवा लँगड़ों को पैर देने के लिये नहीं आया हूँ, न ही मैं मुर्दों को जीवित करने आया हूँ। इसके बजाय मैं लोगों को माया के प्रति अंधा बनाने आया हूँ। मैं तुम्हें अपनी वासनाओं के प्रति मुर्दा बनाने आया हूँ। मैं तुम्हें जीवन और मृत्यु के घेरे से मुक्त करने आया हूँ।'' यही वास्तव में बाबा का 'कार्य' था— हमें अधिक से अधिक अपने पास खींचना, क्योंकि वे ही यथार्थ हैं। वे ऐसा, हमारे 'मैं' को संतुष्ट करके नहीं बल्कि हमें अपने 'मैं' से खाली करके, हमारे धब्बों को और बढ़ाकर नहीं बल्कि उन्हें दूर करके करते थे। तब उनके शब्द इस बात की हमें याद दिलाते थे कि हमारा लक्ष्य क्या होना चाहिये : ''तुम मुझे खोज रहे हो। मेरी खोज करो लेकिन मुझे पाने की आशा मत करो, क्योंकि जब तुम मेरी खोज करते हुये स्वयं खो जाओगे, केवल तभी तुम मुझे पाओगे।''

इसलिये हमें मेहेरबाबा में लीन हो जाना चाहिये और जब हम ऐसा करते हैं, हम हर साँस में, जो हम लेते हैं, तथा प्रत्येक वस्तु व प्रत्येक कार्य

में, जो हम करते हैं, हम उसकी दया का अनुभव करते हैं क्योंकि हमारा यह जीवन ही उसकी दया पर आश्रित है।

जब ईश्वर हमारे बीच मनुष्य रूप में रहता है, हम उसे वास्तव में मनुष्य समझते हैं, हम उसकी परवाह नहीं करते और इसलिये हम उसकी उपेक्षा करते हैं और उसके प्रति उदासीन रहते हैं। लेकिन, हालाँकि वह इस दुनियाँ के दृश्य पटल से चला गया है, उसकी दया सबको अपनी परिधि में इस प्रकार लिये रहती है कि इसका अनुभव हमेशा किया जा सकता है।

वे लोग, जिन्होंने उनके भौतिक शरीर के दर्शन नहीं किये हैं, विशेष रूप से भाग्यशाली हैं। वे उनसे (बाबा से) अधिक शक्तिशाली ढँग से प्रेम कर सकते हैं क्योंकि जिसे देखा नहीं है, उसे देखने की अधिक उत्कंठा तथा आकांक्षा रहती है। मेहेरबाबा के शारीरिक रूप से उपस्थित न होते हुये भी, उनसे प्रेम करना, एक यथार्थ वरदान है क्योंकि ऐसा प्रेम स्वयं मेहेरबाबा देते हैं और यह वरदान हमें उनसे अधिक से अधिक प्रेम करने में समर्थ बनाता है। उन्होंने अपने प्रेम का विधान इस प्रकार बनाया है कि हालाँकि वे यहाँ शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं हैं, हम उस समय उनसे अधिक गहराई तथा शक्तिशाली ढँग से प्रेम कर सकते हैं जब हम उनके बारे में सोचते हैं, उनके लिये दुखी होते हैं और उनसे मिलने की आकांक्षा करते हैं।

• • •

D;k ,dek= b lkelhg \

एक ईसाई व्यक्ति ने, जो ईसाइयों के उस समुदाय से सबंध रखता था जो विश्वास करते हैं कि बपतिस्मा के पश्चात्, ईसामसीह के प्रति विश्वास में वास्तविक अर्थ में उनका पुनर्जन्म हुआ है, बाइबिल में ईसा–मसीह के इस कथन पर मेरे विचार जानने चाहे कि सब लोग, जो उन पर विश्वास नहीं करते थे, अपराधी थे। मैंने उ त्तर दिया कि मेहेरबाबा वही पुरातन पुरुष थे जो बार बार हमारे बीच आता है और इसीलिये किसी भी व्यक्ति को ईसामसीह और मेहेरबाबा में कोई अन्तर नहीं समझना चाहिये। बाबा ने ईसामसीह की तरह कहा था कि वे और पिता, ईश्वर एक थे और

वे केवल पिता ही नहीं बल्कि माँ, पुत्र, मित्र, मुक्तिदाता, उद्धारक और एकमात्र दयालु थे।

इसलिये, ईसामसीह ने पुरातन पुरुष के रूप में जो कुछ कहा, सच है। हमारे कल्याण के लिये वह जन्म लेता है, कष्ट भोगता है और सज़ा पाता है और जब वह हमारे बीच होता है उस समय उसे न पहचानने के कारण हम हमेशा के लिये अपराधी होते हैं। लेकिन हम सदैव के लिये अपराधी नहीं हैं क्योंकि वह दयालु है और अगर हम ग़ल्ती न करें अथवा असफल न हों तो वह हमारे प्रति अपनी दया को किस प्रकार व्यक्त करें?

मेहेरबाबा ने हमें बताया था, "समय समय पर बारम्बार मैं मानव जाति को नींद से जगाने के लिए आता हूँ। मैं जुरथस्त्र, अब्राहम, राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसामसीह और मुहम्मद के रूप में आया था और अब मैं मेहेरबाबा के रूप में आया हूँ। जब मैं यहाँ होता हूँ, मैं सबके लिए आता हूँ लेकिन मैं कुछ लोगों के लिये होता हूँ जो मुझे पहचानते हैं और मेरी कृपा जिनको मेरी पहचान कराती है। यह मेरी कृपा है जिससे लोग मुझे मेरे वास्तविक रूप में पहचानते हैं।"

जब भी वह आता है, हम उसे खो देते हैं क्योंकि उसकी अपने बारे में की गई दृढ़ उक्तियों के बावजूद, हम उसे नहीं पहचानते। वह उसी रूप में अथवा उसी शारीरिक मुखाकृति में नहीं बल्कि उसी यथार्थ के रूप में आता है क्योंकि वह सत्य और सत्य का शरीर है।

एक बार इसे समझाने के लिये बाबा ने इस प्रकार उपमा दी। उन्होंने हमें एक परिवार के बारे में बताया जिसने पिछले युद्ध के दौरान, अपनी एक मात्र सन्तान के लिये सुप्रसिद्ध क्वेकर ओट्स (Quaker Oats, ओवलटीन, हॉरलिक्स की तरह ताकत बढ़ाने वाला टॉनिक) की कमी का सामना किया। उनका इसके ताक़त बढ़ाने के गुण पर बहुत विश्वास था और इसीलिये एक दिन जब माँ को पता चला कि उसके पास यह टॉनिक नहीं था, वह अत्यंत व्यग्रता के साथ खाद्य भण्डार की ओर दौड़ी और क्वेकर ओट्स का एक डिब्बा वहाँ रखा देखकर उसे शान्ति मिली। उसने उसे जल्दी से उठाने की कोशिश की लेकिन दुकानदार ने उसे रोक दिया। वह डर गई कि उसे यह टॉनिक नहीं मिल पायेगा अतः उसने दुकानदार से

प्रार्थना की कि उसे दो गुने दाम पर यह टॉनिक का डिब्बा दे दिया जाय क्योंकि उसे अपने बच्चे के लिये इसकी बहुत ज़रूरत थी।

जब दुकानदार को कुछ कहने का मौका मिला, उसने उस स्त्री को समझाया कि वह उसे इसलिये रोक रहा था क्योंकि उस डिब्बे में पुराना टॉनिक था और जहाज से नया माल आ जाने के कारण, वह पुराने माल के बजाय उसे ताज़ा माल देना चाहता था।

तब बाबा ने हमसे पूछा, ''क्या दुनियाँ में कोई ऐसी माँ है जो ताज़ी खाद्य सामग्री को अस्वीकार करके, पुरानी ले ?' और फिर उन्होंने कहा, ''समय समय पर बार बार मैं आता हूँ। मैं वही पुरातन पुरुष हूँ। मैं क्वेकर ओट्स की वही ताज़ी सामग्री हूँ।''

तब यह प्रश्न उठता है : क्या सृष्टि का यही उद्देश्य है कि पिता उन लोगों को हमेशा के लिये अपराधी समझे जो पुत्र को उसके एक और एकमात्र अवतरण में पहचानने में असमर्थ रहे ?'' निःसंदेह नहीं ! इसका उद्देश्य यह है कि ईश्वर अपनी दया को प्रकट करे और वह उनकी कमज़ोरियों और कमियों को क्षमा करके उन पर दया करता है और मेहेरबाबा ने हमें आश्वासन दिया है कि वह ७०० वर्षों के पश्चात् फिर से आयेंगे।

बाइबिल में जो कुछ लिखा है, सच है लेकिन उस सच के पीछे गहरा अर्थ है और गहरे अर्थ को समझने के लिये हमें प्रभु ईसामसीह से मिलने की आकांक्षा करनी चाहिये और मेहेरबाबा के प्रति अपने प्रेम के द्वारा, हम ईसामसीह को अधिक गहराई के साथ समझ सकते हैं जिन्होंने स्वयं को शूली पर चढ़वाया था।

मेहेरबाबा से प्रेम करने का यह अर्थ नहीं कि कोई व्यक्ति अब ईसाई नहीं है। इसका एकमात्र अर्थ यही है कि कोई व्यक्ति उनसे प्रेम करके सच्चा ईसाई हो सकता है और इस प्रकार सत्य का अनुभव प्राप्त कर सकता है। मेहेरबाबा अनन्त महासागर हैं और उनके प्रेम के महासागर से अपनी प्यास बुझाने के लिये प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत है और अन्य किसी बात का महत्त्व नहीं है। जैसा कि किसी ने कहा है, ''सागर, सागर ही रहता है, भले ही बूँद कुछ भी सोचे।''

• • •

ik[kMh lUr

मेहेरबाबा ने कहा है कि जब कोई व्यक्ति वास्तविक प्रभुत्व के बिना यह घोषणा करता है कि वह एक सन्त है और लोगों को अपना सम्मान करने देता है, तथा अपने आपको प्रणाम करने की उन्हें अनुमति देता है तो वह केवल गहरी लेकिन थोड़े समय तक रहने वाली प्रसन्नता से अपने अहंकार का पोषण करता है।

यह उस व्यक्ति के समान है जिसे अफ़ीम खाने अथवा सिगरेट पीने की लत होती है। वह व्यक्ति इनके प्रयोग से क्षणिक स्वस्थता का अनुभव करता है लेकिन बाद में शारीरिक बीमारियों के रूप में, वह अफ़ीम के सेवन से बाद में होने वाली बीमारियों से पीड़ित होने लगता है। तब उसे इस बात का ज्ञान होता है कि यह आदत उसे डालनी ही नहीं चाहिये थी लेकिन दुर्भाग्य से इतनी देर हो चुकी होती है कि वह इसकी आदत छोड़ नहीं पाता है। धीरे धीरे कम होती जा रही स्वस्थता की भावना को एक समान रखने के लिये, उसे इस नशीली दवा की अधिकाधिक मात्रा लेनी पड़ती है और इस प्रकार यह नशे की लत हमेशा बढ़ती चली जाती है।

वर्षों की लत के पश्चात्, वह व्यक्ति एक दिन अफ़ीम की आवश्यकता से अधिक मात्रा ले लेता है जो नुकसानदायक सिद्ध होती है और वह एक गन्दे नाले में बेहोश पड़ा हुआ पाया जाता है। अब उसका तिरस्कार होता है, उसका मज़ाक उड़ाया जाता है और वह एक प्रमाणित अफ़ीमची माना जाता है।

इसी तरह वह व्यक्ति, जो अधिकार न होते हुये भी, लोगों को स्वयं को प्रणाम करने की अनुमति देकर प्रसन्नता पाता है, आत्मा की कचोट को अनुभव करने लगता है जो उसे उसकी भूल के लिये चेतावनी देती है। लेकिन वह अपने अहं के पोषण का इतना अधिक अभ्यस्त हो जाता है कि वह इस प्रथा को रोकने में असमर्थ होता है। कुछ समय पश्चात् आत्मा की आवाज़ पूर्णरूप से घुटकर रह जाती है और वह अपनी योग्यता के विपरीत ढँग से जीवन व्यतीत करने लगता है।

लेकिन इस उदाहरण में, अफ़ीमची के उदाहरण के विपरीत, उसके अयोग्यता के व्यवहार को उसके अनुयायी उसकी 'पूर्णता' समझते हैं। जब

वह दूसरों को गाली देता है, उसकी गाली को आशीर्वाद समझा जाता है, जब वह किसी व्यक्ति को मारता है तो यह मार उसकी कृपा के रूप में प्रेमपूर्वक स्वीकार की जाती है और जब वह विपरीत लिंग के साथ व्यभिचार करने लगता है, उसके अनुयायी इसे प्रेम एवं श्रद्धा के साथ स्वीकार करते हैं और उसका व्यवहार जितना अधिक स्वच्छंद होता है, वे उसकी उतनी ही अधिक प्रशंसा करते हैं।

जैसे जैसे यह प्रशंसा बढ़ती जाती है, उसके अहं के पोषण के लिए भोजन की मात्रा बढ़ती जाती है और पाखण्डी संत थोड़े ही समय में बदहजमी का शिकार हो जाता है जिसके प्रकट होने पर वह अपने अनुयायियों का कोप भाजन बनता है और उसका घोर पतन होता है। वे ही व्यक्ति, जो स्वयं को उसका अनुयायी कहते थे, उसकी पूजा करते थे और उसकी स्तुति में गीत गाते थे, अब उसका तिरस्कार करते हैं और उसे ढोंगी कहते हैं।

मेहेरबाबा ने समझाया है कि वह व्यक्ति, जो अधिकार न होते हुये भी, लोगों को स्वयं को प्रणाम करने की अनुमति देता है, हानि का सौदा करता है क्योंकि जिस समय हजारों लोगों को, जो उसे प्रणाम करते हैं, ढोंगी संत के प्रति अपने प्रेम एवं निश्छल विश्वास के कारण, अपने संस्कारों से छुटकारा पाने का लाभ मिलता है, उस संत को उनके (अनुयायियों के) संस्कारों का बोझ प्राप्त होता है जिसके कारण झूठे संत को बहुत से अतिरिक्त जन्मों में अत्यधिक कष्ट प्राप्त होता है।

लेकिन अब हमें इस बात पर विचार करना चाहिये : अगर एक अनधिकारी व्यक्ति के कारण, जो लोगों को स्वयं को प्रणाम करने की अनुमति देता है, हजारों व्यक्तियों को इतना अधिक लाभ होता है, तो क्या उसे ऐसा करते रहने की अनुमति दी जानी चाहिये ?

इसका उत्तर यह है कि अगर ऐसा व्यक्ति पहले से ही किसी सद्‌गुरु के सम्पर्क में है जिससे वह निष्कपट भाव से प्रेम करता है, तो सद्‌गुरु उसके इस व्यवहार को तुरंत रोक देंगे और अपने दूसरे प्रेमियों को स्व–घोषित संत के व्यवहार के बारे में चेतावनी देंगे। दूसरी ओर, अगर वह व्यक्ति सद्‌गुरु के सम्पर्क में नहीं है तो सद्‌गुरु हस्तक्षेप नहीं करेंगे क्योंकि

वे अपनी पूर्ण अन्तर्दृष्टि से अहं का खेल तथा अन्ततः उससे होने वाले लाभ को देखते हैं।

लोगों द्वारा उसको प्रणाम किये जाने के कारण, पाखण्डी संत के ऊपर आया हुआ संस्कारों का अतिरिक्त बोझ, उसके लिये भावी जन्मों में, निःसंदेह, अनन्त कष्ट का कारण होगा, लेकिन उस कष्ट की तीव्रता की रफ़्तार बढ़ जायेगी क्योंकि उसके द्वारा चुकाये गये मूल्य के साथ, वह लाभ भी शामिल है जो उसके अनजाने में हज़ारों लोगों को उसके कारण हुआ।

फिर भी, एक अनधिकारी संत, कई लोगों के लिये हानि का कारण भी बन सकता है। जिस प्रकार एक अफ़ीमची, दूसरे व्यक्ति को प्रयोग करने के लिये, थोड़ी सी अफ़ीम देकर प्रसन्नता का अनुभव करता है और फिर वह व्यक्ति इसी क्रिया को दोहराता है, उसी प्रकार पाखण्डी संत के अत्यंत घनिष्ठ दो या तीन व्यक्ति, उसके द्वारा किये गये चमत्कारों की खबरें फैलाने लगते हैं और ऐसी घटनाओं का वर्णन करने लगते हैं जो संयोग के अतिरिक्त और कुछ नहीं होती हैं। इस प्रकार, शीघ्र ही अनुयायियों का एक दल उत्पन्न हो जाता है।

लेकिन माया द्वारा खेली गई गूढ़ चालों में कोई कमी नहीं की जाती है क्योंकि कुछ वर्षों के पश्चात् असंख्य अनुयायियों में से एक को, जो पाखण्डी संत को सद्‌गुरु समझता है, यह पता चलता है कि उसका गुरु ईश्वर–साक्षात्कार प्राप्त न होकर एक ढोंगी संत है। अपने गुरु में कई वर्षों तक विश्वास करने तथा उसके प्रति प्रेम और भक्ति रखने के पश्चात् यह अनुयायी संतों और गुरुओं के विचार मात्र से इतनी अधिक घृणा का अनुभव करने लगता है कि वह ईश्वर के अस्तित्व पर भी संदेह करने लगता है।

इस क्रिया के प्रभाव से इतना बड़ा धक्का लगता है कि उस व्यक्ति के सभी संस्कार जो झूठे संत के प्रति उसके विश्वास के दौरान, उस संत के पास चले गये थे, उस व्यक्ति के पास उसी क्षण वापस आ जाते हैं जिस क्षण उसे यह प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता है कि उसका गुरु नकली है। जब तक विश्वासी व्यक्ति का प्रेम और विश्वास सक्रिय भूमिका निभाता है, झूठा संत सहज उपलब्ध कूड़ेदान का उद्देश्य पूरा करता रहता है जिसमें ईश्वर

ने उस विश्वासी व्यक्ति के संस्कार जमाकर दिये। लेकिन ये संस्कार नष्ट नहीं हुये थे क्योंकि वह संत सद्‌गुरु नहीं बल्कि झूठा था। अतः अब वे संस्कार उस विश्वासी व्यक्ति के पास वापस लौट आते हैं और उसे अत्यंत कष्ट भोगने के लिए विवश करते हैं। अतः यह कल्पना करना अत्यंत सरल है कि एक पांखडी संत उन लोगों को जो उस पर विश्वास करते हैं तथा उससे अत्यंत प्रेम करते हैं, कितनी अधिक हानि पहुँचा सकता है तथा उन पर कितना अधिक बोझ डाल सकता है।

हालांकि, जैसा कि बताया है कि झूठे संत के अनुयायी को काफ़ी हानि हो सकती है लेकिन लाभ भी हो सकता है। अगर प्रेम गहरा और विश्वास दृढ़ है, तो पाखण्डी संत पर अटूट विश्वास रखने वाले व्यक्ति के लिये आध्यात्मिक पथ पर उन्नति करना संभव है और उसे उस पथ के अनुभव भी होने लगते हैं, लेकिन यह अनिवार्य रूप से माया का खेल है। जैसा कि मेहेरबाबा ने कहा है, यह सब मेरा खेल है। कोई भी व्यक्ति मेरी थाह नहीं पा सकता है क्योंकि मैं प्रत्येक व्यक्ति में हूँ और इसके साथ ही मैं सब कुछ करता हूँ। मैं कुछ नहीं भी करता हूँ। साहसी बनो, प्रसन्न रहो; मैं और तुम सब एक हैं और वह अनन्तता, जो सनातन काल से मैं हूँ, एक दिन प्रत्येक व्यक्ति की होगी।''

• • •

^lUr* D;k gS \

मेहेरबाबा हमसे कहते थे कि 'सन्त' शब्द बड़ी लापरवाही के साथ प्रयोग किया जाता है। उन्होंने बताया, ''वह व्यक्ति सन्त है जो मुझे मेरे वास्तविक रूप में देखता है और मुझे मेरे वास्तविक रूप में देखने का अर्थ है कि मेरी कान्ति को निरंतर देखने के अतिरिक्त और कुछ नहीं देखना। केवल वही व्यक्ति छठवीं भूमिका पर है जो मेरे प्रकाश को अविराम, निरंतर देखता है। वह व्यक्ति, जो मुझे मेरे वास्तविक रूप में देखता है, मेरा सच्चा प्रेमी भी है जो चेतना की अन्तर्मुखी अवस्था की छठवीं भूमिका पर है।''

अवतार के अवतरण के दौरान, बहुत से व्यक्ति सन्त होने का दावा करते हैं। एक बार बाबा को एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताया गया जो

कहता था कि वह चेतना की छठवीं भूमिका पर था। तब बाबा ने इस विषय को समझाते हुए कहा : ''जब कोई व्यक्ति छठवीं भूमिका पर होता है, वह ईश्वर को आमने सामने देखता है और आनन्द का अनुभव करता है। स्थूल भूमिका पर स्थित व्यक्ति भी अवतार अथवा सद्‌गुरु को सब जगह देख सकता है लेकिन उसके अनुभव और चेतना की छठवीं भूमिका पर स्थित विशिष्ट व्यक्ति के आनन्द में ज़मीन आसमान का अंतर होता है। जबकि स्थूल भूमिका पर स्थित व्यक्ति के अंदर सन्तुष्ट करने के लिए मन तथा इच्छायें होती हैं, छठवीं भूमिका पर स्थित व्यक्ति केवल प्रियतम ईश्वर के साथ मिलन की लालसा करता है।''

• • •

y{; gekjs chp esa

मेहेरबाबा ने अपने प्रेमियों के एक ग्रुप से कहा था, ''मैं तुम्हें सिखाऊँगा कि तुम किस प्रकार संसार के सारे काम करते हुये मेरे साथ, जो अनन्त सत्ता के रूप में तुम्हारे बीच है, हर समय आन्तरिक सम्पर्क में रहो।''

वर्तमान युग, जिसमें हम अब हैं, अत्यंत विशिष्ट है क्योंकि इस समय दैवी सत्ता, अवतार के साथ सीधा सम्पर्क सबसे अधिक उपलब्ध है। अवतार के प्रेम का वातावरण और प्रभाव, उसके शरीर छोड़ने के पश्चात् सौ वर्षों तक रहता है। इसलिये उसकी प्रमुख शिक्षा, जो हमें कभी नहीं भूलना चाहिये, यह है : ''मेरे दामन को पकड़ो। यह याद रखो कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ ताकि तुम मेरे प्रेम को प्रतिबिम्बित कर सको। सबसे प्रेम करो, ईमानदार, सरल, स्वाभाविक और बच्चे की तरह बनो।''

हमें केवल इतना ही करना है। यही हमारा मार्ग है– इससे अधिक हमें और कुछ नहीं करना है। यही हमारी आध्यात्मिकता है क्योंकि उसका दामन पकड़ने में सब कुछ अन्तर्निहित है। उसके परे कुछ भी नहीं है। शेष सबका दर्शन, ब्रह्मज्ञान आदि का कोई अर्थ नहीं है क्योंकि सच्ची आध्यात्मिकता, मेहेरबाबा के साथ हमारे संबंध में अन्तर्निहित है। सच्ची आध्यात्मिकता 'अहं' का पूर्ण नाश है लेकिन हमें उस समय यह विचार भी नहीं आना चाहिये कि हमारा आध्यात्मिक उन्नति में यह पहला अथवा

दूसरा कदम है। अहं के नाश का व्यवहारिक ढँग उनके दामन को पकड़ना और सरल तथा स्वाभाविक बनना है। इस प्रकार उनका दामन पकड़ने से हमारा 'मैं' कमज़ोर हो जाता है। यह सुनने में बहुत आसान लगता है लेकिन यह बहुत कठिन है।

अतः हमें किसी भी आध्यात्मिक पथ का अनुसरण करने की चिन्ता नहीं करनी चाहिये क्योंकि उनका दामन पकड़ने से, हम जहाँ कहीं भी हैं, वही मार्ग बन जाता है। यहाँ तक कि जिस समय आप उनकी ओर से अपना मुँह मोड़ लेते हैं (उन पर अविश्वास करने लगते हैं), उस समय आप जहाँ कहीं भी जाते हैं, मार्ग आपका अनुसरण करेगा क्योंकि वे (बाबा) आपको अपने पास आने का एक अवसर और देंगे। यह याद रखिये कि वे (बाबा) सृष्टि का केन्द्र हैं और जब तक हमारा सम्पूर्ण ध्यान उन पर केन्द्रित है, आध्यात्मिक मार्ग जैसी किसी वस्तु का कोई महत्त्व नहीं है।

वास्तव में ऐसा होता है कि जब हमारा ध्यान बाबा पर केन्द्रित होता है, तो जो भी मार्ग है, वह हमारा अनुसरण करेगा क्योंकि हम उनकी (बाबा) ओर अग्रसर हो रहे हैं। हमें 'मार्ग' से कोई मतलब नहीं है। हमारे पास उसके लिये समय नहीं है क्योंकि हमारा ध्यान हर समय उन पर केन्द्रित है। जो लोग उनके प्रेम की परिधि में आते हैं, उन्हें यह लाभ होता है। मार्ग उनका अनुसरण करता है जब कि दूसरे पथिकों को किसी आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करना पड़ता है।

फिर भी, दूसरे पथिकों के लिये वह समय आयेगा जब उन्हें प्रियतम उपलब्ध होंगे और वे केवल उन पर अपना ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे और तब मार्ग की कोई ज़रूरत नहीं होगी। मेहेरबाबा के प्रेमी किसी भी आध्यात्मिक पथ का अनुसरण नहीं करते हैं क्योंकि प्रियतम उनके पास हैं। उनका अपने प्रियतम के साथ सीधा सम्पर्क है; इसलिये उनकी शक्तियाँ, सामर्थ्य, आत्मा और उनका अपना सम्पूर्ण अस्तित्व, सब कुछ प्रियतम पर केन्द्रित है। ईशपुरुष, मेहेरबाबा के प्रेमियों और दूसरे पथिक में, जो किसी मार्ग का अनुसरण करता है, यही अंतर है।

हमें यह याद रखना चाहिये कि जब प्रियतम, जो स्वयं लक्ष्य है, हमारे बीच आता है, उस समय भी आध्यात्मिक पथ की व्यवस्था हमेशा रहती है।

मैं इसे निम्न उदाहरण से इस प्रकार समझा सकता हूँ।

इस समय हम यहाँ मेहेराज़ाद में हैं जहाँ मेहेरबाबा रहते थे। इसलिये यह उनका आसन है और बहुत से लोगों को यहाँ आने की अनुमति दी जा चुकी है। उन लोगों को दिये गये इस अवसर के कारण, मेहेरबाबा के ये प्रेमी इस प्रकार के विचारों से व्यग्र रहते थे कि वे उनके दर्शन कब करेंगे अथवा बाबा उनको गले कैसे लगायेंगे आदि आदि। अन्य सभी विचारों को छोड़कर, बाबा से संबंधित इसी प्रकार के दूसरे विचार उन्हें व्यग्र किये रहते थे।

बस स्टाप से मेहेराज़ाद आने के लिये एक लम्बी सड़क है और उसके दोनों ओर बहुत से दृश्य हैं। वहाँ विभिन्न प्रकार के पेड़, झोपड़ियाँ, बहुत से गड़रिये और चरवाहे हैं और दूसरे कई दृश्य देखने के लिए हैं। लेकिन बाबा की बाहों में होने की अपनी उत्सुकता के कारण, क्या इन प्रेमियों ने इनमें से किसी भी दृश्य को देखा ? अगर आपने उनसे पूछा होता, ''क्या आपने सड़क के किनारे वह ख़ास चेरी का पेड़ देखा है ?'' तो वे कहते, ''नहीं ! क्या ऐसा है, क्या वहाँ चेरी का पेड़ है ? मैंने उसे नहीं देखा।''

''आप बिल्कुल उसके पास से गुज़र रहे थे, फिर आपने उसे कैसे नहीं देखा ?'' और उनका उत्तर होता, ''सड़क के किनारे, चेरी के पेड़ पर ध्यान देने की बात तो दूर रही, हमें यह भी होश नहीं था कि हम सड़क पर चल रहे थे। हमारा पूरा ध्यान बाबा (लक्ष्य) की ओर केन्द्रित था जिसकी ओर हम बढ़ रहे थे।'' दूसरे शब्दों में, मार्ग उनका अनुसरण कर रहा था।

लेकिन वह व्यक्ति, जो मार्ग की ओर अधिक ध्यान देता है, प्रत्येक चट्टान, कंकड़ तथा सड़क पर बनी पहियों की प्रत्येक लकीरों को देखेगा। वह गड़रियों, चरवाहों तथा सभी झोपड़ियों में रहने वालों को भी देखेगा। वह उन लोगों से बातचीत करने के लिये भी रुकेगा और उन लोगों के घरों में उनके साथ भोजन करने का निमंत्रण भी स्वीकार करेगा। वह इस प्रकार के कार्यों में समय व्यतीत करने में एक प्रकार की प्रसन्नता का अनुभव करेगा।

और इस प्रकार उसे लक्ष्य तक पहुँचने में अधिक समय लगेगा और जब वह वहाँ पहुँचेगा, भेंट करने का समय समाप्त हो चुका होगा। उसे बस इतना ही समय मिलेगा कि वह उस मकान की सुन्दरता की प्रशंसा करे जहाँ प्रभु रहते थे। आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले पथिक के साथ बिल्कुल यही होता है।

प्रत्येक अवतरण के समय, हर बार यह एक बड़ी देन होती है और यह एक वरदान है कि हम इस समय ऐसे युग में हैं जब वे हमारे साथ रहे और अभी भी हमारे साथ हैं।

यह ऐसा ही है जैसे कि हमने ही मार्ग बनाया हो। लेकिन उस व्यक्ति के लिये, जो अपने सभी विचारों और भक्ति को मेहेरबाबा पर केन्द्रित करता है, आध्यात्मिक पथ जैसी कोई चीज़ नहीं है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर–साक्षात्कार के विचारों को भी छोड़ देता है, लेकिन मार्ग अभी भी वहाँ है हालांकि इसका अनुभव नहीं होता है। हम इसे आँखों पर पट्टी बाँधना कह सकते हैं लेकिन यह पट्टी यांत्रिक नहीं है क्योंकि प्रेमी का हृदय, उसकी सम्पूर्ण चेतना मेहेरबाबा पर केन्द्रित है। तब वे (मेहेरबाबा) मार्ग, पद्धति और लक्ष्य बन जाते हैं।

और क्योंकि मार्ग का अनुभव किये बिना ही, मार्ग वहाँ रहता है, इसी प्रकार मार्ग की शक्तियाँ और साथ साथ इसके कई आकर्षण भी वहाँ रहते हैं। वे आपका सामना करते हैं, आपको दण्डवत् प्रणाम करते हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं, "मुझे प्रयोग करो। मैं यहाँ हूँ।" लेकिन आप ऐसे निमंत्रणों की ओर से अपना मुँह मोड़ लेते हैं और इसके बजाय आपका हृदय मेहेरबाबा पर केन्द्रित होता है और आपके विचार होते हैं, "मैं उनके दर्शन कब करूँगा और उनके साथ का आनन्द लूँगा ?" आप शक्तियों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते हैं क्योंकि आपके लिये उनका कोई अस्तित्व नहीं हैं। ऐसा ही होता है और यही सच्चाई है।

जैसा कि मैं पहले बता चुका हूँ यही कारण है कि जिस समय वह हमारे बीच होता है उस समय हमें सबसे अधिक आध्यात्मिक लाभ मिलता है।

• • •

^^doy ckck ds fy, gh ,d= gksvks**

मेहेरबाबा के प्रेमियों को इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि वे अपने प्रियतम के प्रेम और सेवा के लिये ही एकत्र हों। उन्हें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि वे अपने अथवा ग्रुप के लिये नहीं बल्कि मेहेरबाबा के लिए एकत्र होते हैं। उन्हें अपने हृदयों और मनों में बाबा की उपस्थिति को सबसे ऊपर रखना चाहिये। और बाबा वहाँ उपस्थित हैं, यह जानते हुये ग्रुप के लोग स्वाभाविक रूप से उचित ढँग से व्यवहार करेंगे। किसी भी ग्रुप के लिए यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात है।

एक बार बाबा की उपस्थिति हृदय में अनुभव करने पर, प्रत्येक बात उचित ढँग से निर्धारित हो जाती है क्योंकि अगर उनकी उपस्थिति का अनुभव नहीं होता है तो लोग अपनी इच्छानुसार काम करेंगे। लेकिन मुझे विश्वास है कि कोई भी व्यक्ति बाबा की उपस्थिति में गलत ढँग से व्यवहार नहीं करेगा इसलिये हमें सदैव इस तरह व्यवहार करना चाहिये जैसा बाबा चाहते हैं क्योंकि उनकी उपस्थिति का अनुभव होने पर, हम उन्हें प्रसन्न करना चाहेंगे। हमें अपने आपको नहीं बल्कि बाबा को प्रसन्न करने की कोशिश करना चाहिये। यह बाबा प्रेमियों का सर्वोपरि लक्ष्य होना चाहिये।

इस बात का कोई महत्त्व नहीं है कि कितने व्यक्ति एकत्र हुये हैं। कभी कभी कम लोगों का होना अधिक अच्छा है। और इसका कारण क्या है ? क्योंकि उस समय उनकी उपस्थिति का वास्तविक अनुभव हो सकता है, आप इसे एक प्रकार का एक रूप या सामूहिक (Unified) बाबा–अनुभव कह सकते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि दूसरे लोगों को सभा में आने से रोका जाये। इसे बाबा पर छोड़ दीजिये। आपका काम बाबा की उपस्थिति को स्थापित करना है जबकि उनका काम लोगों को अपने पास आने की अनुमति देना है। इसलिये किसी भी व्यक्ति को, किसी को भी आने से रोकना नहीं चाहिये अथवा यह निश्चित नहीं करना चाहिये कि कितने लोग आने चाहिये। यह एकमात्र बाबा का कार्य है और हमें उनको अपना काम करने देना चाहिये। मैं एक बार फिर कहता हूँ कि हमारा काम उनको अपने हृदयों में रखना है और उस समय विशेष रूप से सबसे अधिक रखना है जब हम उनके प्रेम में और उनके नाम पर एकत्र होते हैं।

निःसंदेह, जब कोई ग्रुप अधिकाधिक बड़ा होता जाता है, बहुत से मन एक साथ काम करने लगते हैं लेकिन मन का स्वभाव कभी भी एक साथ काम न करना है। एक साथ काम करना हृदय का स्वभाव है क्योंकि हृदय उनसे प्रेम करने के अतिरिक्त दूसरी कोई रीति नहीं जानता है। फिर भी, किसी भी बात का तर्कपूर्ण विवेचन करने में और खोजबीन करने में मन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है लेकिन मन को हृदय की भावनाओं की सदैव रक्षा करनी चाहिये और इससे निश्चित रूप से सहायता मिलेगी। बाधाओं की जगह उन्नति होगी और तब अधिकाधिक हृदयों को बाबा के पास लाने के तरीक़ों और साधनों की खोज होगी। इसलिये, बाबा प्रेमियों की सभा में ऐसा ही होना चाहिये वरना वहाँ झगड़े, भेदभाव, कलह आदि होंगे।

बाबा हमें समय समय पर, बार बार बताया करते थे कि अगर सभी हृदय (प्रेमी) उनके प्रेम में एक साथ आयें तो उन्हें (बाबा को) बहुत खुशी होगी। इसलिये उनके नाम तथा उनके प्रेम में होने वाली सभाओं में सारे मतभेदों को एक ओर रख देना चाहिये। कलह और झगड़ों को बाहर ही रहने देना चाहिये और उस एक या डेढ़ घंटे की अवधि में, जब आप उनकी उपस्थिति को अनुभव करने की कोशिश करते हैं, उनके प्रेम के महासागर में सारे मतभेदों को डुबो दीजिये। इतने थोड़े समय के लिये यह निश्चित रूप से किया जा सकता है। जब सभा प्रारंभ होती है, एकमात्र बाबा पर तथा हम सबके प्रति उनके प्रेम पर, अपना ध्यान केन्द्रित कीजिये और ऐसी सभा अत्यंत सुंदर एवं प्रसन्नतापूर्ण होगी।

बाबा चाहेंगे कि उनकी उपस्थिति में हम बच्चों की भाँति बनें, इसलिये बच्चे के समान बनो। एकदम स्वतंत्र रहो और अपने घर की तरह अनुभव करो और यह जान लो कि हमने उनके लिये जो घर बनाया है, वे उसे अपनी उपस्थिति से सुशोभित कर रहे हैं क्योंकि वे निःसंदेह वहाँ पर हैं।

बाबा के प्रेम में एकत्र होने के लिये, लोगों को शानदार भवन की ज़रूरत नहीं है। इसके लिये एक पेड़ की छाया भी पर्याप्त है, हालांकि उसकी उपस्थिति से मिलने वाली छाया आपके लिये सर्वोत्तम होगी। तब उनकी उपस्थिति में सभी लोग विश्राम का अनुभव करेंगे। बाबा चाहेंगे कि हम ऐसे ही बनें।

बाबा का संदेश बहुत से लोगों तक पहुँचाने के लिये, कुछ लोगों के पास शायद योजनायें होंगी। उन योजनाओं को सबके सामने रखना चाहिये और प्रत्येक व्यक्ति को उनके बारे में अपने विचार प्रकट करने का अवसर देने के पश्चात्, उन योजनाओं का अनुमोदन हो या नहीं, उनका जो भी परिणाम हो, सब कुछ बाबा की मर्ज़ी समझना चाहिये। जब बाबा हमारे, मंडली के साथ थे, वे हमें इस प्रकार की बातों पर आज्ञा नहीं देते थे। वे इस प्रकार के मामले अत्यत सार्वलौकिक ढँग से हल करते थे। वे हमें बोलने देते थे क्योंकि वे चाहते थे कि हम स्वतंत्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट करें और परिणाम उनके हाथों में होता था। इसलिये सभी मामलों को बाबा पर छोड़ दो, अपने हृदय और अपने मन की सभी बातें भलीभाँति कहो लेकिन अंतिम परिणाम उनके (बाबा के) ऊपर छोड़ दो।

उस व्यक्ति को, जो किसी ग्रुप में प्रधान भूमिका निभा रहा है, अपने आपको नेता नहीं बल्कि एक तुच्छ सेवक समझना चाहिये। बाबा ने कहा था कि जो व्यक्ति गर्वरहित तथा नम्र रहता है, नेता है, नेता होने का अधिकारी है।

इसलिये, केवल इस बात की आवश्यकता है कि जिस समय आप एकत्र हों, उस समय उनकी उपस्थिति को स्थापित रखें। आप अपने लिये नहीं बल्कि उनके लिये, उनसे प्रेम करने के लिये, उनके प्रति अपना प्रेम प्रकट करने के लिये, उनकी पूजा करने के लिये, उनकी आराधना करने के लिये, अपने हृदय की भावनायें उन्हें समर्पित करने के लिए एकत्र होते हैं।

उनका मनोरंजन करने के लिये, संगीत का प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन इस प्रकार के कार्यक्रम आगन्तुकों के मनोरंजन के लिये नहीं होना चाहिये क्योंकि वहाँ बाबा के अतिरिक्त, जिनका वह घर है, अन्य कोई भी आगन्तुक नहीं है। इस प्रकार की सभाओं में, उत्सव के कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति सभी को मिलनी चाहिये। गाने, व्यंग्य और हर कार्यक्रम की व्यवस्था उनका (बाबा का) मनोरंजन करने के उद्देश्य से होनी चाहिये।

सभा में बाबा से संबंधित कहानियाँ सुनाई जानी चाहिये और छपी हुई पुस्तकों के अंश भी पढ़े जा सकते हैं। सबसे ऊपर हमें, उनके अस्तित्व,

उनके व्यक्तित्व को अपने मन और हृदयों में लाना चाहिये और गहराई के साथ उनकी उपस्थिति को अनुभव करना चाहिये। यही सब कुछ है।

कम से कम उस समय जब आप साथ साथ एकत्र हों, आपको उन तीन बातों का ध्यान रखना चाहिये जिनके बारे में बाबा ने कहा है कि उन्हें मानने से बाबा सबसे अधिक प्रसन्न होंगे। वे बाते हैं– उन चीज़ों का विचार करो जिन पर उनकी उपस्थिति में विचार करने से आप संकोच नहीं करेंगे, वे शब्द बोलो जिन्हें उनकी उपस्थिति में बोलने से आपको संकोच नहीं होगा और इस प्रकार का व्यवहार तथा कार्य करो जिन्हें उनकी उपस्थिति में करने में आपको संकोच नहीं होगा। तब आपको वहाँ उनका साथ मिलेगा।

बाबा ने एक बार हमसे कहा था कि उनका अवतरण हमें समागम देने के लिये ही हुआ था। अब यह आपके ऊपर निर्भर है, यह अवसर आपके लिये है कि आप उन्हें समागम दें। इसलिये उनके साथी बनो, उन्हें अपना साथ देकर, उनके विश्वस्त साथी बनो।

अन्त में, ऐसी सभाओं में उत्साह एवं आनन्द होना चाहिये क्योंकि बाबा आत्म–संयम को पसंद नहीं करते थे। अगर हम उनकी उपासना पूरे ग्रुप के साथ करना चाहते हैं तो अच्छा है लेकिन, अगर कोई व्यक्ति एकान्त में अकेले उपासना करना पसंद करता है तो वह अपने कमरे में भी कर सकता है। लेकिन वातावरण आनंदपूर्ण तथा कार्यक्रम उत्साहपूर्ण होने चाहिये। उनके नाम का गायन करो, उनके विषय में बातचीत करो, उनके बारे में कहानियाँ सुनाओ आदि आदि; और सामान्य रूप से यह उचित वातावरण होगा। वहाँ पर बाबा को ही अध्यक्ष, सभापति, सर्वेसर्वा के रूप में रहने दीजिये। उनकी उपस्थिति में कोई भी व्यक्ति न तो ऊँचा होगा और न ही कोई व्यक्ति नीचा होगा और जिस समय आप उनके प्रेम के लिये, उनके प्रेम में एकत्र होते हैं, उस समय यही भावना वहाँ पर व्याप्त होगी।

• • •

vU; 0;fDr;k dk egjckck d ckj e crkuk

समय समय पर बार बार मुझसे यह पूछा गया है कि मेहेरबाबा के प्रति हमारी भक्ति हमारे हृदयों में खुशी के रूप में रहनी चाहिये या उन लोगों में बाँटनी चाहिये जिन्होंने उनके बारे में कभी नहीं सुना और न ही हमारे बीच उनकी उपस्थिति का आनन्द उठाया।

मैं तो अपनी छत से, यथाशक्ति ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर, उनकी उपस्थिति से होने वाले आनन्द की घोषणा करने के पक्ष में हूँ लेकिन इस विषय में एक खास सीमा तक स्वतंत्रता का प्रयोग किया जाना चाहिये। अपनी भावनाओं को प्रकट करते समय, यह भी विचार करना चाहिये कि आपके शब्दों को किस प्रकार ग्रहण किया जायेगा। संक्षेप में, आशय यह है कि दी गई सामग्री और प्राप्त की गई सामग्री में उचित सन्तुलन होना चाहिये।

उदाहरण के लिये मान लीजिये, आप एक विशाल शरीर वाले हैं और मैं एक छोटा बौना व्यक्ति हूँ जिसे आप हीरे जवाहरातों से भरा बक्स भेंट में देना चाहते हैं। मैं भेंट स्वीकार कर लेता हूँ लेकिन बक्स इतना अधिक भारी है कि मैं इसके बोझ से कुचलकर मर जाता हूँ। लेकिन अगर आपने विवेकपूर्वक एक बार में मुझे थोड़ी मात्रा में भेंट दी होती, तब मैं उन्हें लेने में और उनकी प्रशंसा करने में समर्थ होता।

इसी प्रकार, जब आप पुरातन पुरुष के बारे में लोगों से बात करते हैं और उनका संदेश देते हैं, विवेक और समझ का प्रयोग कीजिये।

• • •

egjckck vkj mud ieh

मेहेरबाबा ने कहा है, ''समय समय पर बार बार जब मैं तुम्हारे बीच आता हूँ, मैं सबके लिए आता हूँ लेकिन उस समय मैं कुछ ही लोगों के लिये होता हूँ।''

अपनी कृपा और अपने प्रेम के द्वारा, मेहेरबाबा लोगों के हृदयों का स्पर्श करते हैं और इसीलिये कुछ लोग उनके बारे में सुनते हैं और उन्हें स्वीकार कर लेते हैं, दूसरे लोगों को उनकी उपस्थिति में रहने का भाग्य प्राप्त होता है और कुछ ऐसे लोग होते हैं जिन्हें वे अपने साथ रहने के लिए बुलाते हैं।

तब आपको यह विचार करना चाहिये कि ऐसा क्यों है कि मैं यहाँ मेहेराज़ाद की यात्रा पर आया हूँ ? ऐसा क्यों है कि उनके संदेश को सुनने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ जब कि दूसरे लोगों को नहीं ? यद्यपि वे सबके लिए आते हैं, वे उन कुछ लोगों के लिये होते हैं जिनका हम प्रतिनिधित्व करते हैं और वे (बाबा) चाहते हैं कि हमारे माध्यम से संसार उनके बारे में जाने।

एक दिन जिस समय मनी बाबा के पास बैठी हुईं थीं, उन्होंने बाबा के शरीर पर एक मक्खी को बैठे हुये देखा और उनके मन में यह विचार आया : 'यह कितने भाग्य की बात है कि यह मक्खी अवतार के शरीर पर बैठी है जब कि चारों ओर मौजूद हजारों मक्खियों को यह भाग्य नहीं मिला। अगर इन हजारों मक्खियों ने उनके शरीर को ढँक लिया होता तो क्या होता ? तब हम उन्हें बिल्कुल नहीं देख पाते।' इसी तरह, मेहेरबाबा सम्पूर्ण मानव जाति के लिये आये लेकिन उनके सम्पर्क में आने का सौभाग्य बहुत कम लोगों को मिला।

इसी प्रकार, इस शहर में हजारों लोग हैं लेकिन आप उन्हें यहाँ, इस स्थान पर, जो उनकी उपस्थिति से धन्य हो चुका है, नहीं देखते है। जबकि आप हज़ारों मील की दूरी से यहाँ आये हैं। क्या हमने आपको बुलाया था ? नहीं, यह उनकी कृपा थी जो आपको यहाँ लाई।

जब तालाब के शान्त पानी में एक कंकड़ गिरता है, पूरा तालाब तुरंत प्रभावित नहीं होता है। पहले एक स्थान प्रभावित होता है और फिर जैसे जैसे लहरें बाहर की ओर फैलती हैं, घेरा बढ़ता जाता है। इसी प्रकार, बाबा का हमारे बीच आना, एक कंकड़ गिराने के समान है और हम लोग उस स्थान पर उपस्थित जन हैं जहाँ कंकड़ फेंका गया था। दूसरे लोग कुछ समय बाद ही प्रतिध्वनि का अनुभव करते हैं और यही कारण है कि हम उनकी उपस्थिति के कारण उत्पन्न उत्साह को, आकांक्षा को, उनके प्रति

आकर्षण को अधिक तीव्रता के साथ अनुभव करते हैं। अन्ततः हम उत्साह की इन लहरों को दूसरे लोगों तक पहुँचा देंगे।

एक दिन बाबा ने हमें बताया कि यह सम्पूर्ण सृष्टि एक जुलूस है। यह जुलूस नहीं जानता है कि यह कहाँ जा रहा है। इसकी सीमायें निश्चित हैं क्योंकि यह अनन्त है। यह सृष्टि जिस जुलूस का प्रतिनिधित्व करती है वह बहुत बड़ा और अत्यंत विशाल है और यह आगे बढ़ रहा है। लेकिन एक समय आता है जब जुलूस रुक गया प्रतीत होता है। ऐसे समय में, वह (ईश्वर) हमारे बीच मनुष्य के रूप में आता है और आगे की पंक्तियों के लोग जानते हैं कि यह ईश्वर के प्रभुत्व का समय है जब कि जुलूस के पीछे की पंक्तियों के लोगों को यह मालूम नहीं होता है कि आगे क्या हो रहा है।

आगे की पंक्तियों के लोग उसके दास होते हैं जो उसका दास होने की अपनी स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं और उसकी सेवा करते हैं। लेकिन लहरों के दूसरी, तीसरी तथा अन्य पंक्तियों तक फैलने पर भी केवल आगे की पंक्तियों वाले लोग वास्तव में जान पाते हैं कि क्या हो रहा है। केवल उन्हें उसके साथ रहने का अवसर प्राप्त होता है। लेकिन फिर भी बाबा अधिकारपूर्वक कहते हैं कि वे सबके लिये आये हैं।

उनके शरीर छोड़ने के पश्चात्, जुलूस पुनः चलने लगता है, और वे लोग, जो आगे थे, अब संसार का हिस्सा नहीं होते हैं क्योंकि उनका ध्यान पूर्णरूप से उस पर (ईश्वर पर) केन्द्रित होता है। वे अपने आपको उसके सन्देश की तथा उस रीति की निरंतर याद दिलाते हैं जिसके अनुसार बाबा चाहते थे कि वे लोग अपना जीवन व्यतीत करें। वे अपने व्यक्तित्व को उसमें खो देने की निरंतर कोशिश करते हैं जबकि दूसरे लोग जुलूस के साथ चलते रहते हैं और जब अगला अवतरण होता है तो उस समय दूसरी पंक्ति के लोग, आगे की पंक्ति में होते हैं और यह इसी तरह चलता रहता है।

आज, जो लोग बाबा के साथ हैं, अब वे जुलूस का हिस्सा नहीं हैं। वे अगली पंक्तियों के लोग हैं जो स्वयं से पूछते हैं : मुझे क्या हो गया है ? मेरा जीवन इस प्रकार क्यों बदल गया है ? और फिर मेहेरबाबा ने उन्हें जो कुछ करने की आज्ञा दी थी, वे उसका अनुसरण करने लगते हैं।

हम कितने अधिक भाग्यशाली हैं कि हमने उनका नाम, उनका संदेश सुना है और हमने वह प्रेम का शब्द सुना है जिसका उन्होंने हमारे हृदयों में उच्चारण किया है। अब हमें यथार्थ रूप से जीना चाहिये। यथार्थ में जीने का अर्थ है अपने प्रति मरना और बाबा में जीवित रहना है। बाबा ने एक बार कहा था, ''यथार्थ यह है कि मेरा अपना खेल, मेरा दैवी खेल, तुममें समाप्त होना चाहिये।''

• • •

egjckck viu ,d opu dk ikyu djr g

यद्यपि ईश्वर ने हमें वे सभी वस्तुयें दी हैं जिनकी हमें आवश्यकता है, फिर भी कष्ट तथा निर्बलता के क्षणों में हम उससे सहायता के लिये प्रार्थना करते हैं और वह दयापूर्वक हमारी सहायता करता है।

मेहेरबाबा ने कहा है कि सहायता के लिये उनसे कहने में कोई ग़लत बात नहीं है। उन्होंने कहा, ''अगर तुम मुझसे नहीं माँगोगे तो फिर तुम किससे माँगोगे और कौन तुम्हें देगा ? मुझसे बार बार कहो लेकिन उत्तर की आशा मत रखो। अपनी दया और अपनी सर्वज्ञता के कारण, मैं वही करूँगा जिसमें तुम्हारी भलाई है।''

यह कहानी एक पुराने बाबा प्रेमी तथा उसके पोते की है। एक दिन इस वृद्ध बाबा प्रेमी को अहमदनगर में रहने वाली अपनी पुत्री का पत्र मिला। उसने लिखा था कि वह अपने दो बच्चों के साथ अपने पिता के घर आना चाहती थी। उसने प्रार्थना की थी कि उसका भाई आकर उसे ले जाये।

भाई की योजना के अनुसार, उसके अहमदनगर जाने के ठीक दो दिन पहले, घर में बिजली चली गई और अँधेरे कमरे में उसके लड़के का, जो वहाँ खेल रहा था, सिर पलंग में लगी लोहे की छड़ से टकरा गया और वह एक चीख के साथ गिर गया। माता पिता ने बच्चे को शान्त किया लेकिन जब उन्हें यह मालूम हुआ कि उसके कमर के नीचे का भाग लकवा से प्रभावित हो गया था, वे बहुत दुखी हो गये।

इस पर भी, वह वृद्ध पुरुष, जिसने बाबा और उनके शिष्यों के साथ समय व्यतीत किया था, परीक्षा के इन क्षणों में विचलित नहीं हुआ और

उसे तीस वर्ष पूर्व कही गई बाबा की बात याद आई। उन दिनों वह बाबा से कोई न कोई चीज़ माँगता रहता था और एक अवसर पर बाबा ने मुस्कुराते हुये उत्तर दिया था, ''तुम मुझसे माँगते रहो लेकिन इससे कोई लाभ नहीं है। फिर भी, मेरे शरीर छोड़ने के पश्चात्, अगर तुम मेरी समाधि पर कोई चीज़ माँगोगे तो तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार की जायेगी। इस बात को याद रखो।'' इसलिये, उसने परिवार के लोगों से शान्त रहने के लिये कहा और अपने पुत्र को सलाह दी कि वह अहमदनगर पहुँचकर समाधि पर प्रार्थना करे और बाबा से सहायता माँगे।

अहमदनगर पहुँचकर, उस युवक ने अपनी बहिन को पिता की बात बताई और वे दोनों समाधि पर उस दिन पहुँचे जिस दिन महिला मंडली, लौकिक रीति के अनुसार समाधि पर आई थी। यह कहानी सुनकर, बच्चे के स्वास्थ्य लाभ के लिये उन्होंने भी प्रार्थना की।

इसके पश्चात्, अपने दोनों बच्चों के साथ बहिन, भाई के साथ अहमदनगर से अपने शहर आई। वहाँ बहुत प्रसन्नता और हँसी मज़ाक के साथ उनका स्वागत किया गया क्योंकि वह बच्चा, जिसे लकवा मार गया था, ठीक होकर चारों ओर दौड़ रहा था।

परिवार जनों ने अपने लेखों की तथा तिथियों और समय की तुलना की और उन्हें यह मालूम हुआ कि जिस समय युवक और उसकी बहिन समाधि पर बाबा से सहायता की याचना कर रहे थे, वह बच्चा अचानक बिस्तर से कूदा और पुनः सक्रिय हो गया। परिवार का प्रत्येक जन प्रसन्न था और उन्होंने बाबा को उनकी दया तथा उनकी कृपा के लिये धन्यवाद दिया।

• • •

egjckck }kjk m)kj

एक बाबा प्रेमी स्टोर में काम करता था और एक रात जब वह बिल्कुल अकेला था, एक अजनबी पिस्तौल लिये हुये अंदर आया। उसने उससे स्टोर में रखा हुआ सारा धन माँगा। चोर ने युवा बाबा प्रेमी की छाती पर पिस्तौल लगा दी जिससे वह बहुत अधिक डर गया।

जैसे ही चोर ने प्रेमी के सीने पर पिस्तौल लगाई, उसने उसकी कमीज़ के नीचे किसी धातु की चीज़ का अनुभव किया और उससे पूछा कि वह क्या पहने हुआ था। चोर ने मज़ाक करते हुए पूछा, ''तुम शायद अपनी सुरक्षा के लिये सीना–बन्द (Breast-plate) पहने हुये हो।'' लड़के ने कहा, ''नहीं, यह एक बटन है जिस पर मेहेरबाबा की फ़ोटो है।'' चोर ने पूछा, ''यह मेहेरबाबा कौन हैं ?''

बटन को देखते ही, चोर पर शायद शान्तिपूर्ण प्रभाव हुआ होगा क्योंकि अगले दो घंटे वह मेहेरबाबा की कहानी ध्यान से सुनता रहा। युवा बाबा प्रेमी ने उसे अवतार के अवतरण के बारे में, उसके प्रेम और उसकी दया के बारे में विस्तारपूर्वक समझाया।

सुबह तक कहानी चलती रही और जब कहानी समाप्त हुई तो चोर ने युवा बाबा प्रेमी को धन्यवाद दिया और वह अपनी पिस्तौल वहीं छोड़कर स्टोर से चला गया। यह देखकर प्रेमी, चोर को पिस्तौल वापस करने के लिये बाहर भागा जो अब पूर्णरूप से परिवर्तित प्रतीत होता था।

• • •

ckck dk vuks[kk izlkn

अहमदनगर में अवतार मेहेरबाबा ट्रस्ट के कार्यालय में एक दिन हमसे मिलने के लिये दो व्यक्ति आये और उनमें से एक व्यक्ति ने हमें बताया कि उसने एक बार मेहेरबाबा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया था। उसके दोस्त ने बताया कि यद्यपि यह सौभाग्य उसकी माँ को भी मिला था लेकिन वह स्वयं बाबा से नहीं मिला था। फिर भी, उसका पूरा परिवार अपने अस्तित्व के लिये मेहेरबाबा की दया का आभारी था जिसके बारे में उसने निम्नलिखित कहानी सुनाई।

उसने बताया कि वह अहमदनगर में जूतों के एक स्टोर का मालिक था और यह केवल बाबा के कारण संभव हुआ। तब उसने अपनी माँ से सुनी हुई कहानी बताते हुये कहा कि उसके पिता बहुत अधिक शराब पीते थे और वे अपने परिवार का पालन पोषण करने में असमर्थ थे। उसके बचपन में कई बार माँ को, अत्यधिक नशे की हालत में किसी गली में पड़े हुये उसके पिता को उठाकर लाने में दूसरों की मदद लेनी पड़ती थी।

अपनी शराब की लत के कारण उसके पिताजी जो कुछ भी थोड़ा सा धन कमाते थे, वह सब शीघ्र ही शराब में खर्च हो जाता था जिससे बहुत परेशानी होती थी। इसलिये उसकी माँ को तरह तरह के मेहनत मज़दूरी वाले काम करने के लिये विवश होना पड़ा। उसकी माँ द्वारा कमाये गये थोड़े से धन से परिवार को प्रतिदिन भोजन मिलना लगभग असंभव था अतः उसकी माँ को अत्यंत कठिन समय का अनुभव हुआ जिसमें प्रायः दयालु पड़ोसियों द्वारा भेंट में दिये गये भोजन से राहत मिलती थी।

एक दिन स्थानीय समाचार पत्र में यह ख़बर आई कि मेहेरबाबा अहमदनगर में दर्शन देने जा रहे थे और कुछ पड़ोसियों ने, उसकी माँ की कठिनाई का विचार करते हुये, उसे दर्शन के लिये जाने को कहा लेकिन उसकी इच्छा नहीं थी।

उसकी माँ ने उनसे कहा, ''मुझे क्या मिलेगा ? मेरी एक दिन की कमाई चली जायेगी और इस समय मुझे धन की ज़रूरत है, आशीर्वाद की नहीं।'' फिर भी पड़ोसियों ने उससे आग्रह करते हुये कहा कि अगर उसे बाबा का आशीर्वाद मिल गया तो उसका जीवन बदल जायेगा। जिन स्थानों पर वह काम करती थी, सभी लोगों ने उससे यही आग्रह किया। वे उसके कठोर जीवन के बारे में जानते थे। उन्होंने कहा, ''तुम मेहेरबाबा के दर्शन करने क्यों नहीं जाती हो ?''

उस पर बहुत ज्यादा दबाव डालने पर, अन्ततः उसने दर्शन के लिये जाने का निश्चय कर लिया लेकिन जब वह दर्शन स्थल पर पहुँची तो मेहेरबाबा के दर्शन के लिये आये हुये लोगों की लम्बी लाइन देखकर परेशान हो गई। फिर भी, वह लम्बी लाइन में खड़ी हो गई और उसके चारों ओर उपस्थित लोगों द्वारा बाबा की दिव्यता के वर्णन से उसके उत्साह की अल्प मात्रा पूर्ववत् जाग्रत रही।

जैसे ही वह बाबा के निकट पहुँची, उसने देखा कि ईश्वर की खोज करने वाले व्यक्ति बाबा के पास जाकर किस प्रकार का आचरण कर रहे थे। वे बाबा के पास जाकर, उन्हें नतमस्तक होकर प्रणाम करते थे, उनसे प्रसाद लेते थे और फिर चले जाते थे। इससे अधिक और कुछ नहीं। और यह सब देखकर वह आश्चर्य से सोचने लगी कि यह सब क्रियायें उसके लिये किस प्रकार सहायक होंगी।

अन्त में उसकी बारी आई। जैसे ही उसने बाबा से प्रसाद लिया, उन्होंने उसकी ओर देखा और वह आदरपूर्वक अपने दोनों हाथों को जोड़े हुये आगे बढ़ गई। थोड़ी दूर जाकर, उसने उत्सुकता के साथ प्रसाद को देखा और हाथों में एक हज़ार रुपये नगद देखकर वह घबड़ा गई।

स्टोर मालिक ने बताया, ''यह वही धन था जिसके कारण हम उस समृद्ध व्यापार को शुरू कर सके जिसके मालिक हम इस समय हैं।''

जब मैंने यह कहानी सुनी, मैं भी आश्चर्यचकित हुआ क्योंकि मैं इस दर्शन प्रोग्राम में उपस्थित रहा था और मैं जानता था कि बाबा ने कभी भी रुपये नहीं बाँटे। तब यह अनोखा प्रसाद उस औरत के हाथों में किस प्रकार पहुँचा ? मैंने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि दयालु पिता ने जो कुछ भी प्रसाद के रूप में उस औरत को दिया, उनकी अनन्त दया ने उसकी तत्कालिक आवश्यकता का ध्यान रखते हुये, उसे धन में बदल दिया।

क्या पुरातन पुरुष के लिये कोई बात असंभव है ?

• • •

VkQh dk i!lkn

एक दिन रीवाँ के डॉ. राठौर, मेहेरबाबा के दर्शन के लिये यहाँ आये। हमने उनसे पूछा कि वे कितने समय से बाबा के प्रेमी थे। उन्होंने कहा, ''मैंने मेहेरबाबा से भेंट नहीं की लेकिन मैं २० वर्षों से उनका अनुसरण करता रहा हूँ।''

हमने पूछा, ''फिर ऐसा कैसे हुआ कि आप इन वर्षों में यहाँ नहीं आये?'' तब डॉ. ने निम्नलिखित कहानी सुनाई : ''मैं अपने मित्रों से मेहेरबाबा के बारे में सुना करता था लेकिन मेरा अडिग उत्तर होता था कि वे मात्र बहुत से बाबाओं में से एक हैं। इसलिये मैं विशेष रूप से उनकी ओर आकर्षित नहीं हुआ।

''मैं काशी, बनारस तथा अन्य तीर्थ स्थानों में गया। एक बार गंगा में स्नान करने के पश्चात्, मैं सबकी रक्षा तथा सबका पालन करने वाले ईश्वर का ध्यान कर रहा था। कुछ मिनटों के पश्चात्, आँखें खोलने पर

मैंने अपने सामने पहाड़ियों की एक श्रृंखला देखी और उस श्रृंखला में एक पहाड़ी विशेष रूप से अपूर्व थी जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया। बाद में मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यह पहाड़ी मेरे दिमाग़ में निरंतर आती रही।

''मैंने घर लौटकर अपना काम फिर से शुरू किया और अपने प्रतिदिन के कार्य में लग गया। एक दिन मैं अपने साथ के एक डॉ. की मेज के पास रुका और वहाँ मैंने 'ग्लो' नाम की एक पत्रिका देखी। इस पत्रिका के मुखपृष्ठ पर, पूर्वकथित पहाड़ी का चित्र देखकर मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ। इस पहाड़ी की ढलान पर एक व्यक्ति खड़ा हुआ था।

''मैं इतना अधिक उत्साहित हो गया कि मैंने डॉ. को बुलाकर उससे पूँछताछ की। उसने बताया कि वह व्यक्ति मेहेरबाबा थे और उस पहाड़ी का नाम एकान्तवास पहाड़ी (Seclusion Hill) था। इस समाचार से मेरी उस पत्रिका के प्रति रुचि बढ़ गई और मैं जल्दी जल्दी उसे ध्यान से पढ़ने लगा। तब मेरे सहकर्मी ने मेहेरबाबा के जीवन तथा मानवजाति के लिए दिये गये उनके संदेश का संक्षिप्त विवरण दिया। उसने मुझे यह भी बताया कि समय समय पर उसके घर में बाबा की मीटिंग होती थी।

''क्षणिक उत्तेजनावश मैंने पूछा कि क्या उसके घर पर एक मीटिंग हो सकती थी। उसने स्वीकार कर लिया और मीटिंग का प्रबन्ध करने लगा। बहुत से लोगों ने मीटिंग में भाग लिया और यूनीवर्सिटी के एक प्रोफ़ेसर ने बहुत ही सारगर्भित वार्ता दी। मैं अत्यंत प्रसन्न था और इस सभा के प्रभाव से पूर्णतया अभिभूत था।

''फिर भी, मेरा मन मेरे साथ चाल चलने लगा। जब प्रसाद बँटने का समय आया, मैं अच्छी तरह जानता था कि रिवाज़ के अनुसार भारतीय मिठाई बाँटी जायेगी। इसलिये मैंने मन में विचार किया, 'अगर मेहेरबाबा अवतार हैं, उन्हें मिठाई की जगह मुझे टॉफ़ी देने में समर्थ होना चाहिये। तब मैं उन पर विश्वास करूँगा।'

''लेकिन मेरा मन यहीं नहीं रुका। जैसे जैसे विचार बढ़ते गये,मेरी यह बुद्धि मुझे निरर्थकता की अधिक गहराइयों में ले गई। मैंने सोचा,

'केवल एक टाफ़ी नहीं बल्कि मुझे प्रसाद में पाँच टॉफ़ियाँ मिलनी चाहिये। तब मैं मेहेरबाबा को अवतार मानूँगा।'

''अब मैं उस बिन्दु पर पहुँच चुका था जहाँ मैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं सोच सकता था कि मेरे लिये मेहेरबाबा को ईश्वर के रूप में स्वीकार करना प्रसाद के ऊपर निर्भर था। मैं आरती अथवा अन्य किसी भी तर्क के बारे में अपने मन को केन्द्रित नहीं कर सका।

''जब प्रसाद बँटने का समय आया, डॉक्टर ने मुझे खाकी रंग का एक लिफ़ाफ़ा दिया। क्योंकि मैं सबके सामने लिफ़ाफ़ा खोलने में शरमा रहा था इसलिये मैंने सबके चले जाने की प्रतीक्षा की। मैं तेजी से अपनी कार की ओर गया। वहाँ मैंने एक बच्चे के समान उत्सुकतापूर्वक लिफ़ाफ़ा खोला और अंदर पाँच टॉफियाँ देखकर पूर्णरूप से चकित रह गया।

''मैंने बाद में अपने असाधारण अनुभव की, पर्दे के पीछे की कहानी सुनी। सभा में आने वाले लोगों की संख्या निश्चय न कर पाने के कारण, डॉक्टर और उसकी पत्नी ने ऐसा प्रसाद खरीदने का निश्चय किया था जो बचने पर खराब न होता। क्योंकि मेहेरबाबा प्रसाद के रूप में अक्सर टॉफ़ियाँ बाँटते थे, इसलिये उन्होंने इस विकल्प को चुना। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि एक टॉफ़ी बाँटना कंजूसी होगी अतः पाँच टॉफ़ियों के लिफ़ाफ़े बनाने का निश्चय किया।

''उस दिन के बाद मैंने फिर कभी भी प्रियतम बाबा की परीक्षा नहीं ली, और इस घटना पर विचार करने पर, मैंने अनुभव किया कि ऊँचे से ऊँचे को स्वीकार करने के लिये मुझे कितने महत्वहीन, असार बहाने की ज़रूरत थी। लेकिन फिर मुझे यह भी समझ में आया कि मेहेरबाबा हमारे बचकाने विचारों को भी सुनते हैं, हमारी बचकानी इच्छाओं की पूर्ति करते हैं और उनके प्रति हमारे विश्वास को दृढ़ करने में हमारी मदद करते हैं। वे यह सब इसलिये करते हैं क्योंकि वे हमसे बहुत प्रेम करते हैं।''

• • •

egjckck d: lkFk Hkfo";

मेहेराज़ाद को, जहाँ मेहेरबाबा रहते थे, बिना किसी सुधार के अपने वर्तमान स्वरूप में ही रहना चाहिये जिससे इसका घरेलू वातावरण, जहाँ तीर्थयात्री विश्राम का अनुभव करेंगे, स्थापित रहेगा। मेहेराबाद में, जहाँ बाबा की समाधि है, आध्यात्मिक वातावरण का साम्राज्य है और तीर्थयात्री उसमें डूब जाते हैं, लेकिन जब वे यहाँ आते हैं, उन्हें परिवर्तन की ज़रूरत होती है और इसीलिये मैं आशा करता हूँ कि मेहेराज़ाद को एक विश्राम स्थल के रूप में सँभाल कर रखा जायेगा।

निःसंदेह यह सब तीर्थयात्रियों के ऊपर निर्भर करेगा। हम मण्डली जन, यहाँ केवल कुछ वर्षों तक और होंगे और मेहेराज़ाद युवा पीढ़ी के उत्तरदायित्व में चला जायेगा। मुझे आशा है कि एकमात्र परिवर्तन, जो किये जायेंगे, उनसे हरियाली में और अधिक वृद्धि तथा बाबा के प्रेम में खिलने वाले फूलों में अधिक वृद्धि होगी। फूलों की तरह तीर्थयात्री भी, जिनमें यहाँ आने वाले बच्चों की बढ़ती हुई संख्या भी शामिल है, बाबा के प्रेम में खिलेंगे और विकसित होंगे। मैं व्यक्तिगत रूप से यह नहीं चाहूँगा कि मेहेराज़ाद का रूप परिवर्तित हो।

तीर्थयात्रियों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हो रही है। विशेष रूप से अमरतिथि के समय भीड़ की संख्या हजारों में पहुँच जाती है। लेकिन भीड़ लगाना मन की एक स्थिति है। जब ह्ृदय घर जैसा अनुभव करना चाहता है, मेहेराज़ाद के वातावरण में, जो भीड़ के लिए नहीं है, व्याप्त घर जैसी भावना में कोई बाधा नहीं पहुँचेगी, भले ही हमारे चारों ओर कितने ही लोग हों। यह बाबा प्रेमियों के छोटे ग्रुप के लिये है जो घर जैसा अनुभव करने का आनंद लेना चाहते हैं, जबकि मेहेराबाद को युद्धस्थल के रूप में देखा जा सकता है जहाँ भीड़ अपने आध्यात्मिक वाद विवाद में व्यस्त रहती है। फिर भी, वे लोग, जिन पर मेहेराज़ाद की देखभाल का उत्तरदायित्व होगा, यहाँ आने वाली भीड़ के प्रवाह को, विशेष रूप से अमरतिथि के समय नियंत्रित करेंगे।

बाबा ने कहा था कि १९५४ से सत्तर साल के अन्दर, मेहेराबाद और मेहेराज़ाद, दोनों ही विश्व–तीर्थयात्रा के स्थान बन जायेंगे और निःसंदेह जितने लोग मेहेराबाद में एकत्र होंगे, उतने ही मेहेराज़ाद भी आयेंगे लेकिन मेहेराज़ाद में एक घर जैसा वातावरण बनाये रखना चाहिये।

मेहेराबाद में एक आध्यात्मिक प्रगाढ़ता है। अवतार मेहेरबाबा का शरीर, जो मेहेराबाद में समाधि के अंदर विश्राम कर रहा है, वह शरीर है जिसमें यथार्थता (ईश्वर) ने निवास किया और प्रत्येक वस्तु, जो यथार्थता के सीधे संपर्क में है, स्वाभाविक रूप से पवित्र हो जाती है। इसलिये उस शरीर का प्रभाव ऐसा है कि चारों ओर मीलों तक हर वस्तु पवित्र हो गई हैं। निःसंदेह, बाबा मेहेराज़ाद में भी रहे और वहाँ रहकर उन्होंने उस जगह एक दूसरे विशिष्ट वातावरण की रचना की– एक घर का वातावरण जहाँ पर मेहेराबाद में आध्यात्मिक दृष्टिकोणों की एकाग्रता से होने वाले व्यायाम के पश्चात्, तीर्थयात्री विश्राम पा सकें।

आप इस वातावरण में उनकी उपस्थिति को प्रतिबिम्बित होता हुआ अनुभव करते हैं – और यह उन सभी स्थानों के लिये सच है जहाँ वे रह चुके हैं– और जब हम चले जायेंगे, उनकी उपस्थिति का अनुभव किया जाता रहेगा। बाबा ने हमें आश्वासन दिया है कि सौ वर्षों से कुछ अधिक समय तक, यही वातावरण रहेगा।

अभी भी मुझे विश्वास है कि कई ऐसी कहानियाँ सामने आयेंगीं जो हमने नहीं सुनी हैं। वे हमारे हृदय को उसके प्रेम की गर्मी व ताज़गी देंगीं, और हम लोगों को, जो बाबा के साथ रहते थे लेकिन उन कहानियों से पूर्णतया अनभिज्ञ थे, नवजीवन प्रदान करेंगीं। और जिन लोगों के वे अनुभव हैं, उनके लिये उन्हें सबको बताने में, उन अनुभवों से होने वाले आनंद को सबके साथ बाँटने में, अत्यंत खुशी होगी। उदाहरण के लिये, अभी हाल ही में हमने दो बहनों के बारे में सुना था जो अपने बचपन में बाबा के साथ खेलीं थीं और बाद के कई वर्षों तक उन्हें इस बात का कोई ज्ञान नहीं था कि वे कौन थे। इस प्रकार की कहानियों का जन्म, निश्चित रूप से, निरंतर होता रहेगा क्योंकि बाबा सनातन सत्ता हैं– वे सदैव यहाँ हैं।

इसलिये जो कोई भी यहाँ होगा, अगणित कहानियों के रूप में बाबा के जीवन की घटनाओं को याद करेगा और उन्हें बार बार बतायेगा। इस प्रकार वे लोग कठोर अथवा अपने विचारों को दूसरों पर थोपने वाले व्यक्ति न होकर, बाबा के साथ अपने जीवन के अनुभवों को दूसरों को बतायेंगे।

प्रत्येक बार अवतार जब हमारे बीच आता है, वह चाहता है कि हम केवल एक ही बात में, उसके प्रति अपने प्रेम में दृढ़ रहें। इसी प्रकार वह प्रायः धार्मिक अनुष्ठानों तथा कर्मकाण्डों के प्रति विश्वव्यापी भावना को समाप्त करने की कोशिश करता है। बाबा की समाधि पर भी मैंने एक प्रकार की दृढ़ता की गंध देखी है जो किसी सीमा तक आवश्यक हो सकती है। फिर भी इसे कभी भी पूर्ण दृढ़ता में परिवर्तित नहीं होना चाहिये ताकि कोई भी व्यक्ति परम्परागत ढँग से भक्ति प्रकट करने से न डरे। बाबा धार्मिक अनुष्ठानों एवं कर्मकाण्डों को पसंद नहीं करते थे और वह हमें उस रास्ते पर चलने से सावधान रहने के लिये बार बार याद दिलाते रहते थे। हम मेहेराबाद को यथासंभव घर के समान रखने तथा धार्मिक अनुष्ठानों एवं कर्मकाण्डों से स्वतंत्र रखने का भरसक प्रयत्न तथा संघर्ष कर रहे हैं।

जहाँ कहीं अधिक लोग होते हैं, वहाँ अलग अलग दिल और दिमाग़ होते हैं और हो सकता है कि कुछ लोग यह विश्वास करें कि जब तक कठोर अनुशासन नहीं होता, दिल की दिमाग पर शासन करने की कोई संभावना नहीं होती क्योंकि ऐसा विश्वास किया जाता है कि मन को अनुशासन में रखने से, हृदय में बाबा के प्रति प्रेम स्वतंत्र रूप से प्रवाहित होता है। लेकिन ऐसा होने के लिये हृदय और मस्तिष्क के बीच वास्तविक संतुलन होना चाहिये। मेहेरबाबा का स्थान हृदय में है किसी सिंहासन पर नहीं, और जहाँ सिंहासन नहीं होता, हमारा हृदय उन्हें (बाबा को) अपना समझेगा।

बाबा के बारे में हमें जो भी कहानियाँ याद हैं, उन्हें तीर्थयात्रियों को बताने के अलावा, मंडली के पास देने के लिये कुछ भी नहीं है। हम लोगों के गालों पर आँसू बहते हुये देखते हैं और हम जानते हैं कि आपमें से

अधिकांश लोग प्रभावित प्रतीत होते हैं क्योंकि बाबा के प्रेम के बारे में जानकर तथा उनका नाम सुनने पर आपकी भावनायें उभरती हैं। इससे हमारे अपने हृदय प्रभावित होते हैं और इस प्रकार तीर्थयात्रियों के साथ एक सुंदर संबंध स्थापित हो जाता है।

यहाँ आने वाले कुछ तीर्थयात्री हमें विशिष्ट व्यक्ति समझकर, परस्पर हमारी बहुत प्रशंसा करने लगते हैं लेकिन यह बिल्कुल ग़लत है। इसलिये हम उन्हें यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न करते हैं कि हम उनसे ऊँचे नहीं हैं। हम उनके बीच मात्र बाबा प्रेमियों की तरह हैं और अगर इस संबंध को भलीभाँति समझ लिया जाता है तो मुझे विश्वास है कि भावी मानवता सही रास्ता अपनायेगी।

तीर्थयात्रियों द्वारा हमारे प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति किये जाने पर, हम प्रायः कठोर होने का प्रयत्न करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम उन लोगों से प्रेम नहीं करते हैं अथवा उनकी भावनाओं का सम्मान नहीं करते हैं। हम ऐसा केवल इसलिये करते हैं क्योंकि आत्म–गौरव की सभी भावनाओं पर रोक लगाने के द्वारा, हम अपने मन में बाबा की प्रसन्नता का ध्यान रखने का प्रयत्न करते हैं ताकि हमारा मूल्यांकन करने में तीर्थ यात्री भूल न करें।

जब लोग हमसे बाबा के साथ बिताये गये जीवन की कहानियाँ सुनते हैं, वे हमें पुण्यात्मा समझते हैं जो उनकी अपेक्षा अधिक उन्नत हैं। कभी कभी वे यह भी समझते हैं कि हम पूर्ण हैं और अपनी पूर्णता को सामान्यता के आवरण द्वारा छिपा रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है और हम यथार्थ में चाहते हैं कि सभी लोगों को इस बात का ज्ञान हो कि हम आप लोगों के समान ही हैं। हम आपसे प्रेम करते हैं क्योंकि हम अपने प्रियतम से प्रेम करते हैं और इससे हमें आनंद मिलता है और हमारे हृदय वास्तविक रूप से ऊँचे उठते हैं।

हम आपसे कोई बात छिपा नहीं रहे हैं और न ही हम आध्यात्मिक रूप से ऊँची अवस्था प्राप्त करने के बावजूद, साधारण पुरुष होने का दिखावा कर रहे हैं। नहीं, हमारा स्थान प्रभु के चरणों में है और जब किसी

व्यक्ति की पकड़ में उसके चरण आ जाते हैं, उसे प्रभु प्राप्त हो जाते हैं। इसलिये हमें अपनी किसी उन्नत आध्यात्मिक स्थिति की घोषणा करने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि जिस व्यक्ति ने बाबा से प्रेम करना सीख लिया है अथवा जो उनसे प्रेम करना सीखना चाहता है, उसकी आध्यात्मिक अवस्था पहले ही ऊँची हो गई है।

ईश्वर का प्रेमी होने से अधिक ऊँची अवस्था दूसरी कोई नहीं है। कितने ही आध्यात्मिक अनुभव हों, हम उन्न्त नहीं हो पाते हैं और यद्यपि हम यह अनुभव कर सकते हैं कि हम आध्यात्मिक मार्ग पर काफ़ी आगे पहुँच चुके हैं लेकिन इससे हम ईश्वर के पास नहीं पहुँच पायेंगे क्योंकि केवल प्रेम से ही उसकी प्राप्ति हो सकती है। इसके अतिरिक्त कोई व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग पर कितना ही अधिक उन्नत हो, उसे अभी भी अन्त में उससे (ईश्वर से) प्रेम करना पड़ेगा और तभी वह बाबा के आलिंगन को, जो हमारे प्रभु हैं, प्राप्त कर सकेगा।

इसलिये प्रभु के प्रति प्रेम के कारण बने हुये हमारे मित्रों और सहकर्मियों पर यह निर्भर करता है कि वे हमारा मार्गदर्शन करें और हमें ऐसी शिक्षा दें जिससे हम बड़प्पन अथवा महानता का अनुभव न करें। हमें स्वयं को आप सबसे भिन्न नहीं समझना चाहिये और अगर संयोगवश आप हमारे बारे में ऐसा सोचने लगते हैं तो यह हमारी ज़िम्मेदारी और कर्तव्य होगा कि हम निश्चित रूप से आपको इस बात का ज्ञान करा दें कि हम केवल आप लोगों में से एक हैं। इस प्रकार, आने वाली मानव जाति उन लोगों को महत्त्व देने से बच जायेगी जो बाबा से संबंधित रह चुके हैं, जिन्होंने उनसे प्रेम किया और जो बाबा से संबंधित अपनी कहानियाँ सुनाते हैं।

मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं क्योंकि इस अवतरण में बाबा ने समय समय पर शब्दों द्वारा ही नहीं बल्कि अपने उन प्रेमियों के उदाहरणों द्वारा हमें बार बार चेतावनी दी है जो स्वयं को ऊँचा अनुभव करने अथवा दूसरों की अपेक्षा अपने आपको अधिक ऊँचा अनुभव करने के कारण, मार्ग से भटक गये थे। बाबा के साथ अपनी निकटता और अपने आध्यात्मिक अभ्यासों के कारण, वे अनुभव

करते थे कि वे महान हैं लेकिन फिर भी उनका पतन हुआ। बाबा ने उनको चेतावनी दी, डाँटा तथा सावधान रहने की सलाह भी दी।

हम इस प्रकार की घटनाओं के प्रति सतर्क हैं क्योंकि वे हमारे अनुभव का हिस्सा थीं। आज कुछ लोग ऐसे हैं जो स्वयं को 'अवतार' कहते हैं अथवा यह कहते हैं कि वे मेहेरबाबा के साथ एक हो चुके हैं। उदाहरण के लिये, कल ही मुझे दक्षिण भारत से किसी व्यक्ति द्वारा भेजी गई पत्रिका मिली जो कहता है कि वह और बाबा एक हैं। उसने यह भी कहा, "मैं मेहेरबाबा हूँ।"

हाल ही में एक पश्चिमी व्यक्ति ने, जो हमसे मिलने आया था, घोषणा की, "मैं अवतार मेहेरबाबा हूँ और मेहेरा मेरी पत्नी है।" अगर उसने अपनी भावनायें अपने तक रखीं होतीं, तो हमें कोई आपत्ति नहीं होती क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी भी तरह की भावनायें रख सकता है। लेकिन इस प्रकार की निरर्थक घोषणायें हमारे कानों तथा हमारे हृदयों को भी हास्यास्पद प्रतीत होती हैं।

और इसीलिये, हमें बाबा द्वारा दी गई चेतावनी याद आती है और इस विषय में इसके अलावा कहने के लिये कुछ भी नहीं है कि आध्यात्मिक मार्ग पर होने वाले अनुभवों की जो लहर आत्मा के अंदर उठती है, वह कभी कभी अत्यंत दीन स्थिति पैदा कर देती है लेकिन इस स्थिति की समय समय पर बार बार पुनरावृत्ति होती है।

मुझे विश्वास है कि अवतार मेहेरबाबा के प्रेमी, जो वास्तव में एकनिष्ठ भाव से उनसे वैसा प्रेम करना चाहते हैं जैसा किया जाना चाहिये, तो वे ऐसे भ्रमित व्यक्तियों से दूर रहेंगे। बाबा इसमें उनकी सहायता करेंगे क्योंकि उनकी (बाबा की) कृपा सदैव उनके साथ होगी।

७०० वर्षों के बाद जब अवतार फिर आयेगा, हमारा मन कहेगा, "मेहेरबाबा ने हमें चेतावनी दी थी और क्योंकि हम उनके प्रेमी हैं, हम किसी दूसरे अवतार अथवा किसी दूसरे अवतरण को पहचानना नहीं चाहते।" इसलिये यद्यपि वे (बाबा) उस समय अवतार के रूप में हमारे बीच होंगे और कहेंगे, "मेरे पास आओ, मैं वही एक हूँ और तुम्हारे बीच

फिर से आया हूँ।" लेकिन मेहेरबाबा के अनुयायी और प्रेमी कहेंगे, "नहीं, बाबा ने हमें बताया था कि हम किसी भी गुरु अथवा अन्य किसी दूसरे व्यक्ति के पास न जायें।" वे इसी तरह व्यवहार करेंगे क्योंकि वे मन के माध्यम से मेहेरबाबा की चेतावनी पर ध्यान देने की कोशिश करेंगे। लेकिन अगर वे अपने हृदयों को खुला रखेंगे तो बाबा उनके हृदयों में प्रवेश करेंगे, उनका स्पर्श करेंगे और उन्हें यह याद दिलायेंगे कि वे वही एक हैं, और तब वे उन्हें पहचान सकेंगे।

जब बाबा पहली बार पश्चिमी देशों में गये, तब बाबा के इस सत्ताकाल में क्या ईसाइयों के साथ ऐसा ही नहीं हुआ ? उन्होंने उनके हृदयों को स्पर्श किया और वे (प्रेमी) तुरन्त पहचान गये कि वे (बाबा) वही एक (ईसामसीह) थे।

इसलिये जब हृदय को खुला रखा जाता है, तब उनके (बाबा) लिये प्रवेश करना स्वाभाविक है। अपनी अनन्त दया के कारण, ईश्वर समय समय पर बार बार मानव जाति के पास आता है और जब वह हमारे पास आता है तब क्या हमारा यह कर्त्तव्य नहीं है कि हम अपने हृदयों को खोलें और उसे हृदय में प्रवेश करने दें। जब हम अपने हृदयों को खुला रखते हैं तो ग़ल्तियों से रक्षा होती है तथा सही पहचान होती है। लेकिन जब हम केवल अपने मन का प्रयोग करते हैं तब धोखा अवश्यंभावी है।

मैं चाहता हूँ कि सभी लोग इस बात को जानें कि भले ही उसका (ईश्वर का) स्वागत करने के लिये हृदय को खुला रखा गया है लेकिन, अगर मन अभी भी कुछ प्राप्त करने की आशा रखता है तो मन अभी भी हृदय का स्थान ले लेगा।

अगर मन चमत्कार की इच्छा करता है अथवा प्रगति और शक्ति चाहता है अथवा लोगों का नेता बनना चाहता है तब पतन होगा। लेकिन अगर हृदय को खुला रखा जाता है और ईश्वर से मात्र प्रेम करने की भावना के साथ हृदय को मन का स्थान लेने की अनुमति दी जाती है, तो सच्ची आध्यात्मिकता की एक ऐसी लहर उठेगी जो हमें ईश्वर को उस समय पहचानने में समर्थ बनायेगी जब वह फिर से हमारे बीच आता है।

हालांकि यह अत्यंत निराशावादी प्रतीत हो सकता है लेकिन यह सच है कि केवल असहायता के माध्यम से सही पहचान के लिये हृदय खुला होता है। जैसी असहायता कष्ट में उस समय होती है जब सभी इच्छायें इस प्रकार नष्ट हो जाती हैं जैसे कि तलवार से काट दी गई हों और तभी पूर्णरूप से ईश्वर का आश्रय लिया जाता है। वह हमारे हृदय में प्रवेश करने के लिये सदैव वहाँ मौजूद होगा और यह उसका वरदान है।

हम अक्सर कष्ट, दर्द, निराशा और इसी प्रकार की अन्य दूसरी बातों को इस बात का संकेत समझते हैं कि उसने हमको छोड़ दिया है, लेकिन हमें उसके ही शब्दों को याद रखना चाहिये : ''जब मुझे तुम्हारी चेतना होती है, जब तुम्हारे ऊपर मेरी नज़र होती है, केवल तभी तुम्हारे साथ यह सब होता है।'' भले ही यह कितना ही हास्यास्पद प्रतीत होता हो, पर यह एक तथ्य है क्योंकि यही आध्यात्मिक मार्ग है।

आपने राजाओं, महाराजाओं तथा मानवजाति के बड़े नेताओं के जीवन के उदाहरण सुने होंगे जो ईश्वर की ओर उन्मुख हुये, लेकिन यह केवल तभी संभव हुआ जब उन्हें अपनी धन दौलत की असारता का अनुभव हुआ और उसे छोड़कर, उन्होंने असहायता और आशारहितता को गले लगाया तथा ईश्वर को सच्चे पथ प्रदर्शक और सान्त्वना देने वाले के रूप में पाया। हमारे अंदर के महाराजा का भिखारी बनना आवश्यक है जो उस प्रभु के चरणों में जाकर भीख माँगता है और उससे प्रार्थना करता है। केवल तभी वह हमारे हृदयों में प्रवेश करता है।

इसका यह अर्थ नहीं कि हम हर वस्तु का त्याग करके, कष्ट को गले लगायें। यह एक ऐसी मनःस्थिति होती है जो धीरे धीरे उत्पन्न होती है जैसा कि उस व्यक्ति के साथ होता है जिसे अत्यधिक आरामदेह जीवन बिताने के बाद, धन, वैभवपूर्ण जीवन से विरक्ति हो जाती है और वह एक औसत मनुष्य की भाँति अधिक सामान्य जीवन व्यतीत करना चाहता है।

फिर भी, वर्तमान स्थिति में हमारी सलाह यह होगी कि बाबा से प्रेम करने की कोशिश करके, मन को अनुशासित करके, जब हम अहमदनगर में हों तो बाबा की समाधि पर होने वाली आरती में भाग लेने जाकर, उनका

नाम जपकर और उनकी निरंतर याद करके, हम इसे सहज भाव से लें। ये शिक्षायें बच्चों को खेल खेल में सहज ढँग से दी जाने वाली शिक्षाओं की तरह हैं। परन्तु, क्योंकि वे काफ़ी अनुचित माँगें करने वाली भी हैं अतः बाबा ने हमें वे शिक्षायें भी दी हैं जिन्हें मॉन्टेसरी कोर्स कहा जा सकता है जहाँ वे अपने प्रेमियों को खेलने देते हैं, अपने ढँग से रहने देते हैं और बच्चों के समान हमको, शिक्षकों को शिक्षा देते हैं और अन्त में बच्चे और शिक्षक दोनों ही शिक्षा प्राप्त करते हैं।

अक्सर तीर्थयात्री पूछते हैं कि उन्हें किसी बाबा ग्रुप में होना चाहिये अथवा व्यक्तिगत रूप से काम करना चाहिये। अगर आप उचित संतुलन बनाये रखना चाहते हैं, तो बाबा ने हमें यह मार्गदर्शन दिया है, ''अगर तुम मेरे सत्य और प्रेम के संदेश को फैलाना चाहते हो तो एक बात जान लो– वह यह है कि तुम तब तक यह कार्य नहीं कर सकते जब तक मैं तुमसे यह काम नहीं करवाता, क्योंकि मेरे अतिरिक्त मेरा कार्य कोई भी नहीं कर सकता है।''

फिर भी, बाबा उस कार्य में भाग लेने और उनके नाम और सन्देश को फैलाने से प्राप्त होने वाले आनन्द को अनुभव करने का अवसर निश्चय ही प्रदान करते हैं।

फिर भी, सबसे पहले वे चाहते हैं कि हम उनके संदेश के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करें। उनकी शिक्षाओं के अनुसार आचरण करें। दूसरों का मार्ग दर्शन करने में समर्थ होने से पहले, हमें स्वयं पर विजय प्राप्त करनी है। बाबा ने हमें कई बार बताया है : ''मेरे सन्देश को समझने तथा दूसरों तक पहुँचाने में तुम समर्थ नहीं होगे। तुम केवल मेरे शब्दों को दोहरा सकोगे क्योंकि मेरा सन्देश देने का एकमात्र तरीका, तुम्हारे द्वारा एक भी शब्द बोले बिना, तुम्हारे द्वारा बिताया गया जीवन है। तब, मानवजाति के बीच तुम्हारा अपना अस्तित्व, लोगों का अपना जीवन परिवर्तित होने की आशा के द्वारा, उनके लिये एक व्यापक क्षेत्र खोल देगा।'' इसलिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य यह नहीं है कि हम बाहर जायें और विश्व में उनका संदेश फैलायें बल्कि हमें अपने ऊपर ध्यान

केन्द्रित करना है और हम जिस तरह अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उसका निरीक्षण करना है।

ऐसा कहा गया है कि सामान्यतया एक साधक खोज से शुरू करता है लेकिन यहाँ आपको ईश्वर की अपनी खोज इस तरह करना है कि यह हमारी बजाय ईश्वर को हमारी खोज करने के लिये विवश कर दे। बाबा ने कहा था, ''खोजने वाला बनने के बजाय, खोजा जाने वाला बनो। और जब मैं तुम्हें खोज लेता हूँ, तब इस कार्य में कोई असफलता नहीं होती।'' 'खोजा जाने वाला' बनने का अर्थ है, उसकी आकांक्षा करने के द्वारा, उसका प्रिय बनना, और उसके लिये की गई यह आकांक्षा, उसे तुम्हारी चाह करने पर विवश करेगी और तब वह (ईश्वर) तुम्हारी खोज करेगा।

इस संबंध में यह याद रखना अधिक अच्छा होगा कि जब आप अपने आपको उन परिस्थितियों में पाते हैं जिनसे आपको निराशा होती है और आपको बाबा की उपस्थिति का अनुभव नहीं होता है तो ये बाबा ही हैं जो आपको दूर कर देते हैं ताकि उनके साथ होने की आकांक्षा आपमें पैदा हो और यह आकांक्षा अधिक समय तक बनी रहे। उदाहरण के लिये, कुछ लोग इस बात से परेशान रहते हैं कि बहुत से लोग मेहेराबाद तक की लम्बी यात्रा करने में समर्थ होते हैं जबकि वे स्वयं नहीं जा पाते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि बाबा उनकी भावनाओं की ओर से उदासीन हैं। इसके विपरीत, वे उनकी आकांक्षा को प्रज्वलित करते हैं और बाबा के साथ होने की आकांक्षा ही इस यात्रा का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भाग है। जैसे ही यह आकांक्षा उत्पन्न होती है, आप तत्काल बाबा की उपस्थिति में होते हैं और यात्रा करने की कोई ज़रूरत नहीं रह जाती है। इसलिये आप कितने ही गरीब अथवा अल्प–साधन वाले हों, इसका कोई महत्त्व नही है, क्योंकि उनके साथ होने की आकांक्षा द्वारा, जिससे उनका सच्चा साथ मिलता है, सभी लोग बाबा तक पहुँच सकते हैं।

इस संसार में हम सभी प्रकार की भौतिक हानि (material loss) का अनुभव करते हैं जिससे हमें अत्यंत असहायता और आशारहितता का अनुभव होता है, लेकिन उसके कारण दुखी होकर हम जो आहें भरते हैं,

वे आशारहितता और असहायता की उस यथार्थ आह की तुलना में कुछ भी नहीं है जो उसके पास पहुँचने के लिये आध्यात्मिक मार्ग पर आवश्यक है। यह असहायता और आशारहितता की गहरी आह, हृदय से निकली हुई आकांक्षा की वह एक मात्र गर्जनापूर्ण पुकार है जो उसके कानों तक पहुँचेगी।

मेहेरबाबा ने कहा था, ''अगर तुम्हारे हृदय में मेरे लिये वैसा ही प्रेम है जैसा सेन्ट फ्रान्सिस के हृदय में ईसामसीह के लिये था, तब तुम मेरा केवल प्रत्यक्ष अनुभव ही नहीं करोगे, बल्कि तुम मुझे प्रसन्न करोगे।'' बाबा ने यह भी कहा था कि ईश्वर का प्रत्यक्ष अनुभव करने से कोई लाभ नहीं है। इस सबके बाद, अगर तुम्हें ईश्वर का साक्षात्कार प्राप्त भी हो जाता है तो उससे तुम्हें उसी अवस्था की प्राप्ति होगी जो तुम पहले ही हो। इसलिये, जिस बात की ज़रूरत है, वह है बाबा की प्रसन्नता, जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज़ है और उनकी यह प्रसन्नता, उनकी आकांक्षा करने, उनसे प्रेम करने, हर समय उनके चरणों में रहने और उनके द्वारा रौंदे जाने के द्वारा प्राप्त की जा सकती है।

इस तरह, बजाय इसके कि आप मार्ग को पार करें, आप प्रभु (बाबा) के लिये वह मार्ग बन जाते हैं जिस पर वह चलता है। इसी की ज़रूरत है और यही आध्यात्मिक उन्नति है जिसे नाश होना (effacement) कहते हैं।

अवतार मेहेरबाबा की जय !

(समाप्त)

• • •